Digitized by Madhuban Trust

ओशो

जिन खोजा तिन पाइया

कुंडलिनी और सात शरीर

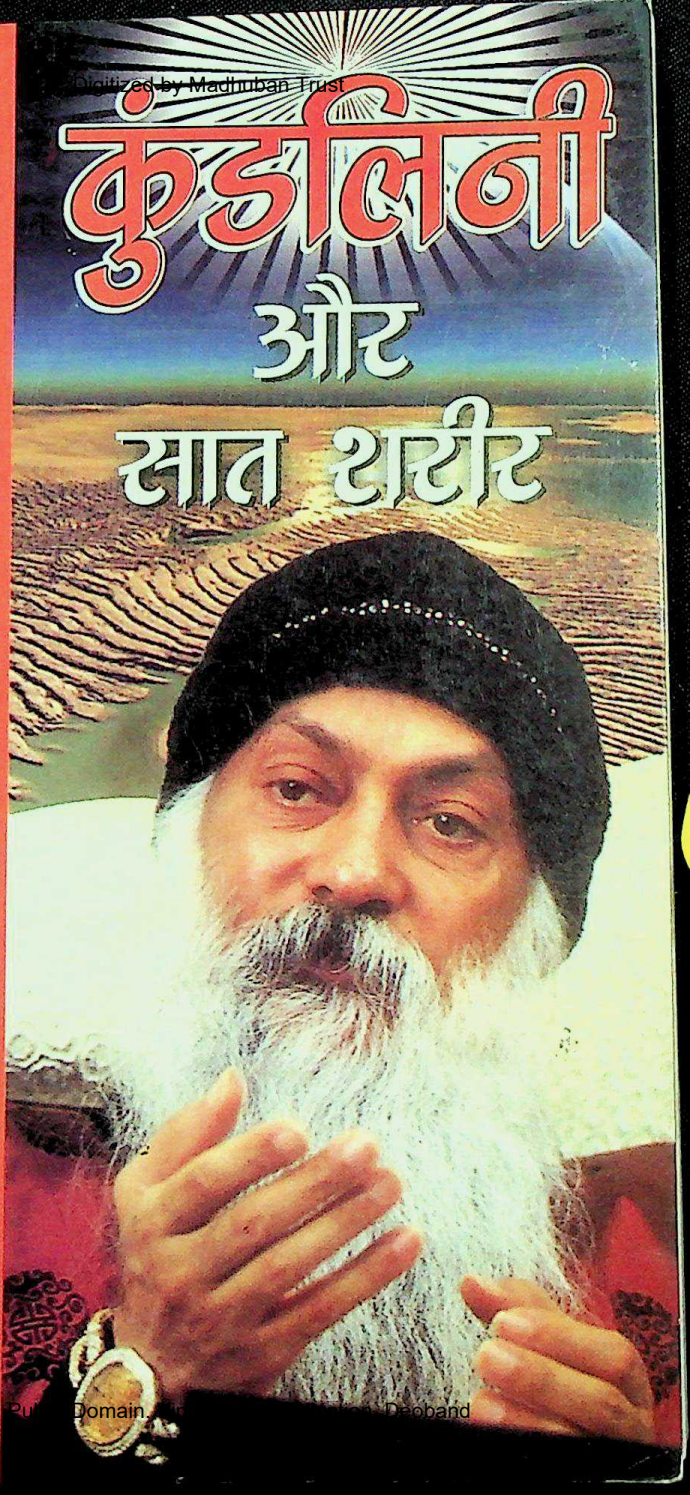

CC-0. Public Domain. ... Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ओशो

जिन खोजा तिन पाइयां

ओशो

कुंडलिनी और सात शरीर

ओशो

ओशो जिन खोजा तिन पाइयां

ISBN 81-288-1396-X
9788128813962
A.H.W. Sameer Series

Rs. 50.00

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ओशो

ओशो परम दुर्लभ घटना हैं अस्तित्व की।

बुद्धत्व की उपलब्धि में सदियों-सदियों, जन्मों-जन्मों का एक तूफान शांत होता है—परम समाधान को प्राप्त है और अस्तित्व उसमें नये रंग लेता है। अस्तित्व का परम सौन्दर्य उसमें खिलता है, श्रेष्ठतम पुष्प विकसित होते हैं और अस्तित्वगत ऊंचाई का एक परम शिखर-एक नया गौरीशंकर-वहाँ उस व्यक्ति की परम शून्यता में निर्मित हो उठता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वभाव के अंतिम बिन्दु में स्थित हो जाता है, जहाँ से बुद्ध के भीतर का बुद्ध बोल उठता है, कृष्ण के भीतर का कृष्ण बोल उठता है, क्राइस्ट के भीतर का क्राइस्ट बोल उठता है, पतंजलि के भीतर का पतंजलि बोल उठता है; लाओत्से के भीतर का लाओत्से बोल उठता है और लाखों-लाखों और तूफान परम समाधान की दिशा में मार्गदर्शन पाते हैं।

CC-0, Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

स्वामी ज्ञानभेद

द्वारा रचित

हिन्दी भाषा में ओशो की प्रमाणिक जीवनी

कथा-उपन्यास की रोचक शैली में पहली बार प्रस्तुत

एक फक्कड़ मसीहा

ओशो

(नौ खण्डों में)

सद्गुरु ओशो के जीवन की प्रत्येक घटना एक सिखावन और प्रेरणास्त्रोत है
आपके मर्म को स्पर्श कर जाये, तो उनकी एक जीवन घटना
ही आपका रूपान्तरण कर सकती है

- यह ध्यान और प्रेम में डूबने का आमन्त्रण देती है।
- यह रूढ़ियों, परम्पराओं, अंधविश्वासों और संस्कारों से मुक्त करती है।
- यह आपको अपने होने की प्रतीति के प्रति जागरूक करती है।
- यह आपको जीवन के उत्सव आनंद में डूबने का आमंत्रण देती है।

यह सद्ग्रन्थ ओशो के ही संन्यासी स्वामी ज्ञानभेद ने ओशो के ही हजारों प्रवचनों में बताई घटनाओं को कालक्रम में पिरोकर उनके परिवार के सदस्यों, पुराने बचपन के मित्रों, व सहयोगियों से साक्षात्कार लेकर एवं 'युक्रांत', 'ज्योतिशिखा,' 'आनंदिनी', 'संन्यास' 'भगवान श्री रजनीश' तथा 'ओशो टाइम्स' की पुरानी फाइलों का स्वाध्याय कर, जो अनुपम माला गूंथी है, उसका नाम है

एक फक्कड़ मसीहा-ओशो

जिसके छः खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं एवं खण्ड 7 इसी वर्ष के अंत तक तथा
अन्य दो खण्ड सन् 2000 में प्रकाशित हो रहे हैं।

डायमंड पाकेट बुक्स

X-30 ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली - 110 020.

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ओशो

कुंडलिनी और सात शरीर

डायमंड बुक्स

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ISBN : 81-288-1396-X

संकलन	:	मा अमृत साधना, मा कृष्ण प्रिया
संपादन	:	स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व
प्रकाशक	:	**डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.** X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II नई दिल्ली-110020
फोन	:	011-41611861
फैक्स	:	011-41611866
ई-मेल	:	sales@dpb.in
वेबसाइट	:	www.dpb.in
संस्करण	:	2008
मुद्रक	:	आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली - 32

कापीराइट : **ओशो इंटरनेशनल फाउंडेशन**, पूना (सर्वाधिकार सुरक्षित)

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलेक्ट्रानिक, मेकेनिकल, फोटोकापी, रिकार्डिंग या अन्य सूचना-संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व **साधना फाउंडेशन**, पूना की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

Kundalini Aur Saat Sharir - Osho

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

अनुक्रम

1. सतत साधना : न कहीं रुकना, न कहीं बंधना 7
2. सात शरीरों से गुजरती कुंडलिनी 39
3. सात शरीर और सात चक्र 77
4. धर्म के असीम रहस्य सागर में 121

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

छठवीं प्रश्नोत्तर चर्चा

सतत साधना : न कहीं रुकना, न कहीं बंधना

प्रश्न : आपने पिछली एक चर्चा में कहा कि सीधे अचानक प्रसाद के उपलब्ध होने पर कभी-कभी दुर्घटना भी घटित हो सकती है और व्यक्ति क्षतिग्रस्त तथा पागल भी हो सकता है या उसकी मृत्यु भी हो सकती है। तो सहज ही प्रश्न उठता है कि क्या प्रसाद हमेशा ही कल्याणकारी नहीं होता है ? और क्या वह स्व-संतुलन नहीं रखता है ? दुर्घटना का यह भी अर्थ होता है कि व्यक्ति अपात्र था। तो अपात्र कर कृपा कैसे हो सकती है ?

प्रभु कोई व्यक्ति नहीं है, शक्ति है। और शक्ति का अर्थ हुआ कि एक-एक व्यक्ति का विचार करके कोई घटना वहां से नहीं घटती। जैसे नदी बह रही है, किनारे जो दरख्त होंगे उनकी जड़ें मजबूत हो जायेंगी; उनमें फूल लगेंगे, फल आयेंगे। नदी की धार में जो पड़ जायेंगे, उनकी जड़ें उखड़ जायेंगी – बह जायेंगी, टूट जायेंगी। नदी को न तो प्रयोजन है कि किसी वृक्ष की जड़ें मजबूत हों, और न प्रयोजन है कि कोई वृक्ष उखाड़ दे। नदी बह रही है।

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं, शक्ति है

नदी एक शक्ति है, नदी एक व्यक्ति नहीं है। लेकिन निरंतर यह भूल

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

छठवीं प्रश्नोत्तर चर्चा

सतत साधना : न कहीं रुकना, न कहीं बंधना

प्रश्न : आपने पिछली एक चर्चा में कहा कि सीधे अचानक प्रसाद के उपलब्ध होने पर कभी-कभी दुर्घटना भी घटित हो सकती है और व्यक्ति क्षतिग्रस्त तथा पागल भी हो सकता है या उसकी मृत्यु भी हो सकती है। तो सहज ही प्रश्न उठता है कि क्या प्रसाद हमेशा ही कल्याणकारी नहीं होता है ? और क्या वह स्व-संतुलन नहीं रखता है ? दुर्घटना का यह भी अर्थ होता है कि व्यक्ति अपात्र था। तो अपात्र कर कृपा कैसे हो सकती है ?

प्रभु कोई व्यक्ति नहीं है, शक्ति है। और शक्ति का अर्थ हुआ कि एक-एक व्यक्ति का विचार करके कोई घटना वहां से नहीं घटती। जैसे नदी बह रही है, किनारे जो दरख्त होंगे उनकी जड़ें मजबूत हो जायेंगी; उनमें फूल लगेंगे, फल आयेंगे। नदी की धार में जो पड़ जायेंगे, उनकी जड़ें उखड़ जायेंगी – बह जायेंगी, टूट जायेंगी। नदी को न तो प्रयोजन है कि किसी वृक्ष की जड़ें मजबूत हों, और न प्रयोजन है कि कोई वृक्ष उखाड़ दे। नदी बह रही है।

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं, शक्ति है

नदी एक शक्ति है, नदी एक व्यक्ति नहीं है। लेकिन निरंतर यह भूल

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हुई है कि हमने परमात्मा को एक व्यक्ति समझ रखा है। इसलिए हम ऐसे सोचते हैं, जैसे हम व्यक्ति के संबंध में सोचते हैं। हम कहते हैं, वह बड़ा दयालु है; हम कहते हैं, वह बड़ा कृपालु है; हम कहते हैं, वह सदा कल्याण ही करता है। ये हमारी आकांक्षाएं हैं जो हम उस पर थोप रहे हैं। व्यक्ति पर तो ये आकांक्षाएं थोपी जा सकती हैं; और अगर वह इनको पूरा न करे तो उसको उत्तरदायी ठहराया जा सकता है; शक्ति पर यह आकांक्षाएं नहीं थोपी जा सकतीं। और शक्ति के साथ जब भी हम व्यक्ति मानकर व्यवहार करते हैं तब हम बड़े नुकसान में पड़ते हैं; क्योंकि हम बड़े सपनों में खो जाते हैं। शक्ति के साथ शक्ति मानकर व्यवहार करेंगे तो बहुत दूसरे परिणाम होंगे।

जैसे कि जमीन में ग्रेविटेशन है, कशिश है, गुरुत्वाकर्षण है। आप जमीन पर चलते हैं तो उसी की वजह से चलते हैं। लेकिन वह इसलिए नहीं है कि आप चल सकें। आप न चलेंगे तो गुरुत्वाकर्षण नहीं रहेगा, इस भूल में मत पड़ जाना। आप नहीं थे जमीन पर तो भी था; एक दिन हम नहीं भी होंगे तो भी होगा। और अगर आप गलत ढंग से चलेंगे तो गिर पड़ेंगे, टांग भी टूट जायेगी; वह भी गुरुत्वाकर्षण के कारण ही होगा। लेकिन आप किसी अदालत में मुकदमा न चला सकेंगे, क्योंकि वहां कोई व्यक्ति नहीं है। गुरुत्वाकर्षण एक शक्ति की धारा है। अगर उसके साथ व्यवहार करना है तो आपको सोच-समझकर करना होगा। वह आपके साथ सोच-समझकर व्यवहार नहीं कर रही है।

परमात्मा की शक्ति आपके साथ सोच-समझकर व्यवहार नहीं करती। परमात्मा की शक्ति, कहना ठीक नहीं है; परमात्मा शक्ति ही है। वह आपके साथ सोच-समझकर व्यवहार नहीं है उसका, उसका अपना शाश्वत नियम है। उस शाश्वत नियम का नाम ही 'धर्म' है। धर्म का अर्थ है, उस परमात्मा नाम की शक्ति के व्यवहार का नियम। अगर आप उसके अनुकूल करते हैं, समझपूर्वक करते हैं, विवेकपूर्वक करते हैं, तो वह शक्ति आपके लिए कृपा बन जायेगी – उसकी तरफ से नहीं, आपके ही कारण। अगर आप उलटा करते हैं, नियम के प्रतिकूल करते हैं, तो वह शक्ति आपके लिए अकृपा बन जायेगी। परमात्मा अकृपा नहीं है, आपके ही कारण।

तो परमात्मा को व्यक्ति मानेंगे तो भूल होगी। परमात्मा व्यक्ति नहीं है, शक्ति है। और इसलिए परमात्मा के साथ न प्रार्थना का कोई अर्थ है, न पूजा का कोई अर्थ है; परमात्मा के साथ अपेक्षाओं का कोई भी अर्थ नहीं है। यदि चाहते हैं कि परमात्मा, वह शक्ति आपके लिए कृपा बन जाये, तो आपको

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

जो भी करना है वह अपने साथ करना है। इसलिए साधना का अर्थ है, प्रार्थना का कोई अर्थ नहीं है। ध्यान का अर्थ है, पूजा का कोई अर्थ नहीं है; इस फर्क को ठीक से समझ लें।

प्रार्थना में आप परमात्मा के साथ कुछ कर रहे हैं – अपेक्षा, आग्रह, निवेदन, मांग; ध्यान में आप अपने साथ कुछ कर रहे हैं। पूजा में आप परमात्मा से कुछ कर रहे हैं, साधना में आप अपने से कुछ कर रहे हैं। साधना का अर्थ है, अपने को ऐसा बना लेना कि धर्म के प्रतिकूल आप न रह जायें; और जब नदी की धारा बहे तो आप बीच में न पड़ जायें – तट पर हों कि नदी की धारा का पानी आपकी जड़ों को मजबूत कर जाये, उखाड़ न जाये। जैसे ही हम परमात्मा को शक्ति के रूप में समझेंगे, हमारे धर्म की पूरी व्यवस्था बदल जायेगी। तो जो मैंने कहा कि यदि आकस्मिक घटना घट जाये, तो दुर्घटना बन सकती है।

प्रसाद से दुर्घटना भी हो सकती है

दूसरी बात पूछी है कि क्या अपात्र को भी वह घटना घट सकती है ?

न, अपात्र को कभी नहीं घटती, घटती तो है पात्र को ही, लेकिन अपात्र कभी आकस्मिक रूप से पात्र बन जाता है... जिसका उसे खुद भी पता नहीं चलता। घटना तो सदा ही पात्र को घटती है। जैसे प्रकाश आंखवाले को ही दिखाई पड़ता है, अंधे को नहीं दिखाई पड़ता; न दिखाई पड़ सकता है। लेकिन अगर अंधे की आंख का इलाज किया गया हो, और वह आज ही अस्पताल से बाहर निकल कर सूरज को देख ले, तो दुर्घटना घट जायेगी। उसे महीने दो महीने हरा चश्मा लगाकर प्रतीक्षा करनी चाहिए।

अपात्र एकदम से पात्र बन जाये तो दुर्घटना ही घटेगी, इसमें सूरज कसूरवार नहीं होगा। उसको दो महीने आंखों को सूर्य के प्रकाश के झेलने की क्षमता भी विकसित करने देनी चाहिए, नहीं तो वह पहले जितना अंधा था उससे भी ज्यादा खतरनाक अंधा हो जायेगा; क्योंकि पहलेवाले अंधेपन का इलाज भी हो सकता था, अब इलाज भी मुश्किल होगा; क्योंकि यह दुबारा अंधा हुआ है वह।

इसको ठीक से समझ लेना : पात्र को ही अनुभूति आती है, लेकिन अपात्र कभी शीघ्रता से पात्र बन सकता है; कभी ऐसे कारणों से पात्र बन सकता है जिसका उसे पता भी न चले। और तब... तब दुर्घटना के सदा डर हैं; क्योंकि शक्ति अनायास उतर आये तो आप झेलने की स्थिति में नहीं होते।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ऐसा समझ लें... एक आदमी को अयानास कुछ भी मिल जाये – धन मिल जाये, तो धन के मिलने से दुर्घटना नहीं होनी चाहिए, लेकिन अनायास मिलने से दुर्घटना हो जायेगी। अनायास बहुत बड़ा सुख भी मिल जाये तो भी दुर्घटना हो जायेगी; क्योंकि उस सुख को भी झेलने के लिए क्षमता चाहिए। सुख भी धीरे-धीरे ही मिले तो हम तैयार हो पाते हैं; आनंद भी धीरे-धीरे ही मिले तो हम तैयार हो पाते हैं; क्योंकि तैयारी बहुत सी बातों पर निर्भर है; और हमारे भीतर झेलने की क्षमता भी बहुत सी बातों पर निर्भर है। हमारे मस्तिष्क के स्नायु, हमारे शरीर की क्षमता, हमारे मन की क्षमता, सब की सीमा है – और जिस शक्ति की हम बात कर रहे हैं वह असीम है। वह ऐसा ही है, जैसे बूंद के ऊपर सागर गिर जाये, तो बूंद के पास कुछ पात्रता चाहिए सागर को पी जाने की, नहीं तो अनायास तो सिर्फ बूंद मरेगी ही, मिटेगी ही, पा नहीं सकेगी कुछ।

इसलिए, अगर इसे ठीक से समझें तो साधना में दोहरा काम है : उस शक्ति के मार्ग पर अपने को लाना है, उसके अनुकूल लाना है, और अनुकूल लाने के पहले अपनी सहने की क्षमता भी बढ़ानी है। ये दोहरे काम साधना के हैं। एक तरफ से द्वार खोलना है, आंख ठीक करनी है, और दूसरी तरफ से आंख ठीक हो जाये, तो प्रतीक्षा भी करनी है और आंख को ही इस योग्य बनाना है कि वह प्रकाश को देख सके। अन्यथा बहुत प्रकाश अंधेरे से भी ज्यादा अंधेरा सिद्ध होता है। इसमें प्रकाश का कोई भी कसूर नहीं है। इसमें प्रकाश का कोई लेना-देना नहीं है, यह बिलकुल एकतरफा मामला है; यह हमारे ऊपर ही निर्भर है। इसमें हम जिम्मेदारी कभी दूसरे पर न दे पायेंगे।

अब जैसे, आदमी की तो जन्मों-जन्मों की यात्रा है। उस जन्मों-जन्मों की यात्रा में उसने बहुत कुछ किया है। और कई बार ऐसा होता है कि वह बिलकुल पात्र होने के इंच भर पहले छूट गया। वे पिछले जन्मों की सारी स्मृतियां उसकी खो गयी हैं; उसे कुछ पता नहीं है। यदि आप पिछले जन्म में किसी साधना में लगे थे और निन्यानबे डिग्री तक पहुंच गये थे, सौवीं डिग्री तक नहीं पहुंचे थे, अब वह साधना भूल गयी, वह ज़ीवन भूल गया, वह सारी बात भूल गयी, लेकिन निन्यानबे डिग्री तक की जो आपकी स्थिति थी, वह आपके साथ है। एक दूसरा आदमी आपके पास में बैठा हुआ है; वह एक ही डिग्री पर रुक गया है; उसको भी कोई पता नहीं है। आप दोनों एक ही दिन ध्यान करने बैठे, तो भी आप दोनों अलग-अलग तरह के आदमी हैं। उसकी एक डिग्री बढ़ेगी तो अभी कोई घटना घटनेवाली नहीं है; वह दो ही डिग्री पर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पहुंचेगा। आपकी एक डिग्री बढ़ेगी तो घटना घट जानेवाली है। यह आकस्मिक ही होगी आपके लिए घटना; क्योंकि आपको कोई अंदाज भी नहीं है कि निन्यानबे डिग्री पर आप थे। आप कहां हैं, इसका अंदाज नहीं है। और इसलिए एकदम से पहाड़ टूट पड़ सकता है। उसकी तैयारी चाहिए।

और जब मैं कहता हूं दुर्घटना, तो मेरा मतलब इतना ही है कि जिसकी हमारी तैयारी नहीं थी। अनिवार्य रूप से दुर्घटना का मतलब दुख नहीं होता; दुर्घटना का इतना ही मतलब होता है कि जिसके घटने के लिए हम अभी तैयार न थे। दुर्घटना का मतलब अनिवार्य रूप से बुरा नहीं होता। अब एक आदमी को एक लाख रुपये की लॉटरी मिल गयी हो, तो कुछ बुरा नहीं हो गया है, लेकिन मृत्यु घटित हो जायेगी; वह मर सकता है। ...एक लाख ! यह उसके हृदय की गति को बंद कर जा सकती है। दुर्घटना का मतलब इतना है कि जिस घटना के लिए हम अभी तैयार न थे।

और इससे उलटा भी हो सकता है कि अगर कोई आदमी तैयार हो और उसकी मृत्यु आ जाये, तो जरूरी नहीं है कि मृत्यु दुर्घटना ही हो। अगर कोई आदमी तैयार हो, सुकरात जैसी हालत में हो, तो वह मृत्यु को भी आलिंगन करके स्वागत कर लेगा, और उसके लिए तत्काल समाधि बन जायेगी, दुर्घटना नहीं; क्योंकि उस मरते क्षण को वह इतने प्रेम और आनंद से स्वीकार करेगा कि वह उस तत्व को भी देख लेगा जो नहीं मरता है। हम तो मरने को इतनी घबड़ाहट से स्वीकार करते हैं कि मरने के पहले बेहोश हो जाते हैं; मरने की प्रक्रिया हम होशपूर्वक नहीं अनुभव कर पाते, मरने के पहले बेहोश हो जाते हैं। इसलिए हम बहुत बार मरे हैं, लेकिन मरने की प्रक्रिया का हमें कोई पता नहीं। एक बार भी हमें पता चल जाये कि मरना क्या है, तो फिर हमें कभी भी यह ख्याल नहीं उठेगा कि मैं और मर सकता हूं; क्योंकि मौत की घटना घट जायेगी और आप पार खड़े रह जायेंगे। लेकिन यह होश में होना चाहिए।

तो मृत्यु भी किसी के लिए सौभाग्य हो सकती है; और प्रसाद, ग्रेस भी किसी के लिए दुर्भाग्य हो सकता है। इसलिए साधना दोहरी है : पुकारना है, बुलाना है, खोजना है, जाना है, और साथ-साथ तैयार भी होते चलना है कि जब आ जाये द्वार पर प्रकाश, तो ऐसा न हो कि प्रकाश भी हमें अंधेरा ही सिद्ध हो और अंधा कर जाये। इसमें एक बात अगर ख्याल रखेंगे जो मैंने पहले कही, तो अड़चन न होगी। अगर परमात्मा को व्यक्ति मान लेंगे तो फिर बहुत अड़चन हो जाती है, अगर शक्ति मानेंगे तब कोई अड़चन नहीं।

व्यक्ति मानकर बहुत कठिनाई हो गयी है। और हमारे मन की इच्छा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ऐसी होती है कि व्यक्ति हो; क्योंकि व्यक्ति बनाकर हम उसको रिस्पांसिबल (जिम्मेदार) बना देते हैं; तो जिम्मेदारी अपनी पूरी नहीं रह जाती, उसकी भी कुछ हो जाती है।

और हम तो छोटी-छोटी चीजों के लिए उसको उत्तरदायी बनाते हैं, बड़ी चीजों की तो बात अलग है। एक आदमी को नौकरी मिल जाये तो परमात्मा को धन्यवाद देता है; नौकरी छूट जाये तो परमात्मा पर नाराज होता है; किसी को फोड़ा-फुसी हो जाये तो कहता है, परमात्मा ने कर दिया; किसी का फोड़ा-फुन्सी ठीक हो जाये तो वह कहता है : भगवान की कृपा से ठीक हो गया, लेकिन हम कभी ख्याल नहीं करते कि हम कैसे काम भगवान से ले रहे है! और कभी यह ख्याल नहीं करते कि बड़ी इगोसेंट्रिक (अहंकेंद्रित) धारणा है यह कि मेरे फोड़े-फुन्सी की फिक्र भी भगवान कह रहा है... कि हमारा एक रुपया गिर गया और सड़क पर लौटकर मिल गया तो हम कहते हैं, भगवान की कृपा है!

मेरे एक रुपये का भी हिसाब-किताब जो है वह भगवान रख रहा है, यह सोचकर भी मन को बड़ी तृप्ति मिलती है, क्योंकि मैं तब इस सारे जगत के केंद्र पर खड़ा हो गया... और परमात्मा से भी जो मैं व्यवहार कर रहा हूं, वह एक नौकर का व्यवहार है। उससे भी हम एक पुलिसवाले का उपयोग ले रहे हैं... कि वह तैयार खड़ा है, हमारे रुपये को बचा रहा है।

व्यक्ति बनाने से यह सुविधा है कि जिम्मेदारी उस पर टाल सकते हैं, लेकिन साधक जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है। असल में साधक होने का एक ही अर्थ है कि अब इस जगत में वह किसी बात के लिए किसी और को जिम्मेदार ठहराने नहीं जायेगा। अब दुख है तो अपना है, सुख है तो अपना है, शांति है तो अपनी है, अशांति है तो अपनी है – कोई उत्तरदायी नहीं, कोई रिसपांसिबल नहीं, मैं ही उत्तरदायी हूं। अगर टांग टूट जाती है गिरकर, तो ग्रेविटेशन (गुरुत्वाकर्षण) जिम्मेदार नहीं, मैं ही जिम्मेवार हूं। ऐसी मनोदशा हो तो फिर बात समझ में आ आयेगी; और तब... तब दुर्घटना का अर्थ और होगा। और इसलिए मैंने कहा कि प्रसाद भी तैयार व्यक्तित्व को उपलब्ध होता है, तो कल्याणकारी, मगंलदायी हो जाता है।

असल में हर चीज की एक घड़ी है, हर चीज का एक ठीक क्षण है, और ठीक क्षण और ठीक घड़ी को चूक जाना बड़ी दुर्घटना है। इस ख्याल से।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

गुरु और शिष्य का गलत संबंध

प्रश्न : आपने पिछली एक चर्चा में कहा कि शक्तिपात का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो जाता है, इसलिए माध्यम से बार-बार संबंध होना चाहिए। तो यह क्या गुरुरूपी किसी व्यक्ति पर परावलंबन नहीं हुआ ?

यह हो सकता है परावलंबन। अगर कोई गुरु बनने को उत्सुक हो, कोई बनाने को उत्सुक हो, तो यह परावलंबन हो जायेगा। इसलिए भूल के भी शिष्य मत बनना, और भूलकर भी गुरु मत बनाना, यह परावलंबन हो जायेगा। लेकिन, यदि शिष्य और गुरु बनने का कोई सवाल नहीं है, तब कोई परावलंबन नहीं है; तब जिससे आप सहायता ले रहे हैं, वह अपना ही आगे गया रूप है। अपना ही आगे गया रूप है – कौन बने गुरु, कौन बने शिष्य ?

मैं निरंतर कहता रहा हूं कि बुद्ध ने अपने पिछले जन्मों के स्मरण में एक बात कही है। कहा है कि मैं तब अज्ञानी था और एक बुद्ध पुरुष परमात्मा को उपलब्ध हो गये थे। तो मैं उनके दर्शन करने गया था। बुद्ध पिछले जन्म में, जब वे बुद्ध नहीं हुए थे, किसी बुद्ध पुरुष के दर्शन करने गये थे, झुककर उन्होंने प्रणाम किया था, और वे प्रणाम करके खड़े भी नहीं पाये थे कि बहुत मुश्किल में पड़ गये, क्योंकि वह बुद्ध पुरुष उनके चरणों में झुके और उन्हें प्रणाम किया। तो उन्होंने कहा, यह आप क्या कर रहे हैं ? मैं आपके पैर छुऊं, यह तो ठीक, आप मेरे पैर छूते हैं ! तो उन्होंने कहा था कि तू मेरे पैर छुए और मैं तेरे पैर न छुऊं तो बड़ी गलती हो जायेगी; गलती इसलिए हो जायेगी कि मैं तेरा ही दो कदम आगे गया एक रूप हूं। और जब मैं तेरे पैर में झुक रहा हूं तो तुझे याद दिला रहा हूं कि तू मेरे पैरों पर झुका, वह ठीक किया, लेकिन इस भूल में मत पड़ जाना कि तू अलग और मैं अलग – और इस भूल में मत पड़ जाना कि तू अज्ञानी और मैं ज्ञानी; घड़ी भर की बात है कि तू भी ज्ञानी हो जायेगा। यानी ऐसे ही कि जब मेरा दायां पैर आगे जाता है तो बायां पीछे छूट जाता है; असल में दायां आगे जाये, इसके लिए भी बायें को पीछे थोड़ी देर छूटना पड़ता है।

गुरु और शिष्य का संबंध घातक है। गुरु और शिष्य का असंबंधित रूप बड़ा सार्थक है। असंबंधित रूप का मतलब ही यह होता है कि जहां अब दो नहीं हैं। जहां दो हैं, वहीं संबंध हो सकता है। तो यह तो समझ में भी आ सकता है कि शिष्य को यह ख्याल हो कि गुरु है, क्योंकि शिष्य अज्ञानी है; लेकिन जब गुरु को भी यह ख्याल होता है कि गुरु है, तब फिर हद हो जाती है; तब उसका मतलब हुआ कि अंधा अंधे का मार्गदर्शन कर रहा है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

और इसमें आगे जानेवाला अंधा ही ज्यादा खतरनाक है। क्योंकि वह एक दूसरे अंधे को यह भरोसा दिलवा रहा है कि बेफिक्र रहो।

गुरु और शिष्य के संबंध का कोई आध्यात्मिक अर्थ नहीं है। असल में इस जगत में हमारे सारे संबंध शक्ति के संबंध हैं; पावर पोलिटिक्स (शक्ति की राजनीति) के संबंध हैं। कोई बाप है, कोई बेटा है। बाप और बेटा... अगर प्रेम का संबंध हो तो बात और होगी; तब बाप को बाप होने का पता नहीं होगा, बेटे को बेटा होने का पता नहीं होगा। तब बेटा बाप का ही बाद में आया हुआ रूप होगा, और बाप बेटे का पहले आ गया रूप होगा। स्वभावतः, बात भी यही है।

एक बीज हमने बोया है और वृक्ष आया; और फिर उस वृक्ष में हजार बीज लग गये। वह पहले बीज और इन बीजों के बीच क्या संबंध है ? वह पहले आ गया था, यह पीछे आया है, उसी की यात्रा है – उस बीज की यात्रा है जो वृक्ष के नीचे टूटकर बिखर गया है। बाप पहली कड़ी थी, यह बेटा दूसरी कड़ी है... उसी शृंखला में। लेकिन तब शृंखला है और दो व्यक्ति नहीं हैं। तब अगर बेटा अपने बाप के पैर दबा रहा है तो सिर्फ बीती हुई कड़ी को... स्वभावतः, बीती हुई कड़ी को वह सम्मान दे रहा है, बीती हुई कड़ी की सेवा कर रहा है – जो जा रहा है उसको वह आदर दे रहा है, क्योंकि उसके बिना वह आ भी नहीं सकता था; वह उससे आया है। और अगर बाप अपने बेटे को बड़ा कर रहा है, पाल रहा है, पोस रहा है, भोजन-कपड़े की चिंता कर रहा है, तो यह किसी दूसरे की चिंता नहीं है, वह अपने ही एक रूप को संभाल रहा है। और अपने जाने के पहले उसे... अगर इसे हम ऐसा कहें कि बाप अपने बेटे में फिर से जवान हो रहा है, तो कठिनाई नहीं है। तब संबंध की बात नहीं है, तब एक और बात है : तब एक प्रेम है जहां संबंध नहीं है। लेकिन आमतौर से जो बाप और बेटे के बीच संबंध है, वह... वह राजनीति का संबंध है। बाप ताकतवर है, बेटा कमजोर है, बाप बेटे को दबा रहा है; बाप बेटे को कह रहा है कि तू अभी कुछ भी नहीं, मैं ही सब कुछ हूं। तो उसे पता नहीं कि आज नहीं कल, बेटा ताकतवर हो जायेगा, बाप कमजोर हो जायेगा और तब बेटा उसे दबाना शुरू करेगा कि मैं सब कुछ हूं और तू कुछ भी नहीं है।

यह जो गुरु और शिष्य के बीच जो संबंध है, पति और पत्नी के बीच जो संबंध है, ये सब पर्वरशंस हैं, विकृतियां हैं। नहीं तो पति और पत्नी के बीच संबंध की क्या बात है ! दो व्यक्तियों ने ऐसा अनुभव किया है कि वे एक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हैं, इसलिए वे साथ हैं। लेकिन नहीं, ऐसा मामला नहीं है : पति पत्नी को दबा रहा है – अपने ढंगों से; पत्नी पति को दबा रही है, अपने ढंगों से – और वे एक-दूसरे के ऊपर पूरी की पूरी ताकत और पावर-पोलिटिक्स (शक्ति की राजनीति) का पूरा प्रयोग कर रहे हैं।

गुरु-शिष्य घूमकर फिर ऐसी की ऐसी बात है। गुरु शिष्य को दबा रहा है, और शिष्य गुरु को मरने की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वे कब गुरु बन जायें। या अगर गुरु ज्यादा देर टिक जाये तो बगावत शुरू हो जायेगी; इसलिए ऐसा गुरु खोजना बहुत मुश्किल है जिसके शिष्य उससे बगावत न करते हों। ऐसा गुरु खोजना मुश्किल है जिसके शिष्य उसके दुश्मन न हो जाते हों। जो भी चीफ डिसाइपल (प्रमुख शिष्य) है वह दुश्मन होनेवाला है। तो चीफ डिसाइपल जरा सोचकर बनाना चाहिए। कहीं भी वह अनिवार्य है; क्योंकि वह जो शक्ति का दबाव है, उसकी बगावत, रिबेलियन भी होती है। अध्यात्म का इससे कोई लेना-देना नहीं।

तो मेरी समझ में आता है कि बाप बेटे को दबाये, क्योंकि दो अज्ञानियों की बात है, माफ की जा सकती है; अच्छी तो नहीं है; सही जा सकती है। पति पत्नी को दबाये, पत्नी पति को दबाये, चल सकता है; शुभ तो नहीं है, चलना तो नहीं चाहिए, लेकिन फिर भी छोड़ा जा सकता है। लेकिन गुरु भी शिष्य को दबा रहा है, तब फिर बड़ा मुश्किल हो जाता है। कम से कम यह तो जगह ऐसी है जहां कोई दावेदार नहीं होना चाहिए... कि मैं जानता हूं, और तुम नहीं जानते।

अब गुरु और शिष्य के बीच क्या संबंध है ? दावेदार है एक, वह कहता है, मैं जानता हूं, और तुम नहीं जानते... तुम अज्ञानी हो और मैं ज्ञानी हूं; इसलिए अज्ञानी को ज्ञानी के चरणों में झुकना चाहिए। मगर हमें यह पता ही नहीं है कि यह कैसा ज्ञानी है जो किसी से कह रहा है कि चरणों में झुकना चाहिए ! यह महाअज्ञानी हो गया। हां, इसे कुछ थोड़ी बातें पता चल गयी हैं, शायद उसने कुछ किताबें पढ़ ली हैं, शायद परंपरा से कुछ सूत्र उसको उपलब्ध हो गये हैं, वह उनको दोहराना जान गया है। इससे ज्यादा कुछ और मामला नहीं है।

दावेदार गुरु अज्ञानी

शायद तुमने एक कहानी न सुनी हो। मैंने सुना है, एक बिल्ली थी जो सर्वज्ञ हो गयी थी। बिल्लियों में उसकी बड़ी ख्याति हो गयी, क्योंकि वह तीर्थंकर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

की हैसियत पा गयी थी। और उसके सर्वज्ञ होने का, आलनोइंग होने का कारण यह था कि वह एक पुस्तकालय में प्रवेश कर जाती थी, और उस पुस्तकालय के बाबत सभी कुछ जानती थी। सभी कुछ का मतलब – कहां से प्रवेश करना, कहां से निकलना, किस किताब की आड़ में बैठने से ज्यादा आराम होता है, और कौन सी किताब ठंड में भी गर्मी देती है। तो बिल्लियां में यह खबर हो गयी थी कि अगर पुस्तकालय के संबंध में कुछ भी जानना हो, तो वह बिल्ली आलनोइंग है, वह सर्वज्ञ है।

और निश्चित ही, जो बिल्ली पुस्तकालय के बाबत सब जानती है – जो भी पुस्तकालय में है, सब जानती है, तो उसके ज्ञानी होने में क्या कमी थी! उस बिल्ली को शिष्य भी मिल गये थे। लेकिन, उसको कुछ भी पता नहीं था; किताब का पता उसे इतना ही था कि उसकी आड़ में बैठकर छिपने की सुविधा है। उस किताब के बाबत उसे इतना ही पता था कि उसकी जिल्द जो है वह ऊनी कपड़े की है, उसमें ठंड में भी गर्मी मिलती है। यही जानकारी थी उसकी किताब के बाबत, और उसे कुछ भी पता नहीं था कि भीतर क्या है। और भीतर का बिल्ली को पता हो भी कैसे सकता था!

आदमियों में भी ऐसी आलनोइंग बिल्लियां हैं, जिनको किताबों की आड़ में छिपने का पता है; जिन पर आप हमला करो तो फौरन रामायण बीच में कर लेंगे – और कहेंगे : रामायण में ऐसा लिखा है; और आपकी गर्दन को रामायण से दबा देंगे। ...गीता में ऐसा लिखा है। अब गीता से कौन झगड़ा करेगा? अगर मैं सीधा कहूं कि मैं ऐसा कहता हूं तो मुझसे झगड़ा हो सकता है, लेकिन मैं कहता हूं, गीता ऐसा कहता है, मैं गीता को बीच में ले लेता हूं; गीता की आड़ में मुझे सुरक्षा है। गीता गर्मी भी देती है ठंड में, व्यवसाय भी देती है, दुश्मन से बचाव के लिए शस्त्र भी बन जाती, आभूषण भी बन जाती; और गीता के साथ खेल खेला जा सकता है। लेकिन गीता में जो है, ऐसे आदमी को उतना ही पता है, जितना कि उस बिल्ली को जो पुस्तकालय में आराम करती थी; उससे भिन्न कुछ पता नहीं है। और यह तो हो सकता है कि उस पुस्तकालय में रहते-रहते बिल्ली किसी दिन जान जाये कि किताब में क्या है, लेकिन ये किताब जाननेवाले गुरु बिलकुल भी नहीं जान पायेंगे; क्योंकि जितनी इनको किताब कंठस्थ हो जायेगी, उतना ही इनको जानने की कोई जरूरत न रह जायेगी; इनको भ्रम पैदा होगा कि हमने जान लिया है।

जब भी कोई आदमी दावा करे कि जान लिया है, तब समझना कि अज्ञान मुखर हो गया। दावेदारी अज्ञान है। लेकिन जब कोई आदमी जानने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

के दावे से भी झिझक जाये, तब समझना कि कहीं कोई झलक और किरण मिलनी शुरू हुई। लेकिन ऐसा आदमी गुरु न बन सकेगा। ऐसा आदमी गुरु बनने की कल्पना भी नहीं कर सकता; क्योंकि गुरु के साथ अथॉरिटि है; गुरु के साथ दावा जरूरी है। गुरु का सतलब ही है कि मैं जानता हूं, पक्का जानता हूं; तुम्हें अब जानने की कोई जरूरत नहीं, मुझसे जान लो।

तो जहां अथॉरिटि है, जहां आप्तता है, और जहां दावा है कि मैं जानता हूं, वहां दूसरे की अन्वेषण और खोज की वृत्ति की हत्या भी है; क्योंकि अथॉरिटि बिना हत्या किये नहीं रह सकती; दावेदार दूसरे की गर्दन काटे बिना नहीं रह सकता; क्योंकि यह भी डर है कि कहीं तुम पता न लगा लो, अन्यथा मेरे अधिकार का क्या होगा, मेरी अथॉरिटि का क्या होगा। तो मैं तुम्हें रोकूंगा – अनुयायी बनाऊंगा, शिष्य बनाऊंगा। शिष्यों में भी हायरेरकी (पदानुक्रम) बनाई जायेगी कि कौन प्रधान है, कौन कम प्रधान है। और सब वही जाल खड़ा हो जायेगा जो राजनीति का जाल है, जिससे अध्यात्म का कोई भी संबंध नहीं है।

शक्तिपात प्रोत्साहन बने, गुलामी नहीं

तो जब मैं कहता हूं कि शक्तिपात जैसी घटना परमात्मा के प्रकाश और उसकी विद्युत को, ऊर्जा को उपलब्ध करने की घटना किन्हीं व्यक्तियों के करीब सुगमता से घट सकती है, तो मैं यह नहीं कह रहा हूं कि तुम उन व्यक्तियों को पकड़ कर रुक जाना, न यह कह रहा हूं कि तुम परतंत्र हो जाना, न यह कह रहा हूं कि तुम उन्हें गुरु बना लेना, न यह कह रहा हूं कि तुम अपनी खोज बंद कर देना – बल्कि, सच तो यह है कि जब भी तुम्हें किसी व्यक्ति के करीब वह घटना घटेगी, तो तुम्हें तत्काल ऐसा लगेगा कि जब दूसरे व्यक्ति के माध्यम से आकर भी इस घटना ने इतना आंनद दिया, तो जब सीधी अपने माध्यम से आती होगी, तो ...तो बात ही और हो जायेगी। आखिर दूसरे से आकर थोड़ी तो जूठी हो ही जाती है; थोड़ी तो बासी हो जाती है। मैं बगीचे में गया और वहां के फूलों की सुगंध से भर गया, और फिर तुम मेरे पास आये, और मेरे पास से तुम्हें फूलों की सुगंध आयी, लेकिन मेरे पसीने की बदबू भी उसमें थोड़ी मिल ही जायेगी; और तब तक फीकी भी बहुत हो जायेगी।

तो जब मैं कह रहा हूं कि यह प्राथमिक रूप से बड़ी उपयोगी है कि तुम्हें खबर तो लग जाये कि बगीचा भी है, फूल भी हैं, तब तुम अपनी यात्रा पर जा सकोगे। अगर गुरु बनाओगे तो रुकोगे।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

मील के पत्थरों के पास हम रुकते नहीं हैं, हालांकि मील के पत्थर, जिनको हम गुरु कहते हैं, उनसे बहुत ज्यादा बताते हैं, पक्की खबर देते हैं : कितने मील चल चुके और कितने मील मंजिल की यात्रा बाकी है। अभी कोई गुरु इतनी पक्की खबर नहीं देता। लेकिन, फ़िर भी मील के पत्थर की न हम पूजा करते हैं, न उसके पास बैठ जाते हैं। और अगर मील के पत्थर के पास हम बैठ जायेंगे तो हम पत्थर से बदतर सिद्ध होंगे, क्योंकि वह पत्थर सिर्फ बताने को था कि आगे है; वे रोकनेवाले नहीं हैं, न रोकनेवाले का कोई अर्थ है। लेकिन अगर पत्थर बोल सकता होता तो वह कहता, कहां जा रहे हो ? मैंने तुम्हें इतना बतायां और तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो ! बैठो, तुम मेरे शिष्य हो गये, क्योंकि मैंने तुम्हें बताया कि दस मील चल चुके और बीस मील अभी बाकी है; अब तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं है, मेरे पीछे रहो।

तो पत्थर बोल नहीं सकता, इसलिए गुरु नहीं बनता; आदमी बोल सकता है, इसलिए गुरु बन जाता है; क्योंकि वह कहता है : मेरे प्रति कृतज्ञ रहो, अनुगृहीत रहो, ग्रेटिट्यूट प्रकट करो, मैंने तुम्हें इतना बताया है।

और ध्यान रहे, जो ऐसा आग्रह करता हो, अनुग्रह मांगता हो, समझना कि उसके पास बताने को कुछ भी न था, कोई सूचना थी – जैसे मील के पत्थर के पास सूचना है। उसे कुछ पता थोड़े ही है कि कितनी मंजिल है और कितनी नहीं है; उसे कुछ पता नहीं है, सिर्फ एक सूचना उसके ऊपर खुदी है। वह उस सूचना को दोहराये चले जा रहा है – कोई भी निकलता है, उसी को दोहराये चला जा रहा है।

ऐसे ही, अनुग्रह जब तुमसे मांगा जाये तो सावधान हो जाना। और व्यक्तियों के पास नहीं रुकना है, जाना तो है अव्यक्ति के पास; जाना तो है उसके पास जहां कोई आकार और सीमा नहीं। लेकिन व्यक्तियों से भी उसकी झलक मिल सकती है, क्योंकि अंततः व्यक्ति हैं तो उसी के। जैसा मैंने कल कहा कि कुएं से भी सागर का पता चलता है, ऐसे ही किसी व्यक्ति से भी उस अनंत का पता चलता है; अगर तुम झांक सको, तो तुम्हें पता चल सकता है। लेकिन कहीं निर्भर नहीं होना है, और किसी चीज को परतंत्रता नहीं बना लेना है। लेकिन सभी तरह के संबंध परतंत्रता बनते हैं – चाहे वह पति-पत्नी का हो, चाहे बाप-बेटे का हो, चाहे गुरु-शिष्य का हो; जहां संबंध है वहां परतंत्रता शुरू हो जायेगी।

तो आध्यात्मिक खोजी को संबंध ही नहीं बनाने। और पति-पत्नी के बनाये रखें तो कोई बहुत हर्जा नहीं है, क्योंकि उनसे कोई बाधा नहीं है, वे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

इर्रिलेवेंट (असंगत) हैं। लेकिन मजा यह है कि वह पति-पत्नी के, बाप-बेटे के संबंध तोड़कर एक नया संबंध बनाता है जो बहुत खतरनाक है; वह गुरु-शिष्य का संबंध बनाता है।

आध्यात्मिक संबंध का कोई मतलब ही नहीं होता। सब संबंध सांसारिक हैं। संबंध मात्र सांसारिक हैं। अगर हम ऐसा कहें कि संबंध ही संसार है, तो कोई कठिनाई नहीं होगी।

असंग, अकेले हो तुम। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि अहंकार; क्योंकि तुम्हीं अकेले हो, ऐसा नहीं है, और भी अेकेले हैं। और तुमसे कोई दो कदम आगे है; उसके अगर तुम्हें पैरों की ध्वनि भी मिल जाती है कि कोई दो कदम आगे है तो दो कदम आगे के रास्ते की भी खबर मिल जाती है। कोई तुमसे दो कदम पीछे है, कोई तुम्हारे साथ है, कोई दूर है – ये सब चारों तरफ हजार-हजार, अनंत-अनंत आत्माएं यात्रा कर रही हैं। इस यात्रा में सब संगी-साथी हैं, फासला आगे-पीछे का है। इससे जितना फायदा ले सको वह लेना, लेकिन इसको गुलामी मत बनाना। यह गुलामी संबंध बनाने से शुरू हो जाती है।

इसलिए परतंत्रता से बचना, संबंध से बचना; आध्यात्मिक संबंध से सदा बचना। सांसारिक संबंध उतना खतरनाक नहीं है, क्योंकि संसार का मतलब ही संबंध है; वहां कोई इतने अड़चन की बात नहीं है। और जहां से तुम्हें खबर मिले, वहां से खबर ले लेना। और यह नहीं कह रहा हूं मैं कि तुम धन्यवाद मत देना। यह नहीं कह रहा हूं। इसलिए कठिनाई होती है; इसलिए जटिलता हो जाती। कोई अनुग्रह मांगे, यह गलत है, लेकिन तुम धन्यवाद न दो तो उतना ही गलत है। मील के पत्थर को भी धन्यवाद तो दे ही देना जाते वक्त... कि तेरी बड़ी कृपा; वह सुने या न सुने।

तो इससे बड़ी भ्रांति होती है... जब हम कहते हैं कि गुरु अनुग्रह न मांगे तो आमतौर से आदमी के अहंकार को एक रस मिलता है; वह सोचता है : बिलकुल ठीक है, किसी को धन्यवाद भी देने की जरूरत नहीं। तब भूल हो रही है; यह बिलकुल दूसरे पहलू से बात को पकड़ा जा रहा है। यह मैं नहीं कह रहा हूं कि तुम धन्यवाद मत देना, मैं यह कह रहा हूं कि कोई अनुग्रह मांगे, यह गलत है। लेकिन तुम अनुगृहीत न होओ तो उतना ही गलत हो जायेगा। तुम तो अनुगृहीत होना ही। लेकिन वह अनुग्रह बांधेगा नहीं; क्योंकि जो मांगा नहीं जाता, वह कभी नहीं बांधता है; जो दान है, वह कभी नहीं बांधता है। अगर मैंने तुम्हें धन्यवाद दिया है, तो वह कभी नहीं बांधता और

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

अगर तुमने मांगा है, फिर मैं दूं या न दूं, उपद्रव शुरू हो जाता है।

और जहां से तुम्हें झलक मिले उसकी, वहां से झलक को ले लेना। और वह झलक चूंकि दूसरे से आयी है, इसलिए बहुत स्थायी नहीं होगी; वह खोयेगी बार-बार। स्थायी तो वही होगी जो तुम्हारी है। इसलिए उसे तुम्हें बार-बार... बार-बार लेना पड़ेगा। और अगर डरते हो परतंत्रता से तो अपनी खोजना। परतंत्रता से डरने से कुछ भी न होगा, दूसरे पर निर्भर होने का भय भी लेने की जरूरत नहीं है; क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता : मैं तुम पर परतंत्र हो जाऊं तो भी संबंधित हो गया, और तुमसे डर के भाग जाऊं तो भी संबंधित हो गया और परतंत्र हो गया। इसलिए चुपचाप लेना, धन्यवाद देना, बढ़ जाना।

और अगर लगे कि कुछ है जो आता है और खो जाता है तो फिर अपना स्रोत खोजना, जहां से वह कभी न खोये; जहां से खोने का कोई उपाय न रह जाये। अपनी संपदा ही अनंत हो सकती है। दूसरे से मिला हुआ दान चुक ही जाता है। भिखारी मत बन जाना कि दूसरे से ही मांगते चले जाओ। वह दूसरे से मिला हुआ भी तुम्हें अपनी ही खोज पर ले जाये ...और यह तभी होगा जब तुम दूसरे से कोई संबंध नहीं बनाते हो, धन्यवाद देकर आगे बढ़ जाते हो।

शक्ति है निष्पक्ष

प्रश्न : आपने कहा कि परमात्मा एक शक्ति है और उसको मनुष्य के जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं है, कोई सरोकार नहीं है। कठोपनिषद में एक श्लोक है जिसका मतलब है कि वह परमात्मा जिसको पसंद करता है उसको ही मिलता है। तो उसकी पसंदगी का कारण व आधार क्या है ?

असल में मैंने यह नहीं कहा कि 'उसकी' आपमें कोई रुचि नहीं है। यह मैंने नहीं कहा। मैंने यह नहीं कहा कि परमात्मा की आपमें कोई रुचि नहीं है। उसकी रुचि न हो तो आप हो ही नहीं सकते। यह मैंने नहीं कहा। यह मैंने नहीं कहा... और, यह भी मैंने नहीं कहा कि वह आपके प्रति तटस्थ है; यह भी मैंने नहीं कहा। और हो भी नहीं सकता तटस्थ; क्योंकि आप उससे कुछ अलग नहीं हो; आप उसके ही फैले हुए विस्तार हो। जो कहा, वह मैंने यह कहा कि आपमें उसकी कोई विशेष रुचि नहीं है। यह, दोनों बातों में फर्क है। आपमें उसकी कोई विशेष रुचि नहीं है। आपके लिए वह नियम से बाहर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नहीं जायेगी शक्ति। और अगर आप अपने सिर पर पत्थर मारेंगे, तो लहू बहेगा और प्रकृति आपमें विशेष रुचि न लेगी। रुचि तो पूरी ले रही है, क्योंकि खून जब बह रहा है, वह भी रुचि है; वह भी उसके ही द्वारा बह रहा है। आपने जो किया है, उसमें पूरी रुचि ली गयी है। आप अगर नदी में बहकर डूब रहे हैं, तब भी प्रकृति पूरी रुचि ले रही है – डुबाने में ले रही है। लेकिन विशेष रुचि नहीं है – कोई स्पेशल, कोई अतिरिक्त आपमें कोई रुचि नहीं है कि नियम तो था डुबाने का और बचाया जाये; नियम तो था कि आप जब छत पर से गिरें तो सिर टूट जाये, लेकिन छत पर से गिरें और सिर न टूटे, ऐसी विशेष रुचि नहीं है।

जिन्होंने ईश्वर को व्यक्ति माना, उन्होंने इस तरह की विशेष रुचियों का फिक्शन (काल्पनिक-कथा) खड़ा किया है कि प्रह्लाद को वह जलायेगा नहीं आग में; पहाड़ से गिराओ तो चोट नहीं लगेगी। ये जो कहानियां हैं, ये हमारी आकांक्षाएं हैं – ऐसा हम चाहते हैं कि ऐसा हो; इतनी विशेष रुचि हममें हो; हम उसके केंद्र बन जायें। यह मैं नहीं कह रहा हूं कि रुचि नहीं है, मैं यह कह रहा हूं कि उसकी रुचि नियम में है। शक्ति की रुचि सदा नियम में होती है। व्यक्ति की रुचि विशेष बन सकती है। व्यक्ति पक्षपाती हो सकता है, शक्ति सदा निष्पक्ष है। निष्पक्षता ही उसकी रुचि है। इसलिए जो नियम में होगा, वह होगा; जो नियम में नहीं होगा, वह नहीं होगा। परमात्मा की तरफ से मिरेकल नहीं हो सकते, चमत्कार नहीं हो सकते।

जाननेवालों की विनम्रता

और वह जो दूसरा सूत्र आप कह रहे हैं, कठोपनिषद का, उसके मतलब बहुत और हैं। उसमें कहा गया है कि उसकी जिसके प्रति पसंद होती, वह जिस पर प्रसन्न होता, वह जिस पर आनंदित होता, उसे ही मिलता है। स्वभावतः आप कहेंगे कि यह तो वही बात हो गयी कि उसकी विशेष रुचि जिसमें होती है। नहीं, यह बात नहीं है। असल में आदमी की बड़ी तकलीफ है। और जब हमें किसी सत्य को कहना होता है तो उसके बहुत पहलू हैं। असल में जिनको वह मिला है, उनका यह कहना है... जिनको 'वह' मिला है, उनका यह कहना है कि हमारे प्रयास से क्या हो सकता था ! हम क्या थे ! हम तो नाकुछ थे, हम तो धूल के कण भी न थे, फिर भी हमें वह मिल गया ! और अगर हमने दो घड़ी ध्यान किया था... तो उसका भी क्या मूल्य था कि हम दो घड़ी चुप बैठ गये थे। जो मिला है, वह अमूल्य है। तो जो हमने किया

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

था और जो मिला है, इसमें काई तालमेल ही नहीं है। तो जिनको मिला है, वे कहते हैं कि नहीं, यह अपने प्रयास का फल नहीं है, यह उसकी कृपा है... कि उसने पसंद किया तो मिल गया, अन्यथा हम क्या खोज पाते ! यह निरहंकार व्यक्ति का कहना है, जिसको पाकर पता चला है कि अपने से क्या हो सकता था।

लेकिन, यह जिनको नहीं मिला है, अगर उनकी धारणा बन जाये तो बहुत खतरनाक है; जिनको मिला है, उनकी तरफ से तो यह कहना बड़ा सुरुचिपूर्ण है... और बहुत... इसमें बड़ा ही सुसंस्कृत भाव है – यानी वे ये कह रहे हैं कि हम कौन थे कि वह हमें मिलता; हमारी क्या ताकत थी, हमारी क्या सामर्थ्य थी, हमारा क्या अधिकार था, हम कहां दावेदार थे, हम तो कुछ भी न थे, फिर भी वह हमें मिल गया; उसकी ही कृपा है, हमारा कोई प्रयास नहीं है। यह उनका कहना तो उचित है।

उनके कहने का मतलब सिर्फ यह है कि यह किसी प्रयास भर से नहीं मिल गया; यह कोई हमारी अहंकार की उपलब्धि नहीं है; यह कोई अचीवमेंट नहीं है, यह प्रसाद है।

यह उनका कहना तो बिलकुल ठीक है, लेकिन कठोनिषद पढ़कर आप दिक्कत में पड़ जाओगे। सभी शास्त्रों को पढ़कर आदमी दिक्कत में पड़ा है, क्योंकि वह कहना है जाननेवालों का और पढ़ रहे हैं न जाननेवाले – और वे उसको अपना कहना बना रहे हैं। तो न जाननेवाला कहता है कि ठीक है, फिर हमें क्या करना है ! जब वह उसकी पसंद से ही मिलता है, तो हम परेशान क्यों हो ! जिस पर उसकी इच्छा होती है, उसी को मिलता है, तो जब उसकी इच्छा होगी तब मिल जायेगा। तो हम क्यों परेशान हों ? हम क्यों कुछ करें ? तो जो निरहंकार का दावा था, वह हमारे लिए आलस्य की रक्षा बन जाता है। यह इतना बड़ा परिवर्तन है इन दोनों में... कि जमीन-आसमान का फर्क है। जो शून्यता का भाव था, वह हमारे लिए प्रमाद बन जाता है; हम कहते हैं : जिसको मिलना है उसको मिलेगा; जिसको नहीं मिलना है, नहीं मिलेगा।

ज्ञानियों के शास्त्र, अज्ञानियों के हाथ

अब अगस्तीन का एक वचन है, इससे मिलता-जुलता, जिसमें वह कहता है कि 'जिसको उसने चाहा, अच्छा बनाया; जिसको उसने चाहा, बुरा बनाया।' बड़ा खतरनाक मालूम होता है; क्योंकि अगर यह उसकी चाह से हो गया कि जिसको उसने अच्छा बनाना था, अच्छा बनाया; और जिसको बुरा बनाना था,

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

उसको बुरा बनाया; तो बात खत्म हो गयी। और हद्द पागल परमात्मा है कि किसी को बुरा बनाना चाहता है, और किसी को अच्छा बनाना चाहता है। न जाननेवाला जब इसको पढ़ेगा, तो इसके अर्थ बड़े खतरनाक हैं। लेकिन अगस्तीन जो कह रहा है, वह कुछ और ही बात कह रहा है। वह अच्छे आदमी से कह रहा है कि तू अहंकार मत कर कि तू अच्छा है; क्योंकि जिसको उसने चाहा, अच्छा बनाया; वह बुरे आदमी से कह रहा है : परेशान मत हो, चिंता से मत घिर; उसने जिसको बुरा बनाया, बुरा बनाया।

वह बुरे आदमी का भी दंश खींच रहा है, वह अच्छे आदमी का भी दंश खींच रहा है; लेकिन वह जाननेवाले की तरफ से है। लेकिन बुरा आदमी सुन रहा है, वह कह रहा है : तो फिर ठीक है, तो फिर मैं बुरा ही करूं, क्योंकि अपना तो कोई सवाल ही नहीं; जिससे उसने बुरा करवाया, वह बुरा कर रहा है। और अच्छे आदमी की भी यात्रा शिथिल पड़ गयी है, क्योंकि वह कह रहा है कि अब क्या होना है; वह जिसको अच्छा बनाता है, बना देता है; जिसको नहीं बनाता, नहीं बनाता। तब जिंदगी बड़ी बेमानी हो जाती है।

सारी दुनिया में शास्त्रों से ऐसा हुआ है, क्योंकि शास्त्र हैं उनके कहे हुए वचन जो जानते हैं। और निश्चित ही जो जानता है वह शास्त्र-वास्त्र पढ़ने काहे के लिए जायेगा; जो नहीं जानता है वह शास्त्र पढ़ने चला जाता है। फिर दोनों के बीच उतना ही फर्क है जितना जमीन और आसमान के बीच फर्क है; और जो व्याख्या हम करते हैं वह हमारी है।

वह (शास्त्र) हमारी व्याख्या नहीं है। इसलिए मेरे इधर ख्याल में आता है कि दो तरह के शास्त्र रचे जाने चाहिए – ज्ञानियों के कहे हुए अलग, अज्ञानियों के पढ़ने के लिए अलग। ज्ञानियों के कहे हुए बिलकुल छिपा देने चाहिए; अज्ञानियों के हाथ में नहीं पड़ने चाहिए; क्योंकि अज्ञानी उनसे अर्थ तो अपना ही निकालेगा। और तब सब विकृत हो जाता है; सब विकृत हो गया है। ...मेरी बात ख्याल में आती है ?

आध्यात्मिक अनुभवों के नकली प्रतिरूप

प्रश्न : आपने कहा है कि शक्तिपात अहंशून्य व्यक्ति के माध्यम से होता है। और जो कहता है कि मैं तुम पर शक्तिपात करूंगा, तो जानना कि वह शक्तिपात नहीं कर सकता। लेकिन इस प्रकार शक्तिपात देनेवाले बहुत से व्यक्तियों से मैं परिचित हूं। उनके शक्तिपात से लोगों को ठीक शास्त्रोक्त ढंग से कुंडलिनी की प्रक्रियाएं होती हैं। क्या वे प्रामाणिक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नहीं हैं ? क्या वे झूठी प्रक्रियाएं हैं ? ...क्यों और कैसे ?

यह भी समझने की बात है। असल में दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जिसका नकली सिक्का न हो सके; दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जिसका फाल्स कॉइन न बनाया जा सके। सभी चीजों के नकली हिस्से भी हैं और नकली पहलू भी हैं। और अक्सर ऐसा होता है कि नकली सिक्का ज्यादा चमकदार होता है – उसे होना पड़ता है; क्योंकि चमक से ही वह चलेगा; असलीपन से तो चलता नहीं। असली सिक्का बेचमक का हो, तो भी चलता है। नकली सिक्का दावेदार भी होता है; क्योंकि असलीपन की जो कमी है, वह दावे से पूरी करनी पड़ती है। और नकली सिक्का एकदम आसान होता है, क्योंकि वह... उसका कोई मूल्य तो होता नहीं।

तो जितनी आध्यात्मिक उपलब्धियां हैं, सबका काऊंटर पार्ट (प्रतिरूप) भी है। ऐसी कोई आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं हैं, जिसका फाल्स, झूठा काऊंटर पार्ट नहीं है। अगर असली कुंडलिनी है, तो नकली कुंडलिनी भी है। नकली कुंडलिनी का क्या मतलब है ? और अगर असली चक्र हैं तो नकली चक्र भी हैं। और अगर असली योग की प्रक्रियाएं हैं तो नकली प्रक्रियाएं भी हैं। फर्क एक ही है, और वह फर्क यह है कि सब असली आध्यात्मिक तल में घटित होता है, और सब नकली साइकिक, मनस के तल में घटित होता है।

अब जैसे, उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को चित्त की गहराइयों में प्रवेश मिले, तो उसे बहुत से अनुभव होने शुरू होंगे। जैसे उसे सुगंध आ सकती है, बहुत अनूठी, जो उसने कभी नहीं जानी; संगीत सुनाई पड़ सकता है, बहुत अलौकिक, जो उसने कभी नहीं सुना; रंग दिखाई पड़ सकते है, ऐसे, जैसे कि पृथ्वी पर होते ही नहीं – लेकिन ये सब की सब बातें हिप्नोसिस से तत्काल पैदा की जा सकती हैं, बिना कठिनाई के – रंग पैदा किये जा सकते हैं, ध्वनियां पैदा की जा सकती है, स्वाद पैदा किया जा सकता है, सुगंध पैदा की जा सकती है – और इसके लिए किसी साधना से गुजरने की जरूरत नहीं है, इसके लिए सिर्फ बेहोश होने की जरूरत है... और तब जो भी सजेस्ट (सुझाव) किया जाये बाहर से, वह भीतर घटित हो जायेगा। अब यह फाल्स कॉइन (नकली सिक्का) है।

ध्यान में जो-जो घटित होता है, वह सब का सब हिप्नोसिस से भी घटित हो सकता है, लेकिन वह आध्यात्मिक नहीं है; वह सिर्फ डाला गया है, और ड्रीम है – स्वप्न जैसा है। अब जैसे, तुम एक स्त्री को प्रेम कर सकते हो जागते हुए भी, स्वप्न में भी कर सकते हो। और आवश्यक नहीं है कि स्वप्न की जो

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

स्त्री है, वह जागनेवाली स्त्री से कम सुंदर हो, अक्सर ज्यादा होगी। और समझ लो कि एक आदमी अगर सोये और फिर उठे न, सपना ही देखता रहे, तो उसे कभी भी पता न चलेगा कि जो वह देख रहा है, वह असली स्त्री है... कि जो वह देख रहा है, वह सपना है। कैसे पता चलेगा ? वह तो नींद टूटे तभी वह जांच कर सकता है कि अरे, जो मैं देख रहा था वह सपना था।

तो इस तरह की प्रक्रियाएं हैं जिनसे तुम्हारे भीतर सभी तरह के सपने पैदा किये जा सकते हैं – कुंडलिनी का सपना पैदा किया जा सकता है, चक्रों के सपने पैदा किये जा सकते हैं, अनुभूतियों के सपने पैदा किये जा सकते हैं, और अगर तुम उन सपनों में लीन रहो, और वे इतने सुखद है कि तोड़ने का मन न होगा, और ऐसे सपने हैं जिनको कि सपना कहना मुश्किल है, क्योंकि वे जागते में चलते हैं – दिवा-स्वप्न हैं, डे-ड्रीम्स हैं; और उनको साधा जा सकता है। तो तुम उनको जिंदगीभर साधकर गुजार सकते हो – और तुम आखिर में पाओगे : तुम कहीं भी नहीं पहुंचे हो; तुम सिर्फ एक लंबा सपना देखे हो।

इन सपनों को पैदा करने की भी तरकीबें हैं, व्यवस्थाएं हैं। और दूसरा व्यक्ति तुममें इनको पैदा कर सकता है। और तुम्हें तय करना मुश्किल हो जायेगा कि यह, दोनों में फर्क क्या है; क्योंकि दूसरे का तुम्हें पता नहीं है।

अगर एक आदमी को कभी असली सिक्का न मिला हो, और नकली सिक्का ही हाथ में मिला हो, तो वह कैसे तय करेगा कि यह नकली है ? नकली के लिए असली भी मिल जाना जरूरी है। तो जिस दिन व्यक्ति को कुंडलिनी का आविर्भाव होगा, उस दिन वह फर्क कर पायेगा कि इन दोनों में तो जमीन आसमान का फर्क है; यह तो बात ही और है।

अनुभवों की जांच का रहस्य-सूत्र

और ध्यान रहे, शास्त्रोक्त कुंडलिनी जो है, वह फाल्स (झूठी) होगी। उसके कारण हैं। अभी तुम्हें मैं एक सीक्रेट (रहस्य) की बात कहता हूं। उसके कारण हैं और बड़ा राज है। असल में जो भी बुद्धिमान लोग इस पृथ्वी पर हुए हैं, उन सबने प्रत्येक शास्त्र में कुछ बुनियादी भूल छोड़ दीये हैं, जो कि पहचान के लिए हैं। कुछ बुनियादी भूल छोड़ दी, जैसे मैंने तुमसे कहा कि इस मकान में... मैंने तुम्हें खबर दी इस मकान के बाहर से कि इस मकान में पांच कमरे हैं – छह कमरे हैं, यह मैं जानता हूं; मैंने तुमसे कहा कि पांच कमरे हैं। एक दिन तुम आये और तुमने कहा कि वह मकान मैं देख आया, आपने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बिलकुल ठीक कहा, बिलकुल पांच ही कमरे हैं। तो मैं जानता हूं कि तुम किसी झूठे मकान में हो आये, तुमने कोई सपना देखा, क्योंकि कमरे तो वहां छह हैं।

वह एक कमरा बचाया गया है हमेशा के लिए। वह खबर देता है कि तुम्हें हुआ कि नहीं हुआ। अगर बिलकुल शास्त्रोक्त हो तो समझना की नहीं हुआ, फाल्स कॉइन (नकली सिक्का) है; क्योंकि शास्त्र में एक कमरा सदा बचाया गया है। उसे बचाना बहुत जरूरी है। उसे बचाना बहुत जरूरी है।

तो अगर तुमको बिलकुल किताब में लिखे ढंग से सब हो रहा हो, तो समझना की किताब प्रोजेक्ट (प्रक्षेपित) हो रही है। लेकिन जिस दिन तुमको किताब में लिखे हुए ढंग से नहीं, किसी और ढंग से कुछ हो, जिसमें की कहीं किताब से मेल भी खाता हो, और कहीं नहीं भी मेल खाता हो, उस दिन तुम जानना कि तुम किसी असली ट्रैक (मार्ग) पर चले रहे हो, जहां चीजें अब तुम्हें साफ हो रही हैं; जहां तुम शास्त्र को सिर्फ कल्पना में पिरोये-पिरोये नहीं चले जा रहे हो।

तो जब कुंडलिनी तुम्हें ठीक से जगेगी, तब तुम जांच पाओगे कि अरे, शास्त्र में कहीं-कहीं, कुछ-कुछ तरकीब है; लेकिन वह तुम्हें इसके पहले पता नहीं चल सकती। और प्रत्येक शास्त्र को अनिवार्य रूप से कुछ चीजें छोड़ देनी पड़ती हैं, नहीं तो कभी भी तय करना मुश्किल हो जाये।

मेरे एक शिक्षक थे; युनिवर्सिटि के प्रोफेसर थे। कभी भी मैं किसी किताब का नाम लूं तो वे कहें कि हां, मैंने पढ़ी है। एक दिन मैंने झूठी ही किताब का नाम लिया जो है ही नहीं; न वह लेखक है, न वह किताब है। मैंने उनसे कहा, आपने फलां लेखक की किताब पढ़ी है ? बड़ी अदभुत किताब है। उन्होंने कहा : हां, मैंने पढ़ी हैं। तो मैंने उनसे कहा, अब जो पहले पढ़े हुए दावे थे, वे भी गड़बड़ हो गये; क्योंकि न यह कोई लेखक है, और न यह कोई किताब है। मैंने कहा, अब इस किताब को आप मुझे मौजूद करवा कर बता दें, तो बाकी दावों के संबंध में बात होगी, बाकी अब खत्म हो गयी बात। वे कहने लगे, क्या मतलब, यह किताब नहीं है ? तो मैंने कहा, आपकी ज़ांच के लिए अब इसके सिवाय कोई और रास्ता नहीं था।

जो जानते हैं, वे तुम्हें फौरन पकड़ लेंगे। अगर तुम्हें बिलकुल शास्त्रोक्त हो रही है, तुम फंस जाओगे, क्योंकि वहां कुछ गैप (अंतराल) छोड़ा गया है; कुछ ग़लत जोड़ा गया है, कुछ सही छोड़ दिया गया है जो कि अनिवार्य था; नहीं तो पहचान बहुत मुश्किल है कि किसको क्या हों रहा है।

पर यह जो शास्त्रोक्त है, यह पैदा किया जा सकता है। सभी चीजें पैदा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

की जा सकती हैं। आदमी के मन की क्षमता कम नहीं है। और इसके पहले कि वह आत्मा में प्रवेश करे, मन बहुत तरह के धोखे दे सकता है। और धोखा अगर वह खुद देना चाहे, तब तो बहुत ही आसान है।

तो मैं यह कहता हूं कि व्यवस्था से, दावे से, शास्त्र से, नियम से, उतना नहीं है सवाल। और, सवाल बहुत दूसरा है। फिर इसके पहचान के और भी रास्ते हैं ...इसके पहचान के और भी रास्ते हैं कि तुम्हें जो हो रहा है, वह असली है या झूठ।

प्रामाणिक अनुभवों से आमूल रूपांतरण

एक आदमी दिन में पानी पीता है तो उसकी प्यास बुझती है; सपने में भी पानी पीता है, लेकिन प्यास नहीं बुझती। और सुबह जागकर वह पाता है कि ओंठ सूख रहे हैं और गला तड़प रहा है; क्योंकि सपने का पानी प्यास नहीं बुझा सकता, असली पानी प्यास बुझा सकता है। तो तुमने पानी जो पिया था, वह असली था या नकली, यह तुम्हारी प्यास बतायेगी कि प्यास बुझी की नहीं बुझी।

तो जिन कुंडलिनी-जागरण करनेवालों की – या जिनकी जागृत हो गयी – तुम बात कर रहे हो, वे अभी भी तलाश कर रहे है, अभी भी खोज रहे हैं – वे यह भी कह रहे है कि हमें यह हो गया, और वह खोज भी उनकी जारी है; वे कहते हैं, हमें पानी भी मिल गया, और अभी भी पूछ रहे हैं... सरोवर का पता क्या है !

परसों ही एक मित्र आये थे। और वे कहते हैं, मुझे निर्विचार स्थिति उपलब्ध हो गयी; और मुझसे पूछने आये हैं कि ध्यान कैसे करें ! तब क्या किया जाये ? अब मैं कैसे कहूं उनसे कि यह तुम्हारे साथ क्या... किया क्या जाये ! तुम कह रहे हो, निर्विचार स्थिति उपलब्ध हो गयी है; विचार शांत हो गये... और ध्यान का रास्ता बता दें ! क्या मतलब होता है इसका ?

नहीं, एक आदमी कह रहा है, कुंडलिनी जग गयी है... और कहता है, मन शांत नहीं होता ! एक आदमी कहता है, कुंडलिनी तो जग गयी, लेकिन यह सेक्स से कैसे छुटकारा मिले ! तो अवांतर उपाय भी हैं कि जो हुआ है, वह सच में हुआ है !

अगर सच में हुआ है तो खोज खत्म हो गयी। अगर भगवान भी उससे आकर कहे कि थोड़ी शांति हम देने आयें हैं, तो वह कहेगा कि अपने पास रखो, हमें कोई जरूरत नहीं है। अगर भगवान भी आये और कहे कि हम

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कुछ आनंद तुम्हें देना चाहते हैं, बड़े प्रसन्न हैं, तो वह कहेगा : आप उसको बचा लो और थोड़े ज्यादा प्रसन्न हो जाओ; हमसे कुछ लेना हो तो ले जाओ। तो उसको जांचने के लिए तुम उस व्यक्तित्व में भी देखना कि और क्या हुआ है।

झूठी समाधि का धोखा

अब एक आदमी कहता है कि उसे समाधि लग जाती है; वह छह दिन मिट्टी के नीचे पड़ा रह जाता है। वह बिलकुल ठीक पड़ा रह जाता है, गड्ढे से वह जिंदा निकल आता है, लेकिन घर में अगर रुपये छोड़ दो तो वह चोरी कर सकता है; मौका मिल जाये तो शराब पी सकता है। और उस आदमी का अगर तुम्हें पता न हो कि उसको समाधि लग गयी है, तो तुम उसमें कुछ भी न पाओगे; उसमें कुछ भी नहीं है – कोई सुगंध नहीं है, कोई व्यक्तित्व नहीं है, कोई चमक नहीं है – कुछ भी नहीं है; एक साधारण आदमी है।

नही, तो उसको समाधि नहीं लग गयी, वह समाधि की ट्रिक (चालाकी) सीख गया है; वह छह दिन जमीन के अंदर जो रह रहा है, वह समाधि नहीं है। वह समाधि नहीं है, वह छह दिन जमीन के नीचे रहने की अपनी ट्रिक है, अपनी व्यवस्था है। वह उतना सीख गया है। वह प्राणायाम सीख गया है, वह श्वास को शिथिल करना सीख गया है; वह छह दिन, जितनी छोटी सी जमीन का घेरा उसने अंदर बनाया है, जिस आयतन का, वह जानता है कि उतनी ऑक्सीजन से वह छह दिन काम चला लेता है; वह इतनी धीमी श्वास लेता है कि जो मिनिमम (अल्पतम), जिससे ज्यादा लेने में ज्यादा ऑक्सीजन खर्च होगी, उतनी श्वास लेकर वह छह दिन गुजार देता है।

वह करीब-करीब उस हालत में होता है, जिस हालत में साइबेरिया का भालू छह महीने के लिए बर्फ में दबा पड़ा रह जाता है। उसको कोई समाधि नहीं लग गयी। बरसात के बाद मेंढक जमीन में पड़ा रह जाता है। आठ महीने पड़ा रहता है। उसे कोई समाधि नहीं लग गयी। वही इसने सीख लिया है; और कुछ भी नहीं हो गया। लेकिन, जिसको समाधि उपलब्ध हो गयी है, उसको अगर तुम छह दिन के लिए बंद कर दो, तो वह हो सकता है मर जाये और यह निकल आये; क्योंकि समाधि से छह दिन जमीन के नीचे रहने का कोई संबंध नहीं है।

महावीर स्वामी या बुद्ध कहीं मिल जायें, और उनको जमीन के भीतर छह दिन रख दो, बचकर लौटने की आशा नहीं है। यह बचकर लौट आयेगा;

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

क्योंकि इससे कोई संबंध ही नहीं है । उससे कोई वास्ता ही नहीं है । वह बात ही और है । लेकिन यह जंचेगा । और अगर महावीर न निकल पायें और यह निकल पाये, तो तीर्थंकर यह असली मालूम पड़ेगा, वे नकली सिद्ध हो जायेंगे ।

तो ये सारे के सारे जो साइकिक (मनोगत) फाल्स कॉइन्स (नकली सिक्का) पैदा किये गये हैं, मनस ने जो झूठे-झूठे सिक्के पैदा किये हैं, उन्होंने अपने झूठे दावे भी पैदा किये हैं; उन दावों को सिद्ध करने की पूरी व्यवस्था भी पैदा की है । और उन्होंने एक अलग ही दुनिया खड़ी कर रखी है । जिसका असली से कोई लेना-देना नहीं है, उससे कोई संबंध नहीं है । और असली चीजें उन्होंने छोड़ दी हैं, जो असली रूपांतरण था; उनके छह दिन जमीन के नीचे रहने से या छह महीने रहने से कोई संबंध नहीं है । लेकिन इस व्यक्ति का चरित्र क्या है ? इस व्यक्ति के मनस की शांति कितनी है ? इसके आनंद का क्या हुआ ? इसका एक पैसा खो जाता है तो यह रात भर सो नहीं पाता, और छह दिन जमीन के भीतर रह जाता है ! यह सोचना पड़ेगा कि इसके असली संबंध क्या हैं ?

झूठे शक्तिपात के लिए सम्मोहन का उपयोग

तो, जो भी दावेदार कहते हैं कि हम शक्तिपात करते है, वे कर सकते हैं, लेकिन वह शक्तिपात नहीं है, वह बहुत गहरे में किसी तरह का सम्मोहन है, हिप्नोसिस है; बहुत गहरे में कुछ मैगनेटिक फोर्सेस (चुंबकीय शक्तियों) का उपयोग है, जिनको वे सीख गये हैं । और ज़रूरी नहीं है कि वे भी जानते हों । उसके पूरे विज्ञान को जानते हों – यह भी जरूरी नहीं है, और यह भी जरूरी नहीं कि वह दावा जो है जानकर कर रहे हों कि झूठा है । इतने जाल हैं !

अब एक मदारी को तुम सड़क पर देखते हो कि वह एक लड़के को लिटाये हुए है – चादर बिछा दी है; उसकी छाती पर एक ताबीज रख दी है । अब उस लड़के से पूछ रहा है कि फलां आदमी के नोट का नंबर क्या है, वह नोट का नंबर बता रहा है; फलां आदमी की घड़ी में कितना बजा है, वह बता रहा है; पूछ रहा है कान में, इस आदमी का नाम क्या है ? वह लड़का नाम बता रहा है, और सब देखनेवालों को सिद्ध हुआ जा रहा है कि ताबीज में कुछ खूबी है । वह ताबीज उठा लेता है और पूछता है, इस आदमी की घड़ी में क्या बजा है । वह लड़का पड़ा रह जाता है, वह जबाब नहीं दे पाता । ताबीज वह बेच लेता है – छह आने या आठ आने में, ताबीज बेच लेता है । तुम ताबीज घर पर ले जाकर छाती पर रखकर जिंदगी भर बैठे रहो, उससे कुछ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नहीं होगा। अच्छा ऐसा नहीं है... नहीं, ऐसा नहीं है कि वह लड़के को सिखाया हुआ है उसने; ऐसा नहीं है कि वह कहता है कि ताबीज उठा लूं तो मत बोलना – नहीं, ऐसा नहीं है; और ऐसा भी नहीं है कि ताबीज में कुछ गुण है। लेकिन तरकीब और गहरी है। और वह ख्याल में आये तो बहुत हैरानी होती है।

इसको कहते हैं, पोस्ट हिप्नोटिक सजेशन (पूर्वनिश्चित सम्मोहन-सुझाव)। अगर एक व्यक्ति को हम बेहोश करें, और बेहोश करके उसको कहें कि आंख खोलकर इस ताबीज को ठीक से देख लो, और जब भी यह ताबीज मैं तुम्हारी छाती पर रखूंगा और कहूंगा – एक... दो... तीन... तुम तत्काल फिर से बेहोश हो जाओगे। ये बेहोशी में कहा गया सजेशन (सुझाव)... जब भी इस ताबीज को मैं तुम्हारी छाती पर रखूंगा, तुम पुनः बेहोश हो जाओगे... और उस बेहोशी की हालत में इसकी बहुत संभावना है कि वह नोट का नंबर पढ़ा जा सकता है, घड़ी देखी जा सकती है, इसमें कुछ झूठ नहीं है। जैसे ही वह चादर रखता है और लड़के के ऊपर ताबीज रखता है, वह लड़का हिप्नोटिक ट्रांस में चला गया, वह सम्मोहित स्थिति में चला गया, अब वह तुम्हारे नोट का नंबर बता पाता है। यह कुछ सिखाया हुआ नहीं है वह। उस लड़के को भी पता नहीं है कि क्या हो रहा है। इस आदमी को भी पता नहीं है कि भीतर क्या हो रहा है।

इस आदमी को एक ट्रिक (चालाकी) मालूम है कि एक आदमी को बेहोश करके अगर कोई भी चीज बताकर कह दिया जाये कि पुनः जब भी यह चीज तुम्हारे ऊपर रखी जायेगी, तुम बेहोश हो जाओगे, तो वह बेहोश हो जाता है, इतना इसको भी पता है। इसके क्या भीतर मेकेनिज़्म (रचना क्रम) है, इसका डाइनामिक्स (गति-विज्ञान) क्या है, इन दोनों को... किसी को कोई पता नहीं।

जिसको उतना डाइनामिक्स पता हो, वह सड़क पर मदारी का काम नहीं करता है। उतना डाइनामिक्स बहुत बड़ी बात है। मन का ही है, लेकिन वह भी बहुत बड़ी बात है। उतना डाइनामिक्स किसी फ्रायड को भी पूरा पता नहीं है, उतना डाइनामिक्स किसी जुंग को भी पूरा पता नहीं है, उतना डाइनामिक्स बड़े से बड़े मनोवैज्ञानिक को भी अभी पूरा पता नहीं कि हो क्या रहा है। लेकिन इसको एक ट्रिक पता है, उतनी ट्रिक से यह काम कर लेता है।

तुम्हें बटन दबाने के लिए यह जानना थोड़े जरूरी है कि बिजली क्या है ! और बटन दबाने के लिए यह भी जानना जरूरी नहीं है कि बिजली कैसे पैदा होती है, और यह भी जानना जरूरी नहीं है कि बिजली की पूरी

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

इंजीनियरिंग क्या है; तुम बटन दबाते हो, बिजली जल जाती है, तुम्हें एक ट्रिक ... हर आदमी दबाकर बिजली जला लेता है। ऐसी ही ट्रिक उसको पता है कि यह ताबीज रखने से और यह-यह करने से यह हो जाता है, वह उतना कर ले रहा है। आप ताबीज खरीदकर ले जाओगे, वह ताबीज बिलकुल बेमानी है, क्योंकि वह सिर्फ उसी के लिए सार्थक है जिसके ऊपर पहले उसका प्रयोग किया गया हो। और सम्मोहित अवस्था में... आप अपनी छाती पर रख कर बैठे रहो, कुछ भी नहीं होगा। तब लगेगा कि हम ही कुछ गलत हैं, ताबीज तो ठीक है; क्योंकि ताबीज को तो काम करते देखा है।

तो बहुत तरह की मिथ्या, झूठी ... मिथ्या और झूठी इस अर्थों में नहीं कि वे कुछ भी नहीं हैं, मिथ्या और झूठी इन अर्थों में कि वे स्पिरिचुअल नहीं हैं, आध्यात्मिक नहीं हैं, सिर्फ मानसिक घटनाएं हैं। और सब चीजों की मानसिक पैरेलल (समानांतर) घटनाएं संभव हैं – सभी चीजों की। तो वे पैदा की जा सकती हैं; दूसरा आदमी पैदा कर सकता है – और दावेदार उतना ही कर सकता है। हां, गैर-दावेदार ज्यादा कर सकता है।

मात्र उपस्थिति से घटनेवाला शक्तिपात

पर गैर-दावेदार का मतलब है : वह यह नहीं कहता है कि मैं शक्तिपात कर रहा हूं, मैं तुममें ऐसा कर दूंगा, मैं तुममें ऐसा कर दूंगा; यह हो जायेगा तुममें, मैं करनेवाला हूं; और जब हो जायेगा तो तुम मुझसे बंधे रह जाओगे। वह इस सबका कोई सवाल नहीं है। वह एक शून्य की भांति हो गया है वैसा आदमी। तुम उसके पास भी जाते हो तो कुछ होना शुरू हो जाता है। यह उसको... उसको ख्याल ही नहीं है कि यह हो रहा है।

एक बहुत पुरानी रोमन कहानी है कि एक बड़ा संत हुआ, और उसके चरित्र की सुगंध और उसके ज्ञान की किरणें देवाताओं तक पहुंच गयीं, और देवताओं ने आकर उससे कहा कि तुम कुछ वरदान मांग लो; तुम जो कहो, हम करने को तैयार हैं। लेकिन उस फकीर ने कहा कि जो होना था वह हो चुका है, और तुम मुझे मुश्किल में मत डालो; क्योंकि तुम कहते हो, मांगो, अगर मैं न मांगूं तो अशिष्टता होती है और मांगने को मुझे कुछ बचा नहीं है, बल्कि जो मैंने कभी नहीं मांगा था, वह सब हो गया है। तो तुम मुझे क्षमा करो, इस झंझट में मुझे मत डालो, इस मांगने की कठिनाई मुझ में पैदा मत करो। लेकिन वे देवता तो और भी.... क्योंकि, अब तो यह सुगंध और भी जोर से उठी इस आदमी की... कि जो मांगने के ही बाहर हो गया है। उन्होंने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कहा, तब तो तुम कुछ मांग ही लो, और हम बिना दिये अब न जायेंगे।

उस आदमी ने कहा कि बड़ी मुश्किल हो गयी... तो तुम्हीं कुछ दे दो; क्योंकि मैं क्या मांगूं, मुझे सूझता नहीं; क्योंकि मेरी कोई मांग न रही, तुम्हीं कुछ दे दो, मैं ले लूंगा। तो उन देवताओं ने कहा कि हम तुम्हें ऐसी शक्ति दिये देते हैं कि तुम जिसे छुओगे, वह मुर्दा भी होगा तो ज़िंदा हो जायेगा; बीमार होगा तो बीमारी ठीक हो जायेगी। उसने कहा कि यह तो बड़ा काम हो जायेगा... यह बड़ा काम हो जायेगा, और इससे जो होगा वह तो ठीक है, मेरा क्या होगा ? मैं बड़ी मुश्किल में पड़ जाऊंगा, क्योंकि मुझको यह लगने लगेगा कि मैं ठीक कर रहा हूं। तो यह जो बीमार ठीक हो जायेगा, वह तो ठीक है, लेकिन मैं बीमार हो जाऊंगा। उसने कहा कि मेरे बाबत क्या ख्याल है ? क्योंकि एक मुर्दे को मैं छुऊंगा वह जिंदा हो जायेगा, तो मुझे लगेगा कि मैं जिंदा कर रहा हूं। तो वह तो जिंदा हो जायेगा, मैं मर जाऊंगा। मुझे मत मारो, मुझ पर कृपा करो, ऐसा कुछ करो कि मुझे पता न चले।

तो उन देवताओं ने कहा, अच्छा, हम ऐसा कुछ करते हैं : तुम्हारी छाया जहां पड़ेगी वहां कोई बीमार होगा तो ठीक हो जायेगा, कोई मुर्दा होगा तो जिंदा हो जायेगा। उसने कहा, यह ठीक है। और इतनी और कृपा करें कि मेरी गर्दन पीछे की तरफ न मुड़ सके, नहीं तो छाया से भी दिक्कत हो जायेगी – अपनी छाया ! तो मेरी गर्दन अब पीछे न मुड़े।

वह वरदान पूरा हो गया, उस फकीर की गर्दन मुड़नी बंद हो गयी, वह गांव-गांव चलता रहता। अगर कुम्हलाये हुए फूल पर उसकी छाया पड़ जाती तो वह खिल जाता, लेकिन तब तक वह जा चुका होता; क्योंकि उसकी गर्दन पीछे मुड़ सकती नहीं थी। उसे कभी पता नहीं चला। और जब वह मरा तो उसने देवताओं से पूछा कि तुमने जो दिया था, वह हुआ भी कि नहीं, क्योंकि ...क्योंकि हमको पता नहीं चल पाया। तो मुझे लगता है, यह कहानी प्रीतिकर है।

तो घटना तो घटती है, ऐसे ही घटती है, पर वह छाया से घटती है और गर्दन भी नहीं मुड़ती। पर शून्य होना चाहिए उसकी शर्त, नहीं तो गर्दन मुड़ जायेगी। अगर जरा-सा भी अहंकार शेष रहा तो पीछे लौटकर देखने को मन होगा कि हुआ कि नहीं हुआ। और अगर हो गया तो फिर मैंने किया है। उसे बचाना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

तो शून्य जहां घटता है वहां आसपास शक्तिपात जैसी बहुत साधारण बातें हैं, बहुत बड़ी बातें नहीं हैं। वे ऐसे ही घटने लगती हैं जैसे सूरज निकलता

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

है, फूल खिलने लगते हैं – बस, ऐसे ही; नदी बहती है, जड़ों को पानी मिल जाता है – बस, ऐसे ही । न नदी दावा करती है, न बड़े बोर्ड लगाती है रास्ते पर कि मैंने इतने झाड़ों को पानी दे दिया, इतनों में फूल खिल रहे हैं । यह सब... कुछ... कोई सवाल नहीं है । ये नदी को इसका पता ही नहीं चलता । जब तक फूल खिलते हैं, तब तक नदी सागर तक पहुंच गयी होती है । तो कहां फुर्सत ...रुककर देखने की भी सुविधा कहां ? पीछे लौटकर मुड़ने का उपाय कहां ?

तो ऐसी स्थिति में जो घटता है, उसका तो आध्यात्मिक मूल्य है, लेकिन जहां अहंकार है, कर्त्ता है; जहां कोई यह कह रहा है : मैं कर रहा हूं, वहां फिर साइकिक फिनॉमिनन (प्रपंच) है, फिर मनस की घटनाएं हैं, फिर सम्मोहन से ज्यादा नहीं है ।

मेरे ध्यान में सम्मोहन का प्रयोग

प्रश्न : आपकी जो ध्यान की नयी विधि है उसमें भी क्या सम्मोहन व भ्रम की संभावना नहीं है ? बहुत से लोगों को कुछ भी नहीं हो रहा है तो क्या ऐसा है कि वे सच्चे रास्ते पर नहीं हैं ? और जिनको बहुत सी प्रतिक्रियाएं चल रही हैं, क्या वे सच्चे रास्ते पर ही हैं ? या उनमें भी कोई जान-बूझकर ही कर रहे हैं, ऐसी बात नहीं है क्या ?

इसमें दो-तीन बातें समझनी चाहिए । असल में सम्मोहन एक विज्ञान है । और अगर सम्मोहन का तुम्हें धोखा देने के लिए उपयोग किया जाये, तो किया जा सकता है । लेकिन, सम्मोहन का उपयोग तुम्हारी सहायता के लिए भी किया जा सकता है । और सभी विज्ञान दोधारी तलवार हैं । अणु की शक्ति है, वह खेत में गेहूं भी पैदा कर सकती है, और गेहूं खानेवाले को भी दुनिया से मिटा सकती है – दोनों काम हो सकते हैं; दोनों ही क्षण अणु की शक्तियां हैं । यह बिजली घर में हवा भी दे रही है, और इसका तुम्हें शॉक (झटका) लगे तो तुम्हारे प्राण भी ले सकती है । लेकिन इससे तुम बिजली को कभी जिम्मेदार न ठहरा पाओगे । तो सम्मोहन, अगर कोई अहंकार सम्मोहन का उपयोग करे – और दूसरे को दबाने, और दूसरे को मिटाने, और दूसरों में कुछ इलूजंस (भ्रम) और सपने पैदा करने के लिए – तो किया जा सकता है । लेकिन इससे उलटा भी किया जा सकता है ।

सम्मोहन तो सिर्फ तटस्थ शक्ति है, वह तो एक साइंस है । उससे तुम्हारे भीतर जो सपने चल रहे हैं, उनको तोड़ने का भी काम किया जा सकता है;

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

और तुम्हारे जो इलूजंस (भ्रम) डीप रूटेड (गहरी जड़ोंवाले) हैं, उनको भी उखाड़ा जा सकता है।

तो मेरी जो प्रक्रिया है, उसके प्राथमिक चरण सम्मोहन के ही हैं, लेकिन उसके साथ एक बुनियादी तत्त्व और जुड़ा हुआ है जो तुम्हारी रक्षा करेगा और जो तुम्हें सम्मोहित न होने देगा – और वह है साक्षीभाव। बस, सम्मोहन में और ध्यान में उतना ही फर्क है। लेकिन वह बहुत बड़ा फर्क है। जब तुम्हें कोई सम्मोहित करता है तो वह तुम्हें मूर्छित करना चाहता है, क्योंकि तुम मूर्छित हो जाओ तो ही फिर तुम्हारे साथ कुछ किया जा सकता है। जब मैं कह रहा हूं कि ध्यान में सम्मोहन का उपयोग है, लेकिन तुम साक्षी रहो पीछे, तुम पूरे समय जागे रहो – जो हो रहा है उसे जानते रहो, तब तुम्हारे साथ कुछ भी तुम्हारे विपरीत नहीं किया जा सकता; तुम सदा मौजूद हो। सम्मोहन के वही सुझाव तुम्हें बेहोश करने के काम में लाये जा सकते हैं, वही सुझाव तुम्हारी बेहोशी तोड़ने के भी काम में लाये जा सकते हैं।

तो जिसे मैं ध्यान कहता हूं, उसके प्राथमिक चरण सब के सब सम्मोहन के हैं। और होंगे ही, क्योंकि तुम्हारी कोई भी यात्रा आत्मा की तरफ तुम्हारे मन से ही शुरू होगी – क्योंकि तुम मन में हो; वह तुम्हारी जगह है जहां तुम हो। वहीं से तो यात्रा शुरू होगी। लेकिन वह यात्रा दो तरह की हो सकती है : या तो तुम्हें मन के भीतर एक चकरीले पथ पर डाल दे कि तुम मन के भीतर चक्कर लगाने लगो, कोल्हू के बैल की तरह चलने लगो, तब यात्रा तो बहुत होगी, लेकिन मन के बाहर तुम न निकल पाओगे। वह यात्रा ऐसी भी हो सकती है : तुम्हें मन के किनारे पर ले जाये और मन के बाहर छलांग लगाने की जगह पर पहुंचा दे। दोनों हालत में तुम्हारे प्राथमिक चरण मन के भीतर ही पड़ेंगे।

तो सम्मोहन का भी प्राथमिक रूप वही है जो ध्यान का है, लेकिन अंतिम रूप भिन्न है; और दोनों का लक्ष्य भिन्न है। और दोनों की प्रक्रिया में एक बुनियादी तत्त्व भिन्न है। सम्मोहन चाहता है, तत्काल मूर्छा – नींद, सो जाओ। इसलिए सम्मोहन का सारा सुझाव नींद से शुरू होगा, तंद्रा से शुरू होगा – सोओ; स्लीप, फिर बाकी कुछ होगा। ध्यान का सारा सुझाव – जागो, अवेक, वहां से होगा और पीछे साक्षी पर जोर रहेगा; क्योंकि तुम्हारा साक्षी जगा हुआ है तो तुम पर कोई भी बाहरी प्रभाव नहीं डाले जा सकते। और अगर तुम्हारे भीतर जो भी हो रहा है, वह भी तुम्हारे जानते हुए हो रहा है, तो एक तो यह ख्याल में लेना जरूरी है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ध्यान-प्रयोग से बचने की तरकीबें

और दूसरी बात यह ख्याल में लेना जरूरी है कि जिनको हो रहा है, और जिनको नहीं हो रहा, उनमें जो फर्क है, वह इतना ही है कि जिनको नहीं हो रहा है उनका संकल्प थोड़ा क्षीण है – भयभीत, डरे हुए हैं; कहीं हो न जाये, इससे भी डरे हुए । अब यह आदमी कितना अजीब है : करने आये हैं – आये इसीलिए हैं कि ध्यान हो जाये, लेकिन अब डर भी रहे हैं कि कहीं हो न जाये । और जिनको हो रहा है, उनको देखकर, जिनको नहीं हो रहा है उनके मन में ऐसा लगेगा : कहीं ये ऐसे ही तो नहीं कर रहे हैं; कहीं बनावटी तो नहीं कर रहे हैं । ये डिफेंस मेजर हैं; ये उनके सुरक्षा के उपाय हैं । इस भांति वे कह रहे हैं कि अरे ! हम कोई इतने कमजोर नहीं कि हमको हो जाये; ये कमजोर लोग हैं, जिनको हो रहा है । इससे वे अपने अहंकार को तृप्ति भी दे रहे हैं, और यह नहीं जान पा रहे हैं कि यह कमजोरों को नहीं होता, यह शक्तिशाली को होता है; और यह भी नहीं जान पा रहे हैं कि यह बुद्धिहीनों को नहीं होता, बुद्धिमानों को होता है । एक इडियट (मूर्ख) को न तो सम्मोहित क्रिया जा सकता है, न ध्यान में ले जाया जा सकता है; उसको दोनों ही नहीं किया जा सकता । एक जड़ बुद्धि आदमी को सम्मोहित भी नहीं किया जा सकता । एक पागल आदमी को कोई सम्मोहित कर दे तब तुम्हें पता चलेगा कि नहीं कर सकता । जितनी प्रतिभा का आदमी हो, उतनी जल्दी सम्मोहित हो जायेगा; और जितना प्रतिभाहीन हो, उतनी देर लग जायेगी । लेकिन वह प्रतिभाहीन अपनी सुरक्षा क्या करे, वह संकल्पहीन अपनी सुरक्षा क्या करे ? वह कहेगा कि अरे ! ऐसा मालूम होता है कि इसमें कुछ लोग तो बनकर कर रहे हैं; और कुछ जिनको हो रहा है, ये कमजोर शक्ति के लोग हैं, जिनकी कोई अपनी शक्ति नहीं है; इन पर प्रभाव दूसरे का पड़ गया है; ये करने लगे हैं ।

अभी एक आदमी अमृतसर में मुझे मिलने आया । डॉक्टर हैं, पढ़े-लिखे आदमी हैं, बूढ़े आदमी हैं, रिटायर्ड हैं, वे मुझसे तीसरे दिन माफी मांगने आये; उन्होंने मुझसे कहा : मैं सिर्फ आपसे माफी मांगने आया हूं; क्योंकि मेरे मन में एक पाप उठा था, उसकी मुझे क्षमा चाहिए । क्या हुआ, मैंने उनसे पूछा । उन्होंने क्रहा, पहले दिन जब मैं ध्यान करने आया तो मुझे लगा कि आपने दस-पांच आदमी अपने खड़े कर दिये हैं, जो बन-ठनकर कुछ भी कर रहे हैं । और कुछ कमजोर लोग हैं, वे उनकी देखा-देखी वे भी करने लगे हैं । तो ऐसा मुझे पहले दिन लगा । तो मैंने कहा, दूसरे दिन भी देखूं तो जाकर कि अब क्या हुआ, लेकिन दूसरे दिन मैंने अपने दो-चार मित्र देखे, जिनको हो रहा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

था, वे सब डॉक्टर हैं। तो मैं उनके घर गया। मैंने कहा कि भाई, अब मैं यह नहीं मान सकता कि तुमको कोई उन्होंने तैयार किया होगा, लेकिन तुम बनकर कर रहे थे कि तुमको हो रहा था ? तो उन्होंने कहा कि बनकर करने का क्या कारण है ? कल तो हमको भी शक था कि कुछ लोग बनकर तो नहीं कर रहे, लेकिन आज तो हमें हुआ।

तो वह डॉक्टर, तीसरे दिन उसको हुआ तो वह तीसरे दिन मुझसे क्षमा मांगने आया। उसने कहा : जब आज मुझे हुआ तभी मेरी पूरी भ्रांति गयी, नहीं तो मैं मान ही नहीं सकता था; मुझे यह भी शक हुआ कि पता नहीं, ये डॉक्टर भी मिल गये हों, आजकल कुछ पक्का तो है नहीं कि कौन क्या करने लगे ! पता नहीं, ये भी मिल गये हों ! अपने पहचान के तो हैं, लेकिन क्या कहा जा सकता है ? या किसी प्रभाव में आ गये हों, हिप्नोटाइज्ड हो गये हों, यां कुछ हो गया हो ! लेकिन आज मुझे हुआ है; और आज जब मैं घर गया, तो उसका छोटा भाई भी डॉक्टर है, तो उसने कहा कि देख आये आप वह खेल, वहां आपको कुछ हुआ कि नहीं ? तो मैंने उससे कहा कि माफ कर भाई, अब मैं न कह सकूंगा खेल; दो दिन मैंने भी मजाक उड़ायी, लेकिन आज मुझे भी हुआ है। लेकिन मैं तुझ पर नाराज भी न होऊंगा; क्योंकि यही तो मैं भी सोच रहा था, जो तू सोच रहा है। और उस आदमी ने कहा कि मैं माफी मांगने आया हूं, क्योंकि मेरे मन में ऐसा ख्याल उठा।

ये हमारे सुरक्षा के उपाय हैं। जिनको नहीं होगा वे सुरक्षा का इंतजाम करेंगे। लेकिन जिनको नहीं हो रहा है उनमें, और होनेवालों में बस इंच भर का ही फासला है; सिर्फ संकल्प ही थोड़ी सी कमी है। अगर वे थोड़ा सा हिम्मत जुटायें और संकल्प करें और संकोच थोड़ा छोड़ सकें...

अब आज ही एक महिला ने मुझे आकर कहा कि किसी महिला ने उसको फोन किया है कि रजनीश जी के इस प्रयोग में तो कोई नंगा हो जाता है, और कुछ हो जाता है। तो भले घर की महिलाएं तो फिर आ नहीं सकेंगी ! तो भले घर की महिलाओं का क्या होगा ? अब... अब किसी को यह भी वहम होता है कि हम भले घर की महिला हैं, कोई बुरे घर की महिला है ! तो बुरे घर की महिला तो जा सकेगी, भले घर की महिला का क्या होगा ? अब ये सब डिफेंस मेजर (सुरक्षा के उपाय) हैं। और भले घर की महिला अपने को भला मानकर घर रोक लेगी। और भले घर की महिला कैसी है ? अगर एक आदमी नग्न हो रहा है तो जिस महिला को भी अड़चन हो रही है, वह बुरे घर की महिला है। उसे प्रयोजन क्या है ?

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बिना किये निर्णय मत लो

तो हमारा मन बहुत अजीब-अजीब इंतजाम करता है; वह कहता है कि यह सब गड़बड़ बातें हो रही हैं, यह अपने को नहीं होनेवाला; हम कोई कमजोर थोड़े ही हैं, हम ताकतवर हैं। लेकिन ताकतवर होते तो हो गया होता, बुद्धिमान होते तो हो गया होता; क्योंकि बुद्धिमान आदमी का पहला लक्षण तो यह है कि जब तक वह खुद न कर ले तब तक वह कोई निर्णय न लेगा – वह यह भी नहीं कहेगा कि दूसरा झूठा कर रहा है; क्योंकि मैं कौन हूं यह निर्णय लेनेवाला ? और दूसरे के संबंध में झूठे होने का निर्णय बहुत ग्लानिपूर्ण है... दूसरे के संबंध में कि वह झूठा कर रहा है। ...हम कौन हैं ? और मैं कैसे निर्णय करूं कि दूसरा झूठा कर रहा है ? ये इसी तरह के गलत निर्णय ने तो बड़ी दिक्कत डाली है।

जीसस को लोगों ने थोड़े ही माना कि इसको कुछ हुआ है, नहीं तो सूली पर न लटकायें। वे समझे सब... आदमी गड़बड़ है, और कुछ भी कह रहा है। महावीर को पत्थर न मारें लोग, उनको लग रहा है कि गड़बड़ आदमी है, नंगा खड़ा हो गया है, इसको कुछ हुआ थोड़े ही है।

दूसरे आदमी को भीतर क्या हो रहा है, हम निर्णायक कहां हैं, कैसे हैं ? तो जब तक मैं न करके देख लूं, तब तक निर्णय न लेना बुद्धिमत्ता का लक्षण है। और अगर मुझे नहीं हो रहा है तो जो प्रयोग कहा जा रहा है, उसको मैं पूरा कर रहा हूं न ? इसकी थोड़ी जांच कर लूं कि मैं उसे पूरा कर रहा हूं। अगर मैं पूरा नहीं कर रहा हूं तो होगा कैसे ?

इधर पोरबंदर... मैं कह रहा था तो एक... आखिरी दिन मैंने कहा कि अगर किसी ने सौ डिग्री ताकत नहीं लगायी और निन्यानबे डिग्री लगायी तो भी चूक जायेगा। ते एक मित्र ने आकर मुझे कहा कि मैं तो धीरे-धीरे कर रहा था, मैंने सोचा थोड़ी देर में होगा, लेकिन मुझे ख्याल में आया कि वह तो कभी नहीं होगा। सौ डिग्री होनी ही चाहिए। तो आज मैंने पूरी ताकत लगायी तो हो गया है। मैं तो सोचता था कि मैं धीरे-धीरे करता रहूंगा तो होगा। धीरे-धीरे क्यों कर रहे थे ? नहीं करो, ठीक है। धीरे-धीरे क्यों कर रहे हो ? और धीरे-धीरे करने में हम दोनों नाव पर सवार रहना चाहते हैं। और दो नावों पर सवार यात्री बहुत कठिनाई में पड़ जाते हैं। एक ही नाव अच्छी – नर्क जाये तो भी एक तो हो। लेकिन स्वर्ग की नाव पर भी एक पैर रखे हैं, नर्क की नाव पर भी एक पैर रखे हैं।

असल में संदिग्ध है मन कि कहां जाना है और डर है कि पता

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नहीं – नर्क में सुख मिलेगा कि स्वर्ग में सुख मिलेगा; दोनों पर पैर रखे खड़े हैं। इसमें दोनों जगहें चूक सकती हैं, और नदी में प्राणांत हो सकते हैं। ऐसा हमारा मन है पूरे वक्त – जायेंगे भी, फिर वहां रोक भी लेंगे। और नुकसान होता है।

पूरा प्रयोग करो और दूसरे के बाबत निर्णय मत लो। और पूरा प्रयोग जो भी करेगा उसे होना सुनिश्चित है; क्योंकि यह विज्ञान की बात कह रहा हूं मैं, अब मैं कोई धर्म की बात नहीं कह रहा हूं। और यह बिलकुल ही साइंस का मामला है कि अगर इसमें पूरा हुआ तो होना निश्चित है। इसमें कोई और उपाय नहीं है, क्योंकि परमात्मा को मैं शक्ति कह रहा हूं। उधर कोई पक्षपात... और कोई प्रार्थना-वार्थना करने से, या अच्छे कुल में पैदा हुए हैं, और फलां घर में पैदा हुए हैं, ये सब कुछ चलेगा नहीं... कि भारत भूमि में पैदा हो गये हैं तो ऐसे ही पार हो जायेंगे, ऐसे नहीं चलेगा।

बिलकुल विज्ञान की बात है। उसको जो पूरा करेगा, उसको परमात्मा भी खिलाफ हो जाये, तो रोक नहीं सकता। और न भी हो परमात्मा, तो कोई सवाल नहीं है; पूरा कर रहे हो, इसकी फिक्र करो। और सदा निर्णय भीतर के अनुभव से लो, बाहर से मत लो। अन्यथा भूल हो सकती है।

बंबई, रात्रि, दिनांक 5 जुलाई, 1970.

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

सातवीं प्रश्नोत्तर चर्चा

सात शरीरों से गुजरती कुंडलिनी

मनुष्य के सात शरीर

प्रश्न : कल की चर्चा में आपने कहा कि कुंडलिनी के झूठे अनुभव भी प्रोजेक्ट (प्रक्षेपित) किये जा सकते हैं – जिन्हें आप आध्यात्मिक अनुभव नहीं मानते हैं, मानसिक मानते हैं। लेकिन प्रारंभिक चर्चा में आपने कहा था कि कुंडलिनी मात्र साइकिक (मानसिक) है। इसका ऐसा अर्थ हुआ कि आप कुंडलिनी की दो प्रकार की स्थितियां मानते हैं – मानसिक और आध्यात्मिक। कृपया इस स्थिति को स्पष्ट करें।

इस बात को ठीक से समझने के लिए हमें मनुष्य के विभन्न सूक्ष्म शरीरों की रचना को विस्तार से समझ लेना उचित होगा। व्यक्तित्व को सात शरीरों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम शरीर है – स्थूल शरीर; फिजिकल बॉडी; जिसे हम सब जानते हैं। उससे सूक्ष्म दूसरा शरीर है – इथरिक बॉडी या आकाश शरीर। और तीसरा शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे एस्ट्रल बॉडी कहें – सूक्ष्म शरीर। और चौथा शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे मेंटल बॉडी कहें – मनस शरीर। और पांचवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे स्पिरिचुअल बॉडी कहें – आत्मिक शरीर। छठवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे हम कॉस्मिक बॉडी कहें – ब्रह्म शरीर। और सातवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे हम निर्वाण शरीर, बॉडीलेस बॉडी कहें – अंतिम।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

इन सात शरीरों के संबंध में थोड़ा समझा जाये तो फिर कुंडलिनी की बात पूरी तरह समझ में आ सकेगी।

भौतिक शरीर, भाव शरीर और सूक्ष्म शरीर

पहले सात वर्ष में भौतिक शरीर ही निर्मित होता है। जीवन के पहले सात वर्ष में भौतिक शरीर ही निर्मित होता है, बाकी सारे शरीर बीजरूप होते हैं; उनके विकास की संभावना होती है, लेकिन वे विकसित उपलब्ध नहीं होते। पहले सात वर्ष, इसलिए इमिटेशन, अनुकरण के ही वर्ष हैं। पहले सात वर्षों में कोई बुद्धि, कोई भावना, कोई कामना विकसित नहीं होती, विकसित होता है सिर्फ भौतिक शरीर।

कुछ लोग सात वर्ष से ज्यादा कभी आगे नहीं बढ़ पाते; कुछ लोग सिर्फ भौतिक शरीर ही रह जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों में और पशु में कोई अंतर नहीं होगा; पशु के पास भी सिर्फ भौतिक शरीर ही होता है, दूसरे शरीर अविकसित होते हैं।

दूसरे सात वर्ष में भाव शरीर का विकास होता है; या आकाश शरीर का। इसलिए दूसरे सात वर्ष व्यक्ति के भाव-जगत के विकास के वर्ष हैं। चौदह वर्ष की उम्र में इसलिए सेक्स मेच्योरिटि (यौन-परिपक्वता) उपलब्ध होती है; वह भाव का बहुत प्रगाढ़ रूप है। कुछ लोग चौदह वर्ष के होकर ही रह जाते हैं; शरीर की उम्र बढ़ती जाती है, लेकिन उनके पास दो ही शरीर होते हैं।

तीसरे सात वर्षों में सूक्ष्म शरीर विकसित होता है – इक्कीस वर्ष की उम्र तक। दूसरे शरीर में भाव का विकास होता है; तीसरे शरीर में तर्क, विचार और बुद्धि का विकास होता है।

इसलिए सात वर्ष के पहले दुनिया की कोई अदालत किसी बच्चे को सजा नहीं देगी, क्योंकि उसके पास सिर्फ भौतिक शरीर है; और बच्चे के साथ वही व्यवहार किया जायेगा जो एक पशु के साथ किया जाता है। उसको जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता। और अगर बच्चे ने कोई पाप भी किया है, अपराध भी किया है, तो यही माना जायेगा कि किसी के अनुकरण में किया है; मूल अपराधी कोई और होगा।

तीसरे शरीर में विचार का विकास

दूसरे शरीर के विकास के बाद चौदह वर्ष एक तरह की प्रौढ़ता मिलती है; लेकिन वह प्रौढ़ता यौन-प्रौढ़ता है। प्रकृति का काम उतने से पूरा हो जाता

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

है। इसलिए पहले शरीर और दूसरे शरीर के विकास में प्रकृति पूरी सहायता देती है; लेकिन दूसरे शरीर के विकास से मनुष्य मनुष्य नहीं बन पाता।

तीसरा शरीर... जहां विचार, तर्क और बुद्धि विकसित होती है, वह शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता का फल है। इसलिए दुनिया के सभी मुल्क इक्कीस वर्ष के व्यक्ति को मताधिकार देते हैं। अभी कुछ मुल्कों में संघर्ष है अठारह वर्ष के बच्चों को मताधिकार देने का, वह संघर्ष स्वाभाविक है; क्योंकि जैसे-जैसे मनुष्य विकसित हो रहा है, सात वर्ष की सीमा कम होती जा रही है। अब तक तेरह और चौदह वर्ष में दुनिया में लड़कियां मासिक धर्म को उपलब्ध होती थीं। अमरीका में, पिछले तीस वर्षों में यह उम्र कम होती चली गयी है; ग्यारह वर्ष की लड़की भी मासिक धर्म को उपलब्ध हो जाती है। अठारह वर्ष का मताधिकार इसी बात की सूचना है कि मनुष्य, जो काम इक्कीस वर्ष में पूरा हो रहा था, उसे अब और जल्दी पूरा करने लगा है; वह अठारह वर्ष में भी पूरा कर ले रहा है।

लेकिन साधारणतः इक्कीस वर्ष लगते हैं तीसरे शरीर के विकास के लिए; और अधिकतम लोग तीसरे शरीर पर रुक जाते हैं – मरते दम तक उसी पर रुके रहते हैं; चौथा शरीर, मनस शरीर भी विकसित नहीं हो पाता।

जिसको मैं साइकिक कह रहा हूं, वह चौथे शरीर की दुनिया की बात है – मनस शरीर। उसके बड़े अदभुत और अनूठे अनुभव हैं। जैसे जिस व्यक्ति की बुद्धि विकसित न हुई हो, वह गणित में कोई आनंद नहीं ले सकता। वैसे गणित का अपना आनंद है। कोई आइन्स्टीन उसमें उतना ही रसमुग्ध होता है, जितना कोई संगीतज्ञ वीणा में होता हो, कोई चित्रकार रंग में होता हो। आइन्स्टीन के लिए गणित कोई काम नहीं है, खेल है; पर उसके लिए बुद्धि का उतना विकास चाहिए कि वह गणित को खेल बना सके।

प्रत्येक शरीर के अनंत आयाम

जो शरीर हमारा विकसित होता है, उस शरीर के अनंत-अनंत आयाम हमारे लिए खुल जाते हैं। जिसका भाव शरीर विकसित नहीं हुआ, जो सात वर्ष पर ही रुक गया है, उसके जीवन का रस खाने-पीने पर समाप्त हो जायेगा। तो जिस कौम में पहले शरीर के लोग ज्यादा मात्रा में हैं, उसकी जीभ के अतिरिक्त कोई संस्कृति नहीं होगी।

जिस कौम में अधिक लोग दूसरे शरीर के हैं, वह कौम सेक्स-सेंटर्ड (यौन-केंद्रित) हो जायेगी; उसका सारा व्यक्तित्व – उसकी कविता, उसका

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

संगीत, उसकी फिल्म, उसका नाटक, उसके चित्र, उसके मकान, उसकी गाड़ियां – सब किसी अर्थों में सेक्स सेंट्रिक (यौन-अभिमुखी) हो जायेंगी; वे सब वासना से भर जायेंगी।

जिस सभ्यता में तीसरे शरीर का विकास हो पायेगा ठीक से, वह सभ्यता अत्यंत बौद्धिक चिंतन और विचार से भर जायेगी। जब भी किसी कौम या समाज की जिंदगी में तीसरे शरीर का विकास महत्त्वपूर्ण हो जाता है, तो बड़ी वैचारिक क्रांतियां घटित होती हैं।

बुद्ध और महावीर के वक्त में बिहार ऐसी ही हालत में था कि उसके पास तीसरी क्षमता को उपलब्ध बहुत बड़ा समूह था। इसलिए बुद्ध और महावीर की हैसियत के आठ आदमी बिहार के छोटे से देश में पैदा हुए, छोटे से इलाके में। और हजारों प्रतिभाशाली लोग पैदा हुए।

सुकरात और प्लेटो के वक्त यूनान की ऐसी ही हालत थी।

कन्फ्यूशस और लाओत्से के समय चीन की ऐसी ही हालत थी।

और बड़े मजे की बात है कि ये सारे महान व्यक्ति पांच सौ साल के भीतर सारी दुनिया में हुए। उस पांच सौ साल में मनुष्य के तीसरे शरीर ने बड़ी ऊंचाइयां छूईं।

लेकिन आमतौर से तीसरे शरीर पर मनुष्य रुक जाता है; अधिक लोग इक्कीस वर्ष के बाद कोई विकास नहीं करते। लेकिन ध्यान रहे, चौथा जो शरीर है उसके अपने अनूठे अनुभव हैं – जैसे तीसरे शरीर के हैं, दूसरे शरीर के हैं, पहले शरीर के हैं।

चौथे मनस-शरीर की अतींद्रिय क्रियाएं

चौथे शरीर के बड़े अनूठे अनुभव हैं – जैसे सम्मोहन है; टेलीपैथी, क्लैरवायेंस – ये सब चौथे शरीर की संभावनाएं हैं। आदमी बिना समय और स्थान की बाधा के दूसरे से संबंधित हो सकता है; बिना बोले दूसरे के विचार पढ़ सकता है, या अपने विचार दूसरे तक पहुंचा सकता है; बिना कहे, बिना समझाये, कोई बात दूसरे में प्रवेश कर सकता है और उसका बीज बना सकता है; शरीर के बाहर यात्रा कर सकता है – एस्ट्रल प्रोजेक्शन – शरीर के बाहर घूम सकता है; अपने इस शरीर से अपने को अलग जान सकता है।

इस चौथे शरीर की, मनस शरीर की, साइकिक बॉडी की बड़ी संभावनाएं हैं, जो हम बिलकुल ही विकसित नहीं कर पाते हैं; क्योंकि इस दिशा में खतरे बहुत हैं... एक, और इस दिशा में मिथ्या की बहुत संभावना है... दो;

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Dehband

Digitized by Madhuban Trust

क्योंकि जितनी चीजें सूक्ष्म होती चली जाती हैं, उतनी ही मिथ्या और फॉल्स संभावनाएं बढ़ती चली जाती हैं। अब एक आदमी अपने शरीर के बाहर गया या नहीं, ...वह सपना भी देख सकता है अपने शरीर के बाहर जाने का, जा भी सकता है। और उसके अतिरिक्त, स्वयं के अतिरिक्त और कोई गवाह नहीं होगा। इसलिए धोखे में पड़ जाने की बहुत गुंजाइश है; क्योंकि दुनिया जो शुरू होती है इस शरीर से, वह सब्जेक्टिव (आत्मपरक) है; इसके पहले की दुनिया अब्जेक्टिव (वस्तुपरक) है।

अगर मेरे हाथ में रुपया है, तो आप भी देख सकते हैं, मैं भी देख सकता हूं, पचास लोग देख सकते हैं। यह कॉमन रियॉलिटि (सामान्य सत्य) है, जिसमें कि हम सब सहभागी हो सकते हैं और जांच हो सकती है – रुपया है या नहीं ? लेकिन मेरे विचारों की दुनिया में आप सहभागी नहीं हो सकते, मैं आपके विचारों की दुनिया में सहभागी नहीं हो सकता; वह निजी दुनिया शुरू हो गयी। जहां से निजी दुनिया शुरू होती है, वहां से खतरा शुरू होता है; क्योंकि किसी चीज की वेलिडिटि (औचित्य) किसी चीज की सच्चाई के सारे बाह्य नियम खतम हो जाते हैं।

इसलिए असली डिसेप्शन (धोखे) का जो जगत है, वह चौथे शरीर से शुरू होता है। उसके पहले के सब डिसेप्शन पकड़े जा सकते हैं, उसके पहले के सब धोखे पकड़े जा सकते हैं। और ऐसा नहीं है कि चौथे शरीर में जो धोखा दे रहा है, वह जरूरी रूप से जानकर दे रहा हो। बड़ा खतरा यह है : वह अनजाने दे सकता है; खुद को दे सकता है, दूसरों को दे सकता है। उसे कुछ पता ही न हो, क्योंकि चीजें इतनी बारीक और निजी हो गयी हैं कि उसके खुद के पास भी कोई कसौटी नहीं है कि वह जाकर जांच करे कि सच में जो हो रहा है वह हो रहा है... कि वह कल्पना कर रहा है !

चौथे शरीर के लाभ और खतरे

तो यह जो चौथा शरीर है, इससे हमने मनुष्यता को बचाने की कोशिश की। और अक्सर ऐसा हुआ कि इस शरीर का जो लोग उपयोग करनेवाले थे, उनकी बहुत तरह की बदनामी और कंडमेशन (निंदा) हुई। योरोप में हजारों स्त्रियों को जला डाला गया 'विचेज़' कहकर, डाकिनी कहकर; क्योंकि उनके पास चौथे शरीर का काम था। हिंदुस्तान में सैकड़ों तांत्रिक मार डाले गये इस चौथे शरीर की वजह से, क्योंकि वे कुछ सीक्रेट्स (रहस्य) जानते थे जो कि हमें खतरनाक मालूम पड़े। आपके मन में क्या चल रहा है, वे जान सकते

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हैं; आपके घर में कहां क्या रखा है, यह उन्हें घर के बाहर से पता हो सकता है।

तो सारी दुनिया में इस चौथे शरीर को एक तरह का 'ब्लैक आर्ट' समझ लिया गया है कि एक... एक काले जादू की दुनिया है जहां कि कोई भरोसा नहीं कि क्या हो जाये ! और एक बार भी हमने मनुष्य को तीसरे शरीर पर रोकने की भरसक चेष्टा की कि चौथे शरीर पर खतरे हैं – खतरे थे; लेकिन खतरों के साथ उतने ही अदभुत लाभ भी थे। तो बजाय इसके कि रोकते, जांच-पड़ताल जरूरी थी कि वहां भी हम रास्ते खोज सकते हैं जांचने के। और अब वैज्ञानिक उपकरण भी हैं और समझ भी बढ़ी है; रास्ते खोजे जा सकते हैं। जैसे कुछ चीजों के रास्ते अभी खोजे गये। कल ही मैं देख रहा था।

अभी तक यह पक्का नहीं हो पाता था कि जानवर सपने देखते हैं कि नहीं देखते; क्योंकि जब तक जानवर कहे न, तब तक कैसे पता चले ? हमारा भी पता इसीलिए चलता है कि हम सुबह कह सकते हैं कि हमने सपना देखा। चूंकि जानवर नहीं कह सकता तो कैसे पता चले कि जानवर सपना देखता है या नहीं देखता। बहुत तकलीफ से लेकिन रास्ता खोज लिया गया। एक आदमी ने बंदरों पर वर्षों मेहनत की है यह बात जांचने के लिए कि वे सपने देखते हैं कि नहीं।

अब सपना बहुत निजी, चौथी बॉडी (शरीर) की बात है; बहुत निजी बात है। पर उसकी जांच की उसने जो व्यवस्था की, वह समझने जैसी है। उसने बंदरों को फिल्म दिखानी शुरू की – पर्दे पर फिल्म दिखानी शुरू की। और जैसे ही फिल्म चलनी शुरू हो, नीचे से बंदर को शॉक (झटके) देने शुरू किये बिजली के। और उसकी कुर्सी पर एक बटन लगा रखी जो उसको सिखा दी कि जब भी उसको शॉक लगे तो वह बटन बंद कर दे, तो शॉक लगना बंद हो जाये। फिल्म शुरू हो और शॉक लगे और वह बटन बंद करे, ऐसा उसका अभ्यास कराया। फिर उस कुर्सी पर उसको सो जाने दिया। जब उसका सपना चला, तो उसको घबराहट हुई कि शॉक न लग जाये, नींद में उसको घबराहट हुई; क्योंकि वह सपना और पर्दे पर फिल्म एक ही चीज है उसके लिए। उसने तत्काल बटन दबाई। इस बटन के दबाने का बार-बार प्रयोग करने पर ख्याल में आया कि उसको जब भी सपना चलता, तब वह बटन दबा देता – फौरन। अब सपने जैसी गहरी भीतर की दुनिया के, वह भी बंदर की, जो कह न सके, बाहर से जांच का कोई उपाय खोजा जा सका।

साधकों ने चौथे शरीर को भी बाहर से जांचने के उपाय खोज लिये – और अब तय किया जा सकता है कि जो हुआ, वह सच है या गलत; वह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

मिथ्या है या सही; जिस कुंडलिनी का तुमने चौथे शरीर पर अनुभव किया, वह वास्तविक है या झूठ। सिर्फ साइकिक होने से झूठ नहीं होती, फाल्स साइकिक (मनोगत मिथ्या) स्थितियां भी हैं और ट्रु साइकिक (मनोगत सत्य) स्थितियां भी हैं। यानी जब मैं कहता हूं कि वह मनस की है बात, तो इसका मतलब यह नहीं होता कि झूठी हो गयी; मनस में भी झूठ हो सकती है और मनस में भी सही हो सकती है।

तुमने एक सपना देखा रात। यह सपना एक सत्य है, क्योंकि यह घटा। लेकिन सुबह उठ कर तुम ऐसे सपने को भी याद कर सकते हो जो तुमने देखा नहीं, लेकिन तुम कह रहे हो कि मैंने देखा; तब यह झूठ है। एक आदमी सुबह उठ कर कहता है कि मैं सपना देखता ही नहीं। हजारों लोग हैं जिनको ख्याल है कि वे सपने नहीं देखते। वे सपने देखते हैं; क्योंकि सपने जांचने के अब बहुत उपाय हैं जिनसे पता चलता है कि वे रात भर सपने देखते हैं; लेकिन सुबह वे कहते हैं कि हमने सपना देखा ही नहीं। तो वे जो कह रहे हैं, बिलकुल झूठ कह रहे हैं – हालांकि उन्हें पता नहीं। असल में उनको स्मृति नहीं बचती सपने की। इससे उलटा भी हो रहा है : जो सपना तुमने कभी नहीं देखा, उसकी भी तुम सुबह कल्पना कर सकते हो कि तुमने देखा। वह झूठ होगा।

सपना कहने से कुछ झूठ नहीं हो जाता, सपने के अपने यथार्थ हैं। झूठा सपना भी हो सकता है, सच्चा सपना भी – मेरा मतलब समझे ? सच्चे का मतलब यह है कि जो हुआ है, सच में हुआ है। और ठीक-ठीक तो सपने को तुम बता ही नहीं पाते सुबह। मुश्किल से कोई आदमी है जो सपने की ठीक रिपोर्ट कर सके।

इसलिए पुरानी दुनिया में जो आदमी अपने सपने की ठीक-ठीक रिपोर्ट कर सकता था, उसकी बड़ी कीमत हो जाती थी। उसकी बड़ी कठिनाइयां हैं, सपने की रिपोर्ट ठीक से देने की। बड़ी कठिनाई तो यह है कि जब तुम सपना देखते हो तब उसका सीक्वेंस (क्रम) अलग होता है और जब याद करते हो तब उलटा होता है, फिल्म की तरह। जब हम फिल्म देखते हैं तो शुरू से देखते हैं, पीछे की तरफ। सपना जब आप देखते हैं नींद में तो जो घटना पहले घटी, वह स्मृति में सबसे बाद में घटेगी; क्योंकि वह सबसे पीछे दबी रह गयी। जब तुम सुबह उठते हो तो सपने का आखिरी हिस्सा तुम्हारे हाथ में होता है और उससे तुम पीछे की तरफ याद करना शुरू करते हो। यह ऐसे ही उपद्रव का काम है, जैसे कोई किताब को उलटी तरफ से पढ़ना शुरू करे, और सब शब्द उलटे हो जायें, और वह डगमगा जाये। इसलिए थोड़ी दूर तक ही जा पाते

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हो सपने में, बाकी सब गड़बड़ हो जाता है। उसे याद रखना और उसकी ठीक से रिपोर्ट कर देना बड़ी कला की बात है। इसलिए हम आमतौर से गलत रिपोर्ट करते हैं; जो हमें नहीं हुआ होता, वह रिपोर्ट करते हैं। उसमें बहुत कुछ खो जाता है, बहुत कुछ बदल जाता है, बहुत कुछ जुड़ जाता है।

यह जो चौथा शरीर है, सपना इसकी ही घटना है।

योग-सिद्धियां, कुंडलिनी, चक्र इत्यादि

इस चौथे शरीर की बड़ी संभावनाएं हैं। जितनी भी योग में सिद्धियों का वर्णन है, वह इस सारे चौथे शरीर की ही व्यवस्था है। और निरंतर योग ने सचेत किया है कि उनमें मत जाना। तो सबसे बड़ा डर यही है कि उसमें मिथ्या में जाने के बहुत उपाय हैं और भटक जाने की बड़ी संभावनाएं हैं। और अगर वास्तविक में भी चले जाओ तो भी उसका आध्यात्मिक मूल्य नहीं है।

तो जब मैंने कहा कि कुंडलिनी साइकिक (मानसिक) है, तो मेरा मतलब यह था कि वह इस चौथे शरीर की घटना है, वस्तुतः। इसलिए फीजियोलॉजिस्ट (शरीरशास्त्री) तुम्हारे इस शरीर को जब खोजने जायेगा तो उसमें कोई कुंडलिनी नहीं पायेगा। तो तुम, सारी दुनिया के सर्जन, डॉक्टर कहेंगे कि कहां की फिजूल की बातें कर रहे हो, कुंडलिनी जैसी कोई चीज इस शरीर में नहीं है; तुम्हारे चक्र इस शरीर में कहीं भी नहीं हैं।

वह चौथे शरीर की व्यवस्था है। वह चौथा शरीर लेकिन सूक्ष्म है, उसे पकड़ा नहीं जा सकता, पकड़ में तो यही शरीर आता है। लेकिन उस शरीर और इस शरीर के तालमेल पड़ते हुए स्थान हैं; जैसे कि हम सात कागज रख लें, और एक आल्पीन सातों कागज में डाल दें, और एक छेद सातों कागज में एक जगह पर हो जाये। अब समझ लो कि पहले कागज पर छेद विदा हो गया, नहीं है – फिर भी, दूसरे कागज पर, तीसरे कागज पर जहां छेद है उससे कॉरेस्पांड (मिलान) करनेवाला स्थान पहले कागज पर भी है; छेद तो नहीं है, इसलिए पहले कागज की जांच पर वह छेद नहीं मिलेगा, लेकिन पहले कागज पर भी कारस्पांडिंग (मिलता-जुलता) कोई बिंदु है, जिसको अगर हाथ रखा जाये तो वह तीसरे-चौथे कागज पर जो बिंदु है, उसी जगह पर होगा।

तो इस शरीर में जो चक्र हैं, कुंडलिनी है, आदि की जो बात है, वह इस शरीर की नहीं है, वह इस शरीर में सिर्फ कारस्पांडिंग (मेल खानेवाले) बिंदुओं की है। और इसलिए... इसलिए कोई शरीर-शास्त्री इनकार करे तो गलत नहीं

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कह रहा है – वहां कोई कुंडलिनी नहीं मिलती, कोई चक्र नहीं मिलता । वह किसी और शरीर पर है, लेकिन इस शरीर से संबंधित बिंदुओं का पता लगाया जा सकता है ।

कुंडलिनी : मनस शरीर की घटना

तो कुंडलिनी चौथे शरीर की घटना है; इसलिए मैंने कहा, साइकिक है । और जब मैं कह रहा हूं कि यह साइकिक होना, यह मानसिक होना भी दो तरह का हो सकता है – गलत और सही, तो मेरी बात तुम्हारे ख्याल में आ जायेगी । गलत तब होगा जब तुमने कल्पना की; क्योंकि कल्पना भी चौथे शरीर की ही स्थिति है । जानवर कल्पना नहीं कर पाते, तो जानवर का अतीत थोड़ा-बहुत होता है, भविष्य बिलकुल नहीं होता । इसलिए जानवर निश्चिंत हैं; क्योंकि चिंता सब भविष्य के बोध से पैदा होती है । जानवर रोज अपने आसपास किसी को मरते देखते हैं, लेकिन यह कल्पना नहीं कर पाते कि मैं मरूंगा । इसलिए मृत्यु का कोई भय जानवर को नहीं है । आदमी में भी बहुत आदमी हैं जिनको यह ख्याल नहीं आता कि मैं मरूंगा; उसको भी ख्याल आता है – कोई और मरता है, कोई और मरता है, कोई और मरता है; मैं मरूंगा, इसका ख्याल नहीं आता । उसका कारण सिर्फ यह है कि चौथे शरीर में कल्पना जितनी विस्तीर्ण होनी चाहिए कि दूर तक देख पाये, वह नहीं हुई ।

अब इसका मतलब यह हुआ कि कल्पना भी सही होती है और मिथ्या होती है । सही का मतलब सिर्फ यह है कि हमारी संभावना दूर तक देखने की है । जो अभी नहीं है, उसको देखने की संभावना कल्पना की बात है । लेकिन जो होगा ही नहीं, जो है ही नहीं, उसको भी मान लेना कि हो गया है और है, वह मिथ्या कल्पना होगी ।

तो कल्पना का अगर ठीक उपयोग हो तो विज्ञान पैदा हो जाता है, क्योंकि विज्ञान सिर्फ एक कल्पना है – प्राथमिक रूप से । हजारों साल से आदमी सोचता है कि आकाश में उड़ेंगे । जिस आदमी ने यह सोचा होगा कि आकाश में उड़ेंगे, बड़ा कल्पनाशील रहा होगा । लेकिन अगर किसी आदमी ने यह न सोचा होता तो राइट ब्रदर्स हवाई जहाज नहीं बना सकते थे । हजारों लोगों ने कल्पना की है और सोचा है कि हवाई जहाज में उड़ेंगे, इसकी संभावना को जाहिर किया है । फिर धीरे-धीरे, धीरे-धीरे संभावना प्रकट होती चली गयी – खोज हो गयी और बात हो गयी । फिर हम सोच रहे हैं हजारों वर्षों से कि चांद पर पहुंचेंगे । वह कल्पना थी, उस कल्पना को जगह मिल गयी; लेकिन वह कल्पना ऑथेंटिक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

(प्रामाणिक) थी। यानी वह कल्पना मिथ्या के मार्ग पर नहीं थी। वह कल्पना भी उस सत्य के मार्ग पर थी जो कल आविष्कृत हो सकता है।

तो वैज्ञानिक भी कल्पना कर रहा है, एक पागल भी कल्पना कर रहा है। तो अगर मैं कहूं कि पागलपन भी कल्पना है और विज्ञान भी कल्पना है, तो तुम यह समझ लेना कि दोनों एक ही चीज है। पागल भी कल्पना कर रहा है, लेकिन वह ऐसी कल्पनाएं कर रहा है जिनका वस्तु-जगत से कभी कोई तालमेल न है, न हो सकता है। वैज्ञानिक भी कल्पना कर रहा है, लेकिन ऐसी कल्पना कर रहा है जो वस्तु-जगत से तालमेल रखती है। और अगर कहीं तालमेल नहीं रखती है तो तालमेल होने की संभावना है पूरी की पूरी। तो इस चौथे शरीर की जो भी संभावनाएं हैं उनमें सदा डर है कि हम कहीं भी चूक जायें और मिथ्या का जगत शुरू हो जाता है। तो इसलिए इस चौथे शरीर में जाने के पहले सदा अच्छा है कि हम कोई अपेक्षाएं लेकर न जायें, एक्सपेक्टेशंस न हों; क्योंकि यह चौथा शरीर मनस-शरीर है।

जैसा कि मुझे अगर इस मकान से नीचे उतरना है – वस्तुतः, तो मुझे सीढ़ियां खोजनी पड़ेंगी, लिफ्ट खोजनी पड़ेगी। लेकिन मुझे अगर विचार में उतरना है, तो लिफ्ट और सीढ़ी की कोई जरूरत नहीं, मैं यही बैठकर उतर जाऊंगा।

विचार और कल्पना में खतरा यह है कि चूंकि कुछ नहीं करना पड़ता, सिर्फ विचार करना पड़ता है, तो कोई भी उतर सकता है। और अगर अपेक्षाएं लेकर कोई गया, तो जो अपेक्षाएं लेकर जाता है उन्हीं में उतर जायेगा; क्योंकि मन कहेगा कि ठीक है, कुंडलिनी जगानी है, यह जाग गयी। और तुम कल्पना करने लगोगे कि जाग रही, जाग रही, जाग गयी – और तुम्हारा मन कहेगा कि बिलकुल जाग गयी और बात खत्म हो गयी – कुंडलिनी उपलब्ध हो गयी है; चक्र खुल गये हैं; ऐसा हो गया है।

लेकिन इसको जांचने की कोई कसौटी है – और वह कसोटी यह है कि प्रत्येक चक्र के साथ तुम्हारे व्यक्तित्व में आमूल परिवर्तन होगा। उस परिवर्तन की तुम कल्पना नहीं कर सकते, क्योंकि वह परिवर्तन वस्तु-जगत का हिस्सा है।

कुंडलिनी-जागरण से व्यक्तित्व में आमूल रूपांतरण

जैसे, कुंडलिनी जगे तो शराब नहीं पी जा सकती – असंभव है; क्योंकि वह जो मनस-शरीर है, वह सबसे पहले शराब से प्रभावित होता है; वह बहुत डेलिकेट (नाजुक) है। इसलिए बड़ी हैरानी की बात जानकर होगी कि अगर स्त्री

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शराब पी ले और पुरुष शराब पी ले तो पुरुष शराब पीकर इतना खतरनाक कभी नहीं होता, जितनी स्त्री शराब पीकर खतरनाक हो जाती। उसका मनस शरीर और भी डेलिकेट है। अगर एक पुरुष और एक स्त्री को शराब पिलायी जाये तो पुरुष शराब पीकर इतना खतरनाक कभी नहीं होता, जितना स्त्री हो जाये। स्त्री तो इतनी खतरनाक सिद्ध होती शराब पीकर जिसका कोई हिसाब लगाना मुश्किल है। उसके पास और भी डेलिकेट मेंटल बॉडी (नाजुक मनस शरीर) है, जो इतनी शीघ्रता से प्रभावित होती है कि फिर उसके बस के बाहर हो जाती है।

इसलिए स्त्रियों ने आमतौर से नशे से बचने की व्यवस्था कर रखी है, पुरुषों की बजाय ज्यादा। इस मामले में उन्होंने समानता का दावा अब तक नहीं किया था, लेकिन अब वे कर रही हैं; वह खतरनाक होगा। जिस दिन भी वह इस मामले में समानता का दावा करेंगी, उस दिन पुरुष के नशे करने से जो नुकसान नहीं हुआ, वह स्त्री के नशे करने से होगा।

यह जो चौथा शरीर है, इसमें सच में ही कुंडलिनी जगी है, यह तुम्हारे कहने और अनुभव करने से सिद्ध नहीं होगा; क्योंकि वह तो झूठ में भी तुम्हें अनुभव होगा और तुम कहोगे। नहीं, वह तो तुम्हारा जो वस्तु-जगत का व्यक्तित्व है, उससे तय हो जायेगा कि वह घटना घटी है या नहीं घटी है; क्योंकि उसमें तत्काल फर्क पड़ने शुरू हो जायेंगे।

इसलिए मैं निरंतर कहता हूं कि आचरण जो है वह कसौटी है – साधन नहीं है; भीतर कुछ घटा है, उसकी कसौटी है। और प्रत्येक प्रयोग के साथ कुछ बातें अनिवार्य रूप से घटनी शुरू होंगी। जैसे चौथे शरीर की शक्ति के जगने के बाद किसी भी तरह का मादक द्रव्य नहीं लिया जा सकता। अगर लिया जाता है, और उसमें रस है, तो जानना चाहिए कि किसी मिथ्या कुंडलिनी के ख्याल में पड़ गये हो। वह नहीं संभव है।

जैसे कुंडलिनी जागने के बाद हिंसा करने की वृत्ति सब तरफ से विदा हो जायेगी – हिंसा करना ही नहीं, हिंसा करने की वृत्ति भी; क्योंकि हिंसा करने की जो वृत्ति है, हिंसा करने का जो भाव है, दूसरे को नुकसान पहुंचाने की जो भावना और कामना है, वह तभी तक हो सकती है जब तक कि तुम्हारी कुंडलिनी शक्ति नहीं जगी है। जिस दिन वह जगती है, उसी दिन से तुम्हें दूसरा दूसरा नहीं दिखाई पड़ता... कि उसको तुम नुकसान पहुंचा सको; उसको तुम नुकसान नहीं पहुंचा सकते। और तब तुम्हें हिंसा रोकनी नहीं पड़ेगी, तुम हिंसा नहीं कर पाओगे और अगर तब भी रोकनी पड़ रही हो तो जानना चाहिए कि वह जगी नहीं है। अगर तुम्हें अब भी संयम रखना पड़ता हो हिंसा पर, तो समझना चाहिए कि अभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Madhuban Trust

कुंडलिनी नहीं जगी है ।

अगर आंख खुल जाने पर भी तुम लकड़ी से टटोल-टटोलकर चलते हो, तो समझ लेना चाहिए : आंख नहीं खुली है – भला तुम कितना ही कहते हो कि आंख खुल गयी; क्योंकि तुम अभी लकड़ी नहीं छोड़ते और तुम टटोलना अभी जारी रखे हुए हो, टटोलना भी बंद नहीं करते । तो साफ समझा जा सकता है । हमें पता नहीं है कि तुम्हारी आंख खुली है कि नहीं खुली, लेकिन तुम्हारी लकड़ी और तुम्हारा टटोलना और डर-डरकर तुम्हारा चलना बताता है कि आंख नहीं खुली है ।

चरित्र में आमूल परिवर्तन होगा – और सारे नियम जो कहे गये हैं महाव्रत, वे सहज हो जायेंगे । तो समझना कि सच में ही ऑथेंटिक (प्रामाणिक) है – साइकिक (मनोगत) ही है, लेकिन ऑथेंटिक है । और अब आगे जा सकते हो, क्योंकि ऑथेंटिक से आगे जा सकते हो; अगर झूठी है तो आगे नहीं जा सकते । और चौथा शरीर मुकाम नहीं है, अभी और शरीर हैं ।

चौथे शरीर में चमत्कारों का प्रारंभ

तो मैंने कहा कि चौथा शरीर कम लोगों का विकसित हाता है । इसलिए दुनिया में मिरेकल्स (चमत्कार) हो रहे हैं । अगर चौथा शरीर हम सबका विकसित हो तो दुनिया में चमत्कार तत्काल बंद हो जायेंगे । यह ऐसे ही है, जैसे कि चौदह साल तक हमारा शरीर विकसित हो, और हमारी बुद्धि विकसित न हो पाये, तो एक आदमी जो हिसाब-किताब लगा सकता हो बुद्धि से, गणित का हिसाब कर सकता हो, वह चमत्कार मालूम हो । ...ऐसा था ।

आज से हजार साल पहले जब कोई कह देता था कि फलां दिन सूर्य-ग्रहण पड़ेगा, तो वह बड़ी चमत्कार की बात थी; वह परम ज्ञानी ही बता सकता था । अब आज हम जानते हैं कि यह मशीन बता सकती है, यह सिर्फ गणित का हिसाब है । इसमें कोई ...इसमें कोई ज्योतिष और कोई प्रोफेसी (भविष्यवाणी) और कोई ...कोई बड़े भारी ज्ञानी की जरूरत नहीं है, एक कंप्यूटर बता सकता है – और एक साल का नहीं, आनेवाले करोड़ों साल का बता सकता है कि कब-कब सूर्य-ग्रहण पड़ेगा । और अब तो कंप्यूटर यह भी बता सकता है कि सूरज कब ठंडा हो जायेगा... कि अब तो सारा हिसाब है : वह जितनी गर्मी फेंक रहा है, उससे उसकी कितनी गर्मी रोज कम होती जा रही है, उसमें कितना गर्मी का भंडार है, वह इतने हजार वर्ष में ठंडा हो जायेगा, यह एक मशीन बता देगी ।

लेकिन यह अब हमको चमत्कार नहीं मालूम पड़ेगा, क्योंकि हम सब तीसरे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शरीर को विकसित कर लिए हैं। आज से हजार साल पहले यह बात चमत्कार की थी कि कोई आदमी बता दे कि अगले साल, फलां रात को, ऐसा होगा कि चांद पर ग्रहण हो जायेगा। तो जब साल भर बाद ग्रहण हो जाता, तो हमें मानना पड़ता कि यह आदमी अलौकिक है। अभी जो चमत्कार घट रहे हैं... कि कोई आदमी ताबीज निकाल देता है, किसी आदमी की तस्वीर से राख गिर जाती है, ये सब चौथे शरीर के लिए बड़ी साधारण सी बातें हैं। लेकिन वह हमारे पास नहीं हैं, तो हमारे लिए बड़ा भारी चमत्कार है।

ये सारी बात ऐसी है जैसे कि एक... एक झाड़ के नीचे तुम खड़े हो, मैं झाड़ के ऊपर बैठा हूं, मैं तुमसे कहता हूं कि घंटे भर बाद एक बैलगाड़ी इस रास्ते पर आयेगी; वह मुझे दिखाई पड़ रही है – मैं झाड़ के ऊपर बैठा हूं, तुम झाड़ के नीचे बैठे हो, हम दोनों में बातें हो रही हैं। मैं कहता हूं, एक घंटे बाद एक बैलगाड़ी इस झाड़ के नीचे आयेगी। तुम कहते हो, बड़े चमत्कार की बातें कर रहे हो ! बैलगाड़ी कहीं दिखाई नहीं पड़ती। क्या आप कोई भविष्य-वक्ता हैं ? मैं नहीं मान सकता। लेकिन घंटे भर बाद बैलगाड़ी आ जाती, और तब आपको मेरे चरण छूने पड़ते हैं कि गुरुदेव, मैं नमस्कार करता हूं, आप बड़े भविष्यवक्ता हैं। लेकिन फर्क कुल इतना है कि मैं थोड़ी ऊंचाई पर एक झाड़ पर बैठा हूं, जहां से मुझे बैलगाडी घंटे भर पहले वर्तमान हो गयी थी। भविष्य की बात मैं नहीं कह रहा हूं, मैं भी वर्तमान की ही बात कर रहा हूं। लेकिन आपके वर्तमान में, मेरे वर्तमान में घंटे भर का फासला है, क्योंकि मैं एक ऊंचाई पर बैठा हूं। आपके लिए घंटे भर बाद वह वर्तमान बनेगा, मेरे लिए अभी वर्तमान हो गया है।

तो जितने गहरे शरीर पर व्यक्ति खड़ा हो जायेगा, उतना ही पीछे के शरीर के लोगों के लिए चमत्कार हो जायेगा। तो उसकी सब चीजें मिरेकुलस (चमत्कारिक) मालूम पड़ने लगेंगी कि यह हो रहा है, यह हो रहा है, यह हो रहा है – और हमारे पास कोई उपाय न होगा कि कैसे हो रहा है; क्योंकि उस चौथे शरीर के नियम का हमें कोई पता नहीं है। इसलिए दुनिया में जादू चलता है, चमत्कार घटित होते हैं; वे सब... वे सब चौथे शरीर के थोड़े से विकास हैं।

इसलिए जिस दुनिया से अगर चमत्कार खत्म करने हों, तो लोगों को समझाने से खतम नहीं होंगे; चमत्कार खतम करने हों तो जैसे हम तीसरे शरीर की शिक्षा देकर प्रत्येक व्यक्ति को गणित और भाषा समझने के योग्य बना देते हैं, उसी तरह हमें चौथे शरीर की शिक्षा भी देनी पड़ेगी, और प्रत्येक व्यक्ति को इस तरह की चीजों के योग्य बना देना होगा; तब दुनिया से चमत्कार मिटेंगे, उसके पहले नहीं मिट सकते। कोई न कोई आदमी इसका फायदा लेता रहेगा।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

चौथा शरीर अट्ठाइस वर्ष तक विकसित होता है – यानी सात वर्ष फिर और। लेकिन मैंने कहा कि कम ही लोग इसको विकसित करते हैं।

पांचवां आत्म शरीर

पांचवां शरीर बहुत कीमती है, जिसको अध्यात्म शरीर या स्पिरिचुअल-बॉडी कहें, वह पैंतीस वर्ष की उम्र तक, अगर ठीक से जीवन का विकास हो, तो उसको विकसित हो जाना चाहिए। लेकिन, वह तो बहुत दूर की बात है, चौथा शरीर ही नहीं विकसित हो पाता। इसलिए आत्मा वगैरह हमारे लिए बातचीत है, सिर्फ चर्चा है; उस शब्द के पीछे कोई कंटेंट (सार तत्व) नहीं है। जब हम कहते हैं 'आत्मा', तो उसके पीछे कुछ नहीं होता है, सिर्फ शब्द होता है; जब हम कहते हैं 'दीवाल', तो सिर्फ शब्द नहीं होता, पीछे कंटेंट होता है। हम जानते हैं, दीवाल यानी क्या।

आत्मा शब्द के पीछे कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि आत्मा हमारा अनुभव नहीं है। वह पांचवां शरीर है। और चौथे शरीर में कुंडलिनी जगे तो ही पांचवें शरीर में प्रवेश हो सकता है, अन्यथा पांचवें शरीर में प्रवेश नहीं हो सकता। चौथे का पता नहीं है, इसलिए पांचवें का पता नहीं हो पाता। और पांचवां भी बहुत थोड़े से लोगों को पता हो पाता है। जिसको हम आत्मवादी कहते हैं, कुछ लोग उस पर रुक जाते हैं... और वे कहते हैं : बस, यात्रा पूरी हो गयी; आत्मा पा लिया और सब पा लिया। यात्रा अभी भी पूरी नहीं हो गयी।

इसलिए जो लोग इस पांचवें शरीर पर रुकेंगे, वे परमात्मा को इनकार कर देंगे; वे कहेंगे, कोई ब्रह्म, कोई परमात्मा वगैरह नहीं हैं। जैसे जो पहले शरीर पर रुकेगा, वह कह देगा कि कोई आत्मा वगैरह नहीं है। एक शरीरवादी है, एक मेटीरियलिस्ट (भौतिकवादी) है, वह कहता है : शरीर सब कुछ है; शरीर मर जाता है, सब मर जाता है। ऐसा ही आत्मवादी है, वह कहता है : आत्मा ही सब कुछ है, इससे आगे कुछ भी नहीं; बस, परम स्थिति आत्मा है। लेकिन वह पांचवां शरीर ही है।

छठवां ब्रह्म शरीर और सातवां निर्वाण काया

छठवां शरीर ब्रह्म शरीर है, वह काज़्मिक बॉडी है। जब कोई आत्मा को विकसित कर ले और उसको खोने को राजी हो, तब वह छठवें शरीर में प्रवेश करता है। वह बयालीस वर्ष की उम्र तक सहज हो जाना चाहिए – अगर दुनिया में मनुष्यजाति ठीक ढंग से विकासित करे, तो बयालीस वर्ष तक हो जाना

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

चाहिए ।

और सातवां शरीर उनचास वर्ष तक हो जाना चाहिए । वह सातवां शरीर निर्वाण काया है; वह कोई शरीर नहीं है, वह बॉडीलेसनेस (देहशून्यता) की हालत है । वह परम है । वहां शून्य ही शेष रह जायेगा । वहां ब्रह्म भी शेष नहीं है । वहां कुछ भी शेष नहीं है । वहां सब समाप्त हो गया है ।

इसलिए बुद्ध से जब भी कोई पूछता है, वहां क्या होगा, तो वे कहते हैं : जैसे दीया बुझ जाता है, फिर क्या होता है ? खो जाती है ज्योति, फिर तुम नहीं पूछते, कहां गयी ? फिर तुम नहीं पूछते, अब कहां रहती होगी ? बस खो गयी ।

'निर्वाण' शब्द का मतलब होता है, दीये का बुझ जाना; इसलिए बुद्ध कहते हैं, निर्वाण हो जाता है ।

पांचवें शरीर तक मोक्ष की प्रतीति होगी, क्योंकि परम मुक्ति हो जायेगी; ये चार शरीरों के बंधन गिर जायेंगे और आत्मा परम मुक्त होगी ।

तो मोक्ष जो है, वह पांचवें शरीर की अवस्था का अनुभव है ।

अगर चौथे शरीर पर कोई रुक जाये, तो स्वर्ग का या नर्क का अनुभव होगा; वे चौथे शरीर की संभावनाएं हैं ।

अगर पहले, दूसरे और तीसरे शरीर पर कोई रुक जाये, तो यही जीवन सब कुछ है – जन्म और मृत्यु के बीच; इसके बाद कोई जीवन नहीं है ।

अगर चौथे शरीर पर चला जाये, तो इस जीवन के बाद नर्क का और स्वर्ग का जीवन है; दुख और सुख की अनंत संभावनाएं हैं वहां ।

अगर पांचवें शरीर पर पहुंच जाये तो मोक्ष का द्वार है ।

अगर छठवें पर पहुंच जाये, तो मोक्ष के भी पार ब्रह्म की संभावना है; वहां न मुक्त है, न अमुक्त है; वहां जो भी है उसके साथ वह एक हो गया ।

'अहम् ब्रह्मास्मि' की घोषणा इस छठवें शरीर की संभावना है । लेकिन अभी एक कदम और, जो लास्ट जम्प (अंतिम छलांग) है – जहां न 'अहम्' है, न 'ब्रह्म' है; जहां 'मैं' और 'तू' दोनों नहीं हैं; जहां कुछ है ही नहीं, जहां परम शून्य है – टोटल, एब्सोल्यूट वायड (परिपूर्ण शून्य) – वह निर्वाण है ।

हर सात साल में एक शरीर का विकास

ये सात शरीर हैं । इसलिए पचास वर्ष की ...उनचास वर्ष में यह पूरा होता है, इसलिए औसतन पचास वर्ष को क्रांति का बिंदु समझा जाता था । पच्चीस वर्ष तक एक जीवन-व्यवस्था थी । इस पच्चीस वर्ष में कोशिश की जाती थी कि हमारे जो भी जरूरी शरीर हैं वे विकसित हो जायें – यानी चौथे शरीर तक आदमी पहुंच

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband.

Digitized by Madhuban Trust

जाये; मनस शरीर तक आदमी पहुंच जाये, तो उसकी शिक्षा पूर हुई। फिर वह पांचवें शरीर को जीवन में खोजे। और पचास वर्ष तक – शेष पच्चीस वर्षों में – वह सातवें शरीर को उपलब्ध हो जाये। इसलिए पचास वर्ष में दूसरा क्रांति का बिंदु आयेगा कि अब वह वानप्रस्थ हो जाये। वानप्रस्थ का मतलब केवल इतना ही है कि उसका मुख अब जंगल की तरफ हो जाये; अब आदमी की तरफ से, समाज की तरफ से, भीड़ की तरफ से वह मुंह को फेर ले। और पचहत्तर वर्ष फिर एक क्रांति का बिंदु है जहां से वह संन्यस्त हो जाये; वन की तरफ मुंह फेर ले – ये भीड़ और आदमी से बचे; और संन्यस्त का मतलब है : अपने से भी बचे; अब अपने से भी मुंह फेर ले। मतलब समझ रहे हो न तुम ? यानी जंगल में अब 'मैं' तो बच ही जाऊंगा ! फिर इसको भी छोड़ने का वक्त है कि पचहत्तर वर्ष में फिर इसको भी छोड़ दे।

लेकिन गृहस्थ-जीवन में उसके सातों शरीर का अनुभव और विकास हो जाना चाहिए, तो यह सब आगे बड़ा सहज और आनंदपूर्ण हो जायेगा; और अगर यह न हो पाये तो यह बड़ा कठिन हो जायेगा, क्योंकि प्रत्येक उम्र के साथ विकास की एक स्थिति जुड़ी है।

अगर एक बच्चे का शरीर सात वर्ष में स्वस्थ न हो पाये, तो फिर जिंदगी भर वह किसी न किसी अर्थों में बीमार रहेगा। ज्यादा से ज्यादा हम इतना ही इंतजाम कर सकते हैं कि वह बीमार न रहे, लेकिन स्वस्थ कभी न हो सकेगा; क्योंकि उसकी बेसिक फाउंडेशन (मौलिक नींव) जो सात साल में पड़नी थी, वह डगमगा गयी; वह उसी वक्त पड़नी थी। जैसे कि हमने मकान की नींव भरी, अगर नींव कमजोर रह गयी तो शिखर पर पहुंच कर उसको ठीक करना बहुत मुश्किल मामला है; वह जब नींव भरी थी, तभी मजबूत हो जानी चाहिए थी।

तो वे जो पहले सात वर्ष हैं, वह अगर शारीरिक शरीर के लिए पूरी व्यवस्था मिल जाये, तो बात बनेगी। दूसरे सात वर्ष में अगर भाव शरीर का ठीक विकास न हो पाये, तो पच्चीस सेक्सुअल परवर्शंस (यौन विकृतियां) पैदा हो जायेंगे; फिर उनको सुधारना बहुत मुश्किल हो जायेगा। वह वही वक्त है, जब कि तैयारी उसकी हो जानी चाहिए – यानी जीवन की प्रत्येक सीढ़ी पर, प्रत्येक शरीर की साधना का सुनिश्चित समय है। उसमें इंच, दो इंच का फेर-फासला और बात है, लेकिन एक सुनिश्चित समय है।

हर शरीर का समय पर विकसित हो जाना जरूरी

अगर किसी बच्चे में चौदह साल तक सेक्स का विकास न हो पाये, तो अब

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

उसकी पूरी जिंदगी किसी तरह की मुसीबत में बीतेगी।

अगर इक्कीस वर्ष तक उसकी बुद्धि विकसित न हो पाये, तो फिर अब बहुत कम उपाय है कि इक्कीस वर्ष के बाद हम उसकी बुद्धि को विकसित करवा पायें। लेकिन इस संबंध में हम सब राजी हो जाते हैं कि यह ठीक बात है। इसलिए हम पहले शरीर की भी फिक्र कर लेते हैं, स्कूल में भी पढ़ा देते हैं – सब कर देते हैं; लेकिन बाद के शरीरों का विकास भी उस सुनिश्चित उम्र से बंधा हुआ है, और वह चूक जाने की वजह से बहुत कठिनाई होती है। एक आदमी पचास साल की उम्र में उस शरीर को विकसित करने में लगता है जो उसे इक्कीस वर्ष में लगना चाहिए था। तो इक्कीस वर्ष में जितनी ताकत उसके पास थी उतनी पचास वर्ष में उसके पास नहीं है। इसलिए अकारण कठिनाई पड़ती है और उसे बहुत ज्यादा श्रम उठाना पड़ता है जो कि इक्कीस वर्ष में आसान हुआ होता। वह अब एक लंबा पथ और कठिन पथ हो जाता है।

और एक कठिनाई हो जाती है कि इक्कीस वर्ष में उस द्वार पर खड़ा था... और इक्कीस वर्ष और पचास वर्ष के बीच तीस वर्ष में वह इतने बाजारों में भटका है कि वह दरवाजे पर भी नहीं है, अब – जहां इक्कीस वर्ष में अपने-आप खड़ा हो गया था; जहां से जरा-सी चोट और दरवाजा खुल जाता, अब उसको वह दरवाजा फिर से खोजना है; और वह इस बीच इतना भटक चुका है, वह इतने दरवाजे देख चुका है कि उसे पता लगाना भी मुकिश्ल है कि वह दरवाजा कौन सा है, जिसमें मैं इक्कीस वर्ष में खड़ा हो गया।

इसलिए पच्चीस वर्ष तक एक बड़ी सुनियोजित व्यवस्था की जरूरत है बच्चों के लिए। वह इतनी सुनियोजित होनी चाहिए कि उनको चौथे पर तो पहुंचा दे; चौथे के बाद बहुत आसान है मामला। फाउंडेशन (नींव) सब भर दी गयी हैं, अब तो सिर्फ फल आने की बात है। पांचवें से फल आने शुरू हो जाते – चौथे तक वृक्ष निर्मित होता है, पांचवें से फल आने शुरू होते हैं, सातवें पर पूरे हो जाते हैं। इसमें थोड़ी देर-अबेर हो सकती है, लेकिन यह बुनियाद पूरी की पूरी मजबूत हो जाये।

इस संबंध में एक-दो बातें और ख्याल में ले लेनी चाहिए।

स्त्री और पुरुष के चार विद्युतीय शरीर

चार शरीर तक स्त्री और पुरुष का फासला है। जैसे कोई व्यक्ति पुरुष है, तो उसकी फिजिकल बॉडी (भौतिक शरीर) मेल बॉडी (पुरुष शरीर) होती है; वह पुरुष शरीर होता है उसका भौतिक शरीर। लेकिन उसके पीछे की, नंबर दो की

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

एथरिक बॉडी, भाव शरीर स्त्रैण होती है; वह फीमेल बॉडी होती है; क्योंकि कोई निगेटिव (ऋणात्मक) या कोई पॉज़िटिव (धनात्मक) अकेला नहीं रह सकता।

स्त्री का शरीर और पुरुष का शरीर, इसको अगर हम विद्युत की भाषा में कहें, तो निगेटिव और पॉज़िटिव बॉडीज़ (शरीर) हैं। स्त्री के पास निगेटिव बॉडी है – स्थूल।

इसलिए स्त्री कभी भी सेक्स के संबंध में आक्रामक नहीं हो सकती, वह पुरुष पर बलात्कार नहीं कर सकती; उसके पास निगेटिव बॉडी है। वह बलात्कार झेल सकती है, कर नहीं सकती। पुरुष की बिना इच्छा के स्त्री उसके साथ कुछ भी नहीं कर सकती।

लेकिन पुरुष के पास पॉज़िटिव बॉडी है, वह स्त्री की बिना इच्छा के भी कुछ कर सकता है; आक्रामक शरीर है उसके पास। निगेटिव का मतलब ऐसा नहीं है कि शून्य, और ऐसा नहीं कि ऋणात्मक। निगेटिव का मतलब विद्युत की भाषा में इतना ही होता है – रिज़र्वायर (संग्राहक)। स्त्री के पास एक ऐसा शरीर है जिसमें शक्ति संरक्षित है – बड़ी शक्ति संरक्षित है; लेकिन सक्रिय नहीं है, है वह निष्क्रिय शक्ति।

इसलिए स्त्रियां कुछ सृजन नहीं कर पातीं – न कोई बड़ी कविता का जन्म कर पाती हैं, न कोई बड़ी पेंटिंग बना पाती हैं, न कोई विज्ञान की खोज कर पाती हैं; उनके ऊपर कोई बड़ी खोज नहीं है, उनके ऊपर कोई सृजन नहीं है, क्योंकि सृजन के लिए आक्रमक होना जरूरी है; वे सिर्फ प्रतीक्षा करती रहती हैं, इसलिए सिर्फ बच्चे पैदा कर पाती हैं।

पुरुष के पास एक पॉज़िटिव बॉडी है – भौतिक शरीर है। लेकिन जहां भी पॉज़िटिव है, उसके पीछे निगेटिव को होना चाहिए, नहीं तो वह टिक नहीं सकता। वे दोनों ही इकट्ठे मौजूद होते हैं, तब उनका पूरा सर्कल (वृत्त) बनता है।

तो पुरुष का जो नंबर दो का शरीर है, वह स्त्रैण है; स्त्री के पास जो दो नंबर का शरीर है, वह पुरुष का है।

इसलिए एक और मजे की बात है कि पुरुष दिखता बहुत ताकतवर है – जहां तक उसके भौतिक शरीर का संबंध है, वह बहुत ताकतवर है; लेकिन उसके पीछे एक कमजोर शरीर खड़ा हुआ है, स्त्रैण। इसलिए उसकी ताकत क्षणों में प्रगट होगी। लंबे अरसे में वह स्त्री से हार जायेगा; क्योंकि स्त्री के पीछे जो शरीर है, वह पॉज़िटिव है।

इसलिए रेसिस्टेंस की, सहने की क्षमता पुरुष से स्त्री में सदा ज्यादा होगी। अगर एक बीमारी पुरुष और स्त्री पर हो, तो स्त्री उसे लंबे समय तक झेल सकती

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

है, पुरुष उतने लंबे समय तक नहीं झेल सकता । बच्चे स्त्रियां पैदा करती हैं, अगर पुरुष को पैदा करना पड़े तब उसे पता चले । शायद दुनिया में फिर संतति-नियमन की कोई जरूरत न रह जाये, वह बंद ही कर दे । वह इतना कष्ट नहीं झेल सकता – और इतना लंबा ! क्षण, दो क्षण को क्रोध में वह पत्थर फेंक सकता है, लेकिन नौ महीने एक बच्चे को पेट में नहीं झेल सकता – और वर्षों तक उसे बड़ा नहीं कर सकता । और रात भर वह रोये तो उसकी गर्दन दबा देगा, उसको झेल नहीं सकता । ताकत तो उसके पास ज्यादा है, लेकिन पीछे उसके पास एक डेलिकेट (नाजुक) और कमजोर शरीर है जिसकी वजह है वह उसको झेल नहीं पाता । इसलिए स्त्रियां कम बीमार पड़ती हैं ।

स्त्रियों की उम्र पुरुष से ज्यादा है, इसलिए हम पांच साल का फासला रखते हैं शादी करते वक्त । नहीं तो दुनिया विधवाओं से भर जाये । इसलिए हम लड़का बीस साल का चुनते हैं तो लड़की पंद्रह साल की चुनते हैं, सोलह साल की चुनते हैं । क्योंकि चार और पांच साल का फासला है, नहीं तो सारी दुनिया विधवाओं से भर जाये । क्योंकि पुरुष की उम्र चार-पांच साल कम है । वह जब सत्तर साल में मरेगा तो कठिनाई खड़ी हो जायेगी । तो उसका, दोनों के बीच तालमेल बैठ जाये और वह बराबर जगह आ जायें...

एक सौ सोलह लड़के पैदा होते हैं और एक सौ लड़कियां पैदा होती हैं; पैदा होते वक्त सोलह का फर्क होता है, सोलह लड़के ज़्यादा पैदा होते हैं । लेकिन दुनिया में स्त्री-पुरुष की संख्या बराबर हो जाती है पीछे । सोलह लड़के चौदह साल के होने के पहले मर जाते हैं और करीब-करीब बराबर अनुपात हो जाता है । लड़के ज्यादा मरते हैं, लड़कियां कम मरती हैं, उनके पास रेसिस्टेंस की क्षमता, प्रतिरोध की क्षमता प्रबल है; वह उनके पीछे के शरीर से आती है ।

दूसरी बात : तीसरा शरीर जो है पुरुष का, वह फिर पुरुष का होगा – यानी सूक्ष्म शरीर । और चौथा शरीर, मनस शरीर फिर स्त्री का होगा । और ठीक इसके उलटा स्त्री में होगा ।

चार शरीरों तक स्त्री-पुरुष का विभाजन है, पांचवां शरीर बियांड सेक्स (यौनभेद से परे) है ।

इसलिए आत्म-उपलब्धि होते ही इस जगत में फिर कोई स्त्री और पुरुष नहीं है । लेकिन तब तक स्त्री-पुरुष है ।

और इस संबंध में एक बात और ख्याल आती है, वह मैं आपसे कहूं कि चूंकि प्रत्येक पुरुष के पास स्त्री का शरीर है भीतर, और प्रत्येक स्त्री के पास पुरुष का शरीर है, अगर संयोग से स्त्री को ऐसा पति मिल जाये जो उसके भीतर के पुरुष

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शरीर से मेल खाता हो तभी विवाह सफल होता है, नहीं तो नहीं हो पाता; या पुरुष को ऐसी स्त्री मिल जाये जो उसके भीतर की स्त्री से मेल खाती है, तो ही सफल होता है, नहीं तो नहीं हो पाता।

प्रथम चार शरीरों के विकास के बिना विवाह असफल

इसलिए सारी दुनिया में सौ में निन्यानबे विवाह असफल होते हैं, क्योंकि उनकी गहरी सफलता का सूत्र अभी तक साफ नहीं हो सका है। और उसकी हम कैसे खोजबीन करें कि उनके भीतरी शरीरों से मेल खा जाये, तब तक दुनिया में विवाह असफल ही होता रहेगा। उसके लिए हम कुछ भी इंतज़ाम कर लें, वह सफल नहीं हो सकता। और उसको हम तभी खोज पायेंगे जब यह सारी की सारी शरीरों की पूरी वैज्ञानिक व्यवस्था अत्यंत स्पष्ट हो जाये।

और इसलिए अगर एक युवक विवाह के पहले, एक युवती विवाह के पहले, अपनी कुंडलिनी जागरण तक पहुंच गये हों, तो उन्हें ठीक साथी चुनना सदा आसान है। उसके पहले ठीक साथी चुनना कभी भी आसान नहीं है, क्योंकि वे अपने भीतर के शरीरों की पहचान से बाहर के ठीक शरीर को चुन पा सकते हैं।

इसलिए हमारी कोशिश थी, जो लोग जानते थे, वे पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्यवास में और इन चार शरीरों के विकास तक ले जाने के बाद ही विवाह किया जाये, उसके पहले नहीं – क्योंकि किससे विवाह करना है ? किसके साथ तुम्हें रहना है ? खोज किसकी है ? हम किसको खोज रहे हैं ? एक पुरुष एक स्त्री को ? ...कौन सी स्त्री को खोज रहा है, जिससे वह तृप्त हो सकेगा ?

वह अपने ही भीतर की स्त्री को खोज रहा है; एक स्त्री अपने ही भीतर के पुरुष को खोज रही है। अगर कहीं तालमेल बैठ जाता है संयोग से, तब तो वह तृप्त हो जाता है, अन्यथा वह अतृप्ति बनी रहती है। फिर हजार तरह की विकृति पैदा होती है कि वह वेश्या को खोज रहा है, वह पड़ोस की स्त्री को खोज रहा है, वह यहां जा रहा है, वह वहां जा रहा है। वह परेशानी बढ़ती चली जाती है।

और जितनी मनुष्य की बुद्धि विकसित होगी उतनी यह परेशानी बढ़ेगी। अगर चौदह वर्ष तक ही आदमी रुक जाये तो यह परेशानी नहीं होगी, क्योंकि ये सारी परेशानी तीसरे शरीर के विकास से शुरू होगी, बुद्धि की। अगर सिर्फ दूसरा शरीर विकसित हो, भाव शरीर, तो वह सेक्स से तृप्त हो जायेगा।

इसलिए दो रास्ते थे : या तो हम पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य के काल में उसको चार शरीरों तक पहुंचा दें, या फिर बाल-विवाह कर दें; क्योंकि बाल-विवाह का

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Arya Samaj Foundation Trust

मतलब है कि बुद्धि का शरीर विकसित होने के पहले... ताकि वह सेक्स पर ही रुक जाये और कभी झंझट में न पड़े। तब वह जो संबंध है स्त्री-पुरुष का, वह बिलकुल पाशविक संबंध है।

बाल-विवाह का जो संबंध है, वह सिर्फ सेक्स का संबंध है; प्रेम-जैसी संभावना वहां नहीं है। इसलिए अमरीका जैसे मुल्कों में जहां शिक्षा बहुत बढ़ गयी, और जहां तीसरा शरीर पूरी तरह विकसित हो गया, वहां विवाह टूटेगा, वह नहीं बच सकता; क्योंकि तीसरा शरीर कहता है : मेल नहीं खाता। इसलिए तलाक फौरन तैयार हो जायेगा, क्योंकि मेल नहीं खाता तो इसको खींचना कैसे संभव है।

सम्यक शिक्षा में चार शरीरों का विकास

ये चार शरीर अगर विकसित हों, तो ही मैं कहता हूं : शिक्षा ठीक है, सम्यक है। राइट एजूकेशन का मतलब है चार शरीर तक तुम्हें ले जाये; क्योंकि पांचवें शरीर तक कोई शिक्षा नहीं ले जा सकती, वहां तो तुम्हें जाना पड़ेगा। लेकिन चार शरीर तक शिक्षा ले जा सकती है। इसमें कोई कठिनाई नहीं है।

पांचवां कीमती शरीर है, उसके बाद यात्रा निजी शुरू हो जाती है। फिर छठवां और सातवां तुम्हारी निजी यात्रा है।

कुंडलिनी जो है वह चौथे शरीर की संभावना है। मेरी बात ख्याल में आयी न ?

प्रश्न : शक्तिपात में कंडक्टर (माध्यम) का काम करनेवाले व्यक्ति के साथ क्या साधक की साइकिक बाइंडिंग (मानसिक बंधन) हो जाती है ? उससे क्या-क्या हानियां साधक को हो सकती हैं ? क्या उसके अच्छे उपयोग भी हैं ?

बंधन का तो कोई अच्छा उपयोग नहीं है, क्योंकि बंधन ही बुरी बात है; और जितना गहरा बंधन हो उतनी ही बुरी बात है। तो साइकिक बाइंडिंग (मनस बंधन) तो बहुत बुरी बात है। अगर मेरे हाथ में कोई जंजीर डाल दे तो चलेगा, क्योंकि वह मेरे भौतिक शरीर को ही पकड़ पाती, लेकिन कोई मेरे ऊपर प्रेम की जंजीर डाल दे तो ज्यादा झंझट शुरू हुई; क्योंकि वह जंजीर गहरे चली गयी। वह जंजीर गहरे चली गयी... और उसको तोड़ना उतना आसान नहीं रह गया। कोई श्रद्धा की जंजीर डाल दे, तो और गहरी चली गयी, उसको तोड़ना और अनहोली काम हो गया न ! अपवित्र काम हो गया। वह और मुश्किल बात हो गयी।

तो बंधन तो सभी बुरे हैं; और मनस-बंधन तो और भी बुरे हैं।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शक्तिपात का सही माध्यम

जो व्यक्ति शक्तिपात में वाहन का काम करे, वह व्यक्ति तो तुम्हें बांधना ही न चाहेगा। अगर शक्तिपात हो रहा है, तो वह व्यक्ति तो तुम्हें बांधना न चाहेगा; क्योंकि अगर वह बांधना चाहता हो तो वह पात्र ही नहीं है कि वह वाहन बन सके। हां, लेकिन तुम बंध सकते हो; तुम बंध सकते हो, तुम उसके पैर पकड़ ले सकते हो... कि मैं अब आपको न छोडूंगा, आपने मेरे ऊपर इतना उपकार किया। उस समय सजग होने की जरूरत है। उस समय बहुत सजग होने की जरूरत है कि साधक, जिस पर शक्तिपात हो, वह अपने को बंधन से बचा सके। लेकिन अगर यह ख्याल हो, और अगर यह बात साफ हो : कि बंधन मात्र आध्यात्मिक यात्रा में भारी पड़ जाते हैं, तो अनुग्रह बांधेगा नहीं बल्कि अनुग्रह भी खोलेगा। यानी मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हो जाऊं, तो यह बंधन क्यों बने ? इसमें बंधन होने की क्या बात है ? बल्कि अगर मैं कृतज्ञता ज्ञापन न कर पाऊं तो शायद भीतर एक बंधन रह जाये... कि मैं धन्यवाद भी नहीं दे पाया। लेकिन धन्यवाद देने का मतलब यह है कि बात समाप्त हो गयी।

सुरक्षा – भयभीत आदमी की खोज

अनुग्रह बंधन नहीं है, बल्कि अनुग्रह का भाव परम स्वतंत्रा का भाव है। लेकिन हम कोशिश करते हैं बंधने की, क्योंकि हमारे भीतर भय है... और हम सोचते हैं : अकेले खड़े रह पायेंगे, नहीं खड़े रह पायेंगे ? किसी से बंध जायें। दूसरे की तो बात छोड़ दें, अंधेरी गली में से आदमी निकलता है तो खुद ही जोर-जोर से गाना गाने लगता है; अपनी ही आवाज जोर से सुनकर भी भय कम होता है – अपनी ही आवाज ! दूसरे की आवाज भी होती, तब भी ठीक था कि कोई दूसरा भी मौजूद है, लेकिन अपनी ही आवाज जोर से सुनकर कांफिडेंस (भरोसा) बढ़ता मालूम पड़ता है कि कोई डर नहीं।

तो आदमी भयभीत है और वह कुछ भी पकड़ने लगता है। और अगर डूबते को तिनका भी मिल जाये, तो वह आंख बंद करके उसको भी पकड़ लेता है। हालांकि इस तिनके से डूबने से नहीं बचता, सिर्फ डूबनेवाले के साथ तिनका भी डूब जाता है। लेकिन भय में हमारा चित्त पकड़ लेना चाहता है। सारी बाइंडिंग (बंधन) फीयर (भय) की है। तो गुरु हो – यह हो, वह हो – कोई भी, उसको पकड़ लेंगे हम। पकड़ कर हम सुरक्षित होना चाहते हैं। एक तरह की सिक्योरिटि (सुरक्षा) है। और साधक को सुरक्षा से बचना चाहिए।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

असुरक्षा में ही आत्मा का विकास

साधक के लिए सुरक्षा सबसे बड़ा मोहजाल है। अगर उसने एक दिन भी सुरक्षा चाही, और उसने कहा कि अब मैं किसी की शरण में सुरक्षित हो जाऊंगा, और किसी की आड़ में अब कोई भय नहीं है; अब मैं भटक नहीं सकता, अब मैंने ठीक मुकाम पा लिया है; अब मैं कहीं जाऊंगा नहीं, अब मैं यहीं बैठा रहूंगा, तो वह भटक गया; क्योंकि साधक के लिए सुरक्षा नहीं है। साधक के लिए असुरक्षा वरदान है; क्योंकि जितनी असुरक्षा है, उतनी साधक की आत्मा को फैलने, बलवान होने, अभय होने का मौका है; जितनी सुरक्षा है, उतना साधक के निर्बल होने की व्यवस्था है; वह उतना निर्बल हो जायेगा।

सहारा लेना एक बात है, सहारा लिए ही चले जाना बिलकुल दूसरी बात है।

बेसहारा होने के लिए ही सहारे का उपयोग

सहारा दिया ही इसलिए गया है कि तुम बेसहारे हो सको; सहारा दिया ही इसलिए गया है कि अब तुम्हें सहारे की जरूरत न रहे।

एक बाप अपने बेटे को चलना सिखा रहा है। कभी ख्याल किया है कि जब बाप अपने बेटे को चलना सिखाता है, तो बाप बेटे का हाथ पकड़ता है; बेटा नहीं पकड़ता। लेकिन थोड़े दिन बाद जब बेटा थोड़ा चलना सीख जाता है, तो बाप का हाथ बाप तो छोड़ देता है, लेकिन बेटा पकड़ लेता है। कभी बाप को चलाते देखें। तो अगर बेटा हाथ पकड़े हो तो समझो कि वह चलना सीख गया है, लेकिन फिर भी हाथ नहीं छोड़ रहा; और अगर बाप हाथ पकड़े हो तो समझना कि अभी चलना सिखाया जा रहा है, अभी छोड़ने में खतरा है; अभी छोड़ा नहीं जा सकता। और बाप तो चाहेगा ही यह कि कितनी जल्दी हाथ छूट जाये; क्योंकि इसीलिए तो सिखा रहा है। और अगर कोई बाप इस मोह से भर जाये कि उसे मजा आने लगे कि बेटा उसका हाथ पकड़े ही रहे, तो वह बाप दुश्मन हो गया।

बहुत बाप हो जाते हैं। बहुत गुरु हो जाते हैं। लेकिन चूक गये वे। जिस बात के लिए उन्होंने सहारा दिया था, वही खत्म हो गयी। वह तो उन्होंने कृपिल्ड (अपंग) पैदा कर दिये जो अब उनकी बैसाखी लेकर चलेंगे। हालांकि उनको मजा आता है कि उनकी बैसाखी के बिना तुम नहीं चल सकते। अहंकार की तृप्ति मिलती है। लेकिन, जिस गुरु को अहंकार की तृप्ति मिल रही हो, वह तो गुरु ही नहीं है। लेकिन बेटा पकड़े रह सकता है पीछे भी; क्योंकि बेटा डर जाये कि कहीं गिर न जाऊं... क्योंकि बिना बाप के मैं कैसे चल सकूंगा !

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो गुरु का काम है कि उसके हाथ को झिड़के और कहे कि अब तुम चलो। और कोई फिक्र नहीं है, दो-चार बार गिरो तो ठीक है, उठ आना। आखिर उठने के लिए गिरना जरूरी है। और, गिरने का डर मिटाने के लिए भी कुछ बार गिरना जरूरी है कि अब नहीं गिरेंगे।

हमारे मन में यह हो सकता है : किसी का सहारा पकड़ लें तो फिर बाइंडिंग (बंधन) पैदा हो जाती है, वह पैदा नहीं करनी है। किसी साधक को ध्यान लेकर चलना है कि वह कोई सुरक्षा की तलाश में नहीं है; वह सत्य की खोज में है, सुरक्षा की खोज में नहीं। और अगर सत्य की खोज करनी है तो सुरक्षा का ख्याल छोड़ना पड़ेगा; नहीं तो, असत्य बहुत बार बड़ी सुरक्षा देता है – और जल्दी से दे देता है। तो फिर सुरक्षा का खोजी असत्य को पकड़ लेता है। कनविनियंस (सुविधा) का खोजी सत्य तक नहीं पहुंचता, क्योंकि लंबी यात्रा है। फिर वह यहीं असत्य को गढ़ लेता है और यहीं बैठे हुए पा लेता है। और बात समाप्त हो जाती है।

अंधश्रद्धा क्यों

इसलिए किसी भी तरह का बंधन... और गुरु का बंधन तो बहुत ही खतरनाक है, क्योंकि वह आध्यात्मिक बंधन है। और 'आध्यात्मिक बंधन' शब्द ही कंट्राडिक्टरि (परस्पर-विरोधी) है, क्योंकि आध्यात्मिक स्वतंत्रता तो अर्थ रखती है, आध्यात्मिक गुलामी का कोई अर्थ नहीं होता।

लेकिन इस दुनिया में आध्यात्मिक रूप से जितने लोग गुलाम हैं, उतने लोग और किसी रूप से गुलाम नहीं हैं। उसका कारण है; क्योंकि जिस चौथे शरीर के विकास से आध्यात्मिक स्वतंत्रता की संभावना पैदा होगी, वह चौथा शरीर नहीं है। उसके कारण हैं : वे तीसरे शरीर तक ही विकसित हैं।

इसलिए अक्सर देखा जायेगा कि एक आदमी हाईकोर्ट का चीफ जस्टिस (मुख्य न्यायाधीश) है, किसी युनिवर्सिटि का वाइसचांसलर (उपकुलपति) है, और किसी निपट गंवार आदमी के पैर पकड़े बैठा हुआ है, और उसको देखकर ...उसको देखकर हजार गंवार उसके पीछे बैठे हुए हैं... कि जब हाईकोर्ट का जस्टिस बैठा है, वाइसचांसलर बैठा है युनिवर्सिटि का तो हम क्या हैं। लेकिन उसे पता नहीं कि यह जो आदमी है, इसका तीसरा शरीर तो बहुत विकसित हुआ है, इसने बुद्धि का तो बहुत विकास किया है, लेकिन चौथे शरीर के मामले में यह बिलकुल गंवार है; उसके पास वह शरीर नहीं है। और इसके पास चूंकि तीसरा शरीर है – केवल बुद्धि और तर्क का – विचार करते-करते यह थक गया है और अब विश्राम कर रहा है। और जब बुद्धि थककर विश्राम करती है तो बड़े

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

अबुद्धिपूर्ण काम करती है ।

कोई भी चीज जब थककर विश्राम करती है तो उलटी हो जाती है । इसलिए यह बड़ा खतरा है । इसलिए आश्रमों में आपको मिल जायेंगे... हाईकोर्ट के जजेज़(न्यायाधीश) वहां निश्चित मिलेंगे । वे थक गये हैं, वे बुद्धि से परेशान हो गये हैं, वे अब इससे छुटकारा चाहते हैं; वे कोई भी अबुद्धिपूर्ण, इररेशनल... किसी भी चीज में विश्वास करके, आंख बंद करके बैठ जाते हैं; वे कहते हैं : सोच लिया बहुत, विवाद कर लिया बहुत, तर्क कर लिया बहुत, कुछ नहीं मिला; अब इसको हम छोड़ते हैं । तो वे किसी को भी पकड़ लेते हैं । और उनको देखकर पीछे जो बुद्धिहीन वर्ग है, वह कहता है : जब इतने बुद्धिमान लोग हैं, तो फिर हमको भी पकड़ लेना चाहिए । लेकिन जहां तक चौथे शरीर का संबंध है – निपट, नाकुछ हैं ।

इसलिए चौथे शरीर का किसी व्यक्तित्व में थोड़ा सा भी विकास हुआ हो, तो बड़े से बड़ा बुद्धिमान उसके चरणों को पकड़कर बैठा जायेगा; क्योंकि उसके पास कुछ है, जिसके मामले में यह बिलकुल निर्धन है ।

तो चूंकि चौथा शरीर विकसित नहीं है, इसलिए बाइंडिंग (बंधन) पैदा होती है – ऐसा मन होता है कि किसी को पकड़ लो; जिसका विकसित है, उसको पकड़ लो । लेकिन उसको पकड़ने से आपका विकसित नहीं हो जायेगा; उसको समझने से विकसित हो सकता है । और पकड़ना समझने से बचने का उपाय है... कि समझने की क्या जरूरत है ? समझने की क्या जरूरत है, हम आपके ही चरण पकड़े रहते हैं । तो जब आप वैतरणी पार होओगे, हम भी हो जायेंगे; हम आपको ही नाव बनाये लेते हैं; हम उसी में सवार रहेंगे; जब आप पहुंचोगे, हम भी पहुंच जायेंगे ।

साधना के श्रम से बचने के लिए अंधानुकरण

समझने में कष्ट है । समझने में अपने को बदलना पड़ेगा । समझना एक प्रयास है, एक साधना है । समझना एक श्रम है, समझना एक क्रांति है । समझने में एक रूपांतरण होगा, सब बदलेगा; पुराना नया करना पड़ेगा । इतनी झंझट क्यों करनी ! जो आदमी जानता है, हम उसको पकड़ लेते हैं; हम उसके पीछे चले जायेंगे ।

लेकिन इस जगत में सत्य तक कोई किसी के पीछे नहीं जा सकता; वहां अकेले ही पहुंचना पड़ता है । वह रास्ता ही निर्जन है । वह रास्ता ही अकेले का है । इसलिए किसी तरह का बंधन वहां बाधा है ।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो सीखना, समझना, जहां से जो झलक मिले उसे लेना, लेकिन रुकना कहीं भी मत; किसी भी जगह को तुम मुकाम मत बना लेना और उसका हाथ पकड़ मत लेना कि बस, अब ठीक, आ गये। हालांकि बहुत लोग मिलेंगे, जो कहेंगे : कहां जाते हो, रुक जाओ मेरे पास। यह दूसरा हिस्सा है। जैसा कि मैंने कहा, भयभीत आदमी बंधना चाहता है किसी से, तो कुछ भयभीत आदमी बांधना भी चाहते हैं किसी को; उनको उससे भी अभय हो जाता है। जिस आदमी को लगता है, मेरे साथ हज़ार अनुयायी हैं, उसको लगता है मैं ज्ञानी हो गया, नहीं तो हज़ार अनुयायी कैसे होते ! जब हज़ार आदमी मुझे माननेवाले हैं, तो जरूर मैं कुछ जानता हूं, नहीं तो मानेंगे कैसे !

यह बड़े मजे की बात है कि गुरु बनना कई बार तो सिर्फ इसी मानसिक हीनता के कारण होता है... कि दस हजार मेरे शिष्य हैं, बीस हजार... तो गुरु लगे हैं शिष्य बढ़ाने में ...कि मेरे सात सौ संन्यासी हैं, मेरे हज़ार संन्यासी हैं, मेरे इतने शिष्य हैं – वे फैलाने में लगे हैं; क्योंकि जितना यह विस्तार फैलता है, वे आश्वस्त होते हैं कि ज़रूर मैं जानता हूं, नहीं तो हज़ार आदमी मुझे क्यों मानते ! यह तर्क लौटकर उनको विश्वास दिलाता है कि मैं जानता हूं। अगर ये हज़ार शिष्य खो जायें, तो उनको लगेगा कि गया – इसका मतलब कि मैं नहीं जानता।

जहां बंधन है, वहां संबंध नहीं है

बड़े मानसिक खेल चलते हैं। ...बड़े मानसिक खेल चलते हैं, और उन मानसिक खेलों से सावधान होने की जरूरत है – दोनों तरफ से; क्योंकि दोनों तरफ से खेल हो सकता है : शिष्य भी बांध सकता है; और जो शिष्य आज किसी से बंधेगा, वह कल किसी को बांधेगा, क्योंकि यह सब शृंखलाबद्ध काम है। वह आज शिष्य बनेगा तो कल गुरु भी बनेगा, क्योंकि शिष्य कब तक बना रहेगा ! अभी एक को पकड़ेगा, तो कल फिर किसी को खुद को भी पकड़ायेगा।

शृंखलाबद्ध गुलामियां हैं। मगर उसका बहुत गहरे में कारण उस चौथे शरीर का विकसित न होना है। उसको विकसित करने की चिंता चले तो तुम स्वतंत्र हो सकोगे। फिर बंधन नहीं होगा।

इसका यह मतलब नहीं है कि तुम अमानवीय हो जाओगे, कि तुम्हारा मनुष्यों से कोई संबंध न रह जायेगा; बल्कि इसका मतलब ही उलटा है : असल में जहां बंधन है, वहां संबंध होता ही नहीं। अगर एक पति और पत्नी के बीच बंधन है... हम कहते न कि विवाह-बंधन में बंध रहे – निमंत्रण पत्रिकाएं भेजते हैं कि मेरा बेटा और मेरी बेटी प्रणयसूत्र के बंधन में बंध रहे हैं...

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

जहां बंधन है, वहां संबंध नहीं हो सकता; क्योंकि गुलामी में कैसा संबंध ? कभी भविष्य में जरूर कोई बाप निमंत्रण पत्र भेजेगा कि मेरी बेटी किसी के प्रेम में स्वतंत्र हो रही है । वह तो समझ में आती है बात कि अब किसी का प्रेम उसको स्वतंत्र कर रहा है जीवन में; अब उसके ऊपर कोई बंधन नहीं रहेगा; वह मुक्त हो रही है प्रेम में । और मुक्त प्रेम को करना चाहिए । अगर प्रेम भी बांध लेता है तो फिर इस जगत में मुक्त क्या करेगा, कौन करेगा ?

संबंध वही, जो मुक्त करे

और जहां बंधन है, वहां सब कष्ट हो जाता है, सब नर्क हो जाता है – ऊपर से चेहरे और रह जाते हैं, भीतर सब गंदगी हो जाती – वह बंधन चाहे गुरु-शिष्य का हो, चाहे बाप-बेटे का हो, चाहे पति-पत्नी का हो, चाहे दो मित्रों का हो – जहां बंधन है, वहां संबंध नहीं होता; और अगर संबंध है तो बंधन बेमानी है ।

लगता तो ऐसा ही है कि जिससे हम बंधे हैं, उसी से संबंध है; लेकिन सिर्फ उसी से हमारा संबंध होता है, जिससे हमारा कोई भी बंधन नहीं ।

इसलिए कई बार ऐसा हो जाता है कि आप अपने बेटे से वह बात नहीं कह सकते जो एक अजनबी से कह सकते हैं । मैं इधर हैरान हुआ हूं जानकर कि पत्नी अपने पति से नहीं सकती और ट्रेन में एक अजनबी आदमी से कह सकती है, जिसको वह बिलकुल नहीं जानती, घंटे भर पहले मिला है ।

असल में जब कोई बंधन नहीं है तो संबंध के लिए सरलता मिल जाती है । इसलिए तुम एक अजनबी से जितनी भले ढंग से पेश आते हो, उतना परिचित से नहीं आते । वहां कोई भी तो बंधन नहीं है, तो सिर्फ संबंध ही हो सकता है ।

लेकिन परिचित के साथ तुम उतने भले ढंग से कभी पेश नहीं आते, क्योंकि वहां तो बंधन है । वहां नमस्कार भी करते हो तो ऐसा मालूम पड़ता है, काम है ।

इसलिए गुरु-शिष्य का एक संबंध तो हो सकता है – और संबंध सब मधुर हैं – लेकिन बंधन नहीं हो सकता । और संबंध का मतलब ही है कि वह मुक्त करता है ।

न बांधनेवाले अदभुत ज़ेन फकीर

ज़ेन फकीरों की एक बात बड़ी कीमती है कि अगर किसी भी ज़ेन फकीर के पास कोई सीखने आयेगा, तो जब वह सीख चुका होगा, तब वह उससे कहेगा कि अब मेरे विरोधी के पास चले जाओ, अब कुछ दिन वहां सीखो; क्योंकि एक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पहलू तुमने जाना, अब तुम दूसरे पहलू को समझो। और फिर साधक अलग-अलग आश्रमों में वर्षों घूमता रहेगा – उनके पास जाकर बैठेगा जो उसके गुरु के विरोधी हैं; उनके चरणों में बैठेगा और उनसे भी सीखेगा। क्योंकि उसका गुरु कहेगा है कि हो सकता है, वह ठीक हो; तुम उधर भी जाकर सारी बात समझ लो ...और कौन ठीक है, इसका क्या पता ? हो सकता है, हम दोनों से मिलकर जो बनता हो, वही ठीक हो; या यह भी हो सकता है कि हम दोनों को काटकर जो बचता हो, वही ठीक हो – इसलिए जाओ, उसे खोजो।

जब किसी देश में आध्यात्मिक प्रतिभा विकसित होती है, तो ऐसा होता है; तब बंधन नहीं बनती चीजें।

अब यह मैं चाहता हूं, ऐसा इस मुल्क में जिस दिन हो सकेगा, उस दिन बहुत परिणाम होंगे कि कोई किसी को बांधता न हो, भेजता हो लंबी यात्रा पर ...कि वह जाये – और कौन जानता है कि क्या होगा अंतिम; लेकिन जो इस भांति भेज देगा, अगर कल तुम्हें उसकी सब बातें भी गलत मालूम पड़ें, तब भी वह आदमी ग़लत मालूम नहीं पड़ेगा; जो इस भांति तुम्हें भेज देगा कि जाओ कहीं और खोजो – हो सकता है, मैं गलत होऊं; तो भी यह हो सकता है कि किसी दिन उसकी सारी बातें भी तुम्हें गलत मालूम पड़ें, तब भी तुम अनुगृहीत रहोगे; वह आदमी कभी गलत नहीं हो पायेगा, क्योंकि उस आदमी ने ही तो भेजा था तुम्हें।

अभी हालतें ऐसी हैं कि सब रोक रहे हैं। एक गुरु रोकता है, किसी दूसरे की बात मत सुन लेना; शास्त्रों में लिखता है कि दूसरे के मंदिर में मत चले जाना – चाहे एक पागल हाथी के पैर के नीचे दबकर मर जाना, मगर दूसरे के मंदिर में शरण भी मत लेना; कहीं ऐसा न हो कि वहां कोई चीज कान में पड़ जाये। तो भला ऐसे आदमी की सब बातें भी सही हों, तब भी यह आदमी तो गलत ही है। और इसके प्रति अनुग्रह कभी नहीं हो सकता; क्योंकि इसने तुम्हें गुलाम बनाया और कुचल डाला और मार डाला है।

यह अगर खयाल में आ जाये तो बंधन का कोई सवाल नहीं है।

प्रश्न : आपने कहा है कि अगर शक्तिपात प्रामाणिक व शुद्धतम हो तो बंधन नहीं होगा। क्या यह ठीक है ?

हां, नहीं होगा।

शक्तिपात के नाम पर शोषण

प्रश्न : शक्तिपात के नाम पर साइकिक एक्सप्लायटेशन (मनोगत शोषण)

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

संभव है क्या ? कैसे संभव है और उससे साधक बचे कैसे ?

संभव है, शक्तिपात के नाम पर बहुत आध्यात्मिक शोषण संभव है। असल में जहां भी दावा है, वहां शोषण होगा। और जहां कोई कहता है, मैं कुछ दूंगा, वह लेगा भी कुछ; क्योंकि देना जो है, वह बिना लेने के नहीं हो सकता। जहां कोई कहेगा मैं कुछ देता हूं, वह तुमसे वापिस भी कुछ लेगा। कॉइन (सिक्का) कोई भी हो – वह धन के रूप में ले, आदर के रूप में ले, श्रद्धा के रूप में ले – किसी भी रूप में ले – वह लेगा जरूर। जहां देना है – आग्रहपूर्वक, दावेपूर्वक – वहां लेना है। और जो देने का दावा कर रहा है, वह जो देगा, उससे ज्यादा लेगा; नहीं तो बाजार में चिल्लाने की उसे कोई जरूरत न थी। असल में वह दे इसी तरह रहा है, जैसे कोई मछली मारनेवाला कांटे पर आटा लगाता है; क्योंकि मछली कांटे नहीं खाती। हो सकता है, किसी दिन मछलियों को समझाया-बुझाया जा सके, वे सीधा कांटे खा लें। अभी तक कोई मछली सीधा कांटा नहीं खाती। उसके ऊपर आटा लगाना पड़ता है। हां, मछली आटा खा लेती; और आटे के दावे की वजह से कांटे के पास आ जाती – आटा मिलेगा इस आशय में कांटे को भी गटक जाती। गटकने पर पता चलता है कि आटा तो व्यर्थ था, कांटा असली था। लेकिन तब तक कांटा छिप गया होता है।

दावेदार गुरुओं से बचो

तो जहां दावा है – कोई कहे कि मैं शक्तिपात करूंगा, मैं ज्ञान दिलवा दूंगा, मैं समाधि में पहुंचा दूंगा; मैं ऐसा करूंगा, मैं वैसा करूंगा – जहां ये दावे हों, वहां सावधान हो जाना; क्योंकि उस जगत का आदमी दावेदार नहीं होता। उस जगत के आदमी से अगर तुम कहोगे भी जाकर कि आपकी वजह से मुझ पर शक्तिपात हो गया, तो वह कहेगा, तुम किसी भूल में पड़ गये; मुझे तो पता ही नहीं, मेरी वजह से कैसे हो सकता है ? उस परमात्मा की वजह से ही हुआ होगा। वहां तो तुम धन्यवाद देने जाओगे तो भी स्वीकृति नहीं होगी कि मेरी वजह से हुआ है; वह तो कहेगा, तुम्हारी अपनी वजह से ही हो गया होगा; तुम किस भूल में पड़ गये हो, वह परमात्मा की कृपा से हो गया होगा – मैं कहां हूं; मैं किस कीमत में हूं; मैं कहां आता हूं ?

जीसस निकल रहे हैं एक गांव से, और एक बीमार आदमी को लोग उनके पास लाये हैं। उन्होंने उसे गले से लगा लिया और वह ठीक हो गया। और वह आदमी कहता है कि मैं आपको कैसे धन्यवाद दूं, क्योंकि आपने मुझे ठीक कर दिया है। जीसस ने कहा कि ऐसी बात मत कर; जिसे धन्यवाद देना है उसे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband.

Digitized by Madhuban Trust

धन्यवाद दे – मैं कौन हूं; मैं कहां आता हूं ? उस आदमी ने कहा, आपके सिवाय तो यहां कोई भी नहीं । तो जीसस ने कहा, हम-तुम दोनों नहीं हैं; जो है, वह तुझे दिखाई ही नहीं पड़ रहा; उससे ही सब हो रहा है – 'ही हैज़ हील्ड यू' – उसी ने तुझे स्वस्थ कर दिया है ।

अब यह जो आदमी है, यह कैसे शोषण करेगा ! शोषण करने के लिए आटा लगाना पड़ता है कांटे पर । यह तो, कांटा तो दूर, आटा भी मेरा है, यह भी मानने को राजी नहीं है । इसका कोई उपाय नहीं है ।

तो जहां तुम्हें दावा दिखे – साधक को – वहीं संभल जाना; जहां कोई कहे कि ऐसा मैं कर दूंगा, ऐसा हो जायेगा, वहां वह तुम्हारे लिए तैयार कर रहा है – वह तुम्हारी मांग को जगा रहा है; वह तुम्हारी अपेक्षा को उकसा रहा है; वह तुम्हारी वासना को त्वरित कर रहा है; और जब तुम वासनाग्रस्त हो जाओगे... कहोगे कि दो महाराज, तब वह तुमसे मांगना शुरू कर देगा; बहुत शीघ्र तुम्हें पता चलेगा कि आटा ऊपर था, कांटा भीतर है ।

इसलिए जहां दावा हो, वहां संभलकर कदम रखना, वह खतरनाक जमीन है । जहां कोई गुरु बनने को बैठा हो, उस रास्ते से मत निकलना; क्योंकि वहां उलझ जाने का डर है । इसलिए साधक कैसे बचे ? बस वह दावे से बचे तो सबसे बच जायेगा । वह दावे को न खोजे; वह उस आदमी की तलाश न करे जो दे सकता है, नहीं तो झंझट में पड़ेगा; क्योंकि वह आदमी भी तुम्हारी तलाश कर रहा है... जो फंस सकता है । वे सब घूम करे हैं । वह भी घूम रहा है कि किस आदमी को चाहिए । तुम मांगना ही मत, तुम दावे को स्वीकार ही मत करना । और तब...

पात्र बनो, गुरु मत खोजो

तुम्हें जो करना है, वह और बात है । तुम्हें जो तैयारी करनी है, वह तुम्हारे भीतर तुम्हें करनी है । और जिस दिन तुम तैयार होओगे, उस दिन वह घटना घट जायेगी; उस दिन किसी भी माध्यम से घट जायेगी । माध्यम गौण है; खूंटी की तरह है । जिस दिन तुम्हारे पास कोट होगा, क्या तकलीफ पड़ेगी खूंटी खोजने में ? कहीं भी टांग लोगे । नहीं भी खूंटी होगी तो दरवाजे पर टांग दोगे । दरवाजा नहीं होगा, झाड़ की शाखा पर टांग दोगे । कोई भी खूंटी का काम कर देगा । असली सवाल कोट का है । लेकिन कोट नहीं है हमारे पास, खूंटी दावा कर रही है कि इधर आओ, मैं खूंटी यहां हूं; तुम फंसोगे । कोट तो तुम्हारे पास नहीं है, खूंटी के पास जाकर भी क्या करोगे । खतरा यही है कि खूंटी में तुम्हीं न टंग जाओ । कोट... कोट तो नहीं है तुम्हारे पास । इसलिए अपनी पात्रता खोजनी

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

है, अपनी योग्यता खोजनी है – अपने को उस योग्य बनाना है कि मैं किसी दिन प्रसाद को ग्रहण करने के योग्य बन सकूं। फिर तुम्हें चिंता नहीं लेनी है, वह तुम्हारी चिंता नहीं है।

इसलिए कृष्ण जो कहते हैं अर्जुन को, वे ठीक ही कहते हैं। उसका मतलब ही इतना है : वे कहते हैं – तू कर्म कर और फल परमात्मा पर छोड़ दे; उसकी तुझे फिक्र नहीं करनी है। उसकी तूने फिक्र की तो कर्म में बाधा पड़ती; क्योंकि उसकी फिक्र की वजह से ऐसा लगता है : कर्म क्या करना, फल की पहले चिंता करो; उसकी वजह से ऐसा लगता है कि क्या करना है मुझे ! फल क्या होगा, इसको देखूं ! और तब गलती सुनिश्चित हो जानेवाली है।

इसलिए कर्म की फिक्र ही अकेली फिक्र है हमारी; हम अपने को पात्र बनाने योग्य करते रहें। जिस दिन क्षमता हमारी पूरी होगी – ऐसे ही, जैसे जिस दिन बीज की क्षमता फूटने की पूरी होती है, उस दिन सब मिल जाता है; जिस दिन फूल खिलने को पूरा तैयार होता है, कली टूटने को तैयार होती है, सूरज तो निकल ही आता है। उस में कोई अड़चन नहीं है। सूरज सदा तैयार है; लेकिन हमारे पास कली नहीं है खिलने को, सूरज निकल गया है, होगा क्या ? इसलिए सूरज की तलाश मत करो, अपनी कली को गहरा करने की फिक्र करो; सूरज सदा निकला हुआ है, वह तत्काल उपलब्ध हो जाता है।

खाली पात्र भर दिया जाता है

इस जगत में पात्र एक क्षण को भी खाली नहीं रह जाता है; जिस तरह की भी पात्रता हो, वह तत्काल भर दी जाती है। असल में पात्रता का हो जाना और भर जाना दो घटनाएं नहीं, एक ही घटना के दो पहलू हैं। जैसे हम इस कमरे की हवा बाहर निकाल दें, दूसरी हवा इस कमरे की खाली जगह को तत्काल भर देगी – ये दो हिस्से नहीं हैं। इधर हम निकाल नहीं पाये कि उधर नयी हवा ने दौड़ना शुरू कर दिया है। ऐसे ही अंतर-जगत के नियम हैं : हम इधर तैयार नहीं हुए कि वहां से जो हमारी तैयारी की मांग है, वह उतरनी शुरू हो जाती है। लेकिन कठिनाई हमारी है कि हम तैयार नहीं होते और मांग हमारी शुरू हो जाती; तब झूठी मांग के लिए झूठी सप्लाई (वितरण) भी हो जाती।

अब इधर मैं बहुत हैरान होता हूं; ऐसे लोग हैरानी में डालते हैं। एक आदमी आता है, वह कहता है : मेरा मन बड़ा अशांत है, मुझे शांति चाहिए। उससे आधा घंटा मैं बात करता हूं, मैं कहता हूं कि सच में ही तुम्हें शांति चाहिए, तो वह कहता है : शांति तो अभी क्या है कि मेरे लड़के को पहले नौकरी चाहिए,

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust
उसी की वजह से अशांति है; नौकरी मिल जाये तो सब ठीक हो जाये। तब यह आदमी कहता हुआ आया था कि मुझे शांति चाहिए, वह इसकी जरूरत नहीं है; इसकी असली जरूरत दूसरी है, जिसका शांति से कुछ लेना-देना नहीं है; इसकी जरूरत है कि इसके लड़के को नौकरी चाहिए। अब यह मेरे पास, गलत आदमी के पास आ गया।

धर्म के दूकानदारों का रहस्य

अब वह जो बाजार में दूकान लेकर बैठा है, वह कहता है : नौकरी चाहिए ? इधर आओ ! हम नौकरी भी दिलवा देंगे और शांति भी मिल जायेगी; इधर जो भी आते हैं उनको नौकरी मिल जाती; इधर जो आते हैं, उनका धन बढ़ जाता है; इधर जो आते हैं, उनकी दूकान चलने लगती है। और उस दूकान के आसपास दस-पांच आदमी आपको मिल जायेंगे, जो कहेंगे : मेरे लड़के को नौकरी मिल गयी, मेरी पत्नी मरने से बच गयी, मेरा मुकदमा हारने से जीत गया, धन के अंबार लग गये; वे दस आदमी उस दूकान के आसपास मिल जायेंगे। ऐसा नहीं कि वे झूठ बोल रहे हैं ! ऐसा नहीं कि वे झूठ बोल रहे हैं, ऐसा भी नहीं कि वे किराये के आदमी हैं, ऐसा भी नहीं कि वे दूकान के दलाल हैं; नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है।

जब हजार आदमी किसी दुकान पर नौकरी खोजने आते हैं, दस को मिल ही जाती है। जिनको मिल जाती है वे रुक जाते हैं, नौ सौ निन्यानबे चले जाते हैं। वे जो रुक जाते हैं, वे खबर करते रहते हैं; धीरे-धीरे उनकी भीड़ बड़ी होती जाती है। इसलिए हर दूकान के पास ऑथेंटिक (प्रामाणिक) हैं वे दावेदार। वे जो कह रहे हैं कि मेरे लड़के को नौकरी मिली, इसमें झूठ नहीं है कोई; यह कोई खरीदा हुआ आदमी नहीं है। यह भी आया था, इसके लड़के को मिली है; जिनको नहीं मिली है, वे जा चुके हैं; वे दूसरे गुरु को खोज रहे हैं कि कहां मिले; जहां मिले, वहां चले गये। यहां वे ही रह गये हैं जिनको मिल गयी है। वह हर साल लौट आते है, हर त्योहार पर लौट आते हैं; उनकी भीड़ बढ़ती चली जाती है। और इस आदमी के आसपास एक वर्ग खड़ा हो जाता है, जो सुनिश्चित प्रमाण बन जाता है कि भई मिली है इतने लोगों को, तो मुझे क्यों न मिलेगी ! यह आटा बन जाता है, और कांटा बीच में है। और ये सारे लोग आटे बन जाते हैं। और आदमी फंस जाता है।

मांगना ही मत, नहीं तो फंसना निश्चित है। मांगना ही मत; अपने को तैयार करना और भगवान पर छोड़ देना कि जिस दिन होता होगा, होगा; नहीं

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

होगा तो हम समझेंगे, हम पात्र नहीं थे।

प्रामाणिक शक्तिपात के बाद भटकना समाप्त

प्रश्न : एक साधक का कई व्यक्तियों के माध्यम से शक्तिपात लेना उचित है या हानिप्रद ? कंडक्टर बदलने में क्या-क्या हानियां संभव हैं और क्यों ?

असल बात तो यह है कि बहुत बार लेने की जरूरत तभी पड़ेगी जब कि शक्तिपात न हुआ हो। बहुत लोगों से लेने की भी जरूरत तभी पड़ेगी जबकि पहले जिनसे लिया हो वह बेकार गया हो, न हुआ हो। अगर हो गया है तो बात खतम है। बहुत बार लेने की जरूरत इसलिए पड़ती है कि दवा काम नहीं कर पायी, बीमारी अपनी जगह खड़ी है। स्वभावतः फिर डॉक्टर बदलने पड़ते हैं। लेकिन जो बीमार ठीक हो गया, वह नहीं पूछता... कि डॉक्टर बदलूं, या न बदलूं; वह जो ठीक नहीं हुआ है, वह कहता है कि मैं दूसरे डॉक्टर से दवा लूं या क्या करूं। दस-बीस डॉक्टर बदल लेता है।

तो एक तो अगर शक्तिपात की किरण उपलब्ध हुई जरा भी, तो बदलने की कोई जरूरत नहीं पड़ती है, वह प्रश्न ही नहीं है फिर उसका; नहीं उपलब्ध हुई तो बदलना ही पड़ता है; और बदलते ही रहते हैं आदमी। और अगर उपलब्ध हुई है कभी एक से, तो फिर किसी से भी उपलब्ध होती रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता। वे सब एक ही स्रोत से आनेवाले माध्यम ही अलग हैं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। रोशनी सूरज से आती कि दीये से आती, कि बिजली के बल्ब से आती, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; प्रकाश एक का ही है। उससे कोई अंतर नहीं पड़ता।

अगर घटना घटी है तो कोई अंतर नहीं पड़ता, और कोई हानि नहीं है; लेकिन इसको खोजने मत फिरना; वही मैं कह रहा हूं, इसे खोजने मत फिरना। यह मिल जाये रास्ते पर चलते, तो धन्यवाद दे देना और आगे बढ़ जाना; इसे खोजना मत। खोजोगे तो खतरा है; क्योंकि फिर वे जो दावेदार हैं, वे ही तो तुम्हें मिलेंगे न ! वह नहीं मिलेगा जो दे सकता था; वह मिलेगा, जो कहता है, देते हैं। जो दे सकता है वह तो तुम्हें उसी दिन मिलेगा, जिस दिन तुम खोज ही नहीं रहे हो लेकिन तैयार हो गये हो। वह उसी दिन मिलेगा।

इसलिए खोजना गलत है, मांगना गलत है। होती रहे घटना, होती रहे। और हजार रास्तों से प्रकाश मिले तो हर्ज नहीं है। सब रास्ते एक ही प्रकाश के मूल स्रोत को प्रमाणित करते चले जायेंगे। सब तरफ से मिलकर वही...

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

मूल स्रोत परमात्मा है

कल मुझसे कोई कह रहा था... किसी साधु के पास जाकर कहा होगा कि ज्ञान अपना होना चाहिए, तो उन साधु ने कहा – ऐसा कैसे हो सकता है ! ज्ञान तो सदा पराये का होता है – फलां मुनि ने फलां मुनि को दिया, उन मुनि ने उन मुनि को दिया, खुद कृष्ण गीता में कहते हैं कि उससे उसको मिला, उससे उसको मिला, उससे उसको मिला । तो कृष्ण के पास भी अपना नहीं है ।

तो मैंने उसको कहा कि कृष्ण के पास अपना है; लेकिन जब वे कह रहे हैं कि उससे उसको मिला, उससे उसको मिला, तो वे यह कह रहे हैं कि यह जो ज्ञान मेरा है, यह जो मुझे घटित हुआ है, यह मुझे ही घटित नहीं हुआ है, यह पहले फलां आदमी को भी घटित हुआ था; और प्रमाण है कि उसको घटित हुआ था, उसने फलां आदमी को बताया भी था; और फलां आदमी को भी घटित हुआ था, उसने उसको भी बताया था – लेकिन बताने से घटित नहीं हुआ था, घटने से बताया था । तो मुझको भी घटित हुआ है, अब मैं तुम्हें बता रहा हूं – वे अर्जुन से कह रहे हैं । लेकिन मेरे बताने से तुम्हें घटित हो जायेगा, ऐसा नहीं है; तुम्हें घटित होगा, तो तुम भी किसी को बता सकोगे, ऐसा है ।

उसे दूसरे से मांगते ही मत फिरना, वह दूसरे से मिलनेवाली बात नहीं है; उसकी तो तैयारी करना । फिर वह बहुत जगह से मिलेगी, सब जगह से मिलेगी । और एक दिन, जिस दिन घटना घटती है, उस दिन ऐसा लगता है कि मैं कैसा अंधा हूं, जो चीज सब तरफ से मिल रही थी, वह मुझे दिखाई क्यों नहीं पड़ती थी !

एक अंधा आदमी है, वह दीये के पास से भी निकलता है, वह सूरज के पास से भी निकलता है, बिजली के पास से भी निकलता है, लेकिन प्रकाश नहीं मिलता । और एक दिन, जब उसकी आंख खुलती है, तब वह कहता है : मैं कैसा अंधा था, कितनी जगह से निकला; सब जगह प्रकाश था और मुझे दिखाई नहीं पड़ा था ! और अब मुझे सब जगह दिखाई पड़ रहा है ।

तो जिस दिन घटना घटेगी, उस दिन तो तुम्हें सब तरफ वही दिखाई पड़ेगा; और जब तक नहीं घटी है, तब तक जहां भी दिखाई पड़े, वहां उसको प्रणाम कर लेना; जहां भी दिखाई पड़े, वहां उसे पी लेना – लेकिन मांगते मत जाना, भिखारी की तरह मत जाना; क्योंकि सत्य भिखारी को नहीं मिल सकता । उसे मांगना मत, नहीं तो कोई दुकानदार बीच में मिल जायेगा, जो कहेगा, हम देते हैं । और तब एक आध्यात्मिक शोषण शुरू हो जायेगा ।

तुम चलना अपनी राह – अपने को तैयार करते; अपने को तैयार करते – जहां मिल जाये, ले लेना; धन्यवाद देकर आगे बढ़ जाना । फिर जिस दिन

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

तुम्हें पूरा उपलब्ध होगा, उस दिन तुम ऐसा न कह पाओगे : मुझे फलांने से मिला; उस दिन तुम यही कहोगे कि आश्चर्य है, मुझे सबसे मिला; जिनके करीब मैं गया, सभी से मिला। और तब अंतिम धन्यवाद जो है वह समस्त के प्रति हो जाता है, वह किसी एक के प्रति नहीं रह जाता।

दूसरे से आये प्रभाव की सीमा

प्रश्न : यह प्रश्न इसलिए आया था कि शक्तिपात का प्रभाव धीरे-धीरे कम भी तो हो सकता है ?

हां, हां, वह कम होगा ही। असल में दूसरे से कुछ भी मिलेगा तो वह कम होता चला जायेगा; वह सिर्फ झलक है। उस पर तुम्हें निर्भर भी नहीं होना है। उसे तो तुम्हें अपने भीतर ही जगाना है किसी दिन, तभी वह कम नहीं होगा। असल में सब प्रभाव क्षीण हो जायेंगे, क्योंकि प्रभाव जो हैं वे फॉरेन हैं, वे विजातीय हैं, वे बाहरी हैं। मैंने एक पत्थर फेंका, तो पत्थर की कोई अपनी ताकत नहीं है – मैंने फेंका, मेरे हाथ की ताकत है। तो मेरे हाथ की ताकत जितनी लगी है, पत्थर उतनी दूर जाकर गिर जायेगा। लेकिन बीच में जब पत्थर हवा चीरेगा, तो पत्थर को ख्याल हो सकता है कि अब तो मैं हवा चीरने लगा, अब तो मुझे गिरानेवाला कोई भी नहीं है। लेकिन उसे पता नहीं कि वह प्रभाव से गया है, किसी के धक्के से गया है, दूसरे के हाथ पीछे है। वह एक... पचास फीट दूर जाकर गिर जायेगा – गिरेगा ही। असल में दूसरे से आये प्रभाव की सदा सीमा होगी। वह गिर जायेगा।

दूसरे से आये प्रभाव का एक ही फायदा हो सकता है, और वह यह है कि उस प्रभाव की क्षीण झलक में तुम अपने मूल स्रोत को खोज सको, तो तो ठीक – यानी मैंने एक माचिस जलाई, प्रकाश हुआ, तो मेरी माचिस कितनी देर जलेगी ? अब तुम दो काम कर सकते हो : तुम यहीं अंधेरे में खड़े रहो, मेरी माचिस पर निर्भर हो जाओ... कि हम इस रोशनी में जियेंगे अब। एक घड़ी... क्षण भर भी नहीं बीतेगा, माचिस बुझ जायेगी, फिर घुप्प अंधेरा हो जायेगा; यह एक बात हुई। मैंने माचिस जलायी, घुप्प अंधेरे में थोड़ी सी रोशनी हुई, तुम्हें एकदम दरवाजा दिखाई पड़ा और बाहर भाग गये – तुम मेरी माचिस पर निर्भर न रहे, तुम बाहर निकल गये; मेरी माचिस बुझे या जले, अब तुम्हें कोई मतलब न रहा; लेकिन तुम वहां पहुंच गये जहां सूरज है। अब कोई चीज थिर हो पायेगी।

तो ये जितनी घटनाएं हैं, इनका एक ही उपयोग है कि इससे तुम समझकर कुछ कर लेना अपने भीतर, इसके लिए मत रुक जाना। इसको प्रतीक्षा करते रहोगे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो यह तो बार-बार माचिस जलेगी, बुझेगी । फिर धीरे-धीरे कंडीशनिंग (आदत) हो जायेगी । फिर तुम इसी माचिस के मोहताज हो जाओगे । फिर तुम अंधेरे में प्रतीक्षा करते रहोगे, कब जले । फिर जलेगी तो तुम प्रतीक्षा करोगे, अब बुझनेवाली है, अब बुझनेवाली है – अब गये, अब गये, अब फिर अंधेरा हो जायेगा । बस, यह एक चक्कर पैदा हो जायेगा । नहीं, जब माचिस जले, तब माचिस पर मत रुकना; क्योंकि माचिस इसलिए जली है कि तुम रास्ता देखो और भागो – निकल जाओ, जितना दूर अंधेरे के बाहर जा सकते हो ।

झलक पाकर अपनी राह चल देना

दूसरे से हम इतना ही लाभ ले सकते हैं । लेकिन दूसरे से हम स्थायी लाभ नहीं ले सकते । पर यह कोई कम लाभ नहीं है । यह कोई थोड़ा लाभ नहीं है, बहुत बड़ा लाभ है; दूसरे से इतना भी मिल जाता है, यह भी आश्चर्य है । इसलिए जो दूसरा अगर समझदार होगा तो तुमसे नहीं कहेगा कि रुको, तुमसे कहेगा – माचिस चल गयी, अब तुम भागो; अब तुम यहां ठहरना मत, नहीं तो माचिस तो अभी बुझ जायेगी । लेकिन अगर दूसरा तुमसे कहे कि अब रुको, देखो मैंने माचिस जलायी अंधेरे में; और किसी ने तो नहीं जलायी न, मैंने जलायी; अब तुम मुझसे दीक्षा लो; अब तुम यहीं ठहरो, अब तुम कहीं छोड़कर मत जाना – खाओ कसम; अब यह संबंध रहेगा, अब यह टूट नहीं सकता; मैंने ही माचिस जलायी; मैंने ही तुम्हें अंधेरे में दिखाया; अब तुम किसी और की मासिच के पास तो न जाओगे ? अब तुम कोई और प्रकाश तो न खोजोगे ? अब तुम किसी और गुरु के पास मत रुकना, सुनना भी मत, अब तुम मेरे हुए... तो फिर, तो फिर खतरा हो गया ।

झलक दिखाकर बांधनेवाले तथाकथित गुरु

इससे अच्छा था यह आदमी माचिस न जलाता । इसने बड़ा नुकसान किया । अंधेरे में तुम खोज भी लेते – किसी तरह टकराते, धक्के खाते, किसी दिन प्रकाश में पहुंच जाते; अब इसके माचिस पकड़ने की वजह से बड़ी मुश्किल हो गयी, अब कहां जाओगे ? और तब इतना भी पक्का है कि यह माचिस इस आदमी की अपनी नहीं है, यह किसी से चुरा लाया है । यह कहीं से चुरायी गयी माचिस है, नहीं तो इसको अब तक पता होता कि बाहर भेजने के लिए है यह, किसी को रोकने के लिए नहीं है; यहां बिठा रखने के लिए नहीं है । यह चोरी की गयी माचिस है; इसलिए अब यह माचिस की दूकान कर रहा है; अब यह कह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

रहा है : जिन-जिनको हम झलक दिखा देंगे, उनको यहीं रुके रहना पड़ेगा; वे कहीं जा नहीं सकते। तब तो हद्द हो गयी ! अंधेरा रोकता था, अब यह गुरु रोकने लगा। इससे अंधेरा अच्छा था कि कम से कम अंधेरा हाथ फैलाकर तो रोक नहीं सकता था। अंधेरे का जो रोकना था वह बिलकुल ही पैसिव (निष्क्रिय) था, लेकिन यह गुरु तो एक्टिव (सक्रिय रूप से) रोकेगा; यह तो हाथ पकड़कर रोकेगा – छाती अड़ा देगा बीच में, और कहेगा कि धोखा दे रहे हो, दगा कर रहे हो।

अभी एक लड़की ने मुझे आकर कहा कि उसके गुरु ने उससे कहा कि तुम उनके पास क्यों गयी; यह तो ऐसे ही है, जैसे कोई पत्नी अपने पति को छोड़कर चली जाये ! गुरु कह रहा है उससे कि यह तो जैसे पत्नीव्रत और पतिव्रत एक के साथ होता हैं, ऐसा गुरु को छोड़कर चला जाये कोई दूसरे के पास, तो यह महान पाप है।

यह चुरायी हुई माचिसवाला, अब माचिस से काम चलायेगा। और, चुरायी जा सकती है माचिसें, इसमें कोई कठिनाई नहीं है; शास्त्रों में बहुत माचिसें उपलब्ध हैं, उनको कोई चुरा सकता है।

प्रश्न : क्या चुरायी हुई माचिस जल सकती है ?

जल सकने का मतलब यह है... कि असल में अंधेरे में मजा ऐसा है... अंधेरे में मजा ऐसा है : जिसने प्रकाश देखा ही नहीं, उसको कौन सी चीज जलती हुई बताई जा रही है, यह भी तय करना मुश्किल है – समझे न ? जिसने प्रकाश देखा ही नहीं, उसे कौन सी चीज जलती हुई बताई जा रही है, यह पक्का करना बहुत मुश्किल है। यह तो प्रकाश के बाद उसको पता चलेगा कि तुम क्या जला रहे थे, क्या नहीं जला रहे थे ! वह जल भी रही थी कि नहीं जल रही थी ! कि आंख बंद करके समझा रहे थे कि जल गयी। वह सब तो तुम्हें प्रकाश दिखाई पड़ेगा, तब तुम्हें पता चलेगा। जिस दिन प्रकाश दिखाई पड़ेगा, उस दिन सौ में से निन्यानबे गुरु अंधेरे के साथी और प्रकाश के दुश्मन सिद्ध होते हैं – पता चलता है कि ये तो बहुत दुश्मन थे; ये सब शैतान के एजेंसीज़ (दलाल) थे।

बंबई, रात्रि, दिनांक, 6 जुलाई, 1970.

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

आठवीं प्रश्नोत्तर चर्चा

सात शरीर और सात चक्र

साधक की बाधाएं

प्रश्न : कल की चर्चा में आपने कहा कि साधक को पात्र बनने की पहले फिक्र करनी चाहिए, जगह-जगह मांगने नहीं जाना चाहिए। लेकिन साधक अर्थात खोजी का अर्थ ही है कि उसे साधना में बाधाएं हैं। उसे पता नहीं है कि कैसे पात्र बने, कैसे तैयारी करे। तो वह मांगने न जाये तो क्या करे ? (सही मार्गदर्शक से मिलना कितना मुश्किल से हो पाता है !)

खोजना और मांगना दो अलग बातें हैं। असल में जो खोजना नहीं चाहता वही मांगता है। खोजना और मांगना एक तो हैं ही नहीं, विपरीत बातें हैं। खोजने से जो बचना चाहता है वह मांगता है, खोजी कभी नहीं मांगता। और खोज और मांगने की प्रक्रिया बिलकुल अलग है। मांगने में दूसरे पर ध्यान रखना पड़ेगा, जिससे मिलेगा; और खोजने में अपने पर ध्यान रखना पड़ेगा, जिसको मिलेगा।

यह तो ठीक है कि साधक के मार्ग पर बाधाएं हैं, लेकिन साधक के मार्ग पर बाधाएं हैं, अगर हम ठीक से समझें तो इसका मतलब होता है कि साधक के भीतर बाधाएं हैं; मार्ग भी भीतर है। और अपनी बाधाओं को समझ लेना बहुत कठिन नहीं है। इस संबंध में थोड़ी सी विस्तीर्ण बात करनी पड़ेगी

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कि बाधाएं क्या हैं और साधक उन्हें कैसे दूर कर सकेगा ।

जैसे मैंने कल सात शरीरों की बात कही, उस संबंध में कुछ और बात समझेंगे तो यह भी समझ में आ सकेगा ।

मूलाधार चक्र की संभावनाएं

जैसे सात शरीर हैं, ऐसे ही सात चक्र भी हैं । और प्रत्येक एक चक्र मनुष्य के एक शरीर से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है । भौतिक शरीर, फिजिकल बॉडी, इस शरीर का जो चक्र है, वह मूलाधार है; वह पहला चक्र है । इस मूलाधार चक्र का भौतिक शरीर से केंद्रीय संबंध है; यह भौतिक शरीर का केंद्र है । इस मूलाधार चक्र की दो संभावनाएं हैं : एक इसकी प्राकृतिक संभावना है, जो हमें जन्म से मिलती है; और एक साधना की संभावना है, जो साधना से उपलब्ध होती है ।

मूलाधार चक्र की प्राथमिक प्राकृतिक संभावना कामवासना है, जो हमें प्रकृति से मिलती है; वह भौतिक शरीर की केंद्रीय वासना है । अब साधक के सामने पहला ही सवाल यह उठेगा कि यह जो केंद्रीय तत्व है उसके भौतिक शरीर का, इसके लिए क्या करे । और इस चक्र की एक दूसरी संभावना है, जो साधना से उपलब्ध होगी, वह ब्रह्मचर्य है । सेक्स इसकी प्राकृतिक संभावना है और ब्रह्मचर्य इसका ट्रांसफॉर्मेशन है, इसका रूपांतरण है । जितनी मात्रा में चित्त कामवासना से केंद्रित और ग्रसित होगा उतना ही मूलाधार अपनी अंतिम संभावनाओं को उपलब्ध नहीं कर सकेगा । उसकी अंतिम संभावना ब्रह्मचर्य है । उस चक्र की दो संभावनाएं हैं : एक जो हमें प्रकृति से मिली, और एक जो हमें साधना से मिलेगी ।

न भोग, न दमन – वरन जागरण

अब इसका मतलब यह हुआ कि जो हमें प्रकृति से मिली है उसके साथ हम दो काम कर सकते हैं : या तो जो प्रकृति से मिला है हम उसमें जीते रहें, तब जीवन में साधना शुरू नहीं हो पायेगी; दूसरा काम जो संभव है वह यह कि हम इसे रूपांतरित करें ।

रूपांतरण के पथ पर जो बड़ा खतरा है, वह खतरा यही है कि कहीं हम प्राकृतिक केंद्र से लड़ने न लगें । साधक के मार्ग में खतरा क्या है ? या तो जो प्राकृतिक व्यवस्था है वह उसको भोगे, तब वह उठ नहीं पाता उस तक जो चरम संभावना है – जहां तक उठा जा सकता था; भौतिक शरीर जहां तक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband.

Digitized by Madhuban Trust

उसे पहुंचा सकता था वहां तक वह नहीं पहुंच पाता; जहां से शुरू होता है वहीं अटक जाता है। तो एक तो भोग है, दूसरा दमन है कि उससे लड़े। दमन बाधा है साधक के मार्ग पर – पहले केंद्र की जो बाधा है; क्योंकि दमन के द्वारा कभी ट्रांसफॉर्मेशन (रूपांतरण) नहीं होता।

दमन बाधा है तो फिर साधक क्या बनेगा ? साधन क्या होगा ? समझ साधन बनेगी, अंडरस्टैंडिंग साधन बनेगी। कामवासना को जो जितना समझ पायेगा उतना ही उसके भीतर रूपांतरण होने लगेगा। उसका कारण है : प्रकृति के सभी तत्व हमारे भीतर अंधे और मूर्छित हैं। अगर हम उन तत्वों के प्रति होशपूर्ण हो जायें तो उनमें रूपांतरण होना शुरू हो जाता है।

जैसे ही हमारे भीतर कोई चीज जागनी शुरू होती है वैसे ही प्रकृति के तत्व बदलने शुरू हो जाते हैं। जागरण कीमिया है, अवेयरनेस केमिस्ट्री है उनके बदलने की, रूपांतरण की। तो अगर कोई अपनी कामवासना के प्रति पूरे भाव और पूरे चित्त, पूरी समझ से जागे, तो उसके भीतर कामवासना की जगह ब्रह्मचर्य का जन्म शुरू हो जायेगा। और जब तक कोई पहले शरीर पर ब्रह्मचर्य पर न पहुंच जाये तब तक दूसरे शरीर की संभावनाओं के साथ काम करना बहुत कठिन है।

दूसरा शरीर मैंने कहा था... भाव शरीर या आकाश शरीर – इथरिक बॉडी।

स्वाधिष्ठान चक्र की संभावनाएं

दूसरा शरीर हमारे दूसरे चक्र से संबंधित है, स्वाधिष्ठान चक्र से। स्वाधिष्ठान चक्र की भी दो संभावनाएं हैं। मूलतः, प्रकृति से जो संभावना मिलती है – वह है भय, घृणा, क्रोध, हिंसा। ये सब स्वाधिष्ठान चक्र की प्रकृति से मिली हुई स्थिति है। अगर इन पर ही कोई अटक जाता है, तो इसकी जो दूसरी, इसके बिलकुल प्रतिकूल ट्रांसफॉर्मेशन की स्थिति है – प्रेम, करुणा, अभय, मैत्री, वह संभव नहीं हो पाता।

साधक के मार्ग पर, दूसरे चक्र पर जो बाधा है, वह घृणा, क्रोध, हिंसा, इनके रूपांतरण का सवाल है। यहां भी वही भूल होगी जो सब तत्वों पर होगी। कोई चाहे तो क्रोध कर सकता है, और कोई चाहे तो क्रोध को दबा सकता है। हम दो ही काम करते हैं : कोई भयभीत हो सकता है, और कोई भय को दबाकर व्यर्थ ही बहादुरी दिखा सकता है। दोनों ही बातों से रूपांतरण नहीं होगा। भय है, इसे स्वीकार करना पड़ेगा। इसे दबाने, छिपाने से कोई प्रयोजन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Madhuban Trust

नहीं है। हिंसा है, इसे अहिंसा के बाने पहना लेने से कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है; अहिंसा परम धर्म है, ऐसा चिल्लाने से इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। हिंसा है, वह हमारे दूसरे शरीर की प्रकृति से मिली हुई संभावना है।

उसका भी उपयोग है, जैसे कि सेक्स का उपयोग है। वह प्रकृति से मिली हुई संभावना है, क्योंकि सेक्स के द्वारा ही दूसरे भौतिक शरीर को जन्म दिया जा सकेगा। यह भौतिक शरीर मिटे, इसके पहले दूसरे भौतिक शरीरों को जन्म मिल सके, इसलिए वह प्रकृति से दी हुई संभावना है।

भय, हिंसा, क्रोध, ये सब भी दूसरे तल पर अनिवार्य हैं, अन्यथा मनुष्य बच नहीं सकता, सुरक्षित नहीं रह सकता। भय उसे बचाता है; क्रोध उसे संघर्ष में उतारता है; हिंसा उसे साधन देती है दूसरे की हिंसा से बचने का। वह उसके दूसरे शरीर की संभावनाएं हैं। लेकिन साधारणतः हम वहीं रुक जाते हैं। इन्हें अगर समझा जा सके...

अगर कोई भय को समझे तो अभय को उपलब्ध हो जाता है; और अगर कोई हिंसा को समझे तो अहिंसा को उपलब्ध हो जाता है; और अगर कोई क्रोध को समझे तो क्षमा को उपलब्ध हो जाता है।

असल में क्रोध एक पहलू है और दूसरा पहलू क्षमा है; वह उसी के पीछे छिपा हुआ पहलू है; वह सिक्के का दूसरा हिस्सा है। लेकिन सिक्का उलटे, तब। लेकिन सिक्का उलट जाता है, अगर हम सिक्के के एक पहलू को पूरा समझ लें, तो अपने-आप हमारी जिज्ञासा उलटा के देखने की हो जाती है दूसरी तरफ। लेकिन हम उसे छिपा लें और कहें, हमारे पास है ही नहीं, भय तो हममें है ही नहीं, तो हम अभय को कभी भी न देख पायेंगे। जिसने भय को स्वीकार कर लिया और कहा, भय है; और जिसने भय को पूरा जांचा-पड़ताला, खोजा, वह जल्दी ही उस जगह पहुंच जायेगा जहां वह जानना चाहेगा : भय के पीछे क्या है ? जिज्ञासा उसे उलटाने को कहेगी कि सिक्के को उलटा के भी देख लो। और जिस दिन वह उलटायेगा उस दिन वह अभय को उपलब्ध हो जायेगा।

ऐसे ही हिंसा करुणा में बदल जायेगी। वे दूसरे शरीर की साधक के लिए संभावनाएं हैं। इसलिए साधक को जो मिला है प्रकृति से, उसका रूपांतरण करना है। और इसके लिए किसी से बहुत पूछने जाने की जरूरत नहीं है, अपने ही भीतर निरंतर खोजने और पूछने की जरूरत है। हम सब जानते हैं कि क्रोध बाधा है; हम सब जानते हैं, भय बाधा है; क्योंकि जो भयभीत है वह सत्य को खोजने कैसे जायेगा ! भयभीत मांगने चला जायेगा। वह चाहेगा कि

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बिना किसी अज्ञात, अनजान रास्ते पर जाये, कोई दे दे तो अच्छा है।

मणिपुर चक्र की संभावनाएं

तीसरा शरीर मैंने कहा, एस्ट्रल बॉडी है, सूक्ष्म शरीर है। उस सूक्ष्म शरीर के भी दो हिस्से हैं। प्राथमिक रूप से सूक्ष्म शरीर संदेह, विचार, इनके आसपास रुका रहता है। और अगर ये रूपांतरित हो जायें, संदेह अगर रूपांतरित हो तो श्रद्धा बन जाता है; और विचार अगर रूपांतरित हो तो विवेक बन जाता है।

संदेह को किसी ने दबाया तो वह कभी श्रद्धा को उपलब्ध नहीं होगा, हालांकि सभी तरफ ऐसा समझाया जाता है कि संदेह को दबा डालो, विश्वास कर लो। जिसने संदेह को दबाया और विश्वास किया, वह कभी श्रद्धा को उपलब्ध नहीं होगा; उसके भीतर संदेह मौजूद ही रहेगा – दबा हुआ; भीतर कीड़े की तरह सरकता रहेगा और काम करता रहेगा। उसका विश्वास संदेह के भय से ही थोपा हुआ होगा।

न, संदेह समझना पड़ेगा, संदेह को जीना पड़ेगा, संदेह के साथ चलना पड़ेगा; और संदेह एक दिन उस जगह पहुंचा देता है, जहां संदेह पर भी संदेह हो जाता है। और जिस दिन संदेह पर संदेह होता है उसी दिन श्रद्धा की शुरुआत हो जाती है।

विचार को छोड़कर भी कोई विवेक को उपलब्ध नहीं हो सकता। विचार को छोड़नेवाले लोग हैं, छुड़ानेवाले लोग हैं; वे कहते हैं – विचार मत करो, विचार छोड़ ही दो। अगर कोई विचार छोड़ेगा, तो विश्वास और अंधे विश्वास को उपलब्ध होगा। वह विवेक नहीं है। विचार की सूक्ष्मतम प्रक्रिया से गुजरकर ही कोई विवेक को उपलब्ध होता है। विवेक का क्या मतलब है ? विचार में सदा ही संदेह मौजूद है। विचार सदा ही इनडिसीसिव (अनिश्चयात्मक) है।

इसलिए बहुत विचार करनेवाले लोग कभी कुछ तय नहीं कर पाते और जब भी कोई कुछ तय करता है, वह तभी तय कर पाता है जब विचार के चक्कर के बाहर होता है। डिसीज़न (निश्चय) जो है वह हमेशा विचार के बाहर से आता है। अगर कोई विचार में पड़ा रहे तो वह कभी निश्चय नहीं कर पाता। विचार के साथ निश्चय का कोई संबंध नहीं है।

इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि विचारहीन बड़े निश्चयात्मक होते हैं, और विचारवान बड़े निश्चयहीन होते हैं। दोनों से खतरा होता है, क्योंकि विचारहीन बहुत डिसीसिव (निश्चयवान) होते हैं। वे जो करते हैं, पूरी ताकत से करते हैं; क्योंकि उनमें विचार होते ही नहीं जो जरा भी संदेह पैदा कर दें।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

दुनिया भर के डॉगमेटिक (हठधर्मी), अंधे जितने लोग हैं, फेनेटिक (दुराग्रही) जितने लोग हैं, ये बड़े कर्मठ होते हैं, क्योंकि इनमें शक का तो सवाल ही नहीं है, ये कभी विचार तो करते ही नहीं। अगर इनको ऐसा लगता है कि एक हज़ार आदमी मारने से स्वर्ग मिलेगा, तो एक हज़ार एक मार कर ही फिर रुकते हैं, उसके पहले वे नहीं रुकते। एक दफा उनको ख्याल नहीं आता है कि यह ऐसा... ऐसा होगा ? उनमें कोई इनडिसीज़न (अनिश्चय) नहीं है। विचारवान तो सोचता ही चला जाता है, सोचता ही चला जाता है।

तो विचार के भय से अगर कोई विचार का द्वार ही बंद कर दे, तो सिर्फ अंधे विश्वास को उपलब्ध होगा। अंधा विश्वास खतरनाक है और साधक के मार्ग में बड़ी बाधा है। चाहिए आंखवाला विवेक, चाहिए ऐसा विचार जिसमें डिसीज़न (निश्चय व स्पष्टता) हो। विवेक का मतलब इतना ही होता है। विवेक का मतलब है कि विचार पूरा है, लेकिन विचार से हम इतने गुजरे हैं कि अब विचार कि जो भी संदेह की, शक की बातें थीं, वे विदा हो गयी हैं; अब धीरे-धीरे निष्कर्ष में शुद्ध निश्चय साथ रह गया है।

तीसरे शरीर का केंद्र है मणिपुर... चक्र है मणिपुर। उस मणिपुर चक्र के ये दो रूप हैं – संदेह और श्रद्धा। संदेह रूपांतरित होगा तो श्रद्धा बनेगी। लेकिन ध्यान रखें : श्रद्धा संदेह के विपरीत नहीं है, शत्रु नहीं है; श्रद्धा संदेह का ही शुद्धतम विकास है – चरम विकास है; वह आखिरी छोर है जहां संदेह का सब खो जाता है, क्योंकि संदेह स्वयं पर संदेह बन जाता है और स्युसाइडल हो जाता है, आत्मघात कर लेता है और श्रद्धा उपलब्ध होती है।

अनाहत चक्र की संभावनाएं

चौथा शरीर है हमारा, मेंटल बॉडी, मनस शरीर – साइक। इस चौथे शरीर के साथ हमारे चौथे चक्र का संबंध है, अनाहत का। चौथा जो शरीर है, मनस, इस शरीर का जो प्राकृतिक रूप है, वह है कल्पना – इमेजिनेशन, स्वप्न – ड्रीमिंग। हमारा मन स्वभावतः यह काम करता रहता है – कल्पना करता है और सपने देखता है। रात में भी सपने देखता है, दिन में भी सपने देखता है – और कल्पना करता रहता है। इसका जो चरम विकसित रूप है...

अगर कल्पना पूरी तरह से, चरम रूप से विकसित हो, तो संकल्प बन जाती है, 'विल' बन जाती है; और अगर ड्रीमिंग (स्वप्न की क्षमता) पूरी तरह से विकसित हो, तो 'विज़न' (अतींद्रिय-दर्शन) बन जाती है, तब वह 'साइकिक विज़न' हो जाती है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

अगर किसी व्यक्ति की स्वप्न देखने की क्षमता पूरी तरह से विकसित होकर रूपांतरित हो, तो वह आंख बंद करके भी चीजों को देखना शुरू कर देता है। सपना नहीं देखता तब वह, तब वह चीजों को ही देखना शुरू कर देता है। वह दीवाल के पार भी देख लेता है। अभी तो दीवाल के पार का सपना ही देख सकता है, लेकिन तब दीवाल के पार भी देख सकता है। अभी तो आप क्या सोच रहे होंगे, यह सोच सकता है; लेकिन तब आप क्या सोच रहे हैं, यह देख सकता है। 'विज़न' का मतलब यह है कि इंद्रियों के बिना अब उसे चीजें दिखाई पड़नी और सुनाई पड़नी शुरू हो जाती हैं। टाइम और स्पेस के, काल और स्थान के जो फासले हैं, उसके लिए मिट जाते हैं।

सपने में भी आप जाते हैं... सपने में आप बंबई में हैं, कलकत्ता जा सकते हैं। और 'विज़न' में भी जा सकते हैं, लेकिन दोनों में फर्क होगा। सपने में सिर्फ ख्याल है कि आप कलकत्ता गये, 'विज़न' में आप चले ही ज़ायेंगे। वह जो चौथी साइकिक बॉडी (मनस शरीर) है, वह मौजूद हो सकती है।

इसलिए पुराने जगत में जो सपने के संबंध में ख्याल था, वह धीरे-धीरे छूट गया और नये समझदार लोगों ने उसे इनकार कर दिया; क्योंकि हमें चौथे शरीर की चरम संभावना का कोई पता नहीं रहा। सपने के संबंध में पुराना अनुभव यही था कि सपने में आदमी का कोई शरीर निकलकर बाहर चला जाता है यात्रा पर।

स्वीडेन बर्ग एक आदमी था। उसे लोग सपना देखनेवाला आदमी ही समझते थे; क्योंकि वह स्वर्ग-नर्क की बातें भी कहता था, और स्वर्ग-नर्क की बातें सपना ही हो सकती हैं! लेकिन एक दिन दोपहर वह सोया था, और उसने दोपहर एकदम उठकर कहा कि बचाओ, आग लग गयी है – बचाओ, आग लग गयी है। घर के लोग आ गये, वहां कोई आग नहीं लगी थी, और उसको उन्होंने जगाया और कहा कि तुम नींद में हो या सपना देख रहे हो; आग कहीं भी नहीं लगी है! उसने कहा – नहीं, मेरे घर में आग लग गयी है। तीन सौ मील दूर था उसका घर, लेकिन उसके घर में उस वक्त आग लग गयी थी। दूसरे-तीसरे दिन तक खबर आयी कि उसका घर जलकर बिलकुल राख हो गया। और जब वह सपने में चिल्लाया था तभी आग लगी थी। अब यह सपना न रहा, यह 'विज़न' हो गया। अब तीन सौ मील का जो फासला था वह गिर गया और इस आदमी ने तीन सौ मील दूर जो हो रहा था वह देखा।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

विज्ञान के समक्ष अतींद्रिय घटनाएं

अब तो वैज्ञानिक भी इस बात के लिए राजी हो गये हैं कि चौथे शरीर की बड़ी साइकिक संभावनाएं हैं। और चूंकि स्पेस ट्रेवेल (अंतरिक्ष यात्रा) की वजह से उन्हें बहुत समझकर काम करना पड़ रहा है; क्योंकि आज नहीं कल, यह कठिनाई खड़ी हो जाने ही वाली है कि जिन यात्रियों को हम अंतरिक्ष की यात्रा पर भेजेंगे – मशीन कितनी ही भरोसे की हो फिर भी भरोसे की नहीं है – अगर उनके यंत्र जरा भी बिगड़ गये ...उनके रेडियो-यंत्र... तो हमसे उनका संबंध सदा के लिए टूट जायेगा; फिर वे हमें खबर भी न दे पायेंगे कि वे कहां गये और उनका क्या हुआ। इसलिए वैज्ञानिक इस समय बहुत उत्सुक है कि साइकिक, चौथे शरीर का अगर विज़न का मामला संभव हो सके, और टेलिपैथी का मामला संभव हो सके... वह भी चौथे शरीर की आखिरी संभावनाओं का एक हिस्सा है... कि अगर वे यात्री बिना रेडियो-यंत्रों के हमें सीधी टेलिपैथिक खबर दे सकें तो कुछ बचाव हो सकता है। इस पर काफी काम हुआ है।

आज से कोई तीस साल पहले एक यात्री उत्तरी ध्रुव की खोज पर गया। तो रेडियो-यंत्रों की व्यवस्था थी जिनसे वह खबर देता, लेकिन एक और व्यवस्था थी जो अभी-अभी प्रगट हुई है – और वह व्यवस्था यह थी कि एक साइकिक आदमी को, एक ऐसे आदमी को जिसके चौथे शरीर की दूसरी संभावनाएं काम करती थीं, उसको भी नियत किया गया था कि वह उसको भी खबरें दे।

और बड़े मजे की बात यह है कि जिस दिन पानी, हवा, मौसम खराब होता और रेडियो से खबरें न मिलतीं, उस दिन भी उसे तो खबरें मिलतीं। और जब पीछे सब डायरी मिलायी गयी तो कम से कम अस्सी से पंचानवे प्रतिशत के बीच उसने जो, साइकिक आदमी ने जो माध्यम की तरह ग्रहण की थीं, वे सही थीं। और मजा यह है कि रेडियो ने जो खबर दी थी, वह भी बहत्तर प्रतिशत से ज्यादा ऊपर नहीं गयी थीं; क्योंकि इस बीच कभी कुछ गड़बड़ हुई, कभी कुछ हुई, तो बहुत सी चीजें छूट गयी थीं। और अभी तो रूस और अमरीका दोनों अति उत्सुक हैं उस संबंध में। इसलिए टेलीपैथी (विचार संप्रेषण) और क्लैरवांयस (दूरदर्शन) और थॉट-रीडिंग (विचार पठन) और थॉट प्रोजेक्शन (विचार संप्रेषण), इन पर बहुत काम चलता है। वह हमारे चौथे शरीर की संभावना हैं। स्वप्न देखना उसकी प्राकृतिक संभावना है; सत्य देखना, यथार्थ देखना, उसकी चरम संभावना है। यह अनाहत हमारा चौथा चक्र है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

विशुद्ध चक्र की संभावनाएं

पांचवां चक्र है विशुद्ध; वह कंठ के पास है। और पांचवां शरीर है स्पिरिचुअल बॉडी – आत्म शरीर। विशुद्ध उसका चक्र है, वह उस शरीर से संबंधित है। अब तक जो चार शरीर की मैंने बात की और चार चक्रों की, वे द्वैत में बंटे हुए थे। पांचवें शरीर से द्वैत समाप्त हो जाता है।

जैसा मैंने कल का था कि चार शरीर तक मेल (पुरुष) और फीमेल (स्त्री) का फर्क होता है बॉडीज़ (शरीरों) में; पांचवें शरीर से मेल और फीमेल का, स्त्री और पुरुष का फर्क समाप्त हो जाता है। अगर बहुत गौर से देखें तो सब द्वैत स्त्री और पुरुष का है – द्वैत मात्र, डुआलिटि मात्र स्त्री-पुरुष के हैं। और जिस जगह से स्त्री-पुरुष का फासला खत्म होता है, उसी जगह से सब द्वैत खत्म हो जाता है।

पांचवां शरीर अद्वैत है। उसकी दो संभावनाएं नहीं है, उसकी एक ही संभावना है।

इसलिए चौथे के बाद साधक के लिए बड़ा काम नहीं है, सारा काम चौथे तक है। चौथे के बाद बड़ा काम नहीं है। बड़ा इस अर्थों में कि विपरीत कुछ भी नहीं है वहां। वहां प्रवेश ही करना है। और चौथे तक पहुंचते-पहुंचते इतनी सामर्थ्य इकट्ठी हो जाती है कि पांचवें में सहज प्रवेश हो जाता है। लेकिन प्रवेश न हो और हो, तो क्या फर्क होगा ? पांचवें शरीर में कोई द्वैत नहीं है। लेकिन कोई साधक जो...

एक व्यक्ति अभी प्रवेश नहीं किया है उसमें क्या फर्क है, और जो प्रवेश कर गया है उसमें... इनमें क्या फर्क होगा। वह फर्क इतना होगा कि जो पांचवें शरीर में प्रवेश करेगा उसकी समस्त तरह की मूर्छा टूट जायेगी; वह रात भी नहीं सो सकेगा। सोयेगा, शरीर ही सोया रहेगा; भीतर उसके कोई सतत जागता रहेगा। अगर उसने करवट भी बदली है तो वह जानता है, नहीं बदली है तो जानता है; अगर उसने कंबल ओढ़ा है तो जानता है – नहीं ओढ़ा है तो जानता है। उसका जानना निद्रा में भी शिथिल नहीं होगा; वह चौबीस घंटे जागरूक होगा। जिनका नहीं पांचवें शरीर में प्रवेश हुआ, उनकी स्थिति बिलकुल उलटी होगी : वे नींद में तो सोये होंगे ही, जिसको हम जागना कहते हैं, उसमें भी एक पर्त उनकी सोयी ही रहेगी।

आदमी की मूर्छा और यांत्रिकता

काम करते हुए दिखाई पड़ते हैं लोग। आप अपने घर आते हैं, कार

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

का घूमना बायें और आपके घर के सामने आकर ब्रेक का लग जाना, तो आप यह मत समझ लेना कि आप सब होश में कर रहे हैं ! यह सब बिलकुल आदतन, बेहोशी में होता रहता है । कभी-कभी किन्हीं क्षणों में हम होश में आते हैं, बहुत खतरे के क्षणों में – जब खतरा इतना होता है कि नींद से नहीं चल सकता... कि एक आदमी आपकी छाती पर छुरा रख दे, तब एक सेकेंड को होश में आते हैं । एक सेकेंड को वह छुरे की धार आपको पांचवें शरीर तक पहुंचा देती । लेकिन बस, ऐसे दो-चार क्षण जिंदगी में होते हैं, अन्यथा साधारणतः हम सोये-सोये ही जीते हैं ।

न तो पति अपनी पत्नी का चेहरा देखा है ठीक से कि अगर अभी आंख बंद करके सोचे तो ख्याल कर पाये । नहीं कर पायेगा – रेखाएं थोड़ी देर में ही इधर-उधर हट जायेंगी और पक्का नहीं हो पायेगा कि यह मेरी पत्नी का चेहरा है जिसको तीस साल से मैंने देखा है । देखा ही नहीं है कभी; क्योंकि देखने के लिए भीतर कोई जागा हुआ आदमी चाहिए ।

सोया हुआ आदमी, दिखाई पड़ रहा है कि देख रहा है, लेकिन वह देख नहीं रहा है । उसके भीतर तो नींद चल रही है, और सपने भी चल रहे हैं । इस नींद में सब चल रहा है ।

आप क्रोध करते हैं और पीछे कहते हैं कि पता नहीं, कैसे हो गया; मैं तो नहीं करना चाहता था – जैसे कि कोई और कर गया हो । आप कहते हैं, यह मुंह से मेरे गाली निकल गयी, माफ करना, मैं तो नहीं देना चाहता था, कोई जबान खिसक गयी होगी । आपने ही गाली दी, आप ही कहते हैं कि मैं नहीं देना चाहता था । हत्यारे हैं, जो कहते हैं कि पता नहीं – इन्सपाइट ऑफ अस, हमारे बावजूद हत्या हो गयी; हम तो करना ही नहीं चाहते थे, बस ऐसा हो गया ।

तो हम कोई आटोमेटा हैं ? यंत्रवत चल रहे हैं ? जो नहीं बोलना है वह बोलते हैं, जो नहीं करना है वह करते हैं । सांझ को तय करते हैं : सुबह चार बजे उठेंगे – कसम खा लेते हैं । सुबह चार बजे हम खुद ही कहते हैं कि क्या रखा है, अभी सोओ, कल देखेंगे । सुबह छः बजे उठकर फिर पछताते हैं और हमीं कहते हैं कि बड़ी गलती हो गयी, ऐसा कभी नहीं करेंगे, अब कल तो उठना ही है, जो कसम खायी थी उसको निभाना था ।

आश्चर्य की बात है, शाम को जिस आदमी ने तय किया था, सुबह चार बचे वही आदमी बदल कैसे गया ? फिर सुबह चार बजे तय किया था तो फिर छः बजे कैसे बदल गया ? फिर सुबह छः बजे जो तय किया है, फिर सांझ तक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बदल जाता है। सांझ बहुत दूर है, उस बीच पच्चीस दफे बदल जाता है।

न, ये निर्णय, ये ख्याल, हमारी नींद में आये हुए ख्याल हैं, सपनों की तरह। बहुत बबूलों की तरह बनते हैं और टूट जाते हैं। कोई जागा हुआ आदमी पीछे नहीं है; कोई होश से भरा हुआ आदमी पीछे नहीं है।

तो नींद आत्मिक शरीर में प्रवेश के पहले की सहज अवस्था है – नींद; सोया हुआ होना; और आत्म शरीर में प्रवेश के बाद की सहज अवस्था है, जागृति। इसलिए चौथे शरीर के बाद हम व्यक्ति को बुद्ध कह सकते हैं। चौथे शरीर के बाद जागना आ गया। अब आदमी जागा हुआ है।

बुद्ध, गौतम सिद्धार्थ का नाम नहीं है, पांचवें शरीर की उपलब्धि के बाद दिया गया विशेषण है – गौतम दि बुद्धा; गौतम जो जाग गया – यह मतलब है उसका। नाम तो गौतम ही है, लेकिन वह गौतम सोये हुए आदमी का नाम था। इसलिए फिर धीरे-धीरे उसको गिरा दिया और बुद्ध ही रह गया।

सोये हुए आदमियों की दुनिया

यह हमारे पांचवें शरीर का फर्क है, उसमें प्रवेश के पहले आदमी सोया-सोया है, वह स्लीपी है। वह जो भी कर रहा है, वे नींद में किये गये कृत्य हैं। उसकी बातों का कोई भरोसा नहीं है; वह जो कह रहा है, वह विश्वास के योग्य नहीं; उसकी प्रॉमिस (वायदे) का कोई मूल्य नहीं; उसके दिये गये वचन को मानने का कोई अर्थ नहीं। वह कहता है कि मैं जीवन भर प्रेम करूंगा, और अभी दो क्षण बाद हो सकता है कि वह गला घोंट दे। वह कहता है, यह संबंध जन्मों-जन्मों तक रहेगा, यह दो क्षण न टिके। उसका कोई कसूर भी नहीं है, नींद में दिये गये वचन का क्या मूल्य है ? रात सपने में मैं किसी को वचन दे दूं कि जीवन भर यह संबंध रहेगा, इसका क्या मूल्य है ? सुबह मैं कहता हूं, सपना था।

सोये हुए आदमी का कोई भी भरोसा नहीं है; और हमारी पूरी दुनिया सोये हुए आदमियों की दुनिया है, इसलिए इतना कनफ्यूज़न है, इतनी कॉनफ्लिक्ट है, इतना द्वंद्व है – इतना झगड़ा, इतना उपद्रव – ये सोये हुए आदमी पैदा कर रहे हैं।

सोये हुए आदमी और जागे हुए आदमी में एक और फर्क पड़ेगा, वह भी हमें ख्याल में ले लेना चाहिए। चूंकि सोये हुए आदमी को यह कभी पता नहीं चलता है कि मैं कौन हूं, इसलिए वह पूरे वक्त इस कोशिश में लगा रहता है कि मैं किसी को बता दूं कि मैं 'यह' हूं; पूरे वक्त लगा रहता है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

उसे खुद ही पता नहीं कि मैं कौन हूं, इसलिए पूर वक्त वह हज़ार-हज़ार रास्तों से... कभी राजनीति के किसी पद पर सवार होकर लोगों को दिखाता है कि मैं यह हूं, कभी एक बड़ा मकान बनाकर दिखाता है कि मैं यह हूं, कभी पहाड़ पर चढ़कर दिखाता है कि मैं यह हूं; वह सब तरफ से कोशिश कर रहा है कि लोगों को बता दे कि मैं यह हूं। और इस सब कोशिश से वह घूमकर अपने को जानने की कोशिश कर रहा है कि मैं हूं कौन; मैं हूं कौन, यह उसे पता नहीं है।

'मैं कौन हूं' का उत्तर

चौथे शरीर के पहले इसका कोई पता नहीं चलेगा। पांचवें शरीर को आत्मशरीर इसीलिए कह रहे हैं कि वहां तुम्हें पता चलेगा कि तुम कौन हो। इसलिए पांचवें शरीर के बाद 'मैं' की आवाजें एकदम बंद हो जायेंगी। पांचवें शरीर के बाद वह समबॉडी (विशिष्ट) होने का दावा एकदम समाप्त हो जायेगा। उसके बाद अगर तुम उससे कहोगे कि तुम 'यह हो', तो वह हंसेगा। और अपनी तरफ से उसके दावे खत्म हो जायेंगे; क्योंकि अब वह जानता है, अब दावे करने की कोई जरूरत नहीं; अब किसी के सामने सिद्ध करने की कोई जरूरत नहीं; अपने ही सामने सिद्ध हो गया है कि मैं कौन हूं। इसलिए पांचवें शरीर के भीतर कोई द्वंद्व नहीं है; लेकिन पांचवें शरीर के बाहर और भीतर गये आदमी में बुनियादी फर्क है; द्वंद्व अगर है तो इस भांति है – बाहर और भीतर में।

पांचवां शरीर बहुत ही तृप्तिदायी

भीतर, पांचवें शरीर में गये आदमी में कोई द्वंद्व नहीं है। लेकिन पांचवें शरीर का अपना खतरा है कि चाहो तो तुम वहां रुक सकते हो; क्योंकि तुमने अपने को जान लिया। और यह इतनी तृप्तिदायी स्थिति है... और इतनी आनंदपूर्ण... कि शायद तुम आगे की गति न करो।

अब तक जो खतरे थे वे दुख के थे, अब जो खतरा शुरू होता है वह आनंद का है। पांचवें शरीर के पहले जितने खतरे थे वे सब दुख के थे, अब जो खतरा शुरू होता है वह आनंद का है। यह इतना आनंदपूर्ण है कि अब शायद तुम आगे खोजो ही न।

इसलिए पांचवें शरीर में गये व्यक्ति के लिए अत्यंत सजगता जो रखनी है वह यह कि आनंद कहीं पकड़ न ले, रोकनेवाला न बन जाये। और आनंद

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

परम है । यहां आनंद कहीं पकड़ न ले,रोकने वाला न बन जाये । और आनंद परम है । यहां आनंद अपनी पूरी ऊंचाई पर प्रकट होगा; अपनी पूरी गहराई में प्रकट होगा । एक बड़ी क्रांति घटित हो गयी है : तुम अपने को जान लिये हो – लेकिन अपने को ही जाने हो । और तुम ही नहीं हो, और भी सब हैं । लेकिन बहुत बार ऐसा होता है कि दुख रोकनेवाले सिद्ध नहीं होते, सुख रोकनेवाले सिद्ध होते जाते हैं; और आनंद बहुत रोकनेवाला सिद्ध हो जाता है । बाजार की भीड़-भाड़ तक को छोड़ने में कठिनाई थी, अब इस मंदिर में बजती वीणा को छोड़ने में तो बहुत कठिनाई हो जायेगी । इसलिए बहुत से साधक आत्मज्ञान पर रुक जाते हैं और ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध नहीं हो पाते ।

आनंद में लीन मत हो जाना

तो इस आनंद के प्रति भी सजग होना पड़ेगा । यहां भी काम वही है कि आनंद में लीन मत हो जाना । आनंद लीन करता है, तल्लीन करता है, डुबा लेता है । आनंद में लीन मत हो जाना । आनंद के अनुभव को भी जानना कि वह भी एक अनुभव है – जैसे सुख के अनुभव थे, दुख के अनुभव थे, वैसे आनंद का भी अनुभव है । लेकिन तुम अभी भी बाहर खड़े रहना, तुम इसके भी साक्षी बन जाना; क्योंकि जब तक अनुभव है, तब तक उपाधि है; और जब तक अनुभव है, तब तक अंतिम छोर नहीं आया । अंतिम छोर पर सब अनुभव समाप्त हो जायेंगे : सुख और दुख तो समाप्त होते ही हैं, आनंद भी समाप्त हो जाता है । लेकिन हमारी भाषा इसके आगे फिर नहीं जा पाती । इसलिए हमने परमात्मा का रूप सच्चिदानंद कहा है । यह परमात्मा का रूप नहीं है, यह जहां तक भाषा जाती है वहां तक । आनंद हमारी आखिरी भाषा है ।

असल में पांचवें शरीर के आगे फिर भाषा नहीं जाती । तो पांचवें शरीर के संबंध में कुछ कहा जा सकता है – आनंद है वहां, पूर्ण जागृति है वहां, स्वबोध है वहां; यह सब कहा जा सकता है, इसमें कोई कठिनाई नहीं है ।

आत्मवाद के बाद रहस्यवाद

इसलिए जो आत्मवाद पर रुक जाते हैं उनकी बातों में मिस्टीसिज़्म नहीं होगा । इसलिए आत्मवाद पर रुक गये लोगों में कोई रहस्य नहीं होगा; उनकी बातें बिलकुल साइंस (विज्ञान) जैसी मालूम पड़ेंगी; क्योंकि मिस्ट्री (रहस्य) की दनिया तो इसके आगे है, रहस्य तो इसके आगे है । यहां तक तो चीजें साफ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हो सकती हैं। और मेरी समझ है कि जो लोग आत्मवाद पर रुक जाते हैं, आज नहीं कल, उनके धर्म को विज्ञान आत्मसात कर लेगा; क्योंकि आत्म तक विज्ञान भी पहुंच सकेगा।

सत्य का खोजी आत्मा पर नहीं रुकेगा

और आमतौर से साधक जब खोज पर निकलता है तो उसकी खोज सत्य की नहीं होती, आमतौर से आनंद की होती है। वह कहता है सत्य की खोज पर निकला हूं, लेकिन खोज उसकी आनंद की होती है। दुख से परेशान है, अशांति से परेशान है, वह आनंद खोज रहा है। इसलिए जो आनंद खोजने निकला है, वह तो निश्चित ही इस पांचवें शरीर पर रुक जायेगा। इसलिए एक बात और कहता हूं कि खोज आनंद की नहीं, सत्य की करना। तब फिर रुकना नहीं होगा।

तब एक सवाल नया उठेगा कि आनंद है, यह ठीक; मैं अपने को जान रहा हूं, यह भी ठीक; लेकिन ये वृक्ष के फूल हैं, वृक्ष के पत्ते हैं, जड़ें कहां हैं? मैं अपने को जान रहा हूं, यह भी ठीक; मैं आनंदित हूं, यह भी ठीक; लेकिन मैं कहां से हूं – फ्राम ह्वेअर? मेरी जड़ें कहां हैं? मैं आया कहां से? मेरे अस्तित्व की गहराई कहां है? कहां से मैं आ रहा हूं? यह जो मेरी लहर है, यह किस सागर से उठी है?

सत्य की अगर जिज्ञासा है, तो पांचवें शरीर से आगे जा सकोगे। इसलिए बहुत प्राथमिक रूप से ही, प्रारंभ से ही जिज्ञासा सत्य की चाहिए, आनंद की नहीं – नहीं तो पांचवें तक तो बड़ी अच्छी यात्रा होगी, पांचवें पर एकदम रुक जायेगी बात। सत्य की अगर खोज है तो यहां रुकने का सवाल नहीं है।

तो पांचवें शरीर में जो सबसे बड़ी बाधा है, वह उसका अपूर्व आनंद है। और हम एक ऐसी दुनिया से आते हैं, जहां दुख और पीड़ा और चिंता और तनाव के सिवाय कुछ भी नहीं जाना। और जब इस आनंद के मंदिर में प्रविष्ट होते हैं तो मन होता है कि अब बिलकुल डूब जाओ, अब खो ही जाओ – इस आंनद में नाचो और खो जाओ।

खो जाने की यह जगह नहीं है। खो जाने की जगह भी आयेगी, लेकिन तब खोना न पड़ेगा, खो ही जाओगे। वह बहुत और है – खोना और खो ही जाना – यानी वह जगह आयेगी, जहां बचना भी चाहोगे तो नहीं बच सकोगे। देखोगे खोते हुए अपने को, कोई उपाय न रह जायेगा। लेकिन यहां खोना हो सकता है, यहां भी खो सकते हैं हम। लेकिन वह उसमें भी हमारा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deobarid

Digitized by Madhuban Trust

प्रयास, हमारी चेष्टा... और बहुत गहरे में अहंकार तो मिट जायेगा – पांचवें शरीर में – अस्मिता नहीं मिटेगी। इसलिए अहंकार और अस्मिता का थोड़ा सा फर्क समझ लेना जरूरी है।

आत्म शरीर में अहंकार नहीं, अस्मिता रह जायेगी

अहंकार तो मिट जायेगा; 'मैं' का भाव तो मिट जायेगा, लेकिन 'हूं' का भाव नहीं मिटेगा। मैं हूं, इसमें दो चीजें हैं – 'मैं' तो अहंकार है, और 'हूं' अस्मिता है – होने का बोध। 'मैं' तो मिट जायेगा पांचवें शरीर में, सिर्फ 'होना' रह जायेगा – 'हूं' रह जायेगा; अस्मिता रह जायेगी।

इसलिए इस जगह पर खड़े होकर अगर कोई दुनिया के बाबत कुछ कहेगा तो वह कहेगा अनंत आत्माएं हैं, सबकी आत्माएं अलग हैं; आत्मा एक नहीं है, प्रत्येक की आत्मा अलग है।

इस जगह से आत्मवादी अनेक आत्माओं को अनुभव करेगा; क्योंकि अपने को वह अस्मिता में देख रहा है, अभी भी अलग है।

अगर सत्य की खोज मन में हो और आनंद में डूबने की बाधा से बचा जा सके... बचा जा सकता है; क्योंकि जब सतत आनंद रहता है तो उबानेवाला हो जाता है – आनंद भी उबानेवाला हो जाता है; एक ही स्वर बजता रहे आनंद का तो वह भी उबानेवाला हो जाता है।

बर्ट्रेंड रसल ने मजाक में कहीं यह कहा है कि मैं मोक्ष जाना पसंद नहीं करूंगा, क्योंकि मैं सुनता हूं कि वहां सिर्फ आनंद है और कुछ भी नहीं। तो बहुत मोनोटोनस (एकरस) होगा... कि आंनद ही आनंद है। उसमें एक दुख की रेखा भी बीच में न होगी; उसमें कोई चिंता और तनाव न होगा। ...तो कितनी देर तक ऐसे आनंद को झेल पायेंगे ?

आनंद की लीनता बाधा है पांचवें शरीर में। फिर, अगर आनंद की लीनता से बच सकते हो – जो कि कठिन है, और कई बार जन्म-जन्म लग जाते हैं। पहली चार सीढ़ियां पार करना इतना कठिन नहीं, पांचवीं सीढ़ी पार करना बहुत कठिन हो जाता है; बहुत जन्म लग सकते हैं – आंनद से ऊबने के लिए, और स्वयं से ऊबने के लिए, आत्म से ऊबने के लिए; वह जो 'सेल्फ' है, उससे ऊबने के लिए।

तो अभी पांचवें शरीर तक जो खोज है, वह दुख से छूटने की है, घृणा से छूटने की है, हिंसा से छूटने की, वासना से छूटने की; पांचवें के बाद जो खोज है, वह स्वयं से छूटने की है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो दो बातें हैं – फ्रीडम फ्रॉम समथिंग – किसी चीज से मुक्ति, यह एक बात है; यह पांचवें तक पूरी होगी। फिर दूसरी बात है – किसी से मुक्ति नहीं, अपने से ही मुक्ति। और इसलिए पांचवें शरीर से एक नया जगत शुरू होता है।

आज्ञा चक्र की संभावना

छठवां शरीर ब्रह्म शरीर है, काज़्मिक बॉडी है; और छठवां केंद्र आज्ञा है। अब यहां से कोई द्वैत नहीं है। आनंद का अनुभव पांचवें शरीर पर प्रगाढ़ होगा, अस्तित्व का अनुभव छठवें शरीर पर प्रगाढ़ होगा – एग्ज़िसटैंस (अस्तित्व) का, बीइंग (होने) का। अस्मिता खो जायेगी छठवें शरीर पर – 'हूं', यह भी चला जायेगा... है। 'मैं हूं' – तो 'मैं' चला जायेगा पांचवें शरीर पर, 'हूं' चला जायेगा पांचवें को पार कर के, ...'है'; 'इज़नेस' का बोध होगा, 'तथाता' का बोध होगा ...'ऐसा है'। उसमें 'मैं' कहीं भी नहीं आयेगा, उसमें अस्मिता कहीं नहीं आयेगी – जो है, बस वही हो जायेगा।

तो यहां सत् का, बीइंग का बोध होगा; चित्त, कांशसनेस का बोध होगा, लेकिन यहां चित्त मुझसे मुक्त हो गया। ऐसा नहीं कि मेरी चेतना... मात्र चेतना। मेरा अस्तित्व – ऐसा नहीं, लेकिन मात्र अस्तित्व।

ब्रह्म का भी अतिक्रमण करने पर निर्वाण काया में प्रवेश

और कुछ लोग छठवें पर रुक जायेंगे, क्योंकि ब्रह्म शरीर (कॉज़्मिक बॉडी) आ गया, ब्रह्म हो गया मैं, अहम् ब्रह्मास्मि की हालत आ गयी – अब 'मैं' नहीं रहा, 'ब्रह्म' ही रह गया है। अब और कहां है खोज ? अब कैसी खोज ? अब किसको खोजना है ? अब तो खोजने को भी कुछ भी नहीं है; अब तो सब पा लिया है; क्योंकि ब्रह्म का मतलब है – दि टोटल; सब, समग्र।

इस जगह खड़े होकर जिन्होंने कहा है, वे कहेंगे कि ब्रह्म अंतिम सत्य है, ब्रह्म परम है, उसके आगे फिर कुछ भी नहीं है। और इसलिए इस पर तो अंनत जन्म रुक सकता है कोई। आमतौर से रुक जाता है; क्योंकि इसके आगे तो सूझ में नहीं आता कि इसके आगे भी कुछ हो सकता है।

तो ब्रह्मज्ञानी इस पर अटक जायेगा, इसके आगे वह नहीं जायेगा। और यह इतना कठिन है इस जगह को पार करना, क्योंकि अब बचती नहीं है कोई जगह जहां कि इसको पार करो। सब तो घेर लिया, जगह भी चाहिए न ! अगर मैं इस कमरे के बाहर जाऊं, तो बाहर जगह भी तो चाहिए ? अब यह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कमरा इतना विराट हो गया – अंतहीन; अनंत हो गया; असीम, अनादि हो गया; अब जाने को भी कोई जगह नहीं, नो ह्वेयर टु गो। तब खोजने भी कहां जाओगे ? अब खोजने को भी कुछ नहीं बचा, सब आ गया। तो यहां अनंत जन्म तक रुकना हो सकता है।

परम खोज में आखिरी बाधा ब्रह्म

तो ब्रह्म आखिरी बाधा है – द लास्ट बैरियर। साधक की परम खोज में ब्रह्म आखिरी बाधा है। बीइंग (अस्तित्व) रह गया है अब, लेकिन अभी भी नॉनबीइंग (अनस्तित्व) भी है शेष; 'अस्ति' तो जान ली, 'है' तो जान लिया, लेकिन 'नहीं है', अभी वह जानने को शेष रह गया।

इसलिए सातवां शरीर है निर्वाण काया। उसका चक्र है सहस्रार। और उसके संबंध में कोई बात नहीं हो सकती। ब्रह्म तक बात जा सकती है – खींच-तानकर; गलत हो जायेगी बहुत।

छठवें शरीर में तीसरी आंख का खुलना

पांचवें शरीर तक बात बड़ी वैज्ञानिक ढंग से चलती है; सारी बात साफ हो सकती है। छठवें शरीर पर बात की सीमाएं खोने लगती हैं, शब्द अर्थहीन होने लगता है, लेकिन फिर भी इशारे किये जा सकते हैं। लेकिन अब अंगुली भी टूट जाती है, अब इशारे गिर जाते हैं; क्योंकि अब खुद का होना ही गिर जाता है।

तो एब्सोल्यूट बीइंग (परम अस्तित्व) को छठवें शरीर तक और छठवें केंद्र से जाना जा सकता है।

इसलिए जो लोग ब्रह्म की तलाश में हैं, आज्ञाचक्र पर ध्यान करेंगे। वह उसका चक्र है। इसलिए भृकुटि-मध्य में आज्ञाचक्र पर वे ध्यान करेंगे; वह उससे संबंधित चक्र है – उस शरीर का। और वहां जो उस चक्र पर पूरा काम करेंगे, तो वहां से उन्हें जो दिखाई पड़ना शुरू होगा विस्तार अनंत का, उसको वे 'तृतीय नेत्र' और 'थर्ड आई' कहना शुरू कर देंगे। वहां से वह तीसरी आंख उनके पास आयी जहां से वह अनंत को, काज़्मिक को देखना शुरू कर देते हैं। लेकिन अभी एक और शेष रह गया – न होना, नॉन-बीइंग, नास्ति।

सहस्रार चक्र की संभावना

अस्तित्व जो है वह आधी बात है, अनस्तित्व भी है; प्रकाश जो है वह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

आधी बात है, अंधकार भी है; जीवन जो है आधी बात है, मृत्यु भी है। इसलिए आखिरी अनस्तित्व को, शून्य को भी जानने की जरूरत है; क्योंकि परम सत्य तभी पता चलेगा जब दोनों जान लिये – अस्ति भी और नास्ति भी; अस्तिकता भी जानी उसकी संपूर्णता में और नास्तिकता भी जानी उसकी संपूर्णता में; होना भी जाना उसकी संपूर्णता में और न-होना भी जाना उसकी संपूर्णता में... तभी हम पूरे को जान पाये, अन्यथा यह भी अधूरा है।

ब्रह्मज्ञान में एक अधूरापन है कि वह न-होने को नहीं जान पायेगा। इसलिए ब्रह्मज्ञानी न-होने को इनकार ही कर देता है; वह कहता है – वह माया है, वह है ही नहीं; वह कहता है : होना सत्य है, न-होना झूठ है, मिथ्या है; वह है ही नहीं; उसको जानने का सवाल कहां है।

निर्वाण काया का मतलब है, शून्य-काया – जहां हम होने से न-होने में छलांग लगा जाते हैं; क्योंकि वह और जानने को शेष रह गया; उसे भी जान लेना जरूरी है कि न-होना क्या है, मिट जाना क्या है। इसलिए सातवां शरीर जो है, वह एक अर्थ में महामृत्यु है। और निर्वाण का, जैसा मैंने कल अर्थ कहा, वह दीये का बुझ जाना है; वह जो हमारा होना था, वह जो हमारा मैं था, मिट गया; वह जो हमारी अस्मिता थी, मिट गयी... लेकिन अब हम सर्व के साथ एक होकर फिर हो गये हैं; अब हम ब्रह्म हो गये हैं। अब इसे भी छोड़ देना पड़ेगा। और इतनी जिसकी छलांग की तैयारी है, वह 'जो है', उसे तो जान ही लेता है; 'जो नहीं है', उसे भी जान लेता है।

और ये सात शरीर और सात चक्र हैं हमारे। और इन सात चक्रों के भीतर ही हमारी सारी बाधाएं और साधन हैं। कहीं किसी बाहरी रास्ते पर कोई बाधा नहीं है, इसलिए किसी से पूछने जाने का उतना सवाल नहीं है। और अगर किसी से पूछने भी गये हो, और किसी के पास समझने भी गये हो, तो मांगने मत जाना। मांगना और बात है, समझना और बात है; पूछना और बात है। खोज अपनी जारी रखना, और जो समझ के आये हो उसको भी अपनी खोज ही बनाना; उसको अपना विश्वास मत बनाना, नहीं तो वह मांगना हो जायेगा।

खोजने निकलो, मांगने नहीं

मुझसे एक बात तुमने की, और मैंने तुम्हें कुछ कहा, अगर तुम मांगने आये थे तो तुमको जो मैंने कहा, तुम इसे अपनी थैली में बंद कर के संभाल कर रख लोगे, इसको संपत्ति बना लोगे। तब तुम साधक नहीं, भिखारी ही

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

रह जाते हो। नहीं, मैंने तुमसे कुछ कहा, यह तुम्हारी खोज बना, इसने तुम्हारी खोज को गतिमान किया, इसने तुम्हारी जिज्ञासा को दौड़ाया और जगाया, इससे तुम्हें और मुश्किल और बेचैनी हुई, इसने तुम्हें और नये सवाल खड़े किये और नयी दिशाएं खोलीं, और तुम नयी खोज पर निकले, तब तुमने मुझसे मांगा नहीं, तब तुमने मुझसे समझा। और मुझसे तुमने जो समझा, वह अगर तुम्हें स्वयं को समझने में सहयोगी हो गया, तब मांगना नहीं है।

तो समझने निकलो, खोजने निकलो। तुम अकेले नहीं खोज रहे, और बहुत लोग खोज रहे हैं। बहुत लोगों ने खोजा है, बहुत लोगों ने पाया है। उन सबको क्या हुआ है, क्या नहीं हुआ है, उस सबको समझो, लेकिन उस सबको समझकर तुम अपने को समझना बंद मत कर देना; उसको समझकर तुम यह मत समझ लेना कि यह मेरा ज्ञान बन गया। उसका तुम विश्वास मत बनाना, उस पर तुम भरोसा मत करना, उस सबसे तुम प्रश्न बनाना, उस सबको तुम समस्या बनाना, उसको समाधान मत बनाना, तो फिर तुम्हारी यात्रा जारी रहेगी। और तब फिर मांगना नहीं है, तब तुम्हारी खोज है।

और तुम्हारी खोज ही तुम्हें अंत तक ले जा सकती है। और जैसे-जैसे तुम भीतर खोजोगे तो जो मैंने तुमसे बातें कहीं हैं, प्रत्येक केंद्र पर दो तत्व तुमको दिखाई पड़ेंगे – एक जो तुम्हें मिला है, और एक जो तुम्हें खोजना है : क्रोध तुम्हें मिला है, क्षमा तुम्हें खोजनी है; सेक्स तुम्हें मिला है, ब्रह्मचर्य तुम्हें खोजना है; स्वप्न तुम्हें मिला है, विज़न (अतींद्रिय-दर्शन) तुम्हें खोजना है, दर्शन तुम्हें खोजना है।

चार शरीरों तक तुम्हारी द्वैत की खोज चलेगी, पांचवें शरीर से तुम्हारी अद्वैत की खोज शुरू होगी।

पांचवें शरीर में तुम्हें जो मिल जाये, उससे भिन्न को खोजना जारी रखना। आनंद मिल जाये तो तुम खोजना कि और आनंद के अतिरिक्त क्या है ?

छठवें शरीर पर तुम्हें ब्रह्म मिल जाये तो तुम खोज जारी रखना कि ब्रह्म के अतिरिक्त क्या है। तब एक दिन तुम उस सातवें शरीर पर पहुंचोगे, जहां होना और न-होना, प्रकाश और अंधकार, जीवन और मृत्यु, दोनों एकसाथ ही घटित हो जाते हैं। और तब परम, दी अल्टिमेट... और उसके बाबत फिर कोई उपाय नहीं कहने का।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पांचवें शरीर के बाद रहस्य ही रहस्य है

इसलिए हमारे सब शास्त्र या तो पांचवें पर पूरे हो जाते हैं। जो बहुत वैज्ञानिक बुद्धि के लोग हैं, वे पांचवें के आगे बात नहीं करते; क्योंकि उसके बाद काज़्मिक (ब्रह्म) शुरू होता है – जिसके विस्तार का कोई अंत नहीं है। पर जो मिस्टिक किस्म के लोग हैं – जो रहस्यवादी हैं, सूफी हैं, इस तरह के लोग हैं, वे उसकी भी बात करते हैं। हालांकि उसकी बात करने में उन्हें बड़ी कठिनाई होती है, और उन्हें अपने को ही हर बार कॉन्ट्राडिक्ट करना पड़ता है, खुद का ही विरोध करना पड़ता है। और अगर एक सूफी फकीर की, या एक मिस्टिक (रहस्यवादी) की पूरी बातें सुनो, तो तुम कहोगे कि यह आदमी पागल है, क्योंकि कभी यह यह कहता है, और कभी यह यह कहता है! यह कहता है : ईश्वर है भी, और यह कहता है : ईश्वर नहीं भी है; और यह यह कहता है कि मैंने उसे देखा, और दूसरे ही वाक्य में कहता है कि उसे तुम देखे कैसे सकते हो! क्योंकि वह कोई आंखों का विषय है? यह ऐसे सवाल उठाता है कि तुम्हें हैरानी होगी कि किसी दूसरे से सवाल उठा रहा है कि अपने से उठा रहा है। छठवें शरीर से मिस्टिसिज़्म...

इसलिए जिस धर्म में मिस्टिसिज़्म नहीं है, समझना वह पांचवें पर रुक गया। लेकिन मिस्टिसिज़्म भी आखिरी बात नहीं है। रहस्य आखिरी बात नहीं है, आखिरी बात शून्य है; निहिलिज़्म (नकारवाद) है आखिरी बात।

तो जो धर्म रहस्य पर रुक गया, समझना वह छठवें पर रुक गया। आखिरी बात तो आखिरी है। और उस शून्य के अतिरिक्त आखिरी कोई बात हो नहीं सकती।

राह के पत्थर को भी सीढ़ी बना लेना

तो पांचवें शरीर से अद्वैत की खोज शुरू होती है, चौथे शरीर तक द्वैत की खोज खत्म हो जाती है। और सब बाधाएं तुम्हारे भीतर हैं। और बाधाएं बड़ी अच्छी बात हैं कि तुम्हें उपलब्ध हैं। और प्रत्येक बाधा का रूपांतरण होकर वही तुम्हारा साधन बन जाती है।

रास्ते पर एक पत्थर पड़ा है; जब तक तुमने समझा नहीं है उसे तब तक तुम्हें रोक रहा है, जिस दिन तुमने समझा उसी दिन तुम्हारी सीढ़ी बन जाता है। पत्थर वहीं पड़ा रहता है। जब तक तुम नहीं समझे थे, तुम चिल्ला रहे थे कि यह पत्थर मुझे रोक रहा है, मैं आगे कैसे जाऊं। जब तुम इस पत्थर को समझ लिये, तुम इस पर चढ़ गये और आगे चले गये, और अब तुम इस

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पत्थर को धन्यवाद दे रहे हो कि तेरी बड़ी कृपा है, क्योंकि जिस तल पर मैं चल रहा था, तुझ पर चढ़कर मेरा तल बदल गया, अब मैं दूसरे तल पर चल रहा हूं; तू साधन था, लेकिन मैं समझ रहा था बाधा है; मैं सोचता था रास्ता रुक गया, यह पत्थर बीच में आ गया, अब क्या होगा !

क्रोध बीच में आ गया। अगर क्रोध पर चढ़ गये तो क्षमा को उपलब्ध हो जायेंगे, जो कि बहुत दूसरा तल है; सेक्स बीच में आ गया है, अगर सेक्स पर चढ़ गये तो ब्रह्मचर्य उपलब्ध हो जायेगा, जो कि बिलकुल ही दूसरा तल है। और तब सेक्स को धन्यवाद दे सकोगे, और तब क्रोध को भी धन्यवाद दे सकोगे।

जिस वृत्ति से लड़ेंगे, उससे ही बंध जायेंगे

प्रत्येक राह का पत्थर बाधा बन सकता है और साधन बन सकता है। वह तुम पर निर्भर है कि उस पत्थर के साथ क्या करते हो। हां, भूलकर भी पत्थर से लड़ना मत, नहीं तो सिर फूट सकता है और वह साधन नहीं बनेगा। और अगर कोई पत्थर से लड़ने लगा तो वह पत्थर रोक लेगा; क्योंकि जहां हम लड़ते हैं वहीं हम रुक जाते हैं; क्योंकि जिससे लड़ना है, उसके पास रुकना पड़ता है; जिससे हम लड़ते हैं उससे दूर नहीं जा सकते हैं हम कभी भी। इसलिए अगर कोई सेक्स से लड़ने लगा, तो वह सेक्स के आसपास ही घूमता रहेगा। उतना ही आसपास घूमेगा जितना सेक्स में डूबनेवाला घूमता है। बल्कि कई बार उससे भी ज्यादा घूमेगा, क्योंकि डूबनेवाला ऊब भी जाता है, बाहर भी होता है; यह ऊब भी नहीं पाता, यह आसपास ही घूमता रहता है।

अगर तुम क्रोध से लड़े तो तुम क्रोध ही हो जाओगे; तुम्हारा सारा व्यक्तित्व क्रोध से भर जायेगा; और तुम्हारे रग-रग रेशे-रेशे से क्रोध की ध्वनियां निकलने लगेंगी; और तुम्हारे चारों तरफ क्रोध की तरंगें प्रवाहित होने लगेंगी। इसलिए ऋषि-मुनियों की जो हम कहानियां पढ़ते हैं... महाक्रोधी, उसका कारण है; उसका कारण है वे क्रोध से लड़नेवाले लोग हैं। कोई दुर्वसा है, कोई कोई है। उनको सिवाय अभिशाप के कुछ सूझता ही नहीं है। उनका सारा व्यक्तित्व आग हो गया है। वे पत्थर से लड़ गये हैं, वे मुश्किल में पड़ गये हैं; वे जिससे लड़े हैं, वही हो गये हैं।

तुम ऐसे ऋषि-मुनियों की कहानियां पढ़ोगे जिन्हें कि स्वर्ग से कोई अप्सरा आकर बड़े तत्काल भ्रष्ट कर देती है। आश्चर्य की बात है। यह तभी संभव है जब वे सेक्स से लड़े हों, नहीं तो संभव नहीं है। वे इतना लड़े हैं, इतना

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

लड़े हैं, इतना लड़े हैं, इतना लड़े हैं कि लड़-लड़कर खुद ही कमजोर हो गये हैं – और सेक्स अपनी ही जगह खड़ा है; वह प्रतीक्षा कर रहा है; वह किसी भी द्वार से फूट पड़ेगा । और कम संभावना है कि अप्सरा आयी हो, संभावना तो यही हो कि साधारण स्त्री निकली हो, लेकिन इसको अप्सरा दिखाई पड़ी हो; क्योंकि अप्सराओं ने कोई ठेका ले रखा है कि ऋषि-मुनियों को सताने के लिए आती रहें । लेकिन अगर सेक्स को बहुत सप्रेस किया (दबाया) गया हो, तो साधारण स्त्री भी अप्सरा हो जाती; क्योंकि हमारा चित्त प्रोजेक्ट करने लगता है – रात वही सपना देखता है, दिन वही विचार करता है । फिर हमारा चित्त पूरा का पूरा उसी से भर जाता है । फिर कोई भी चीज... कोई भी चीज अतिमोहक हो जाती है, जो कि नहीं थी ।

लड़ना नहीं, समझना

तो साधक के लिए लड़ने भर से सावधान रहना है, और समझने की कोशिश करनी है । और समझने की कोशिश का मतलब ही यह है कि तुम्हें जो मिला है प्रकृति से उसको समझना है । तो तुम्हें जो नहीं मिला है, उसी मिले हुए के मार्ग से तुम्हें वह भी मिल जायेगा जो नहीं मिला है; वह पहला छोर है । अगर तुम उसी से भाग गये तो तुम दूसरे छोर पर कभी न पहुंच पाओगे । अगर सेक्स से ही घबराकर भाग गयें तो ब्रह्मचर्य तक कैसे पहुंचोगे ? सेक्स तो द्वार था जो प्रकृति से मिला था । ब्रह्मचर्य उसी द्वार से खोज थी जो अंत में तुम खोज पाओगे ।

तो ऐसा अगर देखोगे तो मांगने जाने की कोई जरूरत नहीं है, समझने जाने की तो बहुत जरूरत है; पूरी जिंदगी समझने के लिए है – किसी से भी समझो, सब तरफ से समझो और अंततः अपने भीतर समझो ।

व्यक्तियों को तौलने से बचना

प्रश्न : अभी आपने सात शरीरों की चर्चा की, तो उसमें सातवें या छठवें या पांचवें शरीर – निर्वाण-बॉडी, कॉज़मिक-बाडी और स्पिरिचुअल बॉडी को क्रमशः उपलब्ध हुए कुछ प्राचीन और अर्वाचीन अर्थात एंशियेंट और मॉडर्न व्यक्तियों के नाम लेने की कृपा करें ?

इस झंझट में न पड़ो तो अच्छा है । इसका कोई सार नहीं है । इसका कोई अर्थ नहीं है । और अगर मैं कहूं भी तो तुम्हारे पास उसकी जांच के लिए कोई प्रमाण नहीं होगा । और जहां तक बने व्यक्तियों को तौलने से बचना अच्छा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

है। उनसे कोई प्रयोजन भी नहीं है। उनसे कोई प्रयोजन नहीं है। उसका कोई अर्थ ही नहीं है। उनको जाने दो।

पांचवें या छठवें शरीर में मृत्यु के बाद देव योनियों में जन्म

प्रश्न : पांचवें शरीर को या उसके बाद के शरीर को उपलब्ध हुए व्यक्ति को अगले जन्म में भी क्या स्थूल शरीर ग्रहण करना पड़ता है ?

हां, यह बात ठीक है, पांचवें शरीर को उपलब्ध व्यक्ति का इस शरीर में जन्म नहीं होगा, पर और शरीर हैं। असल में जिनको हम देवता कहते रहे हैं, उस तरह के शरीर हैं। वे पांचवें के बाद उस तरह के शरीर उपलब्ध हो सकते हैं। छठवें के बाद तो उस तरह के शरीर भी उपलब्ध नहीं होंगे। गॉड्स के नहीं, बल्कि जिनको हम गॉड कहते रहे हैं, ईश्वर कहते रहे हैं, उस तरह का शरीर उपलब्ध हो जायेगा। लेकिन शरीर उपलब्ध होते रहेंगे; वे किस तरह के हैं, यह बहुत गौण बात है। सातवें के बाद ही शरीर उपलब्ध नहीं होंगे। सातवें के बाद ही अशरीरी स्थिति होगी। उसके पहले सूक्ष्म से सूक्ष्म शरीर उपलब्ध होते रहेंगे।

शक्तिपात से प्रसाद श्रेष्ठतर

प्रश्न : पिछली चर्चा में कहा था आपने कि आप पसंद करते हैं कि शक्तिपात जितना ग्रेस के निकट हो सके उतना ही अच्छा है। इसका क्या यह अर्थ न हुआ कि शक्तिपात की पद्धति में क्रमिक सुधार और विकास की संभावना है ? अर्थात क्या शक्तिपात की प्रक्रिया में क्वालिटेटिव प्रोग्रेस (गुणात्मक विकास) भी संभव है ?

बहुत संभव है, बहुत सी बातें संभव हैं। असल में शक्तिपात की और प्रसाद की, ग्रेस की जो भिन्नता है, वह भिन्नता बड़ी है। मूल रूप से तो प्रसाद ही काम का है; बिना माध्यम के मिले, तो शुद्धतम होगा, क्योंकि उसको अशुद्ध करनेवाला बीच में कोई भी नहीं होता। जैसे कि मैं तुम्हें अपनी खुली आंखों से देखूं, तो जो मैं देखूंगा वह शुद्धतम होगा। फिर मैं एक चश्मा लगा लूं, तो जो होगा वह उतना शुद्धतम नहीं होगा; एक माध्यम बीच में आ गया। लेकिन फिर इस माध्यम में भी शुद्ध और अशुद्ध के बहुत रूप हो सकते हैं। एक रंगीन चश्मा हो सकता है, एक साफ-सफेद चश्मा हो सकता है। और इस कांच की भी क्वालिटि (गुणवत्ता) में बहुत फर्क हो सकता है। समझ रहे हैं न ?

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

तो जब हम माध्यम से लेंगे तब कुछ न कुछ अशुद्धि तो आने ही वाली

Digitized by Madhuban Trust

है। वह माध्यम की होगी। और इसलिए शुद्धतम प्रसाद तो सीधा ही मिलता है, शुद्धतम ग्रेस तो सीधी ही मिलती है – जब कोई माध्यम नहीं होता।

अब समझ लो कि अगर हम बिना आंख के भी देख सकें तो और भी शुद्धतम होगा, क्योंकि आंख भी माध्यम है। अगर आंख के बिना भी देख सकें तो और भी शुद्धतम होगा, क्योंकि फिर आंख भी उसमें बाधा नहीं डाल पायेगी। अब किसी की आंख में पीलिया है, और किसी की आंख कमजोर है और किसी की कुछ है, तो कठिनाइयां हैं। लेकिन अब जिसकी आंख में कमजोरी है, उसको एक चश्मे का माध्यम सहयोगी हो सकता है। यानी हो सकता है कि खाली आंख से वह जितना शुद्ध न देख पाये, उतना एक चश्मा लगाने से शुद्ध देख ले। ऐसे तो चश्मा एक और माध्यम हो गया – दो माध्यम हो गये, लेकिन पिछले माध्यम की कमी यह माध्यम पूरा कर सकता है।

ठीक ऐसी ही बात है। जिस व्यक्ति के माध्यम से प्रसाद किसी दूसरे तक पहुंचेगा, उस व्यक्ति का माध्यम कुछ तो अशुद्धि करेगा ही। लेकिन, अगर यह अशुद्धि ऐसी हो कि उस दूसरे व्यक्ति की आंख की अशुद्धि के प्रतिकूल पड़ती हो और दोनों कट जाती हों, तो प्रसाद के निकटतम पहुंच जायेगी बात। लेकिन यह एक-एक स्थिति में अलग-अलग तय करना होगा।

मेरी जो समझ है, वह यह है कि इसलिए सीधा प्रसाद खोजा जाये, व्यक्ति के माध्यम की फिक्र ही छोड़ दी जाये। हां, कभी-कभी अगर जीवनधारा के लिए जरूरत पड़ेगी तो व्यक्ति के माध्यम से भी झलक दिखला देती है, उसकी तुम्हें चिंता... साधक को उसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है।

लेने नहीं जाना; क्योंकि लेने जाओगे तो मैंने कल तुमसे जैसा कहा, देनेवाला कोई मिल जायेगा। और देनेवाला जितना सघन है, उतनी ही अशुद्ध हो जायेगी बात। तो देनेवाला ऐसा चाहिए जिसे देने का पता ही न चलता हो, तब... तब शक्तिपात शुद्ध हो सकता है। फिर भी वह प्रसाद नहीं बन जायेगा। फिर भी एक दिन तो वह चाहिए जो हमें इमीजिएट मिलता हो, मीडियम के बिना मिलता हो, सीधा मिलता हो; परमात्मा और हमारे बीच कोई भी न हो, शक्ति और हमारे बीच कोई भी न हो। ध्यान में वही रहे, नजर में वही रहे, खोज उसकी रहे – बीच के मार्ग पर बहुत सी घटनाएं घट सकती हैं, लेकिन उन पर किसी पर रुकना नहीं है, इतना ही काफी है। और फर्क तो पड़ेंगे। क्वालिटी (गुण) के भी फर्क पड़ेंगे, क्वांटिटि (मात्रा) के भी फर्क पड़ेंगे। और कई कारणों से पड़ेंगे। वह बहुत विस्तार की बात होगी, कई कारणों से पड़ेंगे।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शक्तिपात का शुद्धतम माध्यम

असल में पांचवां शरीर जिसको मिल गया है, किसी को भी शक्तिपात उसके द्वारा हो सकता है – पांचवें शरीर से। लेकिन पांचवें शरीरवाले का जो शक्तिपात है वह उतना शुद्ध नहीं होगा, जितना छठवें वाले का होगा; क्योंकि उसकी अस्मिता कायम है। अहंकार तो मिट गया, अस्मिता कायम है; 'मैं' तो मिट गया, 'हूं' कायम है। वह 'हूं' थोड़ा सा रस लेगा। छठवें शरीरवाले से भी शक्तिपात हो जायेगा। वहां 'हूं' भी नहीं है अब, वहां ब्रह्म ही है। वह और शुद्ध हो जायेगा। लेकिन अभी भी ब्रह्म है। अभी 'नहीं है' कि स्थिति नहीं आ गयी है, 'है' कि स्थिति है। यह 'है' भी बहुत बारीक परदा है – बहुत बारीक, बहुत नाजुक, पारदर्शी, ट्रांसपेरेंट, लेकिन है। यह परदा है।

तो छठवें शरीरवाले से भी शक्तिपात हो जायेगा। पांचवें से तो श्रेष्ठ होगा। प्रसाद के बिलकुल करीब पहुंच जायेगा। लेकिन कितने ही करीब हो, जरा सी भी दूरी दूरी है। और जितनी कीमती चीजें हों, उतनी छोटी सी दूरी बड़ी हो जाती; जितनी कीमती चीजें हों, उतनी छोटी सी दूरी बड़ी दूरी हो जाती। इतनी बहुमूल्य दुनिया है प्रसाद की कि वहां इतना सा परदा कि उसको पता है कि 'है', बाधा बनेगा।

सातवें शरीर को उपलब्ध व्यक्ति से शक्तिपात शुद्धतम हो जायेगा। शुद्धतम हो जायेगा, ग्रेस फिर भी नहीं होगा। शक्तिपात की शुद्धतम स्थिति सातवें शरीर पर पहुंच जायेगी – शुद्धतम। शक्तिपात जहां तक पहुंच सकता है वहां तक पहुंच जायेगी। लेकिन, उस तरफ से तो कोई परदा नहीं है अब; सातवें शरीर को उपलब्ध व्यक्ति की तरफ से कोई परदा नहीं है। उसकी तरफ से तो अब वह शून्य के साथ एक हो गया, लेकिन तुम्हारी तरफ से परदा है। तुम तो उसको व्यक्ति ही मानकर जीयोगे। अब तुम्हारा परदा आखिरी बाधा डालेगा। अब उसकी तरफ से कोई परदा नहीं है, लेकिन तुम्हारे लिए तो वह व्यक्ति है।

माध्यम के प्रति व्यक्ति-भाव भी बाधा

समझो कि मैं अगर सातवीं स्थिति को उपलब्ध हो जाऊं, तो यह मेरी बात है कि मैं जानूं कि मैं शून्य हूं, लेकिन तुम ? तुम तो मुझे जानोगे कि एक व्यक्ति हूं। और तुम्हारा यह ख्याल कि मैं एक व्यक्ति हूं, आखिरी परदा हो जायेगा। यह परदा तो तुम्हारा तभी गिरेगा जब निर्व्यक्ति से तुम पर घटना घटे। यानी तुम कहीं खोजकर पकड़ ही न पाओ कि किससे घटी, कैसे घटी।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कोई सोर्स (स्रोत) न मिले तुम्हें, तभी तुम्हारा यह ख्याल गिर पायेगा; सोर्सलेस (स्रोतरहित) हो। अगर सूरज की किरण आ रही है तो तुम सूरज को पकड़ लोगे कि वह व्यक्ति है, लेकिन ऐसी किरण आये जो कहीं से नहीं आ रही और आ गयी, और ऐसी वर्षा हो जो किसी बादल से न हुई हो और हो गयी, तभी तुम्हारे मन से वह आखिरी परदा जो दूसरे के व्यक्ति होने से पैदा होता है, गिरेगा।

तो बारीक से बारीक फासले होते चले जायेंगे। अंतिम घटना तो प्रसाद की तभी घटेगी जब कोई भी बीच में नहीं है। तुम्हारा यह ख्याल भी कि कोई है, काफी बाधा है – आखिरी। दो हैं तब तक तो बहुत ज्यादा है – तुम भी हो और दूसरा भी है। हां, दूसरा मिट गया, लेकिन तुम हो। और तुम्हारे होने की वजह से दूसरा भी तुम्हें मालूम हो रहा है। सोर्सलेस (स्रोतरहित) प्रसाद जब घटित होगा, ग्रेस (प्रसाद) जब उतरेगी जिसका कहीं कोई उदगम नहीं है, उस दिन वह शुद्धतम होगी। उस उदगमशून्य (प्रसाद) की वजह से तुम्हारा व्यक्ति उसमें बह जायेगा, बच नहीं सकेगा। अगर दूसरा व्यक्ति मौजूद है तो वह तुम्हारे व्यक्ति को बचाने का काम करता है; तुम्हारे लिए ही सिर्फ मौजूद है तो भी काम करता है।

'मैं' और 'तू' से तनाव का जन्म

असल में तुमको, अगर तुम समुद्र के किनारे चले जाते हो, तुम्हें ज्यादा शांति मिलती है; जंगल में चले जाते हो, ज्यादा शांति मिलती है, क्योंकि सामने दूसरा व्यक्ति नहीं है – दि अदर मौजूद नहीं है। इसलिए तुम्हारा खुद का भी 'मैं' जो है, वह क्षीण हो जाता है। जब तक दूसरा मौजूद है, तुम्हारा 'मैं' भी मजबूत होता है। जब तक दूसरा मौजूद है,...

एक कमरे में दो आदमी बैठे हैं, तो उस कमरे में तनाव की धाराएं बहती रहती हैं – कुछ नहीं कर रहे – लड़ नहीं रहे, झगड़ नहीं रहे, चुपचाप बैठे हैं – मगर उस कमरे में तनाव की धाराएं बहती रहती हैं; क्योंकि दो 'मैं' मौजूद हैं और पूरे वक्त कार्य चल रहा है – सुरक्षा भी चल रही है, आक्रमण भी चल रहा है। चुप्पी भी है – कोई ऐसा नहीं है कि कोई झगड़ने की सीधी जरूरत है, या कुछ कहने की जरूरत है – दो की मौजूदगी... कमरा टेन्स (तनाव से भरा) है। और अगर....

कभी मैं बात करूंगा कि अगर तुम्हें, सारी जो तरंगें हमारे व्यक्तित्व से निकलती हैं, उनका बोध हो जाये, तो उस कमरे में तुम बराबर देख सकते हो

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कि वह कमरा दो हिस्से में विभाजित हो गया, और प्रत्येक व्यक्ति एक सेंटर (केंद्र) बन गया, और दोनों की विद्युतधाराएं और तरंगें आपस में दुश्मन की तरह खड़ी हुई हैं।

दूसरे की मौजूदगी तुम्हारे 'मैं' को मजबूत करती है। दूसरा चला जाये तो कमरा बदल जाता है, तुम रिलैक्स (विश्रामपूर्ण) हो जाते हो; तुम्हारा 'मैं' जो तैयार था कि कब क्या हो जाये, वह ढीला हो जाता है; वह तकिये से टिककर आराम करने लगता है; वह श्वास लेता है कि अभी दूसरा मौजूद नहीं है।

इसीलिए एकांत का उपयोग है कि तुम्हारा मैं शिथिल हो सके वहां। एक वृक्ष के पास तुम ज्यादा आसानी से खड़े हो पाते हो, बजाय एक आदमी के।

इसलिए जिन मुल्कों में आदमी-आदमी के बीच तनाव बहुत गहरे हो जाते हैं, वहां आदमी कुत्ते और बिल्लियों को भी पालकर उनके साथ जीने लगता है। उनके साथ ज्यादा आसानी है, उनके पास कोई 'मैं' नहीं है। एक कुत्ते के गले में पट्टा बांधे हम मजे से चले जा रहे हैं। ऐसा हम किसी आदमी के गले में पट्टा बांधकर नहीं चलते, हालांकि कोशिश करते हैं! पति पत्नी के बांधे हुए है, पत्नी पति के पट्टा बांधे हुए है गले में, और चले जा रहे हैं! लेकिन जरा सूक्ष्म पट्टे हैं, दिखाई नहीं पड़ते – लेकिन दूसरा उसमें गड़बड़ करता रहता है – पूरे वक्त गर्दन हिलाता रहता है कि अलग करो, यंह पट्टा नहीं चलेगा। लेकिन एक कुत्ते को बांधे हुए हैं, वह बिलकुल चला जा रहा है; वह पूंछ हिलाता हमारे पीछे आ रहा है। तो कुत्ता जितना सुख दे पाता है फिर, उतना आदमी नहीं दे पाता; क्योंकि वह जो आदमी है, वह हमारे 'मैं' को फौरन खड़ा कर देता है और मुश्किल में डाल देता है।

धीरे-धीरे व्यक्तियों से संबंध तोड़कर आदमी वस्तुओं से संबंध बनाने लगता है, क्योंकि वस्तुओं के साथ सरलता है। तो वस्तुओं के ढेर बढ़ते जाते हैं। घरों में वस्तुएं बढ़ती जाती हैं, आदमी कम होते चले जाते हैं – आदमी घबड़ाहट लाते हैं, वस्तुएं सुरक्षित हैं; झंझट नहीं देती हैं – कुर्सी जहां रखी है, वहां रखी है, मैं बैठा हूं तो कोई गड़बड़ नहीं करती।

वृक्ष है, नदी है, पहाड़ है, इनसे कोई झंझट नहीं आती, इसलिए हमको बड़ी शांति मिलती है इनके पास जाकर। कारण कुल इतना है कि दूसरी तरफ 'मैं' मजबूती से खड़ा नहीं है, इसलिए हम भी रिलैक्स (शिथिल) हो पाते हैं; हम कहते हैं – ठीक है, यहां कोई 'तू' नहीं है तो 'मेरे' होने की क्या जरूरत है फिर; 'मैं' भी नहीं हूं। लेकिन जरा सा भी इशारा दूसरे आदमी का मिल

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

जाये कि वह है ...कि हमारा 'मैं' तत्काल तत्पर हो जाता है, वह सिक्योरिटी (सुरक्षा) कि फिक्र करने लगता है कि पता नहीं, क्या हो जाये, इसलिए तैयार होना जरूरी है। यह तैयारी आखिरी क्षण तक बनी रहती है।

शून्य व्यक्ति के सामने अहंकार की बेचैनी

सातवें शरीरवाला व्यक्ति भी तुम्हें मिल जाये तो भी तुम्हारी तैयारी रहेगी। बल्कि कई बार ऐसे व्यक्ति से तुम्हारी तैयारी ज्यादा हो जायेगी। साधारण आदमी से तुम इतने भयभीत नहीं होते, क्योंकि वह तुम्हें चोट भी अगर पहुंचा सकता है तो बहुत गहरी नहीं पहुंचा सकता। लेकिन ऐसा व्यक्ति जो पांचवें शरीर के पार चला गया है, तुम्हें चोट भी गहरी पहुंचा सकता है – उसी शरीर तक पहुंचा सकता है, जहां तक वह पहुंच गया है। उससे भय भी तुम्हारा बढ़ जाता है; उससे डर भी तुम्हारा बढ़ जाता है कि पता नहीं, क्या हो जाये ! उसके भीतर से तुम्हें बहुत ही अज्ञात और अनजान शक्ति झांकती मालूम पड़ने लगती है। इसलिए तुम बहुत संभलकर खड़े हो जाते हो। उसके आसपास तुम्हें एबिस दिखाई पड़ने लगती है; अनुभव होने लगता है कि कोई गड्ढ है इसके भीतर, अगर गये तो किसी गड्ढे में न गिर जायें।

इसलिए दुनिया में जीसस, कृष्ण या सुकरात जैसे आदमी जब भी पैदा होते हैं, तो हम उनकी हत्या कर देते हैं। उनकी वजह से हम में बहुत गड़बड़ पैदा हो जाती है। उनके पास जाना, खतरे के पास जाना है। फिर मर जाते हैं, तब हम उनकी पूजा करते हैं। अब हमारे लिए कोई डर नहीं रहा। अब हम उनकी मूर्ति बनाकर सोने की और हाथ-पैर जोड़कर खड़े हो जाते हैं; हम कहते हैं : तुम भगवान हो; लेकिन जब ये लोग होते हैं तब हम इनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते, तब हम इनसे बहुत डरे रहते हैं। और डर अनजान रहता है, क्योंकि हमें पक्का पता तो नहीं रहता कि बात क्या है। लेकिन एक आदमी जितना गहरा होता जाता है, उतना ही हमारे लिए एबिस बन जाता है, खाई बन जाता है। और जैसे खाई में नीचे झांकने से डर लगता है और सिर घूमता है, ऐसा ही ऐसे व्यक्ति की आंखों में झांकने से डर लगने लगेगा और सिर घूमने लगेगा।

मूसा के संबंध में बड़ी अदभुत कथा है : कि हजरत मूसा को जब परमात्मा का दर्शन हुआ, तो इसके बाद उन्होंने फिर कभी अपना मुंह नहीं उघाड़ा; वे एक घूघंट डाले रखते थे। वे फिर घूंघट डालकर ही जीये, क्योंकि उनके चेहरे में झांकना खतरनाक हो गया। जो आदमी झांके वह भाग खड़ा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हो; फिर वहां रुकेगा नहीं । उसमें से एबिस (खड्ड) दिखाई पड़ने लगी । उनकी आंखों में अनंत खड्ड हो गया । तो मूसा लोगों के बीच जाते तो एक... चेहरे पर एक घूंघट डाले रखते । वे घूंघट डालकर ही बात कर सके फिर; क्योंकि लोग उनसे घबराने लगे और डरने लगे – ऐसा लगे कि कोई चीज चुंबक की तरह खींचती है किसी गड्ढ में, और पता नहीं कहां ले जायेगी; क्या होगा, कुछ पता नहीं !

तो यह जो आखिरी, सातवीं स्थिति में पहुंचा हुआ आदमी है, वह भी है – तुम्हारे लिए । इसलिए तुम उससे अपनी सुरक्षा करोगे और एक परदा बना रह जायेगा; इसलिए ग्रेस शुद्ध नहीं हो सकती । ऐसे आदमी के पास हो सकती है शुद्ध, अगर तुम्हें यह ख्याल मिट जाये कि 'वह' है । लेकिन यह ख्याल तुम्हें तभी मिट सकता है, जब कि तुम्हें यह ख्याल मिट जाये कि 'मैं' हूं । अगर तुम इस हालत में पहुंच जाओ कि तुम्हें ख्याल न रहे कि 'मैं' हूं, तो फिर तुम्हें शुद्ध वहां से भी मिल सकती है, लेकिन फिर कोई मतलब ही न रहा उससे मिलने, न मिलने का, वह सोर्सलेस (उदगमशून्य) हो गयी; वह प्रसाद ही हो गया ।

जितनी बड़ी भीड़ में हम हैं, उतना ज्यादा 'मैं' हमारा सख्त, सघन और कंडेंसड हो जाता है । इसलिए भीड़ के बाहर, दूसरे से हटकर अपने 'मैं' को गिराने की सदा कोशिश की गयी है । लेकिन कहीं भी जाओ, अगर बहुत देर तुम एक वृक्ष के पास रहोगे, तुम उस वृक्ष से बातें करने लगोगे... और वृक्ष को 'तू' बना लोगे । अगर तुम बहुत देर सागर के पास रह जाओगे, दस-पांच वर्ष तो तुम सागर से बोलने लगोगे, और सागर को 'तू' बना लोगे । वह हमारा 'मैं' जो है, आखिरी उपाय करेगा; वह 'तू' पैदा कर लेगा – अगर तुम बाहर भी भाग गये कहीं, तो । और वह उनसे भी राग का संबंध बना लेगा... और उनको भी ऐसे देखने लगेगा जैसे कि आकार में है ।

भक्त और भगवान के द्वैत में अहंकार की सुरक्षा

अगर कोई बिलकुल ही आखिरी स्थिति में भी पहुंच जाता है, तो फिर वह ईश्वर को 'तू' बनाकर खड़ा कर लेता है, ताकि अपने 'मैं' को बचा सके । और भक्त निरंतर कहता रहता है कि हम परमात्मा के साथ एक कैसे हो सकते हैं – वह वह है, हम हम हैं; कहां हम उसके चरणों में और कहां वह भगवान ! वह कुछ और नहीं कह रहा, वह यह कह रहा है कि अगर उससे एक होना है तो इधर 'मैं' खोना पड़ेगा । तो उसे वह दूर बनाकर रखता है कि वह 'तू' है । और बातें वह रेशनेलाइज करता है; वह कहता है कि हम उसके साथ एक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे हो सकते हैं ! वह महान है, वह परम है; हम क्षूद्र हैं, हम पतित हैं; हम कहां एक हो सकते हैं ! लेकिन उसके 'तू' को बचाता है... कि इधर 'मैं' उसका बच जाये ।

इसलिए भक्त जो है, वह चौथे शरीर के ऊपर नहीं जा पाता । वह पांचवें शरीर तक भी नहीं पाता, वह चौथे शरीर पर अटक जाता है । हां, चौथे शरीर की कल्पना की जगह 'विज़न' (अतींद्रिय-दर्शन) आ जाता है उसका । चौथे शरीर में जो श्रेष्ठतम संभावना है, वह खोज लेता है । तो भक्त के जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं होने लगती हैं जो मिरेकुलस (चमत्कारपूर्ण) हैं; लेकिन रह जाता है चौथे पर । व्यक्तियों के नाम नहीं ले रहा, इसलिए मैं इस तरह कह रहा हूं । चौथे पर रह जाता है भक्त ।

भक्त, हठयोगी और राजयोगी की यात्रा

आत्मसाधक, हठयोगी, और बहुत तरह के योग की प्रक्रियाओं में लगनेवाला आदमी ज्यादा से ज्यादा पांचवें शरीर तक पहुंच जाता है; क्योंकि बहुत गहरे में वह यह कह रहा है कि मुझे आंनद चाहिए; बहुत गहरे में वह यह कह रहा है कि मुझे मुक्ति चाहिए; बहुत गहरे में वह यह कह रहा है मुझे दुख निरोध चाहिए – लेकिन सब चाहिए के पीछे 'मैं' मौजूद है । 'मुझे' मुक्ति चाहिए – 'मैं' से मुक्ति नहीं, 'मैं' की मुक्ति; 'मुझे' मुक्त होना है, 'मुझे' मोक्ष चाहिए । वह 'मैं' उसका सघन खड़ा रह जाता है । वह पांचवें शरीर तक पहुंच पाता है ।

राजयोगी छठवें तक पहुंच जाता है; वह कहता है – 'मैं' का क्या रखा है; 'मैं' कुछ भी नहीं... 'वही' है – 'मैं' नही, 'वही' है; ब्रह्म ही सब कुछ है । वह 'मैं' को खोने की तैयारी दिखलाता है, लेकिन अस्मिता को खोने की तैयारी नहीं दिखलाता । वह कहता है – रहूंगा मैं, ब्रह्म के साथ एक उसका अंश होकर... रहूंगा मैं... ब्रह्म के साथ एक होकर; उसी के साथ मैं एक हूं; मैं ब्रह्म ही हूं, मैं तो छोड़ दूंगा, लेकिन जो असली है मेरे भीतर वह उसके साथ एक होकर रहेगा । वह छठवें तक पहुंच पाता है ।

सातवें तक बुद्ध जैसा साधक पहुंच पाता है, क्योंकि वह खोने को तैयार है – ब्रह्म को भी खोने को तैयार है; अपने को भी खोने को तैयार है; वह सब खोने को तैयार है । वह यह कहता है कि जो है, वही रह जाये; मेरी कोई अपेक्षा नहीं कि यह बचे, यह बचे, यह बचे – मेरी कोई अपेक्षा ही नहीं । सब खोने को तैयार है । और जो सब खोने को तैयार है, वह सब पाने का हकदार

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हो जाता है।

तो निर्वाण शरीर तो ऐसी हालत में ही मिल सकता है जब शून्य और न हो जाने की भी हमारी तैयारी है; मृत्यु को भी जानने की तैयारी है। जीवन को जानने की तैयारियां तो बहुत हैं। इसलिए जीवन को जाननेवाला छठवें शरीर पर रुक जायेगा। मृत्यु को भी जानने की जिसकी तैयारी है, वह सातवें को जान पायेगा। तुम चाहोगे तो नाम तुम खोज सकोगे, उसमें बहुत कठिनाई नहीं होगी।

चौथे शरीर की वैज्ञानिक संभावनाएं

प्रश्न : जब चौथे शरीर में अतींद्रिय-दर्शन और सूक्ष्म दर्शन की क्षमता उपलब्ध हो जाती है, और हजारों लोग इस शरीर को उपलब्ध हुए, तो विज्ञान जिन बातों का पता लगा पाया – जैसे चांद के संबंध में कुछ, या पृथ्वी के संबंध में कुछ, या पृथ्वी और सूर्य की गति और परिभ्रमण के संबंध में कुछ, तो ये सारी की सारी बातें, ये चौथे शरीर की सूक्ष्म दृष्टि को उपलब्ध लोग क्यों नहीं बता पाये ?

इसमें तीन-चार बातें समझने जैसी हैं। पहली बात तो समझने जैसी यह है कि बहुत सी बातें इस चौथे शरीर को उपलब्ध लोगों ने बताई हैं – बहुत सी बातें... इस चौथे शरीर को उपलब्ध लोगों ने बताई हैं। और उनको गिना जा सकता है कि कितनी बातें उन्होंने बताई हैं। अब जैसे, पृथ्वी कब बनी, इसके संबंध में पृथ्वी की जो उम्र चौथे शरीर के लोगों ने बताई है, उसमें और विज्ञान द्वारा बताई गई उम्र में थोड़ा सा ही फासला है। और अभी भी यह नहीं कहा जा सकता कि विज्ञान जो कह रहा है वह सही है; अभी भी यह नहीं कहा जा सकता। अभी विज्ञान भी यह दावा नहीं कर सकता। फासला बहुत थोड़ा है, फासला बहुत ज्यादा नहीं है।

दूसरी बात, पृथ्वी के संबंध में, पृथ्वी की गोलाई और पृथ्वी की गोलाई के माप के संबंध में जो चौथे शरीर के लोगों ने खबर दी है, उसमें और विज्ञान की खबर में और भी कम फासला है। और यह जो फासला है, जरूरी नहीं है कि वह जो चौथे शरीर को उपलब्ध लोगों ने बताई है, वह गलत ही हो; क्योंकि पृथ्वी की गोलाई में निरंतर अंतर पड़ता रहा है। आज पृथ्वी जितनी सूरज से दूर है, उतनी दूर सदा नहीं थी; और आज पृथ्वी से चांद जितना दूर है, उतना सदा नहीं था। आज जहां अफ्रीका है, वहां पहले नहीं था। एक दिन अफ्रीका हिंदुस्तान से जुड़ा हुआ था। हजार घटनाएं बदल गयी हैं, वे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

रोज बदल रही हैं। उन बदलती हुई सारी बातों को अगर ख्याल में रखा जाये तो बड़ी आश्चर्यजनक बात मालूम पड़ेगी कि विज्ञान की बहुत सी खोजें चौथे शरीर के लोगों ने बहुत पहले खबर कर दी हैं।

अतींद्रिय अनुभवों की अभिव्यक्ति में कठिनाई

यह भी समझने जैसा मामला है कि विज्ञान के और चौथे शरीर तक पहुंचे हुए लोगों की भाषा में बुनियादी फर्क है, इस वजह से बड़ी कठिनाई होती है; क्योंकि चौथे शरीर को जो उपलब्ध है, उसके पास कोई मैथेमेटिकल लैंग्वेज (गणित की भाषा) नहीं होती। उसके पास तो विज़न (अतींद्रिय दर्शन) और पिक्चर (चित्र) और सिम्बल्स (चिह्नों) की लैंग्वेज (भाषा) होती है; उसके पास तो प्रतीक की लैंग्वेज होती है।

सपने में कोई भाषा होती भी नहीं; विज़न में भी कोई भाषा नहीं होती। अगर हम गौर से समझें, तो हम दिन में जो कुछ सोचते हैं, अगर रात हमें उसका ही सपना देखना पड़े, तो हमें प्रतीक-भाषा चुननी पड़ती; प्रतीक चुनना पड़ता है – क्योंकि भाषा तो होती नहीं। अगर मैं महत्त्वाकांक्षी आदमी हूं, और दिन भर आशा करता हूं कि सबके ऊपर निकल जाऊं, तो रात में जो सपना देखूंगा उसमें पक्षी हो जाऊंगा और आकाश में उड़ जाऊंगा, और सबके ऊपर हो जाऊंगा। लेकिन सपने में मैं यह नहीं कह सकता कि मैं महत्त्वाकांक्षी हूं, मैं इतना ही कर सकता हूं कि – सपने में सारी भाषा बदल जायेगी – मैं एक पक्षी बनकर आकाश में उड़ूंगा, सबके ऊपर उड़ूंगा।

तो विज़न की भी जो भाषा है, वह शब्दों की नहीं है, पिक्चर्स (चित्रों) की है। और जिस तरह अभी ड्रीम इन्टरप्रिटेशन (स्वप्नों की व्याख्या) फ्रायड और जुंग और एडलर के बाद विकसित हुआ कि स्वप्न की हम व्याख्या करें – तभी हम पता लगा पायेंगे कि मतलब क्या है। इसी तरह चौथे शरीर के लोगों ने जो कुछ कहा है, उनका इन्टरप्रिटेशन, व्याख्या अभी भी होने को है, वह अभी हो नहीं गयी। अभी तो ड्रीम की व्याख्या भी पूरी नहीं हो पा रही है, अभी विज़न की व्याख्या तो बहुत दूसरी बात है... कि 'विज़न' में जिन लोगों ने जो देखा है, उनका मतलब क्या है; वे क्या कह रहे हैं!

हिंदुओं के अवतार जैविक-विकास क्रम के प्रतीकात्मक रूप

अब जैसे, उदाहरण के लिए : डार्विन ने जब कहा कि आदमी विकसित हुआ है जानवरों से, तो उसने एक वैज्ञानिक भाषा में यह बात लिखी, लेकिन

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हिंदुस्तान में हिंदुओं के अवतारों की अगर हम कहानी पढ़ें, तो हमें पता चलेगा कि वह अवतारों की कहानी डार्विन के बहुत पहले की बिलकुल ठीक प्रतीक कहानी है। पहला अवतार आदमी नहीं है, पहला अवतार मछली है। और डार्विन का भी पहला जो रूप है मनुष्य का, वह मछली है। अब यह सिंबालिक लैंगवेज (प्रतीकात्मक भाषा) हुई कि हम कहते हैं जो पहला अवतार पैदा हुआ, वह मछली था – मत्स्यावतार। लेकिन यह जो भाषा है, यह वैज्ञानिक नहीं है। अब कहां अवतार और कहां मत्स्य ! हम इनकार करते रहे उसको। लेकिन जब डार्विन ने कहा कि मछली जो है जीवन का पहला तत्व है, पृथ्वी पर पहले मछली ही आयी है, इसके बाद ही जीवन की दूसरी बातें आयीं, लेकिन उसका जो ढंग है, उसकी जो खोज है, वह वैज्ञानिक है।

अब जिन्होंने विज़न में देखा होगा, उन्होंने यह देखा कि पहला जो भगवान है वह मछली में ही पैदा हुआ है। अब यह विज़न जब भाषा बोलेगा, तो वह इस तरह की भाषा बोलेगा जो पैरेबल (दृष्टांत-कथा) की होगी। फिर कछुआ है। अब कछुआ जो है, वह जमीन और पानी दोनों का प्राणी है। निश्चित ही, मछली के बाद एकदम से कोई प्राणी पृथ्वी पर नहीं आ सकता; जो भी प्राणी आया होगा, वह अर्ध जल और अर्ध थल का रहा होगा। तो दूसरा जो विकास हुआ होगा, वह कछुए जैसे प्राणी का ही हो सकता है – जो जमीन पर भी रहता हो और पानी में भी रहता हो। और फिर धीरे-धीरे कछुओं के कुछ वंशज जमीन पर रहने लगे होंगे और कुछ पानी में रहने लगे होंगे, और तब विभाजन हुआ होगा।

अगर हम हिंदुओं के चौबीस अवतारों की कहानी पढ़ें, तो इतनी हैरानी होगी इस बात को जानकर कि जिसको डार्विन हजारों साल बाद पकड़ पाया, ठीक वही विकासक्रम हमने पकड़ लिया था। फिर जब मनुष्य अवतार पैदा हुआ तो उसके पहले आधा मनुष्य और आधा सिंह का नरसिंह अवतार है। आखिर जानवर भी एकदम से आदमी नहीं बन सकते, जानवरों को भी आदमी बनने में एक बीच की कड़ी पार करनी पड़ी होगी, जबकि कोई आदमी आधा आदमी और आधा जानवर रहा होगा। यह असंभव है कि छलांग सीधी लग गयी हो... कि एक जानवर को एक बच्चा पैदा हुआ हो जो आदमी का हो। जानवर से आदमी के बीच की एक कड़ी खो गयी है, जो नरसिंह की ही होगी – जिसमें आधा जानवर होगा और आधा आदमी होगा।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पुराणों में छिपी वैज्ञानिक संभावनाएं

अगर हम ये सारी बातें समझें तो हमें पता चलेगा कि जिसको डार्विन बहुत बाद में विज्ञान की भाषा में कह सका, चौथे शरीर को उपलब्ध लोगों ने उसे पुराण की भाषा में बहुत पहले कहा है। लेकिन आज भी, अभी भी... अभी भी पुराण की ठीक-ठीक व्याख्या नहीं हो पाती है, उसकी वजह यह है कि पुराण बिलकुल नासमझ लोगों के हाथ में पड़ गया है, वह वैज्ञानिक के हाथ में नहीं है।

पृथ्वी की आयु की पुराणों में घोषणा

अच्छा दूसरी कठिनाई यह हो गयी है कि पुराण को खोलने के जो कोड हैं, वे सब खो गये हैं; वे नहीं हैं हमारे पास। इसलिए बड़ी अड़चन हो गयी है। बहुत बाद में विज्ञान ने यह कहा है कि आदमी ज्यादा से ज्यादा चार हजार वर्ष तक पृथ्वी पर और जी सकता है। अब विज्ञान ऐसा कहता है, लेकिन इसकी भविष्यवाणी बहुत से पुराणों में है। और यह वक्त करीब-करीब वही है, जो पुराणों में है... कि चार हजार वर्ष से ज्यादा पृथ्वी नहीं टिक सकती।

हां, विज्ञान और भाषा बोलता है – वह बोलता है कि सूर्य ठंडा होता जा रहा है, उसकी किरणें क्षीण होती जा रही हैं, उसकी गर्मी की ऊर्जा बिखरती जा रही है, वह चार हजार वर्ष में ठंडा हो जायेगा, उसके ठंडा होते से ही पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जायेगा।

पुराण और तरह की भाषा बोलता है। लेकिन, और अभी भी यह पक्का नहीं है, क्योंकि ये चार हजार वर्ष, और अगर पुराण कहें पांच हजार वर्ष, तो अभी भी यह पक्का नहीं है कि विज्ञान जो कहता है, वह बिलकुल ठीक ही कह रहा है, पांच हजार भी हो सकते हैं। और मेरा मानना है कि पांच हजार ही होंगे, क्योंकि विज्ञान की गणित में भूलचूक हो सकती है, विज़न (अतींद्रिय दर्शन) में भूलचूक नहीं होती। और इसलिए विज्ञान रोज सुधरता है – कल कुछ कहता है, परसों कुछ कहता है – रोज हमें बदलना पड़ता है; न्यूटन कुछ कहता है, आइंस्टीन कुछ कहता है।

हर पांच वर्ष में विज्ञान को अपनी धारणा बदलनी पड़ती है, क्योंकि और अड्ज़ेक्ट उसको पता लगता है कि और भी ज्यादा ठीक यह होगा। और बहुत मुश्किल है यह बात तय करनी कि अंतिम जो हम तय करेंगे, वह चौथे शरीर में देखे गये लोगों से बहुत भिन्न होगा। और अभी भी जो हम जानते हैं, उस जानने से अगर मेल न खाये तो बहुत जल्दी निर्णय देने की जरूरत

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नहीं है; क्योंकि जिंदगी इतनी गहरी है कि जल्दी निर्णय सिर्फ अवैज्ञानिक चित्त ही ले सकता है; जिंदगी इतनी गहरी है, अब अगर हम वैज्ञानिकों के ही सारे सत्यों को देखें, तो हम पायेंगे कि उनमें से सौ साल में सब विज्ञान के सत्य पुराण-कथाएं हो जाते हैं, उनको फिर कोई मानने को तैयार नहीं रह जाता; क्योंकि सौ साल में और बातें खोज में आ जाती हैं।

अब जैसे, पुराण के जो सत्य थे, उनके कोड खो गये हैं; उनको खोलने की जो कुंजी है, वह खो गयी है। उदाहरण के लिए, समझ लें कि कल तीसरा महायुद्ध हो जाये। और तीसरा महायुद्ध अगर होगा, तो उसके जो परिणाम होंगे, पहला परिणाम तो यह होगा कि जितना शिक्षित, सुसंस्कृत जगत है वह मर जायेगा।

यह बड़े आश्चर्य की बात है : अशिक्षित और असंस्कृत जगत बच जायेगा – कोई आदिवासी, कोई कोल, कोई भील, जंगल-पहाड़ पर बच जायेगा... बंबई में नहीं बच सकेंगे आप, न्यूयॉर्क में नहीं बच सकेंगे। जब भी कोई महान युद्ध होता है, तो जो उस समाज का श्रेष्ठतम वर्ग है, वह सबसे पहले मर जाता है; क्योंकि चोट उस पर होती है। बस्तर की रियासत का एक कोल और भील बच जायेगा; वह अपने बच्चों से कह सकेगा कि आकाश में हवाई जहाज उड़ते थे, लेकिन बता नहीं सकेगा, कैसे उड़ते थे। उसने उड़ते देखे थे, वह झूठ नहीं बोलता – लेकिन उसके पास कोई कोड नहीं है; क्योंकि जिनके पास कोड था वे बंबई में थे, वे मर गये हैं। और बच्चे एकाध दो पीढ़ी तक तो भरोसा करेंगे, इसके बाद बच्चे कहेंगे कि आपने देखा ? तो उनके बाप कहेंगे – नहीं, हमने सुना; ऐसा हमारे पिता कहते थे। और उनके पिता से उन्होंने सुना था कि आकाश में हवाई जहाज उड़ते थे, फिर युद्ध हुआ और फिर सब खत्म हो गया। बच्चे धीरे-धीरे कहेंगे कि कहां है वह हवाई जहाज, कहां हैं उनके निशान, कहां हैं वे चीजें ? दो हजार साल बाद वे बच्चे कहेंगे – सब कपोल-कल्पना है, कभी कोई नहीं उड़ा करा।

महाभारत युद्ध तक विकसित श्रेष्ठ विज्ञान नष्ट हो गया

ठीक ऐसी घटनाएं घट गयी हैं। महाभारत ने, इस देश के पास साइकिक माइंड से जो-जो उपलब्ध ज्ञान था, वह सब नष्ट कर दिया, सिर्फ कहानी रह गयी। सिर्फ कहानी रह गयी। अब हमें शक आता है कि राम जो हैं वे हवाई जहाज पर बैठकर लंका से आये हों, शक आता है। ये शक की बातें हैं, क्योंकि एक साइकल भी तो नहीं छूट गयी उस जमाने की, हवाई जहाज तो बहुत दूर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

की बात है ! और किसी ग्रंथ में कोई सूत्र भी तो नहीं छूट गया ।

असल में, महाभारत के बाद उसके पहले का समस्त ज्ञान नष्ट हो गया; स्मृति के द्वारा जो याद रखा जा सका, वह रखा गया । इसलिए पुराने ग्रंथ का नाम 'स्मृति' है, वह मेमोरी है । सुनी हुई बात है, वह देखी हुई बात नहीं है । इसलिए पुराने ग्रंथ को हम कहते हैं – स्मृति, श्रुति – सुनी हुई और स्मरण रखी गयी; वह देखी हुई बात नहीं है । किसी ने किसी को कही थी, किसी ने किसी को की थी, किसी ने किसी को कही थी, वह हमने बचाकर रख ली है, ऐसा हुआ था । लेकिन अब हम कुछ भी नहीं कह सकते कि वह हुआ था; क्योंकि उस समाज का जो श्रेष्ठतम बुद्धिमान वर्ग था...

और ध्यान रहे, दुनिया की जो बुद्धिमत्ता है, वह दस-पच्चीस लोगों के पास होती है । अगर एक आइन्स्टीन मर जाये तो रिलेटिविटि की थियरी (सापेक्षता का सिद्धांत) बतानेवाला दूसरा आदमी खोजना मुश्किल हो जाता है । आइन्स्टीन खुद कहता था अपनी जिंदगी में कि दस-बारह आदमी ही हैं केवल जो मेरी बात समझ सकते हैं – पूरी पृथ्वी पर । अगर यह बारह आदमी मर जायें तो हमारे पास किताब तो होगी जिसमें लिखा है कि रिलेटिविटी की एक थियरी होती है लेकिन एक आदमी समझनेवाला, एक समझानेवाला नहीं होगा ।

तो महाभारत ने श्रेष्ठतम व्यक्तियों को नष्ट कर दिया; उसके बाद जो बातें रह गयीं, वह कहानी की रह गयीं । लेकिन अब प्रमाण खोजे जा रहे हैं, और अब खोजा जा सकता है – लेकिन हम तो अभागे हैं; क्योंकि हम तो कुछ भी नहीं खोज सकते ।

पिरामिडों के निर्माण में मनस शक्ति का उपयोग

ऐसी जगह खोजी गयी हैं, जो इस बात का सबूत देती हैं कि वे कम से कम तीन हज़ार या चार हज़ार या पांच हज़ार वर्ष पुरानी हैं, और किसी वक्त उन्होंने वायुयान को उतरने के लिए एयरपोर्ट (विमानस्थल) का काम किया है । ऐसी जगह खोज ली गयी हैं । अच्छा, उतने बड़े स्थान को बनाने की और कोई जरूरत नहीं थी । ऐसी चीजें खोज ली गयी हैं जो कि बहुत बड़ी यांत्रिक व्यवस्था के बिना नहीं बन सकती थीं – जैसे पिरामिड पर चढ़ाये गये पत्थर हैं । ये पिरामिड पर चढ़ाये गये पत्थर आज भी हमारे बड़े से बड़े क्रेन के सामर्थ्य के बाहर पड़ते हैं – लेकिन ये पत्थर चढ़ाये गये, यह तो साफ है; ये पत्थर चढ़ाकर और रखे गये, यह तो साफ है । और यह आदमी ने चढ़ाये । इन आदमियों के पास कुछ चाहिये । तो या तो मशीन रही हो... और या फिर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

मैं कहता हूं, चौथे शरीर की कोई शक्ति रही हो। वह मैं आपसे कहता हूं, उसको आप कभी प्रयोग करके देखें।

एक आदमी को आप लिटा लें और चार आदमी चारों तरफ खड़े हो जायें – दो आदमी उसके पैर के घुटने के नीचे दो उंगलियां लगायें दोनों तरफ, और दो आदमी उसके दोनों कंधों के नीचे उंगलियां लगायें – एक-एक उंगली भी लगाएं; और चारों संकल्प करें कि हम एक-एक उंगली से इसे उठा लेंगे, और चारों श्वास को लें पांच मिनट तक जोर से। इसके बाद श्वास रोक लें और उठा लें। वह एक-एक उंगली से आदमी उठ जायेगा।

तो पिरामिड पर जो पत्थर चढ़ाये गये, या तो क्रेन से चढ़ाये गये और या फिर साइकिक फोर्स (मनस शक्ति) से चढ़ाये गये... कि चार आदमी ने बड़े पत्थर को एक-एक उंगली से उठा दिया। इसके सिवाय कोई उपाय नहीं है। लेकिन वे पत्थर चढ़े हैं, वे सामने हैं; और उनको इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि वे पत्थर चढ़े हुए हैं।

जीवन के अज्ञात रहस्यों की मनस शक्ति द्वारा खोज

और दूसरी बात जो जानने की है, वह यह जानने की है कि साइकिक फोर्स (मनस शक्ति) की इनफिनिट डायमेंशन (अनंत आयाम) हैं। एक आदमी जिसको चौथा शरीर उपलब्ध हुआ है, वह चांद के संबंध में ही जाने, यह जरूरी नहीं है; वह जानना ही न चाहे – चांद के संबंध में जानना ही न चाहे, जानने की उसे कोई जरूरत भी नहीं।

वे जो चौथे शरीर को विकसित करनेवाले लोग थे, वे कुछ और चीजें जानना चाहते थे, उनकी उत्सुकता किन्हीं और चीजों में थी, और ज्यादा कीमती चीजों में थी। उन्होंने वे जानी। वे प्रेत को जानना चाहते थे कि प्रेतात्मा है या नहीं, वह उन्होंने जाना। और अब विज्ञान खबर दे रहा है कि प्रेतात्मा है। वे जानना चाहते थे कि लोग मरने के बाद कहां जाते हैं, कैसे जाते हैं; क्योंकि चौथे शरीर में जो पहुंच गया है उसकी पदार्थ के प्रति उत्सुकता कम हो जाती है; उसकी चिंता बहुत कम रह जाती है कि जमीन की गोलाई कितनी है। उसका कारण है कि वह जिस स्थिति में खड़ा होता है...

जैसे एक बड़ा आदमी है। छोटे बच्चे उससे कहेंगे कि हम तुम्हें ज्ञानी नहीं मानते, क्योंकि तुम कभी नहीं बताते कि गुड्डा कैसे बनता है। हम तुम्हें ज्ञानी कैसे मानें ! एक लड़का हमारे पड़ोस में है, वह बताता है कि गुड्डा कैसे बनता है, वह ज्यादा ज्ञानी है। उनका कहना ठीक है, उनकी उत्सुकता का

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

भेद है। एक बड़े आदमी को कोई उत्सुकता नहीं है, गुड्डे के भीतर क्या है; लेकिन छोटे बच्चे को है।

चौथे शरीर में पहुंचे हुए आदमी की इंक्वायरी (खोज) बदल जाती है; वह कुछ और जानना चाहता है। वह जानना चाहता है कि मरने के बाद आदमी का यात्रापथ क्या है; वह कहां जाता है; वह किस यात्रापथ से यात्रा करता है; उसकी यात्रा के नियम क्या हैं; वह कैसे जन्मता है; वह कहां जन्मता है, कब जन्मता है; उसके जन्म को क्या सुनियोजित किया जा सकता है ? उनकी उत्सुकता इसमें नहीं थी कि चांद पर आदमी पहुंचे, क्योंकि यह बेमानी है, इसका कोई मतलब नहीं है। उसकी उत्सुकता इसमें थी कि आदमी मुक्ति में कैसे पहुंचे। और वह बहुत मीनिंगफुल (अर्थपूर्ण) है। उसकी फिक्र थी कि जब एक बच्चा गर्भ में आता है तो आत्मा कैसे प्रवेश करती है; क्या हम गर्भ चुनने में उसके लिए सहयोगी हो सकते हैं ? कितनी देर लगती है ?

तिब्बत में मृत आत्माओं पर प्रयोग

अब तिब्बत में एक किताब है : तिब्बतन बुक ऑफ दि डेड। तो अब तिब्बत का जो भी चौथे शरीर को उपलब्ध आदमी था, उसने सारी मेहनत इस बात पर की है कि मरने के बाद हम किसी आदमी को क्या सहायता पहुंचा सकते हैं। आप मर गये हैं, मैं आपको प्रेम करता हूं, लेकिन मरने के बाद मैं आपको कोई सहायता नहीं पहुंचा सकता। लेकिन तिब्बत में पूरी व्यवस्था है सात सप्ताह की... कि मरने के बाद सात सप्ताह तक उस आदमी को कैसे सहायता पहुंचायी जाये; और उसको कैसे गाइड (मार्गदर्शन) किया जाये; और उसको कैसे विशेष जन्म लेने के लिए उत्प्रेरित किया जाये; और उसे कैसे विशेष गर्भ में प्रवेश करवा दिया जाये।

अभी विज्ञान को वक्त लगेगा कि वह इन सब बातों का पता लगाये; लेकिन यह लग जायेगा पता, इसमें अड़चन नहीं है। और फिर इसकी वेलिडिटि (प्रामाणिकता की जांच) के भी सब उन्होंने उपाय खोजे थे कि इसकी जांच कैसे हो। अभी फिलहाल जो लामा है...

प्रधान लामा के चुनाव की विधि

तिब्बत में लामा जो है, पिछला लामा जो मरता है, वह बताकर जाता है कि अगला मैं किस घर में जन्म लूंगा, और तुम मुझे कैसे पहचान सकोगे; उसके सिंबल्स (प्रतीक) दे जाता है। फिर उसकी खोज होती है पूरे मुल्क में

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कि वह बच्चा अब कहां है। और जो बच्चा उस सिंबल का राज़ बता देता है, वह समझ लिया जाता है कि वह पुराना लामा है। वह राज़ सिवाय उस आदमी के कोई बता नहीं सकता, जो बता गया था। तो यह जो लामा है, ऐसे ही खोजा गया। पिछला लामा कहकर गया था। इस बच्चे की खोज बहुत दिन करनी पड़ी। लेकिन आखिर वह बच्चा मिल गया, क्योंकि एक खास सूत्र था जो कि हर गांव में जाकर चिल्लाया जायेगा और जो बच्चा उसका अर्थ बता दे, वह समझ लिया जायेगा कि वह पुराने लामा की आत्मा उसमें प्रवेश कर गयी; क्योंकि उसका अर्थ तो और किसी को पता ही नहीं था; वह तो बहुत सिक्रेट (गुप्त) मामला है।

तो चौथे शरीर के आदमी की पूरी क्यूरियोसिटि (जिज्ञासा) अलग थी। और अनंत है यह जगत। और अनंत है उसके राज़, और अनंत है इसके रहस्य। अभी जितनी साइंस (विज्ञान) को हमने जन्म दिया है, भविष्य में यही साइंस रहेगी, यह मत सोचिये, और नयी हज़ार साइंस पैदा हो जायेंगी, क्योंकि और हज़ार आयाम हैं जानने के। और जब वह नयी साइंसिस पैदा होंगी, तब वे कहेंगी कि पुराने लोग वैज्ञानिक न रहे, वे यह क्यों नहीं बता पाये? नहीं, हम कहेंगे : पुराने लोग भी वैज्ञानिक थे, उनकी जिज्ञासा और थी। जिज्ञासा का इतना फर्क है कि जिसका कोई हिसाब नहीं।

वनस्पतियों से बात करनेवाला वैद्य लुकमान

अब जैसे कि हम कहेंगे कि आज बीमारियों का इलाज हो गया है, पुराने लोगों ने इन बीमारियों के इलाज क्यों न बता दिये! लेकिन आप हैरान होंगे जानकर कि आयुर्वेद में या युनानी में इतनी जड़ी-बूटियों का हिसाब है, और इतना हैरानी का है कि जिनके पास कोई प्रयोगशालाएं न थीं वे कैसे जान सके कि यह जड़ी-बूटी फलां बीमारी पर इस मात्रा में काम करेगी। तो लुकमान के बाबत कहानी है, क्योंकि कोई प्रयोगशाला तो नहीं थी, पर चौथे शरीर से काम हो सकता था।

लुकमान के बाबत कहानी है कि ... पुराण की भाषा है, यह विज्ञान की भाषा है। लेकिन इन दोनों में गलती क्या है? इसमें कठिनाई क्या है? यह ऐसे भी समझी जा सकती है। इसमें कोई अड़चन नहीं है।

विज्ञान बहुत पीछे समझ पाता है बहुत सी बातों को। असल में साइकिक फोर्स (मनस शक्ति) के आदमी बहुत पहले प्रडिक्ट (भविष्यवाणी) कर जाते हैं।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

स्वीकार किया कि पौधा श्वास लेता है। अभी पिछले पंद्रह साल तक हम नहीं मानते थे कि पौधा फील (अनुभव) करता है, अभी पंद्रह साल में हमने स्वीकार किया है कि पौधा अनुभूति भी करता है। और जब आप क्रोध से पौधे के पास जाते हैं, तब पौधे की मनोदशा बदल जाती है; और जब आप प्रेम से जाते हैं तो मनोदशा बदल जाती है। कोई आश्चर्य नहीं कि आनेवाले पचास साल में हम कहें कि पौधे से बोला जा सकता है। यह तो क्रमिक विकास है। और लुकमान सिद्ध हो सही कि उसने पूछा हो पौधों से कि किस काम में आयेगा, यह बता दे। लेकिन यह ऐसी बात नहीं कि हम सामने बोल सकें, यह चौथे शरीर पर संभव है। यह चौथे शरीर पर संभव है कि पौधे को आत्मसात किया जा सके, उसी से पूछ लिया जाये।

और मैं भी मानता हूं, क्योंकि कोई लेबोरेटरी (प्रयोगशाला) इतनी बड़ी नहीं मालूम पड़ती कि लुकमान लाख-लाख जड़ी-बूटियों का पता बता सके, यह इसका कोई उपाय नहीं; क्योंकि एक-एक जड़ी-बूटी की खोज करने में एक-एक लुकमान की जिंदगी लग जाती है। वह एक लाख, करोड़ जड़ी बूटियों के बाबत कह रहा है कि यह इस काम में आयेगी और अब विज्ञान उसको कहता है कि हां, वह इस काम में आती है। वे आ रही है इस काम में।

यह जो सारी की सारी खोजबीन अतीत की है, वह सारी की सारी खोजबीन चौथे शरीर में उपलब्ध लोगों की ही है। और उन्होंने बहुत पहले खोजी थीं, जिनका हमें ख्याल ही नहीं।

अब जैसे कि हम हजारों बीमारियों का इलाज कर रहे हैं जो बिलकुल अवैज्ञानिक है। चौथे शरीरवाला आदमी कहेगा : ये तो बीमारियां ही नहीं हैं, इनका तुम इलाज क्यों कर रहे हो! लेकिन अब विज्ञान समझ रहा है। अभी एलोपैथी नये प्रयोग कर रही है। अभी अमरीका के कुछ हास्पिटल्स (चिकित्सालयों) में उन्होंने... दस मरीज हैं एक ही बीमारी के, तो पांच मरीज को वे पानी का इंजेक्शन दे रहे हैं, पांच को दवा दे रहे हैं।

... हैरानी की बात यह है कि दवावाले भी उसी अनुपात में ठीक होते ... होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ

प्रधान लामा के चुनाव की विधि

तिब्बत में लामा जो है, पिछला लामा जो मरता है, वह बताकर जाता है कि अगला मैं किस घर में जन्म लूंगा, और तुम मुझे कैसे पहचान सकोगे; उसके सिंबल्स (प्रतीक) दे जाता है। फिर उसकी खोज होती है पूरे मुल्क में

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

करना मुश्किल होता चला जाता है; क्योंकि अगर आपको बीमारी नहीं है, और आपको फेंटम (भ्रम की) बीमारी है, और आपको असली दवाई दे दी गयी, तो आप मुश्किल में पड़े। अब वह असली दवाई कुछ तो करेगी आपके भीतर जाकर; वह पायज़न (विषाक्त) करेगी, वह आपको दिक्कत में डालेगी।. अब उसका इलाज कराना पड़ेगा। आखिर में फेंटम (भ्रम की) बीमारी मिट जायेगी और असली बीमारी पैदा हो जायेगी।

और सौ में से, पुराना विज्ञान तो कहता है नब्बे प्रतिशत बीमारियां फेंटम (भ्रम की) हैं। अभी... अभी पचास साल पहले तक एलोपैथी नहीं मानती थी कि फेंटम बीमारी होती है। लेकिन अब एलोपैथी कहती है पचास परसेंट (प्रतिशत) तक हम राजी हैं। मैं कहता हूं, नब्बे परसेंट तक – चालीस वर्षों में, पचास वर्षों में राजी होना पड़ेगा; नब्बे परसेंट तक राजी होना पड़ेगा, क्योंकि असलियत वही है।

विज्ञान की भाषा अलग और पुराण की अलग

यह जो... इस चौथे शरीर में जो आदमी ने जाना है, उसकी व्याख्या करनेवाला आदमी नहीं है, उसकी व्याख्या खोजनेवाला आदमी नहीं है। उसको ठीक जगह पर, ठीक आज के पर्सपेक्टिव (परिप्रेक्ष्य) में, और आज के विज्ञान की भाषा में रख देनेवाला आदमी नहीं है। वह तकलीफ हो गयी और कोई तकलीफ नहीं है। और जरा भी तकलीफ नहीं है। अब होता क्या है, जैसा मैंने कहा कि पैरेबल (बोधकथा) की जो भाषा है वह अलग है।

सूरज के सात घोड़े

आज विज्ञान कहता है कि सूरज की हर किरण प्रिज़्म में से निकलकर सात हिस्से में टूट जाती है, सात रंगों में बंट जाती है। वेद का ऋषि कहता है कि सूरज के सात घोड़े हैं, सात रंग के घोड़े हैं। अब यह पैरेबल (बोधकथा) की भाषा है। सूरज की किरण सात रंगों में टूटती है, सूरज के सात घोड़े हैं, सात रंग के घोड़े हैं, उन पर सूरज सवार है। अब यह कहानी की भाषा है। इसको किसी दिन हमें समझना पड़े कि यह पुराण की भाषा है, यह विज्ञान की भाषा है। लेकिन इन दोनों में गलती क्या है ? इसमें कठिनाई क्या है ? यह ऐसे भी समझी जा सकती है। इसमें कोई अड़चन नहीं है।

विज्ञान बहुत पीछे समझ पाता है बहुत सी बातों को। असल में साइकिक फोर्स (मनस शक्ति) के आदमी बहुत पहले प्रडिक्ट (भविष्यवाणी) कर जाते हैं।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

लेकिन जब वे प्रडिक्ट करते हैं तब भाषा नहीं होती। भाषा तो बाद में जब विज्ञान खोजता है तब बनती है; पहले भाषा नहीं होती।

अब जैसे कि आप हैरान होंगे, कोई भी गणित है, लैंग्वेज है, कोई भी दिशा में अगर आप खोजबीन करें, तो आप पायेंगे – विज्ञान तो आज आया है – भाषा तो बहुत पहले आयी, गणित बहुत पहले आया। जिन लोगों ने ये सारी खोजबीन की, जिन्होंने यह सारा हिसाब लगाया, उन्होंने किस हिसाब से लगाया होगा। उनके पास क्या माध्यम रहे होंगे, उन्होंने कैसे नापा होगा? उन्होंने कैसे पता लगाया होगा कि सूरज एक वर्ष में... पृथ्वी सूरज का एक चक्कर लगा लेती? एक वर्ष में चक्कर लगाती है, उसी हिसाब से वर्ष है। वर्ष तो बहुत पुराना है, विज्ञान के बहुत पहले का है। वर्ष में तीन सौ पैंसठ दिन होते हैं, यह तो विज्ञान के बहुत पहले हमें पता हैं, जब तक किन्हीं ने यह देखा न हो, लेकिन देखने का कोई वैज्ञानिक साधन नहीं था। तो सिवाय साइकिक विज़न के और कोई उपाय नहीं था।

मनस शक्ति द्वारा पृथ्वी को अंतरिक्ष से देखना

एक बहुत अदभुत चीज मिली है। अरब में एक आदमी के पास सात सौ वर्ष पुराना दुनिया का नक्शा मिला है – सात सौ वर्ष पुराना दुनिया का नक्शा है। और वह नक्शा ऐसा है कि बिना हवाई जहाज के ऊपर से बनाया नहीं जा सकता; क्योंकि वह नक्शा जमीन पर देखकर बनाया हुआ नहीं है। बन नहीं सकता। आज भी पृथ्वी हवाई जहाज पर से जैसी दिखाई पड़ती है, वह नक्शा वैसा है। और वह सात सौ वर्ष पुराना है। अब दो ही उपाय हैं : या तो सात सौ वर्ष पहले हवाई जहाज हो, जो कि नहीं था। दूसरा उपाय यही है कि कोई आदमी अपने चौथे शरीर से इतना ऊंचा उठकर जमीन को देख सके और नक्शा खींचे। सात सौ वर्ष पहले हवाई जहाज नहीं था, यह तो पक्का है। इसकी कोई कठिनाई नहीं है। यह तय है। सात सौ वर्ष पहले हवाई जहाज नहीं था, लेकिन यह सात सौ वर्ष पुराना नक्शा इस तरह है जैसे कि ऊपर से देखकर बनाया गया है। तो अब इसका क्या...

शरीर की सूक्ष्मतम अंतस रचना का ज्ञान

अगर हम चरक और सुश्रुत को समझें तो हमें हैरानी हो जायेगी। आज हम आदमी के शरीर को काट-पीटकर जो जान पाते हैं उसका वर्णन तो है। ी ही उपाय हैं : या तो सर्जरी इतनी बारीक हो गयी हो, जो कि नहीं दिखाई

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पड़ती; क्योंकि सर्जरी का एक इंस्ट्रुमेंट (यंत्र) नहीं मिलता, सर्जरी के विज्ञान की कोई किताब नहीं मिलती है। लेकिन आदमी के भीतर के बारीक से बारीक हिस्से का वर्णन है। और ऐसे हिस्सों का भी वर्णन है जो विज्ञान बहुत बाद में पकड़ पाया है; जो अभी पचास साल पहले इनकार करता था, उनका भी वर्णन है कि वे वहां भीतर हैं। तो एक ही उपाय है कि किसी व्यक्ति ने वीज़न की हालत में व्यक्ति के भीतर प्रवेश करके देखा हो।

असल में, आज हम जानते हैं कि एक्सरे की किरण आदमी के शरीर में पहुंच जाती है। सौ साल पहले अगर कोई आदमी कहता है कि हम आपके भीतर की हड्डियों का चित्र उतार सकते हैं, हम मानने को राजी न होते। आज हमें मानना पड़ता है, क्योंकि कोई उतार रहा है। लेकिन क्या आपको पता है कि चौथे शरीर की स्थिति में आदमी की आंख एक्सरे से ज्यादा गहरा देख पा सकती है, और आपके शरीर का पूरा-पूरा चित्र बनाया जा सकता है, जो कि कभी काट-पीटकर नहीं किया गया। और हिंदुस्तान जैसे मुल्क में, जहां कि हम मुर्दे को जला देते थे, काटने-पीटने का उपाय नहीं था। सर्जरी पश्चिम में इसलिए विकसित हुई कि मुर्दे गढ़ाये जाते थे, नहीं तो हो नहीं सकती थी।

और आप जानकर यह हैरान होंगे कि अच्छे आदमियों की वजह से विकसित नहीं हुई, यह कुछ चोरों की वजह से विकसित हुई जो मुर्दों को चुरा लाते थे। हिंदुस्तान में तो विकसित हो नहीं सकती थी, क्योंकि हम जला देते हैं। और जलाने का हमारा ख्याल था कोई, वजह थी इसलिए जलाते थे।

यह साइकिक लोगों का ही ख्याल था कि अगर शरीर बना रहे, तो आत्मा को नया जन्म लेने में बाधा पड़ती है; वह उसी के आसपास घूमती रहती है; उसको जला दो, ताकि इस झंझट से उसका छुटकारा हो जाये; वह इसके आसपास न घूमे; वह बात ही खत्म हो गयी। और यह अपने सामने ही उस शरीर को जलता हुआ देख ले, जिस शरीर को इसने समझा था कि मैं हूं, ताकि दूसरे शरीर में भी इसको शायद स्मृति रह जाये कि शरीर तो जल जानेवाला है।

तो हम उसको जलाते थे। इसलिए सर्जरी विकसित न हो सकी; क्योंकि आदमी को काटना पड़े, पीटना पड़े, टेबल पर रखना पड़े। यूरोप में भी चोरों ने लोगों की लाशें चुरा-चुराकर वैज्ञानिकों के घर में पहुंचायी, मुकदमे चले, अदालतों में दिक्कतें हुई, क्योंकि वह लाश को लाना गैरकानूनी था, और मरे हुए आदमी को काटना जुर्म है। लेकिन वह काट-काटकर जिन बातों पर पहुंचे हैं, उन्हें बिना काटे भी आज से तीन हजार वर्ष पुरानी किताबें पहुंच गयीं उन बातों पर।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो इसका मतलब सिर्फ इतना ही होता है कि बिना प्रयोग के भी किन्हीं और दिशाओं से भी चीजों को जाना जा सका है। कभी इस पर पूरी ही आपसे बात करना चाहूंगा। ये दस-पंद्रह दिन बात करनी पड़े, तब थोड़ा ख्याल में आ सकता है।

बंबई, रात्रि, दिनांक 7 जुलाई, 1970.

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नौवीं प्रश्नोत्तर चर्चा

धर्म के असीम रहस्य सागर में

धर्म और विज्ञान के भिन्न दृष्टिकोण

प्रश्न : कल की चर्चा में आपने कहा है कि विज्ञान का प्रवेश पांचवें शरीर, स्पिरिचुअल बॉडी तक संभव है। बाद में चौथे शरीर में विज्ञान की संभावनाओं पर चर्चा की। आज कृपया पांचवें शरीर में हो सकनेवाली कुछ वैज्ञानिक संभावनाओं पर संक्षिप्त में प्रकाश डालें।

एक तो जिसे हम शरीर कहते हैं, और जिसे हम आत्मा कहते हैं, ये ऐसी दो चीजें नहीं हैं कि जिनके बीच सेतु (ब्रिज) न बनता हो, ब्रिज न बनता हो। इनके बीच कोई खाई नहीं है, इनके बीच जोड़ है।

तो सदा से एक ख्याल था कि शरीर अलग है, आत्मा अलग है; और ये दोनों इस भांति अलग हैं कि इन दोनों के बीच कोई सेतु, कोई ब्रिज नहीं बन सकता। न केवल अलग हैं, बल्कि विपरीत हैं एक-दूसरे से – इस ख्याल ने धर्म और विज्ञान को अलग कर दिया था। धर्म वह था, जो शरीर के अतिरिक्त है उसकी खोज करे; और विज्ञान वह था, जो शरीर की खोज करे – आत्मा के अतिरिक्त जो है, उसकी खोज करे।

स्वभावतः, दोनों तरह की खोज एक को मानती और दूसरे को इनकार करती रही; क्योंकि विज्ञान जिसे खोजता था, उसे वह कहता था : शरीर है, आत्मा कहां; और धर्म जिसे खोजता था, उसे वह मानता था : आत्मा है, शरीर

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कहां।

तो धर्म जब अपनी पूरी ऊंचाइयों पर पहुंचा तो उसने शरीर को इल्यूज़न (भ्रम) और माया कह दिया... कि वह है ही नहीं; आत्मा ही सत्य है, शरीर भ्रम है। और विज्ञान जब अपनी ऊंचाइयों पर पहुंचा तो उसने कह दिया कि आत्मा तो एक झूठ, एक असत्य है, शरीर ही सब कुछ है। यह भ्रांति आत्मा और शरीर को अनिवार्य रूप से विरोधी तत्वों की तरह मानने से हुई

मैंने सात शरीरों की बात कही। ये सात शरीर... अगर पहला शरीर हम भौतिक शरीर मान लें, और अंतिम शरीर आत्मिक मान लें, और बीच के पांच शरीरों को छोड़ दें, तो इनके बीच सेतु नहीं बन सकेगा। ऐसे ही, जैसे जिन सीढ़ियों से चढ़कर आप आये हैं, ऊपर की सीढ़ी बचा लें और पहली सीढ़ी बचा लें नीचे की, और बीच की सीढ़ियों को छोड़ दें, तो आपको लगेगा कि पहली सीढ़ी कहां और दूसरी सीढ़ी कहां, बीच में खाई हो जायेगी।

परमाणु ऊर्जा से भी सूक्ष्म इथरिक ऊर्जा

अगर आप सारी सीढ़ियों को देखें तो पहली सीढ़ी भी आखिरी सीढ़ी से जुड़ी है। और अगर ठीक से देखें तो आखिरी सीढ़ी पहली सीढ़ी का ही आखिरी हिस्सा है; और पहली सीढ़ी आखिरी सीढ़ी का पहला हिस्सा है।

तो जब पूरे सात शरीरों को हम समझेंगे, तब पहले और दूसरे शरीर में जोड़ बनता है; क्योंकि पहला शरीर है भौतिक शरीर, फिजिकल बॉडी; दूसरा शरीर है इथरिक बॉडी – ईथर... भाव शरीर; वह भौतिक का ही सूक्ष्मतम रूप है। वह अभौतिक नहीं है, वह भौतिक का ही सूक्ष्मतम रूप है – इतना सूक्ष्मतम कि भौतिक उपाय भी उसे पकड़ने में अभी ठीक से समर्थ नहीं हो पाते। लेकिन अब भौतिकवादी इस बात को इनकार नहीं करता है कि भौतिक का सूक्ष्मतम रूप करीब-करीब अभौतिक हो जाता है।

अब जैसे आज विज्ञान कहता है कि अगर हम पदार्थ को तोड़ते चले जायें तो जो अंतिम, पदार्थ के विश्लेषण पर हमें मिलेंगे – इलेक्ट्रॉन, वे अभौतिक हो गये हैं, वे इमेटेरियल हो गये हैं; क्योंकि वे सिर्फ विद्युत के कण हैं – उनमें पदार्थ और सब्सटेंट जैसा कुछ भी नहीं बचा, सिर्फ एनर्जी और ऊर्जा बच रही है। इसलिए बड़ी अदभुत घटना घटी है पिछले तीस वर्षों में कि जो विज्ञान यह बात स्वीकार करके चला था कि पदार्थ ही सत्य है, वह विज्ञान इस नतीजे पर पहुंचा है कि पदार्थ तो बिलकुल है ही नहीं, एनर्जी और ऊर्जा ही सत्य है; और पदार्थ जो है वह एनर्जी का, ऊर्जा का तीव्र घूमता हुआ रूप है, इसलिए भ्रम पैदा हो रहा है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

एक पंखा हमारे ऊपर चल रहा है। यह पंखा इतने जोर से चलाया जा सकता है कि इसकी तीन पंखुड़ियां हमें दिखाई पड़नी बंद हो जायें, और जब इसकी तीन पंखुड़ियां हमें दिखाई पड़नी बंद हो जायेंगी, तो पंखा पंखुड़ियां न मालूम होकर टीन का एक गोल चक्कर घूम रहा है, ऐसा मालूम होगा। और तीनों पंखुड़ियों के बीच की जो खाली जगह है वह भर जायेगी, वह खाली नहीं रह जायेगी; क्योंकि तीन पंखुड़ियां दिखाई नहीं पड़ेंगी।

असल में पंखुड़ियां इतनी तेजी से घूम सकती हैं कि इसके पहले कि एक पंखुड़ी हटे एक जगह से, और हमारी आंख से उसका प्रतिबिंब मिटे, उसके पहले दूसरी पंखुड़ी उसकी जगह आ जाती है; प्रतिबिंब पहला बना रहता है और दूसरा उसके ऊपर आ जाता है। इसलिए बीच की जो खाली जगह है वह हमें दिखाई नहीं पड़ती। यह पंखा इतनी तेजी से भी घुमाया जा सकता हैं कि आप इसके ऊपर मजे से बैठ सकें और आपको पता न चले कि नीचे कोई चीज बदल रही है। अगर दो पंखुड़ियों के बीच की खाली जगह इतनी तेजी से भर जाये कि एक पंखुड़ी आपके नीचे से हटे, आप इसके पहले खाली जगह में से गिरें, दूसरी पंखुड़ी आपको संभाल ले, तो आपको दो पंखुड़ियों के बीच का अंतर पता नहीं चलेगा। यह गति की बात है।

अगर ऊर्जा तीव्र गति से घूमती है तो हमें पदार्थ मालूम होती है। इसलिए वैज्ञानिक आज जिस एटॉमिक एनर्जी (परमाणु-ऊर्जा) पर सारा का सारा विस्तार कर रहा है, उस एनर्जी को किसी ने देखा नहीं है, सिर्फ उसके इफेक्ट्स, उसके परिणाम भर देखे हैं। वह मूल अणु की शक्ति किसी ने देखी नहीं है, और कोई कभी देखेगा भी, यह भी अब सवाल नहीं है। लेकिन उसके परिणाम दिखाई पड़ते हैं।

इथरिक बॉडी को अगर हम यह भी कहें कि वह मूल एटॉमिक बॉडी है, तो कोई हर्ज नहीं है। उसके परिणाम दिखाई पड़ते हैं, इथरिक बॉडी को किसी ने देखा नहीं है, सिर्फ उसके परिणाम दिखाई पड़ते हैं। लेकिन उन परिणामों की वजह से वह है, यह स्वीकार कर लेने की ज़रूरत पड़ जाती है।

यह जो दूसरा शरीर है, यह पहले भौतिक शरीर का ही सूक्ष्मतम रूप है – इसलिए इन दोनों के बीच कोई सीढ़ी बनाने में कठिनाई नहीं है; ये दोनों एक तरह से जुड़े ही हुए हैं – एक स्थूल है जो दिखाई पड़ जाता है, दूसरा सूक्ष्म है इसलिए दिखाई नहीं पड़ता।

इथरिक ऊर्जा से भी सूक्ष्म एस्ट्रल ऊर्जा

इथरिक बॉडी के बाद तीसरा शरीर है, जिसे हमने एस्ट्रल बॉडी, सूक्ष्म

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

शरीर कहा। वह ईथर का भी सूक्ष्मतम रूप है। अभी विज्ञान उस पर नहीं पहुंचा। अभी विज्ञान इस ख्याल पर तो पहुंच गया है कि अगर पदार्थ का हम विश्लेषण करें, एनेलिसिस करें और तोड़ते चले जायें, तो अंत में ऊर्जा बचती है। उस ऊर्जा को हम ईथर कह रहे हैं। अगर ईथर को भी तोड़ा जा सके और उसके भी सूक्ष्मतम अंश बनाये जा सकें, तो जो बचेगा वह एस्ट्रल है – सूक्ष्म शरीर है वह। वह सूक्ष्म का भी सूक्ष्म रूप है।

अभी विज्ञान वहां नहीं पहुंचा, लेकिन पहुंच जायेगा; क्योंकि कल वह भौतिक को स्वीकार करता था, आणविक को स्वीकार नहीं करता था; कल वह कहता था : पदार्थ ठोस चीज है; आज वह कहता है : ठीस-जैसी कोई चीज ही नहीं है – जो भी है, सब गैरठोस है, नानसॉलिड हो गया सब। यह दीवाल भी जो हमें इतनी ठोस दिखाई पड़ रही है, ठोस नहीं है, यह भी पोरस है; इसमें भी छेद हैं, और चीजें इसके आरपार जा रही हैं। फिर भी हम कहेंगे कि छेदों के आसपास, जिनके बीच छेद नहीं हैं, वे तो कम से कम ठोस अणु होंगे, वे भी ठोस अणु नहीं है। एक-एक अणु भी पोरस है। अगर हम एक अणु को बड़ा कर सकें तो जमीन और चांद और तारे और सूरज के बीच जितना फासला है, उतना अणुओं के कणों के बीच फासला है। अगर उसको इतना बड़ा कर सकें तो फासला इतना ही हो जायेगा।

फिर वे जो फासले को भी जोड़नेवाले अणु हैं, हम कहेंगे कम से कम वे तो ठोस हैं, लेकिन विज्ञान कहता है वे भी ठोस नहीं हैं, वे सिर्फ विद्युत कण हैं। कण भी अब विज्ञान मानने को राजी नहीं है, क्योंकि कण के साथ पदार्थ का पुराना ख्याल जुड़ा हुआ है। कण का मतलब होता है : पदार्थ का टुकड़ा। वह कण भी नहीं है, क्योंकि कण तो एक जैसा रहता है। वे पूरे वक्त बदलते रहते हैं। लहर की तरह हैं, कण की तरह नहीं। जैसे पानी में एक लहर उठी, जब तक आपने कहा कि लहर उठी, तब तक वह कुछ और हो गयी; जब आपने कहा, वह रही लहर, तब तक वह कुछ और हो गयी; क्योंकि लहर का मतलब ही यह है कि वह आ रही है, जा रही है। लेकिन अगर हम लहर भी कहें तो भी पानी की लहर एक भौतिक घटना है। इसलिए विज्ञान ने एक नया शब्द खोजा है जो कि कभी था नहीं आज से तीस साल पहले, वह है 'क्वांटा'। अभी हिंदी में उस शब्द को कहना मुश्किल है। इसलिए कहना मुश्किल है, जैसे हिंदी के पास शब्द है 'ब्रह्म' और अंग्रेजी में कहना मुश्किल है; क्योंकि कभी ज़रूरत पड़ गयी थी कुछ अनुभव करनेवाले लोगों को, तब यह शब्द खोज लिया गया था। पश्चिम उस जगह नहीं पहुंचा कभी, इसलिए

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

इस शब्द की उन्हें कभी ज़रूरत नहीं पड़ी।

इसलिए धर्म की भाषा के बहुत से शब्द पश्चिम को सीधे लेने पड़ते हैं – जैसे 'ओम्'। उसका कोई अनुवाद दुनिया की किसी भाषा में नहीं हो सकता। वह कभी किन्हीं आध्यात्मिक गहराइयों में अनुभव की गयी बात है। उसके लिए हमने एक शब्द खोज लिया था। लेकिन पश्चिम के पास उसके लिए कोई समांतर शब्द नहीं है कि उसका अनुवाद किया जा सके। ऐसे ही 'क्वांटा' पश्चिम के विज्ञान की बहुत ऊंचाई पर पाया गया शब्द है जिसके लिए दूसरी भाषा में कोई शब्द नहीं है। क्वांटा का अगर हम मतलब समझना चाहें, तो क्वांटा का मतलब होता है : कण और तरंग एकसाथ। इसको कन्सीव करना (समझना) मुश्किल हो जायेगा। कोई चीज कण और तरंग एकसाथ... कभी वह तरंग की तरह व्यवहार करता है और कभी कण की तरह व्यवहार करता है – और कोई भरोसा नहीं है उसका... कि वह कैसा व्यवहार करे।

पदार्थ के सूक्ष्मतम ऊर्जा कणों में चेतना के लक्षण

पदार्थ हमेशा भरोसे योग्य था, पदार्थ में एक सर्टेन्टी, (निश्चितता) थी, लेकिन वे जो अणु ऊर्जा के आखिरी कण मिले हैं, वे अनसर्टेन हैं, उनकी कोई निश्चयात्मकता नहीं है; उनके व्यवहार को पक्का तय नहीं किया जा सकता।

इसलिए पहले विज्ञान बहुत सर्टेन्टी (निश्चयात्मकता) पर खड़ा था; वह कहता था, हर चीज निश्चित है। अब वैज्ञानिक उतने दावे से नहीं कह सकता, हर चीज निश्चित है; क्योंकि वह जहां पहुंचा है, वहीं उसको पता चला है कि निश्चित होना बहुत ऊपर-ऊपर है, भीतर बहुत गहरा अनिश्चय है।

और एक बड़े मजे की बात है कि अनिश्चय का मतलब क्या होता है ?

जहां अनिश्चय है वहां चेतना होनी चाहिए, नहीं तो अनिश्चय नहीं हो सकता। अनसर्टेन्टी (अनिश्चयात्मकता) जो है, वह कांशसनेस (चेतना) का हिस्सा है; सर्टेन्टी (निश्चयात्मकता) जो है, वह मैटर (पदार्थ) का हिस्सा है।

अगर हम इस कमरे में एक कुर्सी को छोड़ जायें, तो लौटकर हमको वह वहीं मिलेगी जहां थी। लेकिन एक बच्चे को हम इस कमरे में छोड़ जायें, तो वह वहीं नहीं मिलेगा जहां था; उसके बाबत अनसर्टेन्टी (अनिश्चयात्मकता) ... कि अब वह कहां है और क्या कर रहा है। कुर्सी के बाबत हम सर्टेन ... नहीं है जहां थी।

इसी वजह से ...

प्लेट उसे पकड़ सकती है। और ईथर के साथ एक ... के बाबत निश्चित

सूक्ष्म है इसलिए मनस से बहुत प्रभावित होती है। अगर एक प्रेत यह चाहे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो विज्ञान ने जिस दिन यह स्वीकार कर लिया कि अणु का जो आखिरी हिस्सा है, उसके बाबत हम निश्चित नहीं हो सकते कि वह कैसा व्यवहार करेगा – उसी दिन... विज्ञान को अभी पता नहीं है साफ – उसी दिन यह बात स्वीकृत हो गयी कि पदार्थ का वह जो आखिरी हिस्सा है, उसमें चेतना की संभावना स्वीकृत हो गयी है ।

अनसर्टेन्टी (अनिश्चितता) चेतना का लक्षण है । जड़ पदार्थ अनिश्चित नहीं हो सकता । ऐसा नहीं है कि आग का मन हो तो जलाये, और मन हो तो न जलाये । ऐसा नहीं है कि पानी की तबीयत हो तो नीचे बहे, और पानी की तबीयत हो तो ऊपर बहे । ऐसा नहीं है कि पानी सौ डिग्री पर गर्म होना चाहे तो सौ पर हो, अस्सी पर होना चाहे तो अस्सी पर हो । नहीं, पदार्थ का व्यवहार सुनिश्चित है । लेकिन जब हम इन सबके भीतर प्रवेश करते हैं, तो वह जो आखिरी हिस्से मिलते हैं पदार्थ के, वे अनिश्चित हैं ।

इसे हम ऐसा भी समझ सकते हैं कि बंबई के बाबत अगर हम तय करना चाहें कि रोज कितने आदमी मरते हैं, तो तय हो जायेगा – करीब-करीब तय हो जायेगा । अगर एक करोड़ आदमी हैं, तो साल भर का हिसाब लगाने से हमको पता चल सकता है कि रोज कितनी आदमी मरते हैं । और वह भविष्यवाणी करीब-करीब सही होगी । थोड़ी बहुत भूल हो सकती है । अगर हम पूरे पचास करोड़ के मुल्क के बाबत विचार करें तो भूल और कम हो जायेगी । सर्टेन्टी (निश्चितता) और बढ़ जायेगी; अगर हम सारी दुनिया के बाबत तय करें तो सर्टेन्टी और बढ़ जायेगी – हम तय कर सकते हैं कि इतने आदमी रोज मरते हैं । लेकिन अगर हम एक आदमी के बाबत तय करने जायें कि यह कब मरेगा, तो सर्टेन्टी बहुत कम हो जायेगी ।

जितनी भीड़ बढ़ती है उतनी मैटेरियल (भौतिक) हो जाती है चीज, जितना इंडिविजुअल (निजी) होता है, उतनी कांशस (संचेतन) हो जाती ।

असल में एक पत्थर का टुकड़ा भीड़ है करोड़ों अणुओं की, इसीलिए उसके बाबत हम तय हो सकते हैं । और जब हम नीचे प्रवेश करते हैं, और एक अणु को पकड़ते हैं, तो वह इंडिविजुअल (निजी) है । उसके बाबत तय होना मुश्किल हो जाता है; उसका व्यवहार वह खुद ही तय करता है ।

तो पूरे पत्थर के बाबत हम कह सकते हैं कि यह यहीं मिलेगा । लेकिन इस पत्थर के भीतर जो अणुओं का व्यक्तित्व जो था ... जब हम लौटकर आयेंगे ...

मुश्किल
... गया था कुछ अनुभव करनेवाले लोगों को, तब
यह शब्द खोज लिया गया था । पश्चिम उस जगह नहीं पहुंचा कभी, इसलिए

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

परमाणुओं के सूक्ष्मतर तल

पदार्थ की गहराई में उतरकर अनिश्चित शुरू हो गया है। इसलिए अब विज्ञान सर्टेन्टी (निश्चितता) की बात न करके प्रोबेबिलिटि (संभावनात्मकता) की बात करने लगा है; वह कहता है, 'इसकी' संभावना ज्यादा है बजाय 'उसके'। अब वह ऐसा नहीं कहता कि 'ऐसा ही' होगा।

बड़े मजे की बात है कि विज्ञान की सारी दावेदारी जो थी, वह उसकी निश्चयत्मकता पर थी... कि वह जो भी कहता है वह निश्चित है कि ऐसा होगा। अब विज्ञान की जो गहरी खोज है, उसने पैर डगमगा दिये हैं। और उसका कारण है। उसका कारण यह है कि वह फिजिकल (भौतिक) से इथरिक (आकाशीय) पर चले गये हैं, जिसका उनको अंदाज नहीं है। असल में वे इस भाषा को स्वीकार नहीं करते, इसलिए उनको तब तक अंदाज भी नहीं हो सकता कि वे फिजिकल (भौतिक) से हट कर इथरिक पर पहुंच गये हैं; वे पदार्थ में भी दूसरे शरीर पर पहुंचे गये हैं। और दूसरे शरीर की अपनी संभावनाएं हैं। लेकिन पहले शरीर और दूसरे शरीर के बीच कोई खाली जगह नहीं है।

तीसरा जो एस्ट्रल (सूक्ष्म) शरीर है, वह और भी सूक्ष्म है – वह सूक्ष्म का भी सूक्ष्म है। वह ईथर के भी अगर हम अणु बना सकें, जो अभी बहुत मुश्किल है, क्योंकि अभी-अभी तो हम मुश्किल से फिजिक्स में परमाणु पर पहुंच पाये हैं, अभी हम पदार्थ के परमाणु बना पाये हैं, अभी ईथर के लिए बहुत वक्त लग सकता है। लेकिन जिस दिन हम ईथर के अणु बना सकें, उस दिन हमें पता चलेगा कि वे अणु जो हैं, वे उसके पिछले आगेवाले शरीर के अणु सिद्ध होंगे – एस्ट्रल के। असल में फिजिकल (भौतिक) को जब हमने तोड़ा तो उसके अणु इथरिक सिद्ध हुए हैं, ईथर को हम तोड़ेंगे तो उसके अणु एस्ट्रल के सिद्ध होंगे, सूक्ष्म के सिद्ध होंगे। तब उनके बीच एक जोड़ मिल जायेगा। ये तीन शरीर तो बहुत स्पष्ट जुड़े हुए हैं, इसलिए प्रेतात्माओं के चित्र लिये जा सके हैं।

सूक्ष्म शरीरों की शक्तियां

प्रेतात्मा के पास भौतिक शरीर नहीं होता, इथरिक बॉडी (भावशरीर) से शुरू होता है उसका परदा जो है। प्रेतात्माओं के चित्र लिये जा सके हैं, सिर्फ इसी वजह से कि ईथर भी अगर बहुत कंडेंस्ड हो जाये,तो बहुत सेंसिटिव फोटो प्लेट उसे पकड़ सकती है। और ईथर के साथ एक सुविधा है कि वह इतनी सूक्ष्म है इसलिए मनस से बहुत प्रभावित होती है। अगर एक प्रेत यह चाहे

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

कि मैं यहां प्रकट हो जाऊं, तो वह अपनी इथरिक बॉडी को कंडेंस्ड कर लेगा, सघन कर लेगा। वे अणु जो दूर-दूर हैं, पास सरक आयेंगे और उसकी एक रूपरेखा बन जायेगी। उस रूपरेखा का चित्र लिया जा सका है, उस रूपरेखा का चित्र पकड़ा जा सका है।

यह जो दूसरा हमारा ईथर (आकाश) का बना हुआ शरीर है, यह हमारे भौतिक शरीर से कहीं ज्यादा मन से प्रभावित हो सकता है। भौतिक शरीर भी हमारे मन से प्रभावित होता है, लेकिन उतना नहीं। जितना सूक्ष्म होगा उतना मन से प्रभावित होने लगेगा, उतने मन के करीब हो जायेगा। एस्ट्रल (सूक्ष्म) शरीर तो और भी ज्यादा मन से प्रभावित होता है। इसलिए एस्ट्रल ट्रेवलिंग (सूक्ष्म शरीर की यात्रा) संभव हो जाती है। एक आदमी इस कमरे में सोकर भी अपनी एस्ट्रल बॉडी (सूक्ष्म शरीर) से दुनिया के किसी भी हिस्से में हो सकता है। इसलिए ये कहानियां जो बहुत बार सुनी होंगी कि एक आदमी दो जगह दिखाई पड़ गया, तीन जगह दिखाई पड़ गया, इसमें कोई कठिनाई नहीं है। उसका भौतिक शरीर एक जगह होगा, उसका एस्ट्रल शरीर दूसरी जगह हो सकता है। इसमें अड़चन नहीं है, यह सिर्फ थोड़े से ही अभ्यास की बात है और आपका शरीर दूसरी जगह प्रकट हो सकता है।

जितने हम भीतर जाते हैं, उतनी ही मन की शक्ति बढ़ती चली जाती है; जितना हम बाहर आते हैं, उतनी मन की शक्ति कम होती चली जाती है। ऐसा ही जैसे कि हम एक दीया जलायें और उस दीये के ऊपर कांच का एक ढक्कन रख दें, अब दीया उतना तेजस्वी नहीं मालूम होगा। फिर एक दूसरा ढक्कन और रख दें; अब दीया और भी कम तेजस्वी मालूम होगा। फिर हम एक ढक्कन और रख दें, और हम सात ढक्कन रख दें, तो सातवें ढक्कन के बाद दीये की बहुत ही कम रोशनी बाहर पहुंच पायेगी। पहले ढक्कन के बाद ज्यादा पहुंचती थी, दूसरे के बाद उससे कम, तीसरे पर और कम, सातवें पर बहुत धीमी और धूमिल हो जायेगी, क्योंकि सात पर्दों को पार करके आयेगी।

भौतिक-ऊर्जा का ही सूक्ष्मतम रूप मनोमय ऊर्जा

तो हमारी जो जीवन ऊर्जा की शक्ति है, वह शरीर तक आते-आते बहुत धूमिल हो जाती है। इसलिए शरीर पर हमारा उतना क़ाबू नहीं मालूम होता – लेकिन, अगर कोई भीतर प्रवेश करना शुरू करे, तो शरीर पर उसका काबू बढ़ता चला जायेगा; जिस मात्रा में भीतर प्रवेश होगा, उस मात्रा में शरीर पर भी काबू बढ़ता चला जायेगा।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

यह जो तीसरा शरीर है एस्ट्रल, यह भी... भौतिक का सूक्ष्मतम शरीर है इथरिक, इथरिक का सूक्ष्मतम हिस्सा है एस्ट्रल, अब चौथा शरीर है मेंटल।

अब तक हम सबको यही ख्याल था कि माइंड (मन) कुछ और बात है, पदार्थ से; माइंड और मैटर (पदार्थ) अलग बात है। असल में परिभाषा करने का उपाय ही न था। अगर किसी से हम पूछें कि मैटर (पदार्थ) क्या है, तो कहा जा सकता है कि जो माइंड नहीं है; और माइंड क्या है, तो कहा जा सकता है : जो मैटर नहीं है। बाकी और कोई परिभाषा है भी नहीं। इसी तरह हम सोचते रहे हैं इन दोनों को अलग करके। लेकिन अब हम जानते हैं कि माइंड जो है, वह भी मैटर का ही सूक्ष्मतम हिस्सा है – या इससे उलटा भी हम कह सकते हैं कि जिसे हम मैटर कहते हैं, वह माइंड का ही कंडेंस्ड, सघन हो गया हिस्सा है।

अलग-अलग विचारों की अलग-अलग तरंग रचना

एस्ट्रल के भी अगर अणु टूटेंगे तो वे माइंड के थाट-वेव्ज़ (विचार तरंगें) बन जायेंगे। अब क्वांटा और थाट वेव्ज़ में बड़ी निकटता है। विचार, अब तक नहीं समझा जाता था कि विचार भी कोई भौतिक अस्तित्व रखता है। लेकिन जब आप एक विचार करते हैं, तो आपके आसपास की तरंगें बदल जाती हैं।

यह बहुत मजे की बात है : न केवल विचार की, बल्कि एक-एक शब्द की भी अपनी वेव लेंथ, अपनी तरंग है। अगर आप एक कांच के ऊपर रेत के कण बिछा दें, और कांच के नीचे से जोर से एक शब्द आवाज करें... जोर से कहें – 'ओऽम्', तो उस कांच के ऊपर रेत पर अलग तरह की वेव्ज़ बन जायेंगी, और आप कहें – 'राम', तो अलग तरह की वेव्ज़ बनेंगी; और आप एक भद्धी गाली दें तो एक अलग तरह की वेव्ज़ बनेंगी। और आप एक बड़ी हैरानी की बात में पड़ जायेंगे कि जितना भद्दा शब्द होगा, उतनी ही कुरूप ऊपर वेव्ज़ बनेंगी; और जितना सुंदर शब्द होगा, उतनी सुंदर वेव्ज़ होंगी, उतना पैटर्न (रूप) होगा उनमें; जितना भद्दा शब्द होगा, उतना पैटर्न (ढांचा) नहीं होगा, अनार्किक (अस्त-व्यस्त) होगा।

इसलिए बहुत हजारों वर्ष तक शब्द के लिए बड़ी खोजबीन हुई कि कौन सा शब्द सुंदर तरंगें पैदा करता है, कौन सा शब्द कितना वजन रखता है दूसरे के हृदय तक चोट पहुंचाने में। लेकिन शब्द तो प्रगट हो गया विचार है, अप्रगट शब्द भी अपनी ध्वनियां रखता है – जिसको हम विचार कहते हैं, थॉट कहने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हैं। जब आप सोच रहे हैं कुछ, तब भी आपके चारों तरफ विशेष प्रकार की ध्वनियां फैलनी शुरू हो जाती, विशेष प्रकार की तरंगें आपको घेर लेती।

इसलिए बहुत बार आपको ऐसा लगता है कि किसी आदमी के पास जाकर आप अचानक उदास हो जाते हैं, अभी उसने कुछ कहा भी नहीं। हो सकता है, वह ऐसे हंस ही रहा हो आपको मिलकर; लेकिन फिर भी कोई उदासी आपको भीतर से पकड़ लेती है। किसी आदमी के पास जाकर आप बहुत प्रफुल्लित हो जाते हैं। किसी कमरे में प्रवेश करते से ही आपको लगता है कि आप कुछ भीतर बदल गये : कुछ पवित्रता पकड़ लेती है, अपवित्रता पकड़ लेती है। किसी क्षण में कहीं कोई शांति पकड़ लेती है और कहीं कोई अशांति छू लेती है जिसको आपको समझना मुश्किल हो जाता है कि मैं तो अभी अशांत नहीं था, अचानक यह अशांति मन में क्यों उठ आयी !

आपके चारों तरफ विचारों की तरंगें हैं, और वे तरंगें चौबीस घंटे आपमें प्रवेश कर रही हैं। अभी तो एक फ्रेंच वैज्ञानिक ने एक छोटा सा यंत्र बनाया है जो विचार की तरंगों को पकड़ने में सफल हुआ है। उस यंत्र के पास जाते से ही वह बताना शुरू कर देता है कि यह आदमी किस तरह के विचार कर रहा है; उस पर तरंगें पकड़नी शुरू हो जाती हैं। अगर एक इडियट (मूर्ख) को, जड़बुद्धि आदमी को ले जाया जाये तो उसमें बहुत कम तरंगें पकड़ती हैं, क्योंकि वह विचार ही नहीं कर रहा; अगर एक बहुत प्रतिभाशाली आदमी को ले जाया जाये तो वह पूरा का पूरा यंत्र कंपन लेने लगता है, उसमें इतनी तरंगें पकड़ने लगती हैं।

तो जिसको हम मन कहते हैं, वह एस्ट्रल के सूक्ष्म का भी सूक्ष्म है। निरंतर भीतर हम सूक्ष्म से सूक्ष्म होते चले जाते हैं। अभी विज्ञान इथरिक तक पहुंच पाया है। अभी भी उसने उसको इथरिक नहीं कहा है, उसको एटॉमिक कह रहा है, परमाणविक कह रहा है – ऊर्जा, एनर्जी कह रहा है; लेकिन वह दूसरे शरीर पर वह उतर गया है – सत्व के दूसरे शरीर पर वह उतर गया है। तीसरे शरीर पर उतरने में बहुत देर नहीं लगेगी। वह तीसरे शरीर पर उतर जायेगा; उतरने की जरूरतें पैदा हो गयी हैं।

चौथे शरीर पर भी बहुत दूसरी दिशाओं से काम चल रहा है; क्योंकि मन को अलग ही समझा जाता था, इसलिए कुछ वैज्ञानिक मन पर अलग से ही काम कर रहे हैं; वे शरीर से काम ही नहीं कर रहे। उन्होंने चौथे शरीर के संबंध में बहुत सी बातों का अनुभव कर लिया है। अब जैसे, हम सब एक अर्थ में ट्रांसमीटर्स (विचार-प्रेषण-यंत्र) हैं, और हमारे विचार हमारे चारों तरफ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

विकीर्ण हो रहे हैं; मैं आपसे जब नहीं भी बोल रहा हूं, तब भी मेरा विचार आप तक जा रहा है।

विचार संप्रेषण पर खोजें

अभी रूस में इस संबंध में काफी दूर तक काम हुआ है, और एक वैज्ञानिक फयादेव ने एक हजार मील दूर तक विचार का संप्रेषण किया है; वह मास्को में बैठा है और एक हजार मील दूर दूसरे आदमी को विचार का संप्रेषण कर रहा है – ठीक वैसे ही, जैसे रेडिओ से ट्रांसमीशन (संप्रेषण) होता है। ऐसे ही अगर हम संकल्पपूर्वक एक दिशा में अपने चित्त को केंद्रित करके किसी विचार को तीव्रता से संप्रेषित करें, तो वह उस दिशा में पहुंच जाता है; और अगर दूसरी तरफ भी माइंड रिसीव करने को, ग्राहक होने को तैयार हो – उसी क्षण में, उसी दिशा में मन केंद्रित हो, खुला हो और स्वीकार करने को राजी हो – तो विचार संप्रेषित हो जाता है।

विचार संप्रेषण का एक घरेलू प्रयोग

इस पर कभी छोटा-मोटा प्रयोग आप घर में करके देखें तो अच्छा होगा। छोटे बच्चे जल्दी से पकड़ लेते हैं, क्योंकि अभी उनकी ग्राहकता तीव्र होती है। कमरा बंद कर लें; एक छोटे बच्चे को, कमरे को अंधेरा करके दूसरे कौने पर बिठा दें; आप दूसरे कोने पर बैठ जायें – और उस बच्चे से कहें कि एक पांच मिनट के लिए तू ध्यान मेरी तरफ रखना – मैं तुझसे चुपचाप कुछ कहूंगा, वह तू सुनने की कोशिश करना और अगर तुझे सुनाई पड़ जाये तो बोल देना। फिर आप एक शब्द पकड़ लें कोई भी – जैसे 'राम' या 'गुलाब' – और इस शब्द को उस बच्चे की तरफ ध्यान रखकर जोर से अपने भीतर गुंजाने लगें, बोलें नहीं, राम-राम ही गुंजाने लगें। एक दो-तीन दिन में आप पायेंगे कि उस बच्चे ने आपके शब्द को पकड़ना शुरू कर दिया। तब इसका क्या मतलब हुआ ? फिर इससे उलटा भी हो सकता है : एक दफे ऐसा हो जाये तो आपको आसानी हो जायेगी। फिर आप बच्चे को बिठा सकते हैं और उससे कह सकते हैं कि वह एक शब्द अपने भीतर सोचकर आपकी तरफ फेंके। लेकिन तब आप ग्राहक हो सकेंगे, क्योंकि आपका डाउट, आपका संदेह गिर गया होगा। घटना घट सकती है तो फिर ग्राहकता बढ़ जाती है।

निर्जरा – कर्म-मल का झड़ जाना

आपके और आपके बच्चे के बीच तो भौतिक जगत फैला हुआ है। यह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

विचार किसी गहरे अर्थों में भौतिक ही होना चाहिए, अन्यथा इस भौतिक माध्यम को पार न कर पायेगा।

यह जानकर आपको हैरानी होगी कि महावीर ने कर्म तक को भौतिक कहा है – फिजिकल कहा है, मैटेरियल कहा है। जब आप क्रोध करते हैं और किसी की हत्या कर देते हैं, तो आपने एक कर्म किया – क्रोध का और हत्या करने का। महावीर कहते हैं – यह भी सूक्ष्म अणुओं में आपमें चिपक जाता है; कर्म-मल बन जाता है। यह भी मैटेरियल है। यह भी कोई इममैटिरियल चीज नहीं है, यह भी मैटर की तरह पकड़ लेता है आपको। और इसलिए महावीर निर्जरा जिसको कहते हैं, इस कर्म मल से जिस दिन छुटकारा हो जाये। ये सारे के सारे जो कर्म-अणु आपके चारों तरफ जुड़ गयें हैं, ये गिर जायें। जिस दिन ये गिर जायेंगे, उस दिन आप शुद्धतम शेष रह जायेंगे; वह निर्जरा होगी।

निर्जरा का मतलब है : कर्म के अणुओं का झड़ जाना। कर्म भी... जब आप क्रोध करते हैं तब आप एक कर्म कर रहे हैं। वह क्रोध भी आणविक होकर ही आपके साथ चलता है। इसलिए जब आपका यह शरीर गिर जाता है, तब भी उसको गिरने की जरूरत नहीं होती; वह दूसरे जन्म में भी आपके साथ खड़ा हो जाता है, क्योंकि वह अति सूक्ष्म है।

तो मेंटल बॉडी जो है, मनस शरीर जो है, वह एस्ट्रल बॉडी का सूक्ष्मतम हिस्सा है। और इसलिए इन चारों में कहीं भी कोई खाली जगह नहीं है, ये सब एक-दूसरे के सूक्ष्म होते गये हिस्से हैं। मेंटल बॉडी पर काफी काम हुआ है, क्योंकि अलग से मनस-शास्त्र उस पर काम कर रहा है – और विशेषकर पेरा-साइकोलॉजी उस पर अलग से काम कर रही है, परामनोविज्ञान अलग से काम कर रहा है। और मनस के अदभुत नियम विज्ञान की पकड़ में आ गये हैं – धर्म की पकड़ में तो बहुत समय से थे, विज्ञान की पकड़ में भी बहुत सी बातें साफ हो गयी हैं।

विचार तरंगों का प्रभाव पदार्थ पर भी

अब जैसे एक आदमी है और वह जुआ खेलता है। अब मांटकार्लो में ऐसे ढेर आदमी हैं, जिनको जुए में हराना मुश्किल है; क्योंकि वे जो पांसा फेंकते हैं, वे जो नंबर फेंकना चाहते हैं, वही फेंक लेते हैं। उनके पांसे बदल देने से कोई फर्क नहीं पड़ता। पहले तो समझा जाता था कि वे पांसे कुछ चालबाजी से बनाये गये हैं कि वे पांसे वहीं गिर जाते हैं जहां वे गिराना चाहते

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हैं। लेकिन हर तरह के पांसे देकर वे जो नंबर लाना चाहते हैं वही आंकड़ा ले आते हैं – आंख बंद करके भी ले आते हैं। तब बड़ी मुश्किल हो गयी। तब इसकी जांच-पड़ताल करनी ज़रूरी हो गयी कि बात क्या है। असल में उनका विचार का तीव्र संकल्प पांसे को प्रभावित करता है – वे जो लाना चाहते हैं उसके तीव्र संकल्प की धारा से पांसों को फेंकते हैं। विचार की वे तरंगें उन पांसों को उसी आंकड़े पर ले आती है। अब इसका मतलब क्या हुआ ? अगर विचार की तरंग एक पांसे को बदलती हैं तो विचार की तरंग भी भौतिक है, नहीं तो पांसे को नहीं बदल सकती।

विचार शक्ति की एक प्रयोगात्मक जांच

आप एक छोटा सा प्रयोग करें तो आपके ख्याल में आ जाये। चूंकि विज्ञान की बात आप करते हैं, इसलिए मैं प्रयोग की बात करता हूं। एक गिलास में पानी भरकर रख लें और ग्लिसरीन या कोई भी चिकना पदार्थ उस गिलास के पानी के ऊपर थोड़ा सा डाल दें कि उसकी एक पतली हलकी फिल्म पानी के गिलास के ऊपर फैल जाये। एक छोटी आलपीन, बिलकुल पतली... कि उस फिल्म पर तैर सके, उसको उसके ऊपर छोड़ दें। फिर कमरे को सब तरफ से बंद करके दोनों हाथ जमीन पर टेककर आंखें उस छोटी सी आलपीन पर गड़ा लें। एक पांच मिनट चुपचाप बैठे रहें आंखें गड़ाये हुए, फिर उस आलतपीन से कहें कि बायें घूम जाओ, तो आलपीन बायें घूमेगी; फिर कहें दायें घूम जाओ तो दायें घूमेगी; कहें कि रुक जाओ तो रुक जायेगी; कहें कि चलो तो चलेगी।

अगर आपका विचार एक आलपीन को बायें घुमा सकता है, दायें घुमा सकता है, तो फिर एक पहाड़ को भी हिला सकता है। जरा लंबी बात है, बाकी फर्क नहीं रह गया, बुनियादी फर्क नहीं रह गया। आपकी सामर्थ्य अगर एक आलपीन को हिलाती है तो बुनियादी बात पूरी हो गयी है। अब यह दूसरी बात है कि पहाड़ बहुत बड़ा पड़ जाये, आप न हिला पायें, लेकिन हिल सकता है पहाड़।

वस्तुओं द्वारा विचार तरंगों का अपशोषण

हमारे विचार की तरंग पदार्थ को छूती और रूपांतरित करती है। इसीलिए अगर आपके कपड़े को दिया जा सके... ऐसे लोग हैं, जिनको आपके हाथ का रूमाल दिया जा सके तो आपके व्यक्तित्व के संबंध में वे करीब-करीब उतनी ही बातें बता देंगे जितनी आपको देखकर बताई जा सकता थी, क्योंकि

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

आपके हाथ का रूमाल आपके विचार की तरंगों को अपशोषित कर जाता है; आपका गहना आपकी तरंगों को अपशोषित कर जाता है। और मजा यह है कि वे इतनी सूक्ष्म तरंगें हैं कि एक रूमाल जो सिकंदर के हाथ में रहा हो, वह अभी भी सिकंदर के व्यक्तित्व की खबर देता है। वे इतनी सूक्ष्म तरंगें हैं कि उनको फिर बाहर निकलने में करोड़ों वर्ष लग जाते हैं। इसीलिए कब्रें हमने बनानी शुरू की थीं, समाधियां बनानी शुरू की थीं।

दिव्य व्यक्तियों की तरंगें हजारों वर्षों तक प्रभावशील

कल मैंने आपसे कहा था कि इस मुल्क में हम मरे हुए आदमी को तत्काल जला देते हैं, लेकिन संन्यासी को नहीं जलाते। मरे हुए आदमी को इसलिए जला देते हैं कि उसकी आत्मा उसके आसपास न भटके, संन्यासी को इसलिए नहीं जलाते हैं कि उसकी तो जिंदा में ही आत्मा ने आसपास भटकना बंद कर दिया था; अब उसके शरीर से उसकी आत्मा को कोई खतरा नहीं है कि वह भटके। पर उसके शरीर को हम बचा लेना चाहते हैं, क्योंकि जो आदमी अगर तीस वर्ष तक पवित्रता के विचारों में जीया हो, उसका शरीर हजारों-लाखों वर्ष तक उस तरह की तरंगों को विकीर्ण करता रहेगा... और उसकी समाधि अर्थपूर्ण हो जायेगी; उसकी समाधि के आसपास परिणाम होंगे। वह शरीर तो मर गया, लेकिन वह शरीर इतने निकट रहा है उस आत्मा के... कि अपशोषित कर गया है बहुत कुछ – जो भी विकीर्ण हो रहा था, उसे वह अपशोषित कर गया।

विचार की अनंत संभावनाएं हैं, लेकिन हैं वे सब भौतिक। इसलिए जब आप कुछ सोचते हैं तो बहुत ध्यान रखकर सोचना चाहिए, क्योंकि उसकी तरंगें, आप नहीं होंगे, तब भी शेष रहेंगी। यानी आपका मर जाना... आपकी उम्र बहुत कम है, लेकिन विचार इतना सूक्ष्म है कि उसकी उम्र बहुत ज्यादा है। इसलिए वैज्ञानिक तो अब इस ख्याल पर पहुंचे हैं कि अगर जीसस कभी हुए हैं या कृष्ण कभी हुए हैं, तो आज नहीं कल, हम उनकी विचार तरंगों को पकड़ने में समर्थ हो जायेंगे – और यह तय हो सकेगा कि कृष्ण ने गीता कभी कही है कि नहीं कही है; क्योंकि वे विचार तरंगें जो कृष्ण से निकली हैं, वे आज भी लोक-लोकांतर में किसी ग्रह, किसी उपग्रह के पास टकरा रही होंगी।

ऐसे ही, जैसे हम एक कंकड़ समुद्र में फेंके, तो जब कंकड़ गिरता है तो एक छोटा सा छिद्र, एक छोटा सा वर्तुल समुद्र के पानी पर बनेगा – फिर कंकड़ तो डूब जायेगा, कंकड़ की ज़िंदगी पानी की सतह पर बहुत ज़्यादा नहीं है; कंकड़ की ज़िंदगी तो पानी को छुई नहीं कि गयी – लेकिन कंकड़ की चोट

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

से जो तरंगें पैदा हुई, वे फैलनी शुरू हो जायेंगी; वे बढ़ती जायेंगी; वह अंतहीन है उनका बढ़ाव – आप की आंख से ओझल हो जायेंगी, लेकिन न मालूम किन दूर तटों पर वे अभी भी बढ़ रही होंगी।

तो जो विचार कभी भी पैदा हुए हैं – बोले ही नहीं गये, जो मन में भी पैदा हुए हैं – वे विचार भी दूर इस जगत के आकाश में, किन्हीं किनारों पर अभी भी बढ़ते चले जा रहे हैं। उनको पकड़ा जा सकता है। किसी दिन अगर मनुष्य की गति तीव्र हो सकी विज्ञान की, और उनसे आगे निकल सके तो उन्हें सुना जा सकता है।

अब जैसे समझ लें कि दिल्ली से अगर एक रेडियो पर रेडियो वेव्ज़ (तरंगें) बंबई के लिए खबर भेजती हैं, तो उसी वक्त थोड़े ही खबर यहां आ जाती है – जब दिल्ली से भेजी जाती है ! थोड़ा टाइम गैप (समय का अंतराल) है; क्योंकि ध्वनि की यात्रा में समय लगता है। दिल्ली में तो वह ध्वनि मर चुकी होती है जब बंबई आती है। वहां से तरंगें आगे निकल गयी होती हैं। दिल्ली में वे नहीं हैं अब। थोड़े ही क्षणों का फासला पड़ता है, लेकिन क्षण बीच में गिरते हैं।

अगर समझ लें कि न्यूयॉर्क से एक आदमी को टेलीविजन पर हम देख रहे हैं, तो जब उसका चित्र न्यूयॉर्क में बनता है, तभी हमें दिखाई नहीं पड़ता। उसके चित्र बनने में और हम तक पहुंचने में समय का फासला है। यह भी हो सकता है : इस समय वह आदमी मर गया हो, लेकिन हमें वह आदमी जिंदा दिखाई पड़ेगा।

हमारी पृथ्वी से भी विचार की, चित्रों की तरंगें अनंत लोकों तक जा रही हैं। अगर हम उन तरंगों के आगे जाकर कभी भी उनको पकड़ सकें, तो वे अभी भी जिंदा हैं उस अर्थों में।

आदमी मर जाता है, विचार इतने जल्दी नहीं मरता। आदमी की उम्र बहुत कम है, विचार की उम्र बहुत ज्यादा है। और यह भी ख्याल रहे कि जो विचार हम प्रगट नहीं करते, उसकी उम्र और ज्यादा है – उस विचार से जो हम प्रगट कर देते हैं; क्योंकि वह और ज्यादा सूक्ष्म है। जो अप्रगट है, वह और सूक्ष्म है; उसकी उम्र और ज्यादा है। जितना सूक्ष्म उतनी ज्यादा उम्र; जितना स्थूल उतनी कम उम्र।

विशिष्ट संगीत-ध्वनियों के विशिष्ट प्रभाव

ये जो विचार हैं, ये बहुत तरह से, जिसको हम भौतिक जगत कह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हैं, उसको प्रभावित कर रहे हैं। हमें ख्याल में नहीं... अभी तो वनस्पति-शास्त्री इस अनुभव पर पहुंच गया है कि अगर एक पौधे के पास प्रीतिपूर्ण संगीत बजाया जाये, तो पौधा जल्दी फल देना शुरू कर देता है; जल्दी उसमें फूल आ जाते हैं, बेमौसम। अगर उसके पास कुरूप, भद्दा और न्वाइसी (कोलाहलपूर्ण) संगीत बजाया जाये, तो मौसम भी निकल जाता और उसके फल नहीं आते और फूल नहीं आते। वे तरंगें उसको छू रही हैं, उसको स्पर्श कर रही हैं। गायें ज्यादा दूध दे देती हैं खास संगीत के प्रभाव में; खास संगीत के प्रभाव में दूध देना बंद ही कर देती हैं। विचार इससे भी सूक्ष्म हवा पैदा कर रहा है; उसके चारों तरफ तरंगों की एक छाया है। और हर आदमी अपने विचार का एक जगत अपने साथ लेकर चल रहा है, जिससे पूरे वक्त चीजें विकीर्ण हो रही हैं।

निद्राकाल में मनोमय जगत की वैज्ञानिक जांच

ये जो विकीर्ण होती हुई किरणें हैं, ये भी भौतिक हैं। हमारा माइंड जिसे हम कहते हैं, वह मेंटल ही नहीं है; हम जिसे मन कहते हैं, वह मनस ही नहीं है, वह भौतिक का ही चार सीढ़ियां छलांग लगाकर सूक्ष्म रूप है। इसलिए कठिनाई नहीं है कि विज्ञान वहां पहुंच जाये। कठिनाई नहीं है, क्योंकि उसकी तरंगों को पकड़ा-जांचा जा सकता है।

जैसे कल तक हमें पता नहीं चलता था कि आदमी रात में कितना गहरा सो रहा है, उसका मनस कितनी गहराई में है – अब पता चल जाता है; अब हमारे पास यंत्र हैं। जैसा कि हृदय की धड़कन नापने के यंत्र हैं, इसी तरह नींद की धड़कन नापने के यंत्र तैयार हो गये हैं। तो रात भर आपकी खोपड़ी पर एक यंत्र लगा रहता है, वह पूरे वक्त ग्राफ बनता रहता है कि कितनी गहराई में हो – वह ग्राफ बनता रहता है पूरे वक्त कि आदमी इस वक्त ज्यादा गहराई में है, इस वक्त कम गहराई में है। वह पूरे वक्त रात भर का ग्राफ देता है कि यह आदमी कितनी देर सोया है, कितने देर सपने देखे, कितनी देर अच्छे सपने देखे, कितनी देर बुरे सपने देखे, कितनी देर इसके सपने सेक्सुअल (कामुक) थे, कितनी देर सेक्सुअल नहीं थे, वह सब ग्राफ पर दे देता है।

अमरीका में इस समय कोई दस लेबोरेटरी (प्रयोगशालाएं) हैं, जिनमें हजारों लोग रात में पैसा देकर सुलाये जा रहे हैं, जिनकी नींद पर बड़ा परीक्षण चल रहा है; क्योंकि यह बड़ी हैरानी की बात है कि नींद से हम अपरिचित रह जायें; क्योंकि आदमी की एक तिहाई जिंदगी नींद में खत्म होती है। छोटी-मोटी घटना नहीं है नींद – साठ साल आदमी जीता है, तो बीस साल

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो सोता है। तो बीस साल के इस बड़े हिस्से को अनजाना छोड़ देना... तो आदमी का एक तिहाई अपरिचित रह जायेगा। और मजा यह है कि यह जो एक तिहाई, बीस वर्ष है, अगर यह न सोये, तो बाकी चालीस वर्ष बच नहीं सकता। इसलिए बहुत बेसिक (मूलभूत) है।

अच्छा बिना जगे सो सकता है आदमी साठ वर्ष, लेकिन बिना सोये जग नहीं सकता। तो ज्यादा गहरे में और बुनियादी तो नींद है।

तो नींद में हम कहीं और होते हैं, हमारा मनस कहीं और होता है, लेकिन उस मनस को नापा जा सकता है। अब उसके पता लगने शुरू हो गये हैं कि वह कितनी गहरी नींद में है। ढेर लोग हैं, जो कहते हैं कि हमें सपना नहीं आता। वे सरासर झूठ कहते हैं; उनको पता नहीं है, इसलिए झूठ कहते हैं ...उन्हें पता नहीं है। ऐसा आदमी खोजना मुश्किल है जिसको सपना न आता हो। बहुत मुश्किल मामला है। रातभर सपना आता है। और आपको भी ख्याल होगा कि कभी एक-आध आता है, वह गलत ख्याल है आपका। मशीन कहती है : रात भर आता है, लेकिन स्मृति नहीं रह जाती – आप नींद में होते हैं इसलिए याद नहीं बनती उसकी। आपको सपना जो याद रहता है, वह आखिरी रहता है, जब नींद टूटने के करीब होती है। तब आपकी स्मृति बन ज़ाती है। लौटते हैं नींद से जब आप, तो आखिरी दरवाजे पर नींद के जो सपना रहता है, वह आपके ख्याल में रह जाता है; क्योंकि उसकी धीमी सी भनक आपके जागने तक चली आती है। लेकिन गहरी नींद में जो सपना रहता है, उसका आपको पता नहीं रहता।

अब गहरी नींद में आदमी क्या सपने देखता है, यह जांच करना ज़रूरी हो गया है; क्योंकि वह जो सपने बहुत गहराई में देखता है, वह उसका असली व्यक्तित्व होगा। असल में जागकर तो हम नकली होते हैं।

आमतौर से हम सोचते हैं कि सपने में क्या रखा है, लेकिन सपना हमारी ज्यादा सच्चाई को बताता है – बजाय हमारे जागरण के; क्योंकि जागरण में हम झूठे आवरण ओढ़ लेते हैं।

अगर किसी दिन हम आदमी की खोपड़ी में एक खिड़की बना सकें, विंडो बना सकें, और उसके सब सपने देख सकें, तो आदमी की आखिरी स्वतंत्रता चली जायेगी – सपना भी नहीं देख सकेगा हिम्मत के साथ... कि जो देखना हो वही देखे; उसमें भी डरा रहेगा। वहां भी नैतिकता और नियम और कानून और पुलिसवाला प्रविष्ट हो जायेगा; वह कहेगा : सपना जरा... यह सपना ठीक नहीं देख रहे हो, यह सपना अनैतिक है। अभी वह स्वतंत्रता है।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

आदमी नींद में अभी स्वतंत्र है, लेकिन बहुत दिन नहीं रह जायेगा; क्योंकि अब नींद पर एन्क्रोचमेंट (अनधिकार-हस्तक्षेप) शुरू हो गया है। जैसे नींद में शिक्षा देनी रूस में उन्होंने शुरू की है।

निद्रा में बच्चों को शिक्षित करना

स्लीप टीचिंग (निद्रा में शिक्षा) पर बड़ा काम चल रहा है; क्योंकि जागने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है, बच्चा रेसिस्ट (विरोध) करता है। एक लड़के को कुछ सिखाना बड़ा उपद्रव का काम है, क्योंकि वह बुनियादी रूप से इनकार करता है सीखने से। असल में हर आदमी सीखने से इनकार करता है, क्योंकि हर आदमी बुनियादी रूप से यह मानकर चलता है कि मैं जानता ही हूं। बच्चा भी इनकार करता है कि क्या सिखा रहे हैं! वह हज़ार तरह से इनकार करता है। हमको प्रलोभन देने पड़ते हैं, परीक्षाओं के पुरस्कार देने पड़ते हैं, गोल्ड-मेडल (स्वर्ण-पदक) बांटने पड़ते हैं, प्रतियोगिता पैदा करनी पड़ती है, बुखार जगाना पड़ता है, किसी तरह दौड़-दौड़कर हम उसे सिखा पाते हैं। लेकिन इस कांफलिक्ट (द्वंद्व) में बहुत समय व्यय होता है – जो काम दो घंटे में सीख सकता है, उसमें दो महीने लग जाते हैं।

तो वे स्लीप टीचिंग की फिक्र पर चले गये हैं; और बात साफ हो गयी है कि नींद में पढ़ाया जा सकता है... और बड़ी अच्छी तरह से; क्योंकि नींद में कोई रेसिस्टेंस (विरोध) नहीं है। एक टेप लगा रहता है, वह रात भर... नींद में भीतर डालता रहता है जो भी कहना है – दो और दो चार होते हैं, दो और दो चार होते हैं, वह दोहरता रहेगा। सुबह उस बच्चे से कहिए, दो-दो कितने होते हैं? वह कहेगा, चार होते हैं।

अब यह जो... यह जो नींद में विचार डाला जा सका, यह विचार तरंगों से भी डाला जा सकता है; क्योंकि विचार की तरंगें हमारे ख्याल में आ गयी हैं। जैसे कि हमें कल तक ख्याल नहीं था, जैसा हम अब जानते हैं कि ग्रामोफोन का रेकार्ड है, उस रेकार्ड पर भाषा रेकार्ड नहीं है, उस रेकार्ड पर सिर्फ तरंगों के आघात रेकार्ड हैं। और जब सूई उन तरंगों पर वापस दोहरती है तो उन्हीं तरंगों को फिर पैदा कर देती है, जिन तरंगों से वे आघात पड़े थे। वहां कोई भाषा नहीं है उस पर... रेकार्ड पर।

जैसा मैंने कहा कि अगर आप 'ओऽम्' बोलेंगे, तो रेत में एक पैटर्न (ढांचा) बनता है। वह पैटर्न ओम् नहीं है, लेकिन अगर आपको पता है कि ओम् बोलने से यह पैटर्न बनता है, तो किसी दिन इस पैटर्न को ओम् में कनवर्ट

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

(रूपांतरित) किया जा सकता है। यह पैटर्न जब बना हो ऊपर, तो इसके नीचे ओम् को पैदा किया जा सकेगा, क्योंकि यह पैटर्न उसी से बना है; ये दोनों एक चीजें हैं।

तो अब हमने ग्रामोफोन रेकार्ड बना लिया; उसमें वाणी नहीं है, उसमें सिर्फ वाणी से पड़े हुए आघात हैं। वे आघात फिर से सूई से टक्कर खाकर फिर वाणी बन जाती है।

हम आज नहीं कल, विचार के रेकार्ड बना सकेंगे। विचार के आघात पकड़े जाने लगे हैं तो रेकार्ड बनने में बहुत देर नहीं लगेगी। और तब बड़ी अजीब बात हो जायेगी। तब यह संभव है कि आइंस्टीन मर जाये, लेकिन उसके विचार करने की पूरी प्रक्रिया मशीन में हो, तो आइंस्टीन अगर जिंदा रहता तो आगे जो सोचता, वह मशीन सोचकर बता सकेगी; क्योंकि उसके सारे के सारे... उसके विचार के सारे आघात उस मशीन के पास हैं।

नींद पकड़ी जा सकी है, स्वप्न पकड़े जा सके हैं, बेहोशी पकड़ी जा सकी है – और, इस मन के साथ वैज्ञानिक रूप से क्या किया जाये, वह भी पकड़ा जा सका है; इसलिए वह भी समझ लेना चाहिए।

मनोमय जगत में वैज्ञानिक हस्तक्षेप की संभावनाएं

जैसे कि एक आदमी क्रोध में होता है। तो पुराना हमारा हिसाब यही था कि हम उसको समझायें कि क्रोध मत करो, इसके सिवाय कोई उपाय नहीं था; समझाएं कि क्रोध करोगे तो नर्क जाओगे, इसके सिवाय कोई उपाय नहीं था। लेकिन वह आदमी अगर कहे कि हम नर्क जाने को राजी हैं, तो हम असमर्थ हो जाते थे; तब उस आदमी के साथ हम कुछ भी नहीं कर सकते थे। और वह आदमी कहे, हमें नर्क जाने में बहुत मजा आता है, तो हमारी सारी नैतिकता एकदम व्यर्थ हो जाती थी; उस आदमी पर कोई बस ही नहीं था। वह तो नर्क से डरे तभी तक बस था।

इसलिए दुनिया में जैसे ही नर्क का डर गया, वैसे ही हमारी नैतिकता चली गयी; क्योंकि उसका उसे कोई डर ही नहीं रहा। वह कहता – ठीक है, कहां है नर्क ? हम देखना ही चाहते हैं एक दफा।

तो नैतिकता पूरी की पूरी खत्म हो गयी, क्योंकि वह जिस डर पर खड़ी थी वह चला गया। लेकिन विज्ञान कहता है, इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं है। विज्ञान ने अब दूसरे सूत्र को खोजे हैं। वे सूत्र ये हैं कि क्रोध के लिए शरीर में एक विशेष रासायनिक प्रक्रिया होनी ज़रूरी है, क्योंकि क्रोध एक भौतिक

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

घटना है। और जब क्रोध होता है तब शरीर में खास तरह के रस पैदा होने जरूरी हैं; वे रस रोके जा सकते हैं, क्रोध को रोकने की क्या ज़रूरत है। अगर वे रस रोके जा सकते हैं तो आदमी क्रोध करने में असमर्थ हो जायेगा।

अब हम चौदह साल के लड़के का समझा रहे हैं : ब्रह्मचर्य धारण करो; लड़की को समझा रहे हैं : ब्रह्मचर्य धारण करो। वे धारण नहीं करते। उन्होंने कभी नहीं किया। शिक्षा, सब समझाना-बुझाना कोई परिणाम नहीं लाता। विज्ञान कहता है कि अब इसकी फिक्र न करो, क्योंकि कुछ ग्लैंड्स (ग्रंथियां) हैं जिनसे सेक्स पैदा होता है, हम उन ग्लैंड्स को ही पच्चीस साल तक रोक देते हैं बढ़ने से। तो सेक्स मेच्योरिटि (प्रौढ़ता) पच्चीस साल में आयेगी, आप ब्रह्मचर्य की चिंता मत करो।

खतरनाक है यह बात, क्योंकि मन जिस दिन पूरा का पूरा वैज्ञानिक पकड़ में आ जाये, उस दिन हम उसका दुरुपयोग भी कर सकते हैं; क्योंकि विज्ञान कहता है कि जो आदमी रिबेलियस (विद्रोही) है, उस आदमी की रासायनिक कंपोज़ीशन (संरचना) उस आदमी से अलग होती है जो आर्थोडाक्स (रूढ़िवादी) है। जो आदमी क्रांति और विद्रोही चित्त का है, उस आदमी के रासायनिक कंपोज़िशन में... और वह आदमी जो परंपरावादी है और रूढ़िवादी है, उसके रासायनिक कंपोज़िशन में फर्क होता है। तब तो बड़ा खतरनाक है, क्योंकि अगर यह कंपोज़िशन हमें पता चल गया है तो हम विद्रोही को विद्रोही होने से रोक सकते हैं, रूढ़िवादी को रूढ़िवादी होने से रोक सकते हैं। जेल में किसी आदमी को मारने की ज़रूरत नहीं रह जायेगी, किसी को फांसी की सजा देने की ज़रूरत नहीं... सजा ही देने की ज़रूरत नहीं है; क्योंकि जब हमें पक्का हो गया कि एक आदमी चोरी करता है, उस चोरी के लिए यह रासायनिक तत्व अनिवार्य हैं, अन्यथा वह चोरी नहीं कर सकता, तो कोई ज़रूरत नहीं उसको जेल ले जाने की, उसको अस्पताल ले जाकर सर्जरी की जा सकती है; उसका विशेष रस बाहर किया जा सकता है – या दूसरे रस डालकर उसके पहले रस को दबाया जा सकता है; या एंटिडोट (पूर्व प्रभाव को मिटानेवाला रसायन) दिया जा सकता है। यह सारा काम चल रहा है।

यह काम बताता है कि चौथे शरीर पर तो प्रवेश में कोई कठिनाई नहीं रह गयी है। कठिनाई सिर्फ एक रह गयी है... कठिनाई सिर्फ एक रह गयी है कि बहुत बड़े विज्ञान का हिस्सा युद्ध के मामले में उलझा हुआ है, इसलिए उस पर पूरे काम नहीं हो पाते, वह गौण रह जाता है; लेकिन फिर भी बहुत काम चल रहा है, और बहुत अनूठे काम चल रहे हैं।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

आध्यात्मिक अनुभवों के रासायनिक प्रतिरूप

अब जैसे कि अल्डुअस हक्सले का दावा यह है कि कबीर को जो हुआ, या मीरा को जो हुआ, वह इंजेक्शन से हो सकता है। इस दावे में थोड़ी सच्चाई है। यह बड़ा संघातक दावा है, लेकिन इसमें सचाई है।

अगर महावीर एक महीना उपवास करते हैं, और एक महीना उपवास करके उनका मन शांत हो जाता है। उपवास भौतिक घटना है, भौतिक घटना से अगर मन शांत होता है तो मन भी भौतिक है। उपवास से होता क्या है ? एक महीने के उपवास से शरीर की पूरी रासायनिक व्यवस्था बदल जाती, और तो कुछ होता नहीं। जो भोजन मिलने चाहिए वे नहीं मिल पाते; जो तत्व शरीर में इकट्ठे हो गये थे रिज़र्वायर (संग्राहक प्रणाली) में, वे सब खत्म हो जाते; चर्बी कम हो जाती; कुछ जरूरी तत्व बचा लिये जाते हैं, गैरजरूरी नष्ट हो जाते हैं; तो शरीर का पूरा का पूरा जो रासायनिक इंतजाम था महीने भर के पहले, वह बदल जाता है।

विज्ञान कहता है कि एक महीना परेशान होने की क्या ज़रूरत है, यह रासायनिक इंतजाम उसी अनुपात में अभी बदला जा सकता है – इसी वक्त। तो अगर यह रासायनिक इंतजाम अभी बदल जायेगा तो महीने भर बाद महावीर को जो शांति अनुभव हुई, वह आपको अभी हो जायेगी। उसकी बुनियाद तो वही है।

अब जैसे मैं ध्यान में कहता हूं कि आप जोर से श्वास लें। मगर एक घंटा तीव्र श्वास लेने से होनेवाला क्या है ? सिर्फ आपके ऑक्सीजन का अनुपात बदल जायेगा। लेकिन यह ऑक्सीजन का अनुपात तो बाहर से बदला जा सकता है, इसको एक घंटा आपसे मेहनत करवाना जरूरी नहीं है। यह तो इस कमरे की ऑक्सीजन का अनुपात बदलकर भी किया जा सकता है कि यहां बैठे हुए सारे लोग शांत हो जायें, प्रफुल्लित हो जायें।

तो विज्ञान चौथे शरीर पर तो कई तरफ से प्रवेश कर गया है, और रोज प्रवेश करता जा रहा है। अब जैसे कि तुम्हें ध्यान में अनुभूतियां होंगी – सुगंध आयेगी, रंग दिखाई पड़ेंगे – ये सब ध्यान में बिना जाये भी हो सकता है... अब; क्योंकि विज्ञान ने यह सब पता लगा लिया है ठीक से कि जब तुम्हें भीतर रंग दिखाई पड़ते हैं, तुम्हारे मस्तिष्क का कौन सा हिस्सा सक्रिय होता है; उसके सक्रिय होने की तरंगें कितनी होती हैं।

समझ लें कि मेरे मस्तिष्क का पीछे का हिस्सा जब सक्रिय होता है, तब मुझे भीतर रंग दिखाई पड़ते हैं – सुंदर रंग दिखाई पड़ते हैं। यह जांच बता

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

देती है कि इस वक्त जब तुम्हें रंग दिखाई पड़ रहे हैं, तुम्हारे मस्तिष्क का कौन सा हिस्सा तरंगित है, और उसमें कितने वेव-लेंग्थ (तरंग लंबान) की तरंगें उठ रही हैं। अब कोई ज़रूरत नहीं है आपको ध्यान में जाने की; उस हिस्से पर उतनी तरंगें बिजली से पैदा कर दी जायें, आपको रंग दिखाई पड़ने शुरू हो जाते। ये सब पैरेलल (समानांतर) है; क्योंकि इस तरफ का छोर पकड़ लिया जाये, दूसरी तरफ का छोर तत्काल होना शुरू हो जाता है। इसके खतरे हैं।

स्वेच्छा मृत्यु की भी एक समस्या

कोई भी नयी खोज... और मनुष्य के जितने भीतर जाती है, उतने खतरे बढ़ते चले जाते हैं। अब जैसे कि हमें आदमी की कितनी उम्र बढ़ानी है, अब हम बढ़ा सकते हैं। अब कोई उम्र प्रकृति की बात नहीं है, विज्ञान के हाथ में आ गयी है। तो आज यूरोप और अमरीका में हजारों ऐसे बूढ़े हैं जो यह मांग कर रहे हैं... अथनासिया (स्वेच्छा मृत्यु) कि हमें स्व-मरण का अधिकार चाहिए; क्योंकि उनको लटका दिया गया है खाटों पर – वे लटके हैं और उनको ऑक्सीजन दी जा रही है, और वह अंतहीन काल तक उनको जिंदा रखा जा सकता है। अब एक नब्बे साल का बूढ़ा है, वह कहता है : हमें मरना है; लेकिन डॉक्टर कहता है, हम मरने में सहयोगी नहीं हो सकते; क्योंकि कानून उसको हत्या कहता है। अच्छा, उसका बेटा भी मन में भी सोचता हो कि पिता तकलीफ भोग रहा है तब भी खुले नहीं कह सकता कि पिता को मार डाला जाये। और पिता को अब जिलाया जा सकता है। और एक मशीनरी पैदा हो गयी है जो उसको जिलाये रखेगी। अब वह बिलकुल मरा हुआ जिंदा रहेगा। अब यह एक लिहाज़ से खतरनाक है।

हमारा पुराना जो कानून है, वह तब का है जब हम आदमी को जिंदा नहीं रख सकते थे, सिर्फ मार सकते थे। अब कानून बदलने की ज़रूरत है, क्योंकि अब हम जिंदा भी रख सखते हैं। और इतनी सीमा तक जिंदा रख सकते हैं कि वह आदमी चिल्लाकर कहने लगे कि मेरे साथ अत्याचार हो रहा है, हिंसा हो रही है... कि अब मैं जिंदा नहीं रहना चाहता हूं; यह क्या मेरे साथ हो रहा है ?

यानी कभी हम एक आदमी को सजा देते थे कि इस आदमी ने गुनाह किया है, इसकी हत्या कर दो। कोई आश्चर्य नहीं कि पचास साल बाद हम एक आदमी को सजा दें कि इस आदमी ने गुनाह किया है, इसको मरने मत देना। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। और यह पहली सजा से ज्यादा बड़ी सजा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

सिद्ध होगी; क्योंकि मर जाना एक क्षण का मामला है और जिंदा रहना सदियों का हो सकता है।

तो जब भी कोई नयी खोज होती है, और मनुष्य के भीतर होती है, तो उसके दोहरे परिणाम होंगे : इधर नुकसान का भी खतरा है, फायदा भी हो सकता है। ताकत जब भी आती है तो दोतरफा होती है।

बीसवीं सदी के अंत तक विज्ञान का मनस शरीर पर अधिकार

अब मनुष्य के चौथे शरीर पर विज्ञान चला गया, जा रहा है। और आने वाले पचास वर्षों में – पचास वर्ष नहीं कहने चाहिए, आनेवाले तीस वर्षों में, क्योंकि यह बात तुम्हें शायद ख्याल में न हो कि हर सदी के अंत पर, उस सदी ने जो कुछ किया है वह क्लाइमेक्स (चरम-स्थिति) पर पहुंच जाता है – हर सदी के अंत पर; उस सदी में जो भी पैदा होता है, सदी के अंत होते-होते वह अपनी चरम स्थिति में आ जाता है। तो हर सदी अपने काम को अपने अंत तक पूरा करती है। इस सदी ने बहुत से काम उठा रखे हैं जो कि तीस साल में पूरे होंगे। उनमें मनुष्य के मनस शरीर पर प्रवेश बहुत बड़ा काम है जो पूरा हो जायेगा।

आत्म शरीर में भाषागत बाधाओं का अतिक्रमण

पांचवां जो शरीर है, जिसको मैं आत्म शरीर कह रहा हूं, वह चौथे का भी सूक्ष्मतम रूप है। विचार की ही तरंगें नहीं हैं, मेरे होने की भी तरंगें हैं। अगर मैं बिलकुल भी चुप बैठा हूं, और मेरे भीतर कोई विचार नहीं चल रहा है, तब भी... मेरा होना भी तरंगित हो रहा है। तुम अगर मेरे पास आओ, और मेरे पास कोई विचार नहीं है, तब भी तुम मेरी तरंगों के क्षेत्र में आओगे। और मजा यह है कि मेरे विचार की तरंगें उतनी मजबूत नहीं हैं, और उतनी पेनिट्रेटिंग (भेदक) नहीं हैं, जितनी सिर्फ मेरे होने की तरंगें हैं।

इसलिए जिस आदमी की निर्विचार स्थिति बन जाती है, वह बहुत प्रभावी हो जाता है; उसके प्रभाव का कोई हिसाब लगाना मुश्किल है। उसके प्रभाव का हिसाब लगाना ही मुश्किल है; क्योंकि उसके भीतर से अस्तित्व की तरंगें उठनी शुरू हो जाती हैं। वह आदमी की जानकारी में सबसे सूक्ष्म तरंगें हैं – आत्मशरीर की।

इसलिए बहुत बार ऐसा हुआ है, जैसे महावीर के संबंध में जो बात है वह सही है... कि वे बोले नहीं, बहुत कम बोले; शायद नहीं ही बोले। वे सिर्फ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बैठे रहेंगे। लोग उनके पास आकर बैठ जायेंगे और समझ लेंगे, चले जायेंगे। यह उस दिन संभव था, यह आज बहुत कठिन हो गया है। आज इसलिए कठिन हो गया है कि अस्तित्व की जितनी... आत्म शरीर की जो गहरी तरंगें हैं, वे आप भी तभी अनुभव कर पायेंगे, जब आप भी विचार को खोने को तैयार हों, नहीं तो आप अनुभव... आप अगर बहुत न्वाएज़ (कोलाहल) से भरे हैं अपने विचारों के, तो वे बहुत सूक्ष्म तरंगें चूक जायेंगी; आपके आरपार निकल जायेंगी, आप उनको पकड़ नहीं पायेंगे।

तो अस्तित्व की तरंगें अगर पकड़ में आने लगें, और दोनों तरफ अगर निर्विचार हो, तो बोलने की कोई जरूरत ही नहीं है। तब हम ज्यादा गहरे में कोई बात कह पाते हैं और वह सीधी चली जाती है। उसमें तुम व्याख्या भी नहीं करते, व्याख्या का उपाय भी नहीं होता, उसमें डावांडोल भी नहीं होते – ऐसा होगा कि नहीं होगा, यह भी नहीं होता; वह तो सीधा तुम्हारा अस्तित्व जानता है कि हो गया।

इस पांचवें शरीर पर जो बात है, इस पांचवें शरीर की तरंगें ज़रूरी नहीं है कि आदमी को ही मिलें। इसलिए महावीर के जीवन में एक और अदभुत घटना है... कि उनकी सभा में जानवर भी रहते हैं। इसको जैन साधु नहीं समझा पाता अब तक कि क्या मामला है। वह समझा भी नहीं पायेगा। उनकी सभा में जानवर भी रहते, यह तभी संभव है, क्योंकि जानवर आदमी की भाषा तो नहीं समझ सकता, लेकिन बीइंग की, होने की भाषा तो उतनी ही समझता है। उसमें कोई फर्क नहीं है। अगर मैं निर्विचार होकर एक बिल्ली के पास बैठा हूं, तो बिल्ली तो निर्विचार है। तुमसे तो मुझे बात ही करनी पड़ेगी, क्योंकि तुम्हें बिल्ली के निर्विचार तक ले जाना भी एक लंबी यात्रा है। तो इसमें कोई कठिनाई नहीं है। अगर आत्म शरीर से तरंगें निकल रही हों, तो उसको पशु भी समझ सकते हैं, पौधे भी समझ सकते हैं, पत्थर भी समझ सकते हैं। इसमें कोई कठिनाई नहीं है।

इस शरीर तक भी प्रवेश हो जायेगा, पर चौथे के बाद ही हो सकेगा। और चौथे में प्रवेश हो गया है, उसके द्वार कई जगह से तोड़ लिये गये हैं।

आत्म शरीर तक विज्ञान की पहुंच

तो आत्म-स्थिति को तो विज्ञान जल्दी स्वीकार कर लेगा, बाद में जरा कठिनाई है।

इसलिए मैंने कहा कि पांचवें शरीर तक चीजें बड़ी वैज्ञानिक ढंग से साफ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

हो सकती हैं, बाद में कठिनाई होनी शुरू हो जाती। उसके कारण हैं; क्योंकि विज्ञान को अगर ठीक से हम समझें तो वह स्पेशेलाइज़ेशन है, वह किसी एक दिशा में विशेषज्ञता है, चुनाव है। इसलिए विज्ञान उतना ही गहरा होता जाता है जितना वह किसी चीज के संबंध में... कम से कम चीज के संबंध में, ज्यादा से ज्यादा जानने लगता है – टु नो अबाउट दि लिटल एंड टु नो मोर। तो दोहरा काम है उसका : ज्यादा जानता है लेकिन और छोटी चीज के संबंध में, और छोटी चीज के संबंध में, और छोटी चीज के संबंध में – छोटी चीज करता जाता है और ज्ञान को बढ़ाता जाता है।

जैसे पहले एक डॉक्टर था तो पूरे शरीर के संबंध में जानता था, अब कोई डॉक्टर पूरे शरीर के संबंध में नहीं जानता। और अगर वैसा कोई पुराना डॉक्टर बच गया है, तो वह सिर्फ रेलिक्स (ऐतिहासिक नमूना) है; वे चले जायेंगे, वे बच नहीं सकते। वे पुराने खंडहर हैं जिनको विदा हो जाना पड़ेगा; क्योंकि वह डॉक्टर अब भरोसे के योग्य नहीं रह गया; वह इतनी ज्यादा चीजों के संबंध में जानता है कि ज्यादा नहीं जान सकता, कम ही जान सकता है। अब आंख का डॉक्टर अलग है, कान का डॉक्टर अलग है, वह ज्यादा भरोसे के योग्य है; क्योंकि वह इतनी छोटी चीज के संबंध में जानता है कि ज्यादा जान सकता है। आज तो आंख पर ही इतना साहित्य है कि एक आदमी अपनी पूरी जिंदगी भी जानने में लगाये तो पूरा साहित्य नहीं जान सकता। इसलिए आज नहीं कल, बायीं आंख और दायी आंग का डॉक्टर अलग हो सकता है। बांटना पड़ सकता है। कल हम आंख में भी विभाग कर सकते हैं कि कोई सफंद हिस्से के संबंध में जाता है, कोई काले... क्योंकि वे भी बहुत बड़ी घटनाएं हैं। और उनमें भी अगर विस्तार में... और विज्ञान का मतलब ही यह है कि वह रोज छोटा करता जाता है अपना फोकस (केंद्र-बिंदु)। इसलिए विज्ञान बहुत जान पाता है। उसका फोकस होता है कम, कंसेंट्रेटेड (सघन) हो जाता है।

ब्रह्म शरीर और निर्वाण शरीर के रहस्य में विज्ञान का खो जाना

तो पांचवें शरीर तक, मैं कहता हूं : विज्ञान का प्रवेश हो सकेगा; क्योंकि पांचवें शरीर तक इंडीवीजुअल (व्यक्ति) है। इसलिए फोकस में, पकड़ में आ जाता है।

छठवें से कॉस्मिक (ब्रह्म) है; फोकस में, पकड़ में नहीं आता। छठवां जो है वह कॉस्मिक बॉडी है, ब्रह्म शरीर है। ब्रह्म शरीर का मतलब है – दि

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

टोटल (समग्रता)। वहां विज्ञान प्रवेश नहीं कर पायेगा; क्योंकि विज्ञान छोटे, और छोटे, और छोटे पर जा सकता है। तो वह व्यक्ति तक पकड़ लेगा, व्यक्ति के बाद उसकी दिक्कत है; कास्मिक को पकड़ना उसकी दिक्कत है। कॉस्मिक को तो धर्म ही पकड़ेगा।

इसलिए आत्मा तक विज्ञान को कठिनाई नहीं आयेगी, कठिनाई आयेगी परमात्मा पर। वहां मैं नहीं समझ पाता कि किसी दिन संभव हो पायेगा कि विज्ञान पकड़े, क्योंकि वहां तभी पकड़ सकता है जब वह स्पेशेलाइज़ेशन (विशेषज्ञता) छोड़े। और स्पेशेलाइज़ेशन छोड़े कि वह विज्ञान नहीं रह गया, वह वैसे ही वेग (धुंधला) और जनरलाइज़्ड (अनिश्चित और अनुमानगत) हो जायेगा, जैसा धर्म है।

इसलिए मैंने कहा कि पांचवें तक विज्ञान के साथ सहारा और यात्रा हो सकेगी; छठवें पर वह खो जायेगा; और सातवें पर तो बिलकुल ही नहीं जा सकता, क्योंकि विज्ञान की सारी खोज जीवन की खोज है।

असल में हमारी जो जीवन की आकांक्षा है, जो जीवेषणा है कि हम जीना चाहते हैं – कम बीमार, ज्यादा स्वस्थ, ज्यादा देर, ज्यादा सुख से, ज्यादा सुविधा से। विज्ञान की मूल प्रेरणा ही जीवन को गहरा, सुखद, संतुष्ट, शांत, स्वस्थ बनाने की है, और सातवां शरीर जो है वह मृत्यु का अंगीकार है; वह महामृत्यु है। वहां साधक जीवन की खोज के पार आ गया; अब वह कहता है : हम मृत्यु को भी जानना चाहते हैं; हमने होना जान लिया, अब हम न होना भी जानना चाहते हैं; हमने बीइंग जान लिया, अब नॉन-बीइंग भी जानना चाहते हैं।

वहां विज्ञान का कोई अर्थ नहीं है। तो वैज्ञानिक तो वहां कहेगा, जैसा फ्रायड कहता है कि डेथ विश (मृत्यु-कामना), यह अच्छी बात नहीं है, यह सुसाइडल (आत्मघाती) है। फ्रायड कहता है : यह अच्छी बात नहीं है – निर्वाण, मोक्ष, ये ठीक बातें नहीं हैं; ये आपके मरने की इच्छा के सबूत हैं – आप मरना चाहते हैं; आप बीमार हैं। वह इसीलिए कह रहा है, क्योंकि वैज्ञानिक मरने की इच्छा को इनकार ही करेगा, क्योंकि विज्ञान खड़ा ही जीवन की इच्छा के विस्तार पर है। लेकिन, जो आदमी जीना चाहता है वह स्वस्थ है – लेकिन एक घड़ी ऐसी आती है, जब मरना चाहना भी उतना ही स्वस्थ हो जाता है। हां, बीच में कोई मरना चाहे तो अस्वस्थ है; लेकिन एक घड़ी जीवन की ऐसी आ जाती है जब कोई मरना भी चाहता है।

कोई कहे कि जागना तो स्वस्थ है और सोना स्वस्थ नहीं है। ऐसा हुआ

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

जा रहा है... कि हम रात का समय दिन को देते जा रहे हैं। पहले छह बजे रात हो जाती थी, अब दो बजे होने लगी है; रात का समय दिन को दिये जा रहे हैं। और कुछ विचारक हैं जो कहते हैं कि किसी तरह से आदमी को नींद से बचाया जा सके, तो उसकी जिंदगी में बहुत समय बच जायेगा। नींद की इच्छा ही क्यों ? इसको छोड़ ही दिया जाये किसी तरह से।

लेकिन जैसे जागने का एक आनंद है, ऐसे सोने का एक आनंद है। और जैसे जागने की इच्छा भी स्वाभाविक और स्वस्थ है, ऐसे ही एक घड़ी सो जाने की इच्छा भी स्वस्थ और स्वाभाविक है। अगर कोई आदमी मरते दम तक भी जीने की आकांक्षा किये जाता है तो अस्वस्थ है; और अगर कोई आदमी जन्म से ही मरने की आकांक्षा करने लगता है, वह भी अस्वस्थ है। एक बच्चा अगर मरने की आकांक्षा करता है तो बीमार है, उसका इलाज होना चाहिए। और अगर एक बूढ़ा भी जीना चाहता है तो बीमार है, उसका इलाज होना चाहिए।

महाशून्य में परम विसर्जन परम स्वास्थ्य है

जीवन और मृत्यु दो पैर हैं अस्तित्व के। आप एक को स्वीकार करते हैं तो लंगड़े ही होंगे; दूसरे को स्वीकार नहीं करेंगे तो लंगड़ापन कभी नहीं मिटेगा। दोनों पैर हैं – होना भी और न होना भी। और वही आदमी परम स्वस्थ है जो दोनों का एक सा आलिंगन कर लेता है – होने को भी, न होने को भी; जो कहता है : होना भी जाना और अब न होना भी जान लें; जिसे न होने में कोई भय नहीं है।

तो सातवां जो शरीर है, वह तो सिर्फ उन्हीं साहसी लोगों के लिए है जिन्होंने जीवन जान लिया और अब जो मृत्यु भी जानना चाहते हैं; जो कहते हैं, इसे भी खाजेंगे; जो कहते हैं, हम इसे भी जानेंगे; जो कहते हैं, हम मिट जाने को भी जानना चाहते हैं... कि मिट जाना क्या है ? यह खो जाना क्या है ? यह न हो जाना क्या है ? जीने का रस देखा, अब मृत्यु का रस भी देखना है।

अब तुम्हें इस संबंध में यह भी जान लेना उचित होगा कि जो हमारी मृत्यु है, वह सातवें शरीर से ही आती है – साधारण मृत्यु भी... वह हमारे सातवें शरीर से आती है; और जो हमारा जीवन है, वह हमारे पहले शरीर से आता है। तो जन्म जो है, वह भौतिक शरीर से शुरू होता है। जन्म का मतलब ही है... भौतिक शरीर की शुरुआत।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

इसलिए मां के पेट में पहले भौतिक शरीर निर्मित होता है, फिर और शरीर प्रवेश करते हैं। पहला शरीर हमारा जन्म की शुरुआत है, और अंतिम शरीर जिसको निर्वाण शरीर मैंने कहा, वहां से हमारी मृत्यु आती है। और जो इस भौतिक शरीर को जोर से पकड़ लेता है, वह इसलिए मौत से बहुत डरता है। और जो मौत से डरता है, वह सातवें शरीर को नहीं जान पायेगा कभी। इसलिए धीरे-धीरे, भौतिक शरीर से पीछे हटते-हटते वह घड़ी आ जाती है, जब हम मौत को भी अंगीकार कर लेते हैं; तभी हम जान पाते हैं। और जो मौत को जान लेता है, वह परिपूर्ण अर्थों में मुक्त हो जाता है; क्योंकि तब जीवन और मृत्यु एक ही चीज के दो पहलू हो जाते हैं, और वह दोनों के बाहर हो जाता है।

वैज्ञानिक बुद्धि और धार्मिक हृदय : एक दुर्लभ संयोग

यह सातवें शरीर तक विज्ञान कभी जायेगा, इसकी कोई आशा नहीं है; छठवें शरीर तक जा सकेगा, इसकी संभावना नहीं है; पांचवें तक जा सकता है, क्योंकि चौथे के द्वार खुल गये हैं और पांचवें पर जाने में कोई कठिनाई नहीं रह गयी, वस्तुतः। सिर्फ ऐसे लोगों की ज़रूरत है जिनके पास वैज्ञानिक बुद्धि हो और जिनके पास धार्मिक हृदय हो... वे अभी प्रवेश कर जायें। यह मुश्किल कॉम्बिनेशन (संयोग) है थोड़ा; क्योंकि वैज्ञानिक की जो ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) है, वह उसे धार्मिक होने से कई दिशाओं से रोक देती है; और धार्मिक की जो ट्रेनिंग है, उसे वैज्ञानिक होने से कई दिशाओं से रोक देती है। तो इन दोनों ट्रेनिंग का कहीं ओवरलैपिंग (मिलन) नहीं हो पाता, इससे बड़ी कठिनाई है।

कभी ऐसा होता है। जब भी ऐसा होता है, तब दुनिया में एक नयी पीक, ज्ञान का एक नया शिखर पैदा हो जाता है – जब भी कभी ऐसा होता है। जैसे पतंजलि। अब वह आदमी वैज्ञानिक बुद्धि का है और धर्म में प्रवेश कर गया। तो उसने योग को एक चोटी पर पहुंचा दिया, जिसके बाद फिर उस चोटी को पार करना अब तक संभव नहीं हुआ है। एक ऊंचाई पर बात चली गयी, पतंजलि को मरे बहुत वक्त हो गया है, बहुत काम हो सकता था, लेकिन पतंजलि जैसा आदमी नहीं मिल सका, जिसके पास एक वैज्ञानिक की बुद्धि थी और जिसके पास एक धार्मिक साधना का जगत था। एक ऐसे शिखर पर बात पहुंच गयी कि उसके बाद फिर योग का कोई शिखर दूसरा उससे ऊंचा नहीं उठा सका। अरविंद ने बहुत कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सके।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

अरविंद के पास भी एक वैज्ञानिक की बुद्धि थी... और शायद पतंजलि से ज्यादा थी; क्योंकि सारा शिक्षण उनका पश्चिम में हुआ। अरविंद का शिक्षण बड़ा महत्त्वपूर्ण है। बाप ने अरविंद को हिंदुस्तान से बहुत छोटी उम्र में, पांच-छः वर्ष की उम्र में भेज दिया, और सख्त मनाही की कि अब इसे हिंदुस्तान तब तक वापस नहीं लौट आना है जब तक कि यह पूरा मेच्योर (प्रौढ़) न हो जाये। यह हालत आ गयी कि बाप के मरने का वक्त आ गया और लोगों ने चाहा कि अरविंद को वापस भेज दें; उन्होंने कहा कि नहीं, मैं मर जाऊं, यह बेहतर, लेकिन लड़का पूरी तरह पश्चिम को पीकर लौटे; पूरब की छाया भी न पड़ जाये उस पर; उसे खबर भी न दी जाये कि मैं मर गया। हिम्मतवर बाप था। तो अरविंद पूरे पश्चिम को पीकर लौटे। अगर हिंदुस्तान में कोई आदमी ठीक अर्थों में वेस्टर्न (पाश्चात्य का) था तो वह अरविंद थे। वह अपनी भाषा उनको लौटकर सीखनी पड़ी... मातृभाषा। वे तो सब भूलभाल गये थे।

तो विज्ञान तो पूरा हो गया इस आदमी में, लेकिन धर्म पीछे से आरोपित था, वह बहुत गहरा नहीं जा सका। धर्म जो था वह बहुत बाद में ऊपर से प्लांटेड (रोपित) था, वह बहुत गहरा नहीं जा सका, नहीं तो पतंजलि से ऊंचे शिखर अरविंद छू सकते थे। वह नहीं हो सका। वह ट्रेनिंग जो थी पश्चिम की, वह बहुत गहरे अर्थों में बाधा बन गयी। और बाधा इस तरह से बन गयी कि वे, जैसा वैज्ञानिक सोचता है, वे उसी तरह से सोचने में लग गये। तो डार्विन की सारी एवोल्यूशन (विकासवाद) वे धर्म में ले आये। पश्चिम से जो-जो ख्याल लाये थे, उन सबको धर्म में उन्होंने प्रविष्ट कर दिया; लेकिन धर्म का उनके पास कोई ख्याल नहीं था, जिसे विज्ञान में प्रविष्ट कर दें। इसलिए विज्ञान की बड़ी काया, बड़ा वॉल्यूमिनस (विराटकाय) साहित्य उन्होंने रच डाला, लेकिन उसमें धर्म नहीं है; धर्म उसमें बहुत ऊपरी है।

जब भी कभी ऐसा हुआ है कि वैज्ञानिक बुद्धि और धार्मिक बुद्धि का कहीं कोई तालमेल हो गया है तो बड़ा शिखर छुआ जा सकता है। ऐसा पूरब में हो सकेगा इसकी संभावना कम होती जाती है, क्योंकि पूरब के पास धर्म भी खो गया है और विज्ञान तो है ही नहीं। पश्चिम में ही यह हो सके उसकी संभावना ज्यादा है, क्योंकि विज्ञान अतिशय हो गया है। और जब भी कोई अतिशय हो जाती है चीज, तो पैंडुलम दूसरी तरफ झूलना शुरू हो जाता है। तो पश्चिम का जो बहुत बुद्धिमान वर्ग है, वह जिस रस से अब गीता को पढ़ता है, उस रस से हिंदुस्तान में कोई नहीं पढ़ता।

जब पहली दफा शॉपनहार ने गीता पढ़ी तो सिर पर रखकर वह नाचने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

लगा – नाचता हुआ घर के बाहर आ गया; और लोगों ने कहा – क्या हो गया, पागल हो गये हो ? उसने कहा कि यह ग्रंथ पढ़ने योग्य नहीं, सिर पर रखकर नाचने योग्य है। मुझे पता ही नहीं था कि ऐसी बात कहनेवाले लोग भी हो गये हैं। यह क्या कह दिया ! यह भाषा में आ सकता है ? यह शब्द में बंध सकता है ? मैं तो सोचता था : बंध ही नहीं सकता; यह तो बंध गया; यह तो कुछ बात कह दी गयी।

अब हिंदुस्तान में गीता सिर पर रखकर नाचनेवाला आदमी नहीं मिलेगा। हां, बहुत लोग मिलेंगे जो गीता को बैलगाड़ी बनाकर, और उस पर सवार होकर चल रहे हैं। वे लोग मिलेंगे। वह उनसे कोई... उनसे कोई अर्थ नहीं होता है।

पर इस सदी के पूरे होते-होते एक बड़ा शिखर छू लिया जा सकेगा, क्योंकि जब ज़रूरत होती है तो हज़ार-हज़ार कारण सारे जगत में सक्रिय हो जाते हैं। आइंस्टीन मरते-मरते धार्मिक आदमी होकर मरा है – जीते जी वैज्ञानिक था, मरते-मरते धार्मिक आदमी होकर मरा। इसलिए जो दूसरे बहुत अतिशय वैज्ञानिक हैं, वे कहते हैं : आइंस्टीन की आखिरी बातों को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए; उसका दिमाग खराब हो गया होगा। क्योंकि आखिर-आखिर में उसने जो कहा है, वह बहुत अदभुत है। आइंस्टीन आखिरी-आखिरी वक्त कहते मरा है कि मैं सोचता था – जगत को जान लूंगा; लेकिन जितना जाना उतना पाया कि जानना असंभव है, जानने को अनंत शेष है; और मैं सोचता था कि एक दिन विज्ञान जगत के रहस्य को तोड़कर गणित का सवाल बना देगा, मिस्ट्री (रहस्य) खतम हो जायेगी, लेकिन गणित का सवाल बड़ा होता चल गया – जगत की मिस्ट्री तो कम न हुई, गणित का सवाल ही और बड़ी मिस्ट्री हो गया; अब उसको भी हल करना मुश्किल है।

आधुनिक विज्ञान धर्म की प्रतिध्वनि में

पश्चिम में और भी चोटी के दो-चार वैज्ञानिक धर्म की परिधि के करीब घूम रहे हैं। विज्ञान में ही वैसी संभावनाएं पैदा हो गयी हैं, क्योंकि वह जैसे ही तीसरे शरीर के करीब पहुंच रहा है – दूसरे को वह पार कर गया है – जैसे ही वह तीसरे के करीब पहुंच रहा है, धर्म की प्रतिध्वनियां अनिवार्य हैं; क्योंकि अब वह अनसर्टेन्टी के, प्रोबेबलिटि के, अनिश्चय के, अननोन (अज्ञात) के जगत में खुद ही प्रवेश कर रहा है; अब उसको कहीं न कहीं स्वीकार करना पड़ेगा : अज्ञात है; अब उसको स्वीकार करना पड़ेगा : जो दिखाई पड़ता है

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

उससे अतिरिक्त भी है; जो नहीं दिखाई पड़ता वह भी है; जो नहीं सुनाई पड़ता वह भी है। क्योंकि आज से सौ ही साल पहले हम कह रहे थे – जो नहीं सुनाई पड़ता वह नहीं है; जो नहीं दिखाई पड़ता वह नहीं है; जो नहीं स्पर्श में आता वह नहीं है। अब विज्ञान कहता है, नहीं... इतना है कि स्पर्श में तो बहुत कम आता है, स्पर्श की तो बड़ी सीमा है, अस्पर्श का बड़ा विस्तार है। इतना है कि सुनाई तो बहुत कम पड़ता है, न सुनाई पड़नेवाला अनंत है। इतना है कि दिखाई तो छोटा सा पड़ता है, न दिखाई पड़नेवाला अदृश्य, अछोर है।

असल में अब हमारी आंख जितना पकड़ती है, बहुत छोटा सा पकड़ती है।

एक खास वेवलेंग्थ (तरंग-लंबान) पर हमारी आंख पकड़ती है; और एक खास वेवलेंग्थ पर हमारा कान सुनता है; और उसके नीचे करोड़ों वेवेलेंग्थ हैं और उसके ऊपर करोड़ों वेवलेंग्थ हैं। कभी ऐसी भूल हो जाती है...

एक आदमी पिछली दफा आल्प्स पर, कहीं किसी पहाड़ पर चढ़ता था और गिर पड़ा। गिरने से उसके कान को चोट लगी, और वह जिस गांव का रहनेवाला था, उसके रेडियो स्टेशन को उसने पकड़ना शुरू कर दिया... कान से। जब वह अस्पताल में भर्ती था तो वह बहुत मुश्किल में पड़ गया। वह दिनभर... वहां कोई ऑन-ऑफ (चालू-बंद) करने का उपाय नहीं कान में अभी। पहले तो वह समझा कि कुछ... क्या हो रहा है ? मेरा दिमाग खराब हो रहा है या क्या हो रहा है ! लेकिन धीरे-धीरे चीजें साफ होने लगीं; और उसने डॉक्टर से कहा, यह क्या हो रहा है ? आसपास कोई रेडियो बजाता है या क्या बात है ? अस्पताल में... क्योंकि मुझे सब सुनाई पड़ता है। उसने कहा, रेडियो अस्पताल में कहां बज रहा है ? आपको वहम हो गया होगा। उसने कहा कि नहीं, मुझे ये-ये समचार सुनाई पड़ रहे हैं। डॉक्टर भागा, बाहर गया, ऑफिस में जाकर रेडियो बजाया। उस वक्त तो उसके गांव के स्टेशन पर समाचार सुनाई पड़ रहे थे; जो उसने बताये थे, वह बताया जा रहा था। फिर तो तालमेल बिठाया गया – पाया गया कि उसका कान सक्रिय हो गया है। उसका कान जो है उसकी वेवलेंग्थ बदल गयी चोट लगने से।

आज नहीं कल... रेडियो ऐसा अलग हो, यह गलत है – आज नहीं कल, यह इंतजाम हो जायेगा कि हम कान की वेवलेंग्थ सीधे डाइवर्ट (दिशा परिवर्तन) कर सकें – कान में एक मशीन ऊपर से लगा लें, उसकी वेवलेंग्थ बदल सकें तो उस स्तर पर सुन सकते हैं।

करोड़ों आवाजें हमारे आसपास से गुजर रही हैं। छोटी-मोटी आवाजें

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized By Madhuban Trust

नहीं, क्योंकि हमें कुछ अपने कान के नीचे की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ती, उससे बड़ी आवाज भी सुनाई नहीं पड़ती। अगर एक तारा टूटता है तो उसकी भयंकर गर्जना की आवाज हमारे चारों तरफ से निकलती है, लेकिन हम सुन नहीं पाते, नहीं तो हम बहरे हो जायें। बड़ी-बड़ी आवाजें निकल रही हैं, बड़ी छोटी आवाजें निकल रही हैं, वे हमारी पकड़ में नहीं हैं। बस एक छोटा सा दायरा है हमारा।

जैसे कि हमारे शरीर की गर्मी का एक दायरा है कि अठानबे डिग्री से एक सौ दस डिग्री के बीच हम जीते हैं। इधर अठानबे से नीचे गिरना शुरू हुए कि मरने के करीब पहुंचे, उधर एक सौ दस के पार गये कि मरे। यह दस-बारह डिग्री की हमारी कुल दुनिया है। गर्मी बहुत है – आगे ज्यादा भी बहुत है, पीछे कम भी बहुत है। उससे हमारा कोई संबंध नहीं है।

इसी तरह हर चीज की हमारी एक सीमा है, पर उस सीमा के बाहर जो है उसके बाबत ? ...वह भी है। विज्ञान ने उसकी स्वीकृति शुरू कर दी है। स्वीकृति होती है फिर धीरे से खोज शुरू हो जाती है कि वह कहां है, कैसी है, क्या है। उस सबको जाना जा सकेगा; उस सबको पहचाना जा सकेगा। और इसलिए मैंने कहा था कि पांचवें तक संभव हो सकता है।

प्रश्न : नानबीइंग (अनस्तित्व) को कौन जानता है और किस आधार पर जानता है ?

न, यह सवाल नहीं है, यह सवाल नहीं उठेगा। यह सवाल न उठेगा, न बन सकता है; क्योंकि जब हम कहते हैं कि न होने को कौन जानता है, तो हमने मान लिया कि अभी कोई बचा, फिर 'न होना' नहीं हुआ।

निर्वाण शरीर के अनुभव की कोई अभिव्यक्ति नहीं

प्रश्न : रिपोर्टिंग (घोषणा, अभिव्यक्ति) कैसे होगी ?

कोई रिपोर्टिंग नहीं होती... कोई रिपोर्टिंग नहीं होती। ऐसा होता है... ऐसा होता है, जैसे रात को तुम सोते हो – जब तक तुम जागे होते हो तभी तक का तुम्हें पता होता है, जिस वक्त तुम सो जाते हो उस वक्त तुम्हें पता नहीं होता; जागते तक का पता होता है। तो रिपोर्टिंग जागने की करते हो तुम, लेकिन आमतौर से तुम कहते उलटा हो – वह रिपोर्टिंग गलत है – तुम कहते हो : मैं आठ बजे सो गया, तुम्हें कहना चाहिए मैं आठ बजे तक जगता था; क्योंकि सोने की तुम रिपोर्ट नहीं कर सकते; क्योंकि सो गये तो रिपोर्ट कौन करेगा ? उस तरफ से रिपोर्ट होती है कि मैं आठ बजे तक जागता था – यानी

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

आठ बजे तक मुझे पता था कि अभी मैं जाग रहा हूं, लेकिन आठ बजे के बाद मुझे पता नहीं । फिर मैं सुबह छह बजे उठ आया, तब मुझे पता है । बीच में एक गैप छूट गया – आठ बजे और छह बजे के बीच का; उस वक्त मैं सोया था, यह इन्फ्रेंस (अनुमान) है, यह उदाहरण के लिए तुमसे कह रहा हूं । उदाहरण के लिए तुमसे कह रहा हूं कि तुम्हें छठवें शरीर तक का पता होगा, सातवें शरीर में तुम डुबकी लगाकर छठवें में वापिस आओगे, तब तुम कहोगे कि अरे, मैं कहीं और चला गया था, नॉनबीइंग (अनस्तित्व) हो गया था ।

यह जो रिपोर्टिंग है, यह रिपोर्टिंग छठवें शरीर तक है । इसलिए सातवें शरीर के बाबत कुछ लोगों ने बात ही नहीं की । नहीं करने का भी कारण था, क्योंकि जिसको नहीं कहा जा सकता उसको कहना ही क्यों ।

अभी एक आदमी था विटगेंस्टीन, उसने बड़ी कीमती कुछ बातें लिखीं । उसमें एक बात उसकी यह भी है, कि दैट विच कैन नॉट बी सेड, मस्ट नॉट बी सेड – जो नहीं कही जा सकती उसको कहना ही नहीं चाहिए, क्योंकि बहुत लोगों ने उसको कह दिया और हमको दिक्कत में डाल दिया । क्योंकि वह साथ उनकी शर्त यह भी है कि नहीं कही जा सकती और फिर कहा भी है, तो वह कहना जो है वह निगेटिव रिपोर्टिंग है । वह उस स्थिति की नहीं, उस स्थिति के पहले तक की... आखिरी पड़ाव तक की खबर है... कि यहां तक मैं था, इसके बाद मैं नहीं था; क्योंकि इसके बाद मैं, न जाननेवाला था, न जानने को बचा था; न कोई रिपोर्ट लानेवाला था, न कोई रिपोर्ट की जगह थी – मगर एक सीमा के बाद यह हुआ था, उस सीमा के पहले मैं था ।

बस, तो वह सीमारेखा छठवें शरीर की सीमारेखा है ।

अगम, अगोचर, अवर्णनीय निर्वाण

छठवें शरीर तक वेद, उपनिषद, गीता, बाइबिल जाते हैं । असल में जो अगोचर और अवर्णनीय जो है, वह सातवां है । छठवें तक कोई अड़चन नहीं है । पांचवें तक तो बड़ी सरलता है । लेकिन उसकी कोई... क्योंकि बचता नहीं कोई जाननेवाला; जानने को भी कुछ नहीं बचता – असल में जिसको हम बचना कहें, वही नहीं बचता । तो यह जो... यह जो खाली अंतराल है, यह जो शून्य है, इसको हम कहेंगे, तो हमारे सब शब्द निषेधात्मक होंगे । इसलिए वेद-उपनिषद कहेंगे – नेति, नेति । वे कहेंगे कि यह मत पूछो, वहां क्या था; यह हम बता सकते हैं, क्या-क्या नहीं था – दिस इज़ नॉट, दैट इज़ नॉट; यह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

भी नहीं था, वह भी नहीं था। और यह मत पूछो कि क्या था; वह हम न कहेंगे – हम इतना ही बता सकते हैं कि यह भी नहीं था – पत्नी भी नहीं थी, पिता भी नहीं था, पदार्थ भी नहीं था, अनुभव भी नहीं था, ज्ञान भी नहीं था, मैं भी नहीं था, अहंकार भी नहीं था, जगत भी नहीं था, परमात्मा भी नहीं था – नहीं था; क्योंकि यह हमारे छठवें की सीमारेखा बनती है। क्या था ? तो एकदम चुप हो जायेंगे; उसको नहीं कहा जा सकेगा।

निर्वाण शरीर की अभिव्यक्ति के लिए बुद्ध का सर्वाधिक प्रयास

इसलिए ब्रह्म तक खबरें दे दी गयी हैं। इसलिए जिन लोगों ने ब्रह्म के बाद की ख़बरें दीं... खबर तो निषेधात्मक होगी, इसलिए वह हमको निगेटिव लगेगी – जैसे बुद्ध... बुद्ध ने बड़ी मेहनत की... उसके बाबत खबर देने की। इसलिए सब नकार है, इसलिए सब निषेध है, इसलिए हिंदुस्तान के मन को बात नहीं पकड़ी। ब्रह्मज्ञान हिंदुस्तान को पकड़ता था, वहां तक पॉज़िटिव (विधेय) चलता है : ब्रह्म ऐसा है – आनंद है, चित् है, सत् है – यहां तक चलता है। यहां तक पॉज़िटिव एसर्शन (विधेयात्मक घोषणा) हो जाता है; हम कह सकते हैं – यह है, यह है, यह है। बुद्ध ने, जो-जो नहीं है उसकी बात कही। वह सातवें की बात करने की... शायद उस अकेले आदमी ने सातवें की बात करने की बड़ी मेहनत की।

इसलिए बुद्ध की जड़ें उखड़ गयीं इस मुल्क से, क्योंकि वे... वे जिस जगह की बात कर रहे थे वहां जड़ें नहीं हैं; जिस जगह की बात कर रहे थे वहां के लिए कोई आकार नहीं है, रूप नहीं है। हम सब सुनते थे, हमें लगा कि बेकार है, वहां ...वहां जाकर भी क्या करेंगे जहां कुछ भी नहीं है। हमें तो कुछ ऐसी जगह बताइये जहां हम तो होंगे कम से कम। बुद्ध ने कहा, तुम तो होओगे ही नहीं। तो हमें लगा कि फिर इस खतरे में क्यों पड़ना ! हम तो अपने को बचाना चाहते हैं आखिर तक।

इसलिए बुद्ध और महावीर दोनों मौजूद थे, लेकिन महावीर की बात लोगों को ज्यादा समझ में पड़ी, क्योंकि महावीर ने पांचवें के आगे बात ही नहीं की – छठवें की भी बात नहीं की; क्योंकि महावीर के पास एक वैज्ञानिक चित्त था, और उनको छठवां भी लगा कि वह भी... शब्द वहां डावांडोल, संदिग्ध हो जाते हैं। पांचवें तक शब्द बिलकुल थिर चलता है और एकदम वैज्ञानिक रिपोर्टिंग संभव है... कि हम कह सकते हैं : ऐसा है, ऐसा है, क्योंकि पांचवें

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तक हमारा जो अनुभव है उससे तालमेल खाती हुई चीजें मिल जाती हैं।

समझ लो कि एक आदमी... एक महासागर में छोटा सा द्वीप है; उस द्वीप पर एक ही तरह के फूल खिलते हैं – छोटा द्वीप है, एक ही तरह के फूल खिलते हैं; दस-पचास लोग उस द्वीप पर रहते हैं। वे कभी बाहर नहीं गये। तो वहां से कोई यात्री जहाज निकल रहा है और एक उनमें कोई बुद्धिमान आदमी है, वह उसको अपने जहाज पर ले आता है; वह अपने देश में उसे ले आता है। वह यहां हज़ारों तरह के फूल देखता है। फूल का मतलब उसके लिए एक ही फूल था। फूल का मतलब वही फूल था जो उसके द्वीप पर होता था। पहली दफा फूल के मतलब का विस्तार होना शुरू होता है। फूल का मतलब वही नहीं था जो था। अब उसे पता चलता है कि फूल तो हज़ारों हैं। वह कमल देखता है, वह गुलाब देखता है, वह चंपा देखता है, चमेली देखता है – अब वह बड़ी मुश्किल में पड़ जाता है कि मैं जाकर लोगों को कैसे समझाऊंगा कि फूल का मतलब यही फूल नहीं होता, फूलों के नाम होते हैं। उसके द्वीप पर नाम नहीं होंगे; क्योंकि जहां एक होता है वहां नाम नहीं होता। वहां फूल ही नाम होगा। वह काफी है। गुलाब का फूल कहने की कोई जरूरत नहीं, चंपा का फूल कहने की कोई जरूरत नहीं – अब वह कहेगा कि मैं उनको कैसे समझाऊंगा कि चंपा क्या है। वे कहेंगे, फूल ही न ! तो फूल तो उनका एक साफ है उनके सामने।

अब वह आदमी लौटता है। अब वह बड़ी मुश्किल में पड़ गया है। फिर भी कुछ उपाय है, क्योंकि एक फूल तो कम से कम उस द्वीप पर है – फूल तो है कम से कम। वह बता सकता है कि यह लाल रंग है, सफेद रंग का भी फूल होता है। उसको यह कहते हैं। यह छोटा फूल है, बहुत बड़ा फूल होता है, उसको कमल कहते हैं। फिर भी उस... उस द्वीप के निवासियों को वह थोड़ा बहुत कम्युनिकेट (संप्रेषित, अभिव्यक्त) कर पायेगा, क्योंकि एक फूल उनकी भाषा में है। और दूसरे फूलों का भी थोड़ा इशारा किया जा सकता है।

लेकिन समझ लें कि वह आदमी चांद पर चला जाये – वह आदमी जहाज पर बैठकर किसी द्वीप पर न आये, बल्कि एक अंतिरक्ष यात्री उसको चांद पर ले जाये – जहां फूल हैं ही नहीं; जहां पौधे नहीं हैं; जहां हवा का आयतन अलग है, दबाव अलग है – और वह अपने द्वीप पर वापस लौटे, और उस द्वीप के लोग पूछें कि तुम क्या... क्या देखकर आये, चांद पर क्या पाया ? तो खबर देनी और मुश्किल हो जाये, क्योंकि कोई तालमेल नहीं बैठता कि वह कैसे खबर दे; क्या कहे, वहां क्या देखा; उसकी भाषा में उसे कोई शब्द न मिलें।

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ठीक ऐसी स्थिति है। पांचवें तक हमारी जो भाषा है उससे हमें शब्द मिल जाते हैं, पर वे शब्द ऐसे ही होते हैं कि हज़ार फूल और एक फूल का फर्क होता है। छठवें से भाषा गड़बड़ होनी शुरू हो जाती। छठवें से हम ऐसी जगह पहुंचते हैं जहां एक और अनेक का भी फर्क नहीं है, और मुश्किल होनी शुरू हो जाती। फिर भी, निषेध से थोड़ा-बहुत काम चलाया जा सकता है – या टोटेलिटि (सम्रगता) की धारणा से थोड़ा बहुत काम चलाया जा सकता है।

हम कह सकते हैं कि वहां कोई सीमा नहीं है, असीम है। सीमाएं हम जानते हैं, असीम हम नहीं जानते। तो सीमा के आधार पर हम कह सकते हैं कि वहां सीमाएं नहीं हैं, असीम है वहां। तो भी थोड़ी धारणा मिलेगी, हालांकि पक्की नहीं मिलेगी; हमें शक तो होगा कि हम समझ गये, हम समझेंगे नहीं।

इसलिए बड़ी गड़बड़ होती है – हमें लगता है कि हम समझ गये... ठीक तो कह रहे हैं कि सीमाएं वहां नहीं; लेकिन सीमाएं नहीं होने का क्या मतलब होता है ? हमारा सारा अनुभव सीमा का है। यह वैसा ही समझना है, जैसे उस द्वीप के आदमी कहें कि अच्छा हम समझ गये, फूल ही न ! तो वह आदमी कहेगा – नहीं, नहीं, उस फूल को मत समझ लेना; क्योंकि उससे कोई मामला नहीं है, यह हम बहुत दूसरी बात कर रहे हैं। ऐसा फूल तो वहां होता ही नहीं, वह कहेगा। तो वे लोग कहेंगे कि फिर उनको फूल किसलिए कहते हो, जब ऐसा फूल नहीं होता; फूल तो यही है।

हमको भी शक होता है कि हम समझ गये; कहते हैं : असीम है परमात्मा। हम कहते, समझ गये, लेकिन हमारा सारा अनुभव सीमा का है; समझे हम कुछ भी नहीं। सिर्फ सीमा शब्द को समझने की वजह से उसमें 'अ' लगाने से हमको लगता है कि सीमा वहां नहीं होगी, हम समझ गये – लेकिन 'सीमा नहीं होगी'... इसको जब कन्सीव (धारणा) करने बैठेंगे कि कहां होगा ऐसा जहां सीमा नहीं होगी, तब आप घबड़ा जायेंगे; क्योंकि आप कितना ही सोचें, सीमा रहेगी। आप और बढ़ जायें, और बढ़ जायें, अरब-खरब, संख्या टूट जाये, मील और प्रकाश वर्ष समाप्त हो जायें – जहां भी आप रुकेंगे, फौरन सीमा खड़ी हो जायेगी।

असीम का मतलब हमारे मन में इतना ही हो सकता है, जिसका सीमा बहुत दूर है – ज्यादा से ज्यादा; इतनी दूर है कि हमारी पकड़ में नहीं आती, लेकिन होगी तो। चूक गये, वह नहीं बात पकड़ में आयी।

इसलिए छठवें तक की बात कही जायेगी; लोग समझेंगे, समझ गये...

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

समझेंगे नहीं। सातवें की बात तो इतनी भी नहीं समझेंगे कि समझ गये। सातवें की बात का तो कोई सवाल ही नहीं है। वे तो साफ ही कह देंगे – क्या एबसर्ड (अनर्गल, अर्थहीन) बातें कर रहे हो; यह क्या कह रहे हो ?

शब्दातीत, अर्थातीत सत्य का प्रतीक – ओम्

इसलिए सातवें के लिए फिर हमने 'एबसर्ड' शब्द खोजे, जिनका कोई अर्थ नहीं होता।

जैसे ओम्। इसका कोई अर्थ नहीं होता। इसका कोई अर्थ नहीं होता। यह अर्थहीन शब्द है। यह हमने सातवें के लिए प्रयोग किया। जब कोई ज़िद ही करने लगा, छठवें तक हमने बात कही, और जब वह ज़िद ही करने लगा – हमने कहा – ओऽऽऽऽम्। इसलिए सारे शास्त्र सब लिखने के बाद आखिर में 'ओऽऽम् शांति'... ओम् शांति का मतलब आप समझते हैं ? ...सातवां समाप्त; अब इसके आगे नहीं है बात – द सेवंथ, द एंड। वे दोनों ही एक ही मतलब रखते हैं। इसलिए हर शास्त्र के पीछे हम 'इति' नहीं लिखते, 'ओऽम् शांति' लिख देते हैं। वह ओम् सूचक है सातवें का कि अब कृपा करो, इसके आगे बातचीत नहीं चलेगी, अब शांत हो जाओ।

तो हमने एक एबसर्ड (असंगत) शब्द खोजा, उसका कोई अर्थ नहीं है। उसका कोई मतलब नहीं होता ...कि उसका कोई मतलब होता है ? मतलब हो तो वह बेकार हो गया; क्योंकि हमने उस दुनिया के लिए खोजा जहां सब मतलब खत्म हो जाते; वह गैर-मतलब शब्द है। इसलिए दुनिया की किसी भाषा में वैसा शब्द नहीं है। प्रयोग किये गये हैं – जैसे 'अमीन'। पर वह शांति का मतलब है उसका। प्रयोग किये गये हैं, लेकिन ओम्-जैसा शब्द नहीं है... जैसा कि अब ईसाई प्रार्थना करेगा और आखिर में कहेगा – 'अमीन'। वह यह कह रहा है – बस खत्म; शांति इसके बाद; अब शब्द नहीं।

लेकिन ओम्-जैसा शब्द नहीं है। उसका कोई अनुवाद नहीं है संभव। वह हमने सातवें के लिए प्रतीक चुन लिया था जिसको।

इसलिए मंदिरों में उसे खोदा था – सातवें की खबर देने के लिए कि छठवें तक मत रुक जाना। वे ओम् बनाते हैं, राम और कृष्ण को उसके बीच में खड़ा कर देते हैं। ओम् उनसे बहुत बड़ा है। कृष्ण उसमें से झांकते हैं; लेकिन कृष्ण कुछ भी नहीं हैं, वह ओम् बहुत बड़ा है ! उसमें से सब झांकता है, और सब उसी में खो जाता है। इसलिए ओम् से कीमत हमने किसी और चीज को कभी ज्यादा नहीं दी है। वह पवित्रतम है। पवित्रतम इस अर्थों में

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

है, होलिएस्ट इस अर्थों में है... कि वह अंतिम है; उस के पार, बियांड, जहां सब खो जाता है, वहां वह है।

तो सातवें की रिपोर्टिंग की बात नहीं होती है। हां, इसी तरह नकार की खबरें दी जा सकती हैं – यह नहीं होगा, यह नहीं होगा, लेकिन यह भी छठवें तक ही सार्थक है। सातवें के संबंध में इसलिए बहुत लोग चुप ही रह गये – या जिन्होंने कहा, वे कह कर बड़ी झंझट में पड़े। और कहते हुए... बार-बार कहते हुए उनको कहना पड़ा कि यह कहा नहीं जा सकता; इसको बार-बार दोहराना पड़ा कि हम कह तो ज़रूर रहे हैं, लेकिन यह कहा नहीं जा सकता। तब हम पूछते हैं उनसे कि बड़ी मुश्किल है : जब नहीं कहा जा सकता, आप कहें ही मत। फिर वे कहते हैं, वह है तो : ज़रूर, और उस-जैसी कोई चीज नहीं है जो कहने योग्य हो; लेकिन उस-जैसी कोई चीज भी नहीं है जो कहने में न आती हो – कहने योग्य तो बहुत है, खबर देने योग्य है बहुत, रिपोर्टेबल (बताने-योग्य) वही है... कि उसकी कोई खबर दे; लेकिन कठिनाई भी यही है कि उसकी कोई खबर नहीं हो सकती – उसे जाना जा सकता है, कहा नहीं जा सकता।

और इसलिए उस तरफ से आकर जो लोग गूंगे की तरह खड़े हो जाते हैं हमारे बीच में – जो बड़े मुखर थे, जिनके पास बड़ी वाणी थी, जिनके पास बड़ी शब्द की सामर्थ्य थी, जो सब कह पाते थे, जब वे भी अचानक गूंगे की तरह खड़े हो जाते हैं, तब उनका गूंगापन कुछ कहता है; उनकी गूंगी आंखें कुछ कहती हैं। जैसा तुम पूछते हो, ऐसा बुद्ध ने नियम बना रखा था कि वे कहते, यह पूछो ही मत; यह पूछने योग्य ही नहीं, यह जानने योग्य है। तो वे कहते – यह अव्याख्येय है, इसकी व्याख्या मत करवाओ; मुझसे गलत काम मत करवाओ।

लाओत्से कहता है कि मुझसे कहो ही मत कि मैं लिखूं, क्योंकि जो भी मैं लिखूंगा वह गलत हो जायेगा, जो मुझे लिखना है वह मैं लिख ही न पाऊंगा; और जो मुझे नहीं लिखना है उसको मैं लिख सकता हूं, लेकिन उससे मतलब क्या है ? तो जिंदगी भर टालता रहा – नहीं लिखा, नहीं लिखा, नहीं लिखा। आखिर में मुल्क ने परेशान ही किया तो छोटी सी किताब लिखी, पर उसने पहले ही लिख दिया कि सत्य को कहा कि वहं झूठ हो जाता है – पर यह सेवेंथ, यह सातवें सत्य की बात है, सभी सत्यों की बात नहीं है। छत्वें तक कहने से झूठ नहीं हो जाता – छठवें तक कहने से संदिग्ध होगा, पांचवें तक कहने से बिलकुल सुनिश्चित होगा, सातवें पर कहने से झूठ हो जायेगा। जहां हम

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

ही समाप्त हो जाते हैं, वहां हमारी वाणी और हमारी भाषा कैसे बचेगी ! वह भी समाप्त हो जाती है ।

ओम् शब्द नहीं, चित्र है

प्रश्न : ओम् को प्रतीक क्यों चुना गया ? उसकी क्या-क्या विशेषताएं हैं ?

ओम् को चनुने के दो कारण हैं : एक तो, एक ऐसे शब्द की तलाश थी जिसका अर्थ न हो – जिसका तुम अर्थ न लगा पाओ; क्योंकि अगर तुम अर्थ लगा लो तो वह पांचवें के इस तरफ का हो जायेगा । एक ऐसा शब्द चाहिए था जो एक अर्थ में मीनिंगलेस (निरर्थक) हो ।

हमारे सब शब्द मीनिंगफुल (अर्थयुक्त) हैं । शब्द बनाते ही हम इसलिए हैं कि उसमें अर्थ होना चाहिए, अगर अर्थ न हो तो शब्द की ज़रूरत क्या है ? उसे हम बोलने के लिए बनाते हैं – और बोलने का प्रयोजन ही यह है कि मैं तुम्हें कुछ समझा पाऊं; मैं जब शब्द बोलूं तो तुम्हारे पास कोई अर्थ का इशारा हो पाये । जब लोग सातवें से लोंटें या सातवें को जाना, तो उनको लगा कि इसके लिए कोई भी शब्द बनायेंगे, और उसमें अगर अर्थ होगा, तो वह पांचवें शरीर के पहले का हो जायेगा – तत्काल । उसका भाषाकोष में अर्थ लिख दिया जायेगा; लोग पढ़ लेंगे और समझ लेंगे । लेकिन सातवें का तो कोई अर्थ नहीं हो सकता । या तो कहो मीनिंगलेस – अर्थहीन; या कहो बियॉन्ड मीनिंग – अर्थातीत; दोनों एक ही बात है ।

तो उस अर्थातीत के... जहां कि सब अर्थ खो गये हैं, कोई अर्थ ही नहीं बचा है – कैसा शब्द खोजें, और कैसे खोजें, और शब्द को कैसे बनायें ? तो शब्द को बनाने में बड़े विज्ञान का प्रयोग किया गया । वह शब्द बनाया बहुत... बहुत ही कल्पनाशील... और बड़े विज़न... और बड़ी दूरदृष्टि से वह शब्द बनाया गया; क्योंकि वह बनाया जा रहा था और एक रूट, एक मौलिक शब्द था जो मूल आधार पर खड़ा करना था । तो कैसे इस शब्द को खोजें जिसमें कि कोई अर्थ न हो; और किस प्रकार से खोज़ें कि वह गहरे अर्थ में मूल आधार का प्रतीक भी हो जाये ?

तो हमारी भाषा की जो मूल ध्वनियां हैं, वे तीन हैं : ए. यू. एम. – अ, ऊ, म । हमारा सारा का सारा शब्दों का विस्तार इन तीन ध्वनियों का विस्तार है । तो रूट ध्वनियां तीन हैं – अ, ऊ, म । अच्छा अ, ऊ और म में कोई अर्थ नहीं है; अर्थ तो इनके संबंधों से तय होगा । अ जब अब बन जायेगा,

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

तो अर्थपूर्ण हो जायेगा; म जब कोई शब्द बन जायेगा तो अर्थपूर्ण हो जायेगा, अभी अर्थहीन है। अ, ऊ, म, इनका कोई अर्थ नहीं है – और ये तीन मूल हैं। फिर सारी हमारी वाणी का विस्तार इन तीन का ही फैलाव है, इन तीन का ही जोड़ है।

तो ये तीन मूल ध्वनियों को पकड़ लिया गया – अ, ऊ, म, तीनों के जोड़ से ओम् बना दिया। तो ओम् लिखा जा सकता था, लेकिन लिखने से फिर शक पैदा होता किसी को – इसका कोई अर्थ होगा; क्योंकि फिर वह शब्द बन जाता – अब, आज, ऐसा ही ओम् में भी एक शब्द बन जाता। और लोग उसका अर्थ निकाल लेते कि ओम् यानी वह जो सातवें पर है। तो फिर शब्द न बनाकर हमने चित्र बनाया ओम् का – ताकि शब्द, अक्षर का भी उपयोग मत करो उसमें। अ, ऊ, म तो है वह, पर वह ध्वनि है – शब्द नहीं, अक्षर नहीं।

इसलिए फिर हमने ओम् का चित्र बनाया, उसको पिक्चोरिअल (चित्रयुक्त) कर दिया, ताकि उसको सीधा कोई भाषाकोश में खोजने न चला जाये उसे... कि ओम् का क्या मतलब होता है। तो वह ओम् जो है आपकी आंखों में गड़ जाये और प्रश्नवाचक बन जाये कि क्या मतलब ?

जब भी कोई आदमी संस्कृत पढ़ता है, या पुराने ग्रंथ पढ़ने दुनिया के किसी कोने से आता है, तो इस शब्द को बताना मुश्किल हो जाता है उसे। और शब्द तो सब समझ में आ जाते हैं, क्योंकि सबका अनुवाद हो जाता है – वह बार-बार दिक्कत ये आती है कि ओम् यानी क्या; इसका मतलब क्या है ? और फिर इसको अक्षरों में क्यों नहीं लिखते हो ? इसको ओम् लिखो न ! यह चित्र क्यों बनाया हुआ है ? उस चित्र को भी अगर तुम गौर से देखोगे, तो उसके भी तीन हिस्से हैं, और वह अ, ऊ और म के प्रतीक हैं।

वह पिक्चर (चित्र) भी बड़ी खोज है, वह चित्र भी साधारण नहीं है – और उस चित्र की खोज भी चौथे शरीर में की गयी है। उस चित्र की खोज भी भौतिक शरीर से नहीं की गयी है; वह चौथे शरीर की खोज है। असल में, जब चौथे शरीर में कोई जाता है और निर्विचार हो जाता है, तब उसके भीतर अ, ऊ, म – इनकी ध्वनियां गूंजने लगती हैं, और उन तीनों का जोड़ ओऽम् बनने लगता है – जब पूर्ण सन्नाटा हो जाता है विचार का, जब सब विचार खो जाते हैं, तब ध्वनियां रह जाती और ओम् की ध्वनि गूंजने लगती। वह जो ओम् की ध्वनि गूंजने लगती है, वहां चौथे शरीर से उसको पकड़ा गया है कि ये जहां विचार खोते हैं, भाषा खोती है, वहां जो शेष रह

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

जाता है, वह ओम् की ध्वनि रह जाती है।

निर्विचार चेतना में ओम् का आविर्भाव

इधर से तो उस ध्वनि को पकड़ा गया, और जैसा मैंने तुमसे कहा कि जिस तरह हर शब्द का एक पैटर्न (ढांचा) है, हर शब्द का एक पैटर्न है... जब हम एक शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारे भीतर एक पैटर्न बनना शुरू होता है। तो जब यह ओम् की ध्वनि रह जाती है भीतर सिर्फ, तब अगर इस ध्वनि पर एकाग्र किया जाये चित्त, तो ध्वनि – अगर पूरी तरह से चित्त एकाग्र हो, जो कि चौथे पर हो जाना कठिन नहीं है, और जब यह ओम् सुनाई पड़ेगा तो हो ही जायेगा।

उस चौथे शरीर में ओम् की ध्वनि गूंजती रहे, गूंजती रहे, गूंजती रहे, और अगर कोई एकाग्र इसको सुनता रहे, तो इसका चित्र भी उभरना शुरू हो जाता है। इस तरह बीज मंत्र खोजे गये – सारे बीज मंत्र इस तरह खोज गये। एक-एक चक्र पर जो ध्वनि होती है, उस ध्वनि पर जब एकाग्र चित्त से साधक बैठता है, तो उस चक्र का बीज शब्द उसकी पकड़ में आ जाता है – और वे बीज शब्द इस तरह निर्मित किये गये। ओम् जो है, वह परम बीज है – वह किसी एक चक्र का बीज नहीं है, वह परम बीज है; वह सातवें का प्रतीक है – या अनादि का प्रतीक है, या अनंत का प्रतीक है।

ओम् – सार्वभौमिक सत्य

इस भांति उस शब्द को खोजा गया और करोड़ों लोगों ने जब उसको टैली (मिलान) किया और स्वीकृति दी, तब वह स्वीकृत हुआ – एकदम से स्वीकृत नहीं हो गया; सहज स्वीकृत नहीं कर लिया कि एक आदमी ने कह दिया – करोड़ों साधकों को जब वही प्रति बार हो गया, और जब वह सुनिश्चित हो गया।

इसलिए ओम् शब्द जो है, वह किसी धर्म की, किसी संप्रदाय की बपौती नहीं है – इसलिए बौद्ध भी उसका उपयोग करेंगे, बिना फिक्र किये; जैन भी उसका उपयोग करेंगे, बिना फिक्र किये। हिंदुओं की बपौती नहीं है वह, उसका कारण है। उसका कारण यह है कि वह तो साधकों को... अनेक साधकों को, अनेक मार्गों से गये साधकों को वह मिल गया है। दूसरे मुल्कों में भी जो चीजें हैं, वे भी किसी अर्थ में उसके हिस्से हैं।

अब जैसे कि अगर हम अरेबिक या लैटिन या रोमन – इनमें जो खोजबीन साधक की रही है, उसको भी पकड़ने जायें, तो एक बड़े मजे की

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

बात है कि 'म' तो ज़रूर मिलेगा उसमें – किसी में 'अ' और 'म' मिलेगा; 'म' तो अनिवार्य मिलेगा। उसके कारण हैं कि वह इतना सूक्ष्म हिस्सा है कि अक्सर आगे का हिस्सा छूट जाता है, पकड़ में नहीं आता और पीछे का हिस्सा सुनाई पड़ता है। तो ओ३३३म् की जब आवाज होनी शुरू होती है भीतर, तो 'म' सबसे ज्यादा सरलता से पकड़ में आता है – वह आगे का जो हिस्सा है वह दब जाता है पिछले 'म' से। ऐसे भी तुम अगर किसी बंद भवन में बैठकर ओम् की आवाज करो, तो 'म' सबको दबा देगा – 'अ' और 'ऊ' को दबा देगा और 'म' एकदम व्यापक हो जायेगा। इसलिए बहुत साधकों को ऐसा लगा कि 'म' तो है पक्का। आगे की कुछ भूलचूक हो गयी, सुनने के कुछ भेद हैं। और इसलिए दुनिया के सभी... जहां भी... जैसे अमीन, उसमें 'म' अनिवार्य है। जहां-जहां साधकों ने उस शरीर पर काम किया है, वहां कुछ तो उनकी पकड़ में आया है। लेकिन, जितना ज्यादा प्रयोग हो, जैसे कि एक प्रयोग को हज़ार वैज्ञानिक करें, तो उसकी वेलिडिटि (प्रामाणिकता) बढ़ जाती है।

लाखों साधकों की सम्मिलित खोज – ओम्

यह मुल्क एक लिहाज से सौभाग्यशाली है कि यहां हमने हज़ारों साल आत्मिक यात्रा पर व्यतीत किये हैं। इतना किसी मुल्क ने, इतने बड़े पैमाने पर, इतने अधिक लोगों ने कभी नहीं किये। अब बुद्ध के साथ दस-दस हज़ार साधक बैठे, महावीर के साथ चालीस हज़ार भिक्षु और भिक्षुणियां थीं। छोटा सा बिहार, वहां चालीस हज़ार आदमी एकसाथ प्रयोग कर रहे हैं। दुनिया में कहीं ऐसा नहीं हुआ।

जीसस बेचारे बड़े अकेले हैं, मुहम्मद का फिजूल ही समय जाया हो रहा है, नासमझों से लड़ने में। यहां एक स्थिति बन गयी थी कि यहां यह बात अब लड़ने की नहीं रह गयी थी, यह खत्म हो चुका था वक्त, यहां चीजें साफ हो गयी थीं। अब महावीर बैठे हैं और चालीस हज़ार लोग एकसाथ साधना कर रहे हैं। टेली (मिलान) करने की बड़ी सुविधा थी... चालीस हज़ार लोगों में क्या हो रहा है – चौथे शरीर पर क्या हो रहा है, तीसरे पर क्या हो रहा है, दूसरे में क्या हो रहा है; एक भूल करेगा, दो भूल करेंगे, चाली हज़ार तो भूल नहीं कर सकते! चालीस हज़ार अलग-अलग प्रयोग कर रहे हैं, फिर वह सब सोचा जा रहा है, पकड़ा जा रहा है।

इसलिए इस मुल्क ने कुछ बहुत बीज चीजें खोज लीं जो कि दूसरे मुल्क नहीं खोज पाये, क्योंकि वहां साधक सदा अकेला था। साधक इतने बड़े पैमाने

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

पर कहीं भी नहीं था। जैसे आज पश्चिम बड़े पैमाने पर विज्ञान की खोज में लगा है — हज़ारों वैज्ञानिक लगे हैं; इस भांति इस मुल्क ने कभी अपने हज़ारों प्रतिभाशाली लोग एक ही विज्ञान पर लगा दिये थे। तो वहां से वे जो लाये हैं, वह बड़ा सार्थक तो है — और, फिर कभी उसकी खबरें जाते-जाते यात्रा में, दूसरे मुल्कों तक पहुंचते-पहुंचते बहुत बदल गयीं — बहुत बदल गयीं, बहुत टूट-फूट गयीं।

क्रॉस का स्वस्तिक और ओम् से संबंध

अब जैसे कि जीसस का क्रॉस है, वह स्वस्तिक का बचा हुआ हिस्सा है। लेकिन यात्रा करते-करते वह इतना टूट गया है। स्वस्तिक बहुत वक्त से ओम्-जैसा एक प्रतीक था। ओम् सातवें का प्रतीक था, स्वस्तिक प्रथम का प्रतीक है। इसलिए स्वस्तिक का जो चित्र है, वह डाइनेमिक (सक्रिय) है, मूव (गति) कर रहा है। इसलिए उसकी शाखा आगे फैल जाती है और मूवमेंट (गति) का ख्याल देती है — घूम रहा है; संसार का मतलब होता है जो घूम रहा है — जो पूरे वक्त घूम रहा है।

तो स्वस्तिक हमने प्रथम का प्रतीक बना लिया था और ओम् अंतिम प्रतीक था। इसलिए ओम् में मूवमेंट (गति) बिलकुल नहीं है; वह बिलकुल थिर है — डेड साइलेंट (खामोश) और सब रुक गया है वहां। वहां कोई मूवमेंट नहीं है — उस चित्र में कोई मूवमेंट नहीं है; स्वस्तिक में मूवमेंट है।

वह पहला और वह अंतिम है। स्वस्तिक यात्रा करते-करते कट कर क्रॉस रह गया — क्रिश्चियनिटि तक पहुंचते-पहुंचते। वह जब जीसस के वक्त में, क्योंकि जीसस... यह बहुत संभावना है... कि वे इजिप्ट भी आये और भारत भी आये; वे नालंदा में भी थे और वे इजिप्ट में भी थे — और वे बहुत सी खबरें ले गये; उन खबरों में स्वस्तिक भी एक खबर थी। लेकिन वह खबर वैसी हुई सिद्ध, जैसा कि वह आदमी जो बहुत फूलों को देखकर गया, और उस जगह जाकर उसने खबर दी जहां एक ही फूल होता था। वह कट गयी खबर, वह क्रॉस रह गया।

ओम् (ॐ) से उद्भूत इस्लाम का अर्ध चंद्र

ओम् का जो ऊपर का हिस्सा है वह इस्लाम तक पहुंच गया। वे चांद के जो आधे टुकड़े का बहुत आदर कर रहे हैं, वह ओम् का टूटा हुआ हिस्सा है — ऊपर का हिस्सा है; वह यात्रा करते में कट गया। शब्द और प्रतीक यात्रा

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust
करते में बुरी तरह कटते हैं, और हज़ारों साल बाद वह इस तरह घिसपिस जाते हैं कि अलग मालूम होने लगते हैं। फिर पहचानना ही मुश्किल हो जाता है कि यह वही शब्द है; पकड़ना ही मुश्किल हो जाता है कि यह वही शब्द कैसे हो सकता है! यात्रा में नयी ध्वनियां जुड़ती हैं, नये शब्द जुड़ते हैं, नये लोग, नयी जबान से उसका उपयोग करते हैं – सब तरह का अंतर होता जाता है। और फिर मूल स्रोत से अगर विच्छिन्न हो जायें, तो फिर कुछ तय करने की जगह नहीं रह जाती कि वह ठीक क्या था – कहां से आया, क्या हुआ?

सारी दुनिया के आध्यात्मिक प्रवाह गहरे में इस मुल्क से संबंधित हैं, क्योंकि उनका मौलिक मूल स्रोत इसी मुल्क से पैदा हुआ, और सारी खबरें इस मुल्क से फैलनी शुरू हुईं। लेकिन खबरें ले जानेवाले आदमी के पास दूसरी भाषा थी – जिनको उसने खबर दी जाकर, उनको कुछ भी पता नहीं था कि वह क्या खबर दे रहा है। अब किसी ईसाई को, पादरी को यह ख्याल नहीं हो सकता कि वह गले में जो लटकाये हुए है, वह स्वस्तिक का टूटा हुआ हिस्सा है; वह क्रॉस बन गया। किसी मुसलमान को ख्याल नहीं हो सकता कि उस चांद को, वह जो अर्धचंद्र को इतना आदर दे रहा है, वह ओम् का आधा हिस्सा है; ओम् का टूटा हुआ हिस्सा है।

ईसाई परंपरा में ओम् का व्यापक प्रभाव

कुछ कैथोलिक शास्त्रज्ञों के अनुसार 'आमेन' 'ओम्' का ही अपभ्रंश है। लगभग सभी प्रार्थनाओं के अंत में ईश-अभिवादन हेतु 'आमेन' शब्द का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है। खोज करनेवालों का मत है कि 'ओम्' वही शब्द है जिसको बाइबल में कहा गया है कि 'वह सृष्टि के आरंभ में था, ईश्वर के साथ था, ईश्वर था।' (योहन 1:1)। 'आमेन' को प्रकाशन-ग्रंथ के अध्याय एक, स्रोत आठ 'अल्फा तथा ओमेगा' (आदि और अंत) नाम से निरूपित किया गया है। ऐसा भी बताया जाता है कि ईसा मसीह ने संत योहन से कहा था, 'मैं ही आमेन हूं।' अन्यत्र आमेन का प्रयोग 'तथास्तु' तथा 'पूर्ण सत्य' के अर्थ में हुआ है।

कैथोलिक पूजन-विधि में लेटिन भाषा के अनेक शब्द उपयोग में आते रहे हैं, उन सबमें ओम् का अपभ्रंशित रूप उपस्थित है। जैसे ओम्नीप्रेजेंट, ओम्नीशिएंट, ओमनीपोटेंट, पेर ओम्नीया सेकुला सेकुलोरुम आदि।

आजकल तो भारत के अनेक गिरजाघरों में, प्रार्थनाओं में तथा लीब के बीचोंबीच 'ओम्' (ॐ) का प्रयोग प्रारंभ हो चुका है। उदाहरण के लिए संत मेरी कॉलेज, करसियांग, दार्जिलिंग के आराधना मंदिर की प्रमुख वाचनपीठिका पर ॐ अंकित किया गया है।

बंबई, रात्रि, दिनांक 8 जुलाई, 1970.

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

डायमंड पाकेट बुक्स

प्रस्तुत करते हैं *ओशो* का आध्यात्मिक चिन्तन

कबीर वाणी

होनी होय सो होय 60.00
भगति-भजन हरिनाम 60.00
बूझे विरला कोई 60.00
निरगुन का विसराम 60.00
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े 50.00
लिखा लिखी की है नहीं 50.00
मन लागो यार फकीरी में 60.00
बोले शंख फरीद 60.00
क्या मेरा क्या तेरा 60.00
हीरा पायो गांठ गठियाओ 60.00
तेरा साईं तुझ में 50.00
नहीं जोग नहीं जाप 50.00

रैदास वाणी

सत भाषे रैदास 50.00
ऐसी भक्ति करे रैदासा 40.00

मीरा वाणी

मीरा के प्रभु गिरधर नागर 60.00
राम नाम रस पीजे 60.00
मेरे तो गिरधर गोपाल 60.00

गोरख वाणी

हँसे खेलें न करे मन भंग 60.00
जीवन संगीत 50.00

शांडिल्य सूत्र

अथातो भक्ति जिज्ञासा 100.00
भक्ति विराट से मैत्री 100.00
भक्ति परम क्रान्ति 100.00
भक्ति ध्यान की मधुशाला 100.00

महावीर वाणी

धर्म का परम विज्ञान 100.00
आत्मशुद्धि का सूत्र 100.00
संकल्प साधना 100.00
सत्य और साहस 100.00

जगजीवन साहब की वाणी

नाम सुमिर मन बावरे 100.00
अरी, मैं तो नाम के रंग छकी 100.00

संत सुंदरदास की वाणी

ज्योति से ज्योति जले 150.00
समाधि के नृत्य गीत 120.00

ओशो साहित्य डीलक्स संस्करण

संभोग से समाधि की ओर-I 40.00
संभोग से समाधि की ओर-II 40.00
संभोग से समाधि की ओर-III 40.00
संभोग से समाधि की ओर-IV 40.00
शिव साधना 40.00
शिव दर्शन 40.00
सम्बोधि के क्षण 40.00
राम खुमारी 40.00
अभिनव धर्म 40.00
करुणा और क्रान्ति 40.00
मुक्ति बोध 40.00
साधना सूत्र : आत्मा का कमल 40.00
साधना सूत्र : हेरत हेरत हे सखी 40.00
साधना सूत्र : हृदय संगीत 40.00
अमृत की दिशा 40.00
सम्भावनाओं की आहट 40.00
शून्य का दर्शन 40.00
प्रार्थना के बीज 40.00
नये समाज की खोज 40.00
सहज जीवन के सूत्र 40.00
इक साधे सब सधे 40.00
क्रांति सूत्र-साक्षी भाव 40.00
सतगुरु मिलें त ऊबरे 40.00
हसिबा, खेलिबा, धरिबा, ध्यानम् 40.00
गहरे पानी पैठ 40.00
मैं कहता आंखन देखी 40.00
ध्यान सूत्र : अन्तिम यात्रा 40.00
ध्यान सूत्र : एक अपूर्व अभियान 40.00
चेति सकै तो चेति 40.00
दिया बले अगम का 40.00
साधना के आयाम 40.00
भारत के जलते प्रश्न 40.00
स्वर्णिम भारत 40.00
धर्म और राजनीति 40.00

डायमंड पाकेट बुक्स
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020
फोन : 011-51611861- 65 फैक्स : 011-51611866, 26386124
E-mail : diamondpublication@vsnl.com, Website : www.diamondpublication.com

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

नये मनुष्य के लिए एक नया दृष्टिकोण

3 पत्रिकाएं -
पथ में आपकी पाथेय...

1

OSHO TIMES INTERNATIONAL

अंग्रेजी (त्रैमासिक), मूल्य प्रति अंक: 55 रु.
वार्षिक सदस्यता शुल्क: 200 रु.**

2

OSHO TIMES

अंग्रेजी, एशिया संस्करण (मासिक), मूल्य प्रति अंक: 20 रु.
वार्षिक सदस्यता शुल्क: 200 रु.* तथा 375 रु.**
अर्ध-वार्षिक सदस्यता शुल्क: 120 रु.* तथा 200 रु.**

* साधारण डाक से, ** रजिस्टर्ड डाक से

3

ओशो टाइम्स

हिंदी (मासिक), मूल्य प्रति अंक: 15 रु.
वार्षिक सदस्यता शुल्क: 150 रु.* तथा 325 रु.**
अर्ध-वार्षिक सदस्यता शुल्क: 90 रु.* तथा 170 रु.**

ओशो टाइम्स (हिंदी) का विशेष वार्षिकांक - 'स्मारिका'
...अब इन साल 11 दिसम्बर पर उपलब्ध!!

संपर्क-सूत्र

ताओ पब्लिशिंग प्रा. लि.
50, कोरेगांव पार्क, पुणे-411001 फोन: 020-628562 फैक्स: 020-624181
E-MAIL: othsubs@osho.net INTERNET WEBSITE: http://www.osho.com

नये मनुष्य के लिए एक नया दृष्टिकोण

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

डायमंड पाकेट बुक्स

प्रस्तुत करते हैं ओशो का आध्यात्मिक चिन्तन

अष्टावक्र महागीता भाग (1-9)

- ❑ मुक्ति की आकांक्षा भाग-1 ..... 150.00
- ❑ दुख का मूल भाग-2 ..... 150.00
- ❑ जो है जो है भाग-3 ..... 150.00
- ❑ सहजता में तृप्ति भाग-4 ..... 150.00
- ❑ सन्नाटे की साधना भाग-5 ..... 150.00
- ❑ न संसार न मुक्ति भाग-6 ..... 150.00
- ❑ समर्पित स्वतंत्रता भाग-7 ..... 150.00
- ❑ सुख स्वभाव भाग-8 ..... 150.00
- ❑ अनुमान नहीं, अनुभव भाग-9 ..... 150.00
- ❑ संभोग से समाधि की ओर (संपूर्ण संस्करण) 150.00
- ❑ साक्षी कृष्ण योग विज्ञान 60.00
- ❑ कृष्णः जिज्ञासा, खोज, उपलब्धि 60.00
- ❑ कृष्ण साधना सहित सिद्धि 60.00
- ❑ कृष्ण और हंसता हुआ धर्म 60.00
- ❑ कृष्ण गुरु भी सखा भी 60.00
- ❑ शिव साधना 60.00
- ❑ शिव दर्शन 60.00
- ❑ मिट्टी के दीये (बोध कथा) 50.00
- ❑ अमृत की दिशा 50.00
- ❑ शून्य का दर्शन 50.00
- ❑ प्रार्थना के बीज 50.00
- ❑ नये समाज की खोज 50.00
- ❑ कुंडलिनी यात्रा 50.00
- ❑ कुंडलिनी और तंत्र 50.00
- ❑ कुंडलिनी जागरण और शक्तिपात 50.00
- ❑ कुंडलिनी और सात शरीर 50.00
- ❑ अनहद बाजे बांसुरी 50.00
- ❑ नयी क्रांति की रूपरेखा 50.00
- ❑ एक एक कदम 50.00
- ❑ भीतर का दीया 50.00
- ❑ अभिनव धर्म 40.00
- ❑ मुक्ति बोध 40.00
- ❑ साधना सूत्र : आत्म का कमल 40.00
- ❑ साधना सूत्र : हेरत हेरत हे सखी 40.00
- ❑ शून्य समाधि 40.00
- ❑ सहैजे रहिबा 40.00
- ❑ शिक्षा और विद्रोह 40.00
- ❑ शिक्षा में क्रांति 40.00
- ❑ शिक्षा और जागरण 40.00
- ❑ ध्यान : एक शून्य गगन 40.00
- ❑ उपनिषद शून्य संवाद 40.00
- ❑ सम्बोधि के क्षण 35.00
- ❑ राम खुमारी 35.00
- ❑ करुणा और क्रांति 35.00
- ❑ साधना सूत्र : हृदय संगीत 35.00
- ❑ मैं धार्मिकता सिखाता हूं धर्म नहीं (प्रश्नोत्तर) 35.00
- ❑ शिक्षा : नये प्रयोग 35.00

नारद भक्ति सूत्र

- ❑ भक्ति : विराट का अनुभव 50.00
- ❑ भक्ति : निराकार से एकाकार 50.00
- ❑ भक्ति : जीवन रूपांतरण की कला 50.00
- ❑ भक्ति : शून्य की झील में प्रेम का कमल ... 50.00
- ❑ परम प्रेम रूपा भक्ति 50.00
- ❑ सहज योगः साक्षी और प्रेम 50.00
- ❑ सहज योग : ध्यान और प्रेम 50.00
- ❑ सहज योग : प्रार्थना और आनंद 50.00

ओशो साहित्य

- ❑ धर्म और राजनीति 50.00
- ❑ हरि ओउम तत्सत् 50.00
- ❑ भारत के जलते प्रश्न 50.00
- ❑ सहज योग : महाक्रांति 40.00
- ❑ सहज योग : अभी और यहीं 40.00
- ❑ साधना के आयाम 40.00
- ❑ स्वर्णिम भारत 40.00
- ❑ अस्वीकृति में उठा हाथ 40.00
- ❑ नयी क्रांति की रूपरेखा 40.00
- ❑ विचार क्रांति 40.00
- ❑ गांधी पर पुनर्विचार 40.00
- ❑ ओउम शांतिः शांतिः शांतिः 40.00
- ❑ ओउम मणि पद्म हूं 40.00
- ❑ एक महान चुनौती : मनुष्य का स्वर्णिम भविष्य 40.00
- ❑ ध्यान दर्शन 40.00
- ❑ झुक आई बदरिया सावन की 40.00

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

डायमंड पाकेट बुक्स

प्रस्तुत करते हैं ओशो का आध्यात्मिक चिन्तन

- मौलिक क्रांति 150.00
- जीवन अमृत 150.00
- आत्मपूजा उपनिषद् भाग-1 .... 150.00
- आत्मपूजा उपनिषद् भाग-2 .... 150.00
- प्रेम-रंग, रस ओढ़ चदरिया 150.00
- अवसर बीता जाए 150.00
- सद्गुरु समर्पण 150.00
- मौन संगीत 75.00

संत सुंदरदास की वाणी

- समाधि के नृत्य गीत 150.00

संत रज्जब की वाणी

- सन्तो मगन भया मन मेरा 150.00
- समाधि की सुराही 150.00

भीखा वाणी

- गुरु परताप साध की संगति 150.00

संत गुलाल की वाणी

- झरत दसहूं दिस मोती 150.00
- मन मधुकर खेलत वसन्त 150.00

स्वामी ज्ञानभेद

- उस नजर ने क्या से क्या बना दिया 195.00
- एक फक्कड़ मसीहा: ओशो भाग:1-9 (प्रत्येक)150.00
- ध्यान और प्रेम के मसीहा ओशो 150.00
- ओशो ही ओशो 150.00
- ओशो मयखाने के दिवाने रिंद 150.00

सू. एपलटन

- दिया अमृत पाया जहर 35.00

स्वामी ज्ञानभेद/स्वामी प्रेमनिशीथ

- बुद्धत्व खड़ा बाजार में
  (सहज समाधि में सहायक ओशो द्वारा बताए सूत्र)195.00

स्वामी प्रेमनिशीथ

- ओशो को समर्पित उसी की ये शराब 60.00
- हर आईना हैरान है 40.00

स्वामी योग प्रीतम

- ओशो के रस रंग में 40.00
- एक ओशो शिष्य की अंतर्यात्रा 35.00

स्वामी अगेह भारती

- ओशो के आसपास 100.00
- डायरी के पन्ने 60.00
- ओशो : एक महाप्रारंभ 60.00
- स्पंदन (काव्य संग्रह) (यंत्रस्थ) 60.00
- बातें जो याद हैं 50.00
- अनजाने ओशो 40.00
- एक ओशो शिष्य की डायरी 40.00
- ओशो गाथा 40.00
- विचारों के फूल 40.00
- ओशो की मधुशाला में बच्चन 40.00
- अंधकार से प्रकाश की ओर 40.00
- ओशो के संग! कुछ अनमोल क्षण 35.00
- मेरी रजनीशपुरम यात्रा 30.00
- ओशो की मधुशाला में बच्चन 30.00

प्रो. अरविंद कुमार

- ओशो डायरी के दर्पण 150.00

उर्मिला

- शांति की खोज 30.00

मा धर्म ज्योति

- दस हजार बुद्धों के लिए एक सौ गाथाएं 60.00

स्वामी राजा भारती

- ओशो प्रेम घटा बरसी 50.00

स्वामी आनंद सत्यार्थी

- मानसिक तनाव से मुक्ति के सरल उपाय .. 50.00

ओशो-साहित्य गुजराती

- साधना पथ 15.00
- भारत के जलते प्रश्न 15.00

ओशो-साहित्य पंजाबी

- एक ओंकार सतनाम (यंत्रस्थ) 100.00
- संभोग से समाधि की ओर 50.00

ओशो-उर्दू साहित्य

- मेरी रहगुजर कि सफेद अम्बर की रहगुजर 60.00
- सत्य की खोज 50.00
- सुये फना (संभोग से समाधि की ओर) 20.00

ओशो-बंगाली साहित्य

- मौलिक मानवीय अधिकार 25.00
- संभोग से समाधि की ओर 25.00
- भारत के जलते प्रश्न 25.00
- धर्म और राजनीति 25.00
- मिट्टी के दीये 25.00

डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि.

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-20 फोन : 011-41611861, फैक्स : 011-41611866

E-mail : Sales@dpb.in, Website : www.dpb.in

CC-0. In Public Domain. Vinit Kumar Collection, Deoband

Digitized by Madhuban Trust

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband

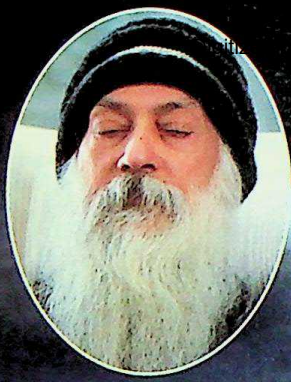

ओशो अद्वैत का माधुर्य हैं, समग्रता का सौंदर्य हैं; जगत के समस्त विरोधाभासों का काव्य हैं। उनका होना, न होने को अपने में समाहित किये हुए है। वे शून्य हैं और पूर्ण भी। वे स्वयं संदेश हैं- अनादि के, अनंत के, सनातन के, भगवत्ता के।

उनकी प्रत्येक भाव-भंगिमा बड़ी अनूठी और मधुरिमा-युक्त है। उनका चलना होता है तो जैसे स्वयं नृत्य झंकृत हो रहा है। उनका बैठना होता है तो मानो अस्तित्व और अनस्तित्व मिलकर सूक्ष्म संगीत का सुमधुर ताना-बाना बुन रहे हैं। उनका उठना होता है तो जैसे अनाहत की आहट हो रही है। उनका मुखर होना होता है तो जैसे अमृत-वाणी का प्रबल प्रवाह चला आ रहा है। वे पलकें बंद करते हैं, तो मानो अनंत अस्तित्व की लीला में समा रहे हैं। वे पलकें खोलते हैं तो जैसे सागर लहरों की क्रीड़ा का निनाद सुन रहा है। वे चले जाते हैं तो जैसे सब ठहर जाता है, सहम जाता है।

उनके आलोक की रश्मियां हमारे अंधकार के साथ आंख-मिचौली खेलती हैं। हमारा अंधकार उनके आलोक से ही उनको देख पाता है क्षण भर को और तब वह क्षण भी विराट हो जाता है। हमारी वेदना उन तक जाती है तो वे अपनी संवेदना का संस्पर्श देकर लौटा देते हैं। हमारी उदासी उन तक जाती है तो वे अपनी संवेदना का संस्पर्श देकर लौटा देते हैं। हमारी उदासी उन तक जाती है तो आनंद की गहराई लेकर लौट आती है। उनके आशीष अहिर्निश बरस रहे हैं। हमारे प्राणों में जब भी अभीप्सा की आग जलती है और हम समर्पित होते हैं तो उनके मेघ खिंचे आते हैं, हम पर बरस जाते हैं।

उनकी करुणा अपार है!

डायमंड बुक्स

www.diamondpublication.com

ओशो

जिन खोजा तिन पाइयां

ISBN 81-288-1396-X

9788128813962

A.H.W. Sameer Series

Rs. 50.00

CC-0. Public Domain. Vipin Kumar Collection, Deoband